पञ्चपकरण-अट्ठकथा

(दुतियो भागो)

कथावत्थु-अट्ठकथा

व-नालन्दा-महाविहार-गन्थमाला
हाररज्जाणाय पकासिता

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

(दुतियो भागो)

कथावत्थु-अट्ठकथा

पधानसंसोधको
भिक्खु जगदीसकस्सपो

निदेसको
नवनालन्दामहाविहारस्स

संसोधको
डा. महेश तिवारी, एम. ए. (संस्कृत, पालि) पी-एच. डी.

शोधप्राध्यापक
नव नालन्दा महाविहार

नव नालन्दा महाविहार
नालन्दा
पटना

द्धाब्द २५१५ ई० १९७१ विक्रमाब्द २०२८

मुख्य वितरक :—
चौखम्बा संस्कृत सिरिज,
गोपाल मन्दिर लेन,
पो० बा० नं० ८
वाराणसी-१
(उ० प्र०)

मूल्य—दस रुपये मात्र

मुद्रक :—
बिहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ लि० प्रेस,
एक्जीवीशन रोड, पटना-१

Nava Nalanda Mahavihara Publication
Published under the authority of
Government of Bihar.

THE PAÑCAPPAKARAṆA-AṬṬHAKATHĀ

Vol. II

KATHĀVATTHU-AṬṬHAKATHĀ

General Editor,

Bhikkhu J. Kashyap,

Director, Nava Nalanda Mahavihara.

Editor,

Dr. Mahesh Tiwary, M. A. (Pali, Sanskrit), Ph. D.,

Research Professor,

NAVA NALANDA MAHAVIHARA

NAVA NALANDA MAHAVIHARA
NALANDA
PATNA.

B. E. 2515 C.E. 1971. V. E. 2028

Sole Agents :

M/s. Chaukhamba Sanskrit Series
Gopal Mandira Lane,
Post Box No. 8
Varanasi-1
(U. P.)

Price Rupees Ten only.

Printed by :

Bihar Rajya Shikshak Sahyog Sangh Ltd. Press,
Exhibition Road, Patna-1.

The Government of Bihar established the Nalanda Institute of Research and Post—Graduate Studies in Buddhist Learning and Pali (N A V A NALANDA M A H A V I H A R A) at Nalanda in 1951 with the object, *inter alia*, to promote advanced studies and to publish works of permanent value to scholars. This Institute is one of five others, planned by this Government as a token of their homage to the tradition of learning and scholarship for which ancient Bihar was noted.. It has been doing usefull work in the field of scholarship for the last twenty years.

As part of the programme of rehabilitating and reorientating ancient Learning and Scholarship, the edition and publication of the Aṭṭhakathā have been undertaken with the co-operation of the scholars of the Institute. The Government of Bihar hope to continue to sponser such projects and trust that this humble service to the work of scholarship and learning would bear fruit in the fulness of time.

प्रधान-सम्पादकीय वक्तव्य

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा, प्रथम भाग को हमलोगों ने १९६८ ई० में प्रकाशित किया था। उसके प्रधान सम्पादक के वक्तव्य में मैंने यह प्रतिज्ञा की थी कि इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग का प्रकाशन सरकार से एतदर्थं निधि प्राप्त होते ही कर दिया जायगा। यह सौभाग्य की बात है कि वह निधि हमें प्राप्त हो गई है तथा हम इसका प्रकाशन कर रहे हैं।

ग्रन्थ के संशोधक डा० महेश तिवारी की पदोन्नति हो गई है और वे अब संस्था के शोध-प्राध्यापक के रूप में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा जैसे प्रौढ़ ग्रन्थ का सम्पादन कर उन्होंने पालि की बड़ी सेवा की है। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि वे दीर्घजीवी हों तथा ऐसे महत्वपूर्ण कार्य अधिकाधिक कर सकें।

भिक्खु जगदीश काश्यप,
निदेशक,
नव नालन्दा महाविहार
नालन्दा, पटना

२७-३-७१

पुरोवाक्

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा, भाग-२, अभिधम्मपिटक के पांचवे ग्रन्थ 'कथावत्थु' की अट्ठकथा (भाष्य) है। इस ग्रन्थ की रचना आज से लगभग डेढ़ हजार वर्ष पूर्व भारतीय पंडित आचार्य बुद्धघोष द्वारा की गई थी, पर अभी तक इसका प्रकाशन भारत की किसी भी लिपि में नहीं हो पाया था। यह प्रसन्नता की बात है कि बिहार सरकार के अनुदान से इसका नागरी लिपि में आलोचनात्मक संस्करण सर्व प्रथम सुधी जनों के सम्मुख प्रस्तुत है।

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि बर्मी लिपि में प्राप्त छट्ठ संगायन सस्करण की कथावत्थु-अट्ठकथा के आधार पर तैयार की गई है। इसके पाठों का संशोधन पुनः पालि टेक्स्ट सोसायटी, लन्दन द्वारा रोमन लिपि में प्रकाशित 'कथावत्थु-अट्ठकथा के तुलनात्मक अभिवाचन द्वारा किया गया। तुलनाक्रम में जो पाठभेद आवश्यक समझे गये हैं, उन्हें पृष्ठ पादों में दे दिया गया है। कुछ संशयात्मक पदों की परीक्षा सिंहली (सायमन हेवावतरण संस्करण) तथा स्यामी (महा मकुट राज विद्यालय संस्करण) लिपियों में उपलब्ध 'कथावत्थु अट्ठकथा' के पाठों से तुलना करके की गई है। उन संस्करणों के कुछ आवश्यक पाठभेद यथास्थान दे दिये गये हैं।

नव नालन्दा महाविहार द्वारा कई वर्ष पूर्व सम्पूर्ण त्रिपिटक का नागरी लिपि में प्रकाशन हो चुका है। पिटक तथा अट्ठकथा के सम्पादन-क्रम में एकरूपता की दृष्टि से इसमें भी नालन्दा देवनागरी-त्रिपिटक-सम्पादन-प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है। ग्रन्थ को सुबोध तथा सहज प्रतिवेध्य बनाने के उद्देश्य से विषय के अनुसार इसमें अनुच्छेदों की नई व्यवस्था की गई है, साथ ही अभिचर्चित विषय के निदेशनार्थ यथा स्थान शीर्षकों एवं अनुशीर्षकों का समावेश है। व्याख्या के लिए समाहृत 'कथावत्थुप्पकरण' के पदों को काले अक्षरों में तथा पिटक के उद्धरणों को युग्म उद्धरण चिह्नों के मध्य रखा गया है। इस क्रम में नालन्दा संस्करण के पिटक ग्रन्थों की पृष्ठ संख्या दी गई है तथा अनुच्छेदों के साथ कथावत्थु के अनुच्छेदों का भी पृष्ठ प्रसंग है। पृष्ठ पार्श्व में रोमन तथा बर्मी संस्करण को 'कथावत्थु' की पृष्ठ संख्या भी दे दी गई है। इनके अतिरिक्त विषय को सुबोध एवं सरल बनाने के उद्देश्य से ग्रन्थ के प्रारम्भ में एक व्याख्यात्मक भूमिका का योग है।

'कथावत्थु-अट्ठकथा' जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रकाशन के पुनीत अवसर पर अपने कल्याण मित्रों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा पावन कर्त्तव्य है। सर्व प्रथम मैं अपने परम पूज्य गुरुदेव भिक्षु जगदीश काश्यप, निदेशक, नव नालन्दा महाविहार के प्रति भक्ति, एवं श्रद्धा के साथ कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनकी प्रेरणा एवं सहृदय सहयोग से इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका है। उन्हीं की कृपा एवं आशीर्वाद का फल है कि "कथावत्थु-अट्ठकथा" जैसे प्रौढ़ ग्रन्थ के सम्पादन में मेरा प्रवेश हो पाया है। सम्पादन क्रम में ग्रन्थि स्थानों के परिमार्जन में भिक्षु उ जागराभिवंश तथा स्वामी ब्रह्मानन्द ने प्रभूत योग दिया है। उनके ऐसे अमूल्य सुझावों के लिए मैं उन महापुरुषों के प्रति सदा कृतज्ञ हूँ। महाविहार के प्राध्यापक

डा० गुलाब चन्द चौधरी, डा० उ० धम्मरत्न, डा० चन्द्रिका सिंह 'उपासक', प्रो० दिलीप कुमार बनर्जी, डा० नागेन्द्र प्रसाद, प्रो० उमाशंकर व्यास, प्रो० लामा जी तथा प्रो० हुवेनवी ने इसके सम्पादन क्रम में मुझे आवश्यक सुझावों से उपकृत किया है। मैं उनके उपकार के लिए सादर आभार व्यक्त करता हूँ। प्रो० अंगराज चौधरी जी ने आलोचनात्मक संस्करण को पूर्ण बनाने में कई दिशायें दी है। मैं उनके प्रति इसके लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। महाविहार के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री मिथिलेश्वर प्रसाद तथा उनके सहयोगी श्री नन्दकिशोर उपाध्याय, श्री छोटन प्रसाद, श्री हरि प्रसाद वैगरह के बहुमूल्य सहयोग को मैं कभी नहीं भूल सकता हूँ, जिन्होंने पुस्तक प्रदान करने में समय असमय का विभेद कभी नहीं रखा। मैं इन सबको साधुवाद देता हूँ तथा इनके उत्तरोत्तर विकाश की मंगल कामना करता हूँ। पीठस्थविर श्री हरिनारायण प्रसाद ने विधियों का सम्यक निर्वाह करते हुए प्रकाशन कार्य को कार्यान्वित करने में तत्परता के साथ सहायता दी। मैं उनके सहयोग के लिए कृतज्ञ हूँ। पुनः लिप्यन्तरकार श्री पारस पति नाथ सिंह को साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ का बर्मी से लिप्यन्तर कर सहायता दी है।

प्रकाशन की सफलता उसे शुद्ध रूप देने में है। यह तब ही संभव है, जब इसके प्रकाशन, प्रूफ संशोधन तथा मुद्रण आदि के अनुभव से युक्त एक सुयोग्य व्यक्ति का मनोयोग हो। इस दिशा में बिहार विधान मंडल पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष तथा मेरे अभिन्न मित्र श्री श्यामदेव द्विवेदी, एम०ए०, डी० एल० एस्सी०, के हार्दिक सहयोग को मैं कभी नहीं भूल सकता। ग्रन्थ को शुद्ध रूप तथा सम्पादनगत विशेषताओं से उपेत करने में उन्होंने जो तत्परता दर्शायी है, उसके लिए मैं अत्यधिक आभारी हूँ। मेरे शिष्य श्री ब्रह्मदेव नारायण शर्मा, श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह, श्री आनन्द गोपाल अवस्थी के उज्वल भविष्य की मैं मंगल कामना करता हूँ, जिन्होंने अपने सहयोग से अनुक्रमणिका का काम सुगम बना दिया। मैं बिहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ लि० प्रेस, पटना के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को भी साधुवाद देता हूँ, जिनके सहृदय सहयोग, तत्परता, सद्व्यवहार एवं अपूर्व निष्ठा के फलस्वरूप ही इस ग्रन्थ का प्रकाशन यथासमय हो पाया है। अन्त में मैं उन सभी सत्पुरुषों को साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने जिस किसी रूप में भी इस ग्रन्थ के प्रकाशन में मेरी सहायता की है।

इस प्रसंग में मेरी एक क्षमा याचना भी है। मैंने ग्रन्थ को शुद्ध, पूर्ण एवं उपयोगी रूप देने में यथासाध्य यत्न किया है, पर मैं अपनी लघुता से पूर्णतः परिचित हूँ। मनुष्य के स्वभावतः स्खलनधर्मा होने के कारण उसकी कृति पूर्ण कहां हो सकती है? इसलिए यह ग्रन्थ भी त्रुटियों से रहित नहीं कहा जा सकता है। मैं सुधी जनों से सादर अनुरोध करता हूँ कि वे अपने अध्ययन-क्रम में उन्हें पाकर मुझे सूचित करेंगे, जिससे इसका अगला संस्करण अधिक सुन्दर हो सके।

महेश तिवारी

२९-३-७१

भूमिका

१. परिचिति

अभिधर्म-पिटक भगवान् बुद्ध के विशिष्ट उपदेशों का संग्रह है। इसमें धर्म एवं दर्शन के निगूढ़तम अंगों पर अत्यन्त पांडित्यपूर्ण ढंग से प्रकाश डालने का यत्न किया गया है। इसकी प्रवृत्ति परिप्रश्नात्मक तथा शैली प्रौढ़ है। इस दृष्टि से जहाँ विनयपिटक को 'आणादेसना' सुत्तपिटक को 'वोहारदेसना' कहा गया है, वहाँ अभिधम्मपिटक का अभिधान 'परमत्थदेसना' से किया गया है। इसका विषय 'नामरूप-परिच्छेद-कथा' है, जबकि विनय एवं सुत्त का क्रमशः 'संवर-असंवर-कथा' तथा 'दिट्ठिविनिवेठन-कथा' हैं[1]। प्रत्येक प्रश्न की परीक्षा यहाँ 'सुत्तन्तभाजनीय' 'अभिधम्मभाजनीय' तथा 'पञ्हापुच्छक' नयों से की गई है, जो अन्य पिटकों में नहीं है[2]। इस दृष्टि से इसके वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालते हुए आचार्य बुद्धघोष ने इसे उच्च तथा विशेष धर्म कहा है—"धम्मातिरेकधम्म-विसेसट्ठेन अभिधम्मो ति[3]"।

अभिधर्म पिटक में सात ग्रन्थ हैं। इन्हें प्रकरण भी कहा जाता है। वे हैं—धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठान[4]। ये सभी प्रकरण पर्यायभेद से अभिधर्म के चार परमार्थ धर्म—चित्त, चैतसिक, रूप तथा निर्वाण पर प्रकाश डालते हैं। इनका प्रतिपाद्य विषय एक होते हुए भी वर्णन-प्रक्रिया भिन्न है। इस कारण ही केन्द्र भूत चार परमार्थ धर्मों का अनेक दृष्टिकोणों से परीक्षण, विश्लेषण तथा मूल्यांकन हो सका है।

---

१. एतानि हि तीणि पिटकानि यथाक्कमं आणा-वोहार-परमत्थदेसना, यथापराध-यथानुलोम-यथाधम्मसासनानि, संवरासंवर-दिट्ठिविनिवेठन-नामरूपपरिच्छेदकथा चा ति वुच्चन्ति। अ० सा० १८।

२. अभिधम्मं पत्वा पन सुत्तन्तभाजनिय-अभिधम्मभाजनिय-पञ्हापुच्छकनयानं वसेन निप्पदेसतो विभत्ता। अ० सा० ३।

३. अ० सा० ३।

४. धम्मसंगणि-विभंगो च, धातुकथा तथापरं।
तथा पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थुप्पकरणं॥
यमकं अथ पट्ठानं, इमे सत्त पभेदतो।
अभिधम्मो तिपिटकं, सम्मासम्बुद्धदेसितं॥ स० सं० ८।

कथावत्थु अभिधर्म पिटक का एक प्रमुख प्रकरण है। 'कथा' शब्द यहाँ विचार-विमर्श या मत का द्योतक है। 'वत्थु' का अर्थ है आधार या स्थान। अतः जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है, यह प्रकरण विचार-विमर्श या विभिन्न मतों का आधार रूप है। अध्ययन से ज्ञातव्य है कि कथावत्थु में दो सौ सत्ताइस विचारों को उपस्थित कर उनका स्थविरवादी दृष्टिकोण से परीक्षण तथा निराकरण परिप्रश्नात्मक ढंग से किया गया है।

कथावत्थु में तेइस अध्याय हैं। इन्हें वर्ग कहा गया है। प्रत्येक वर्ग में कुछ प्रश्न तथा उनका समाधान है। प्रश्नों की संख्या एक सी नहीं है। वह विभिन्न वर्गों में छः से लेकर बारह तक है। इनकी कुल संख्या दो सौ सत्ताइस है। प्रत्येक प्रश्न एक दार्शनिक सिद्धान्त की पृष्ठभूमि में स्थविरवाद को लक्ष्य कर उपस्थित किया गया है। उनका विसर्जन स्थविरवाद की मान्यताओं के प्रकाश में तर्क-पुरस्सर किया गया है। इस प्रकार यह सम्पूर्ण ग्रन्थ इन्हीं प्रश्नों एवं उनके समाधान रूप है। वर्गानुसार प्रश्नों का विवरण निम्नलिखित क्रम से जाना जा सकता है—

वर्ग-संख्या	प्रश्न-संख्या	वर्ग-संख्या	प्रश्न-संख्या
१	१०	१३	१०
२	११	१४	६
३	१२	१५	११
४	१०	१६	१०
५	१०	१७	११
६	१०	१८	९
७	१०	१९	८
८	११	२०	६
९	११	२१	८
१०	११	२२	१०
११	१०	२३	९
१२	१०		
			२२७

कथावत्थु अभिधर्म पिटक का पञ्चम प्रकरण है। यह क्रम प्राचीन परम्परा से समर्थित है[1]। पर कुछ आचार्यों का इसके पञ्चम स्थान पर मतभेद है। महा-

१. अ० सा० ३-४।

बोधिवंस में अभिधर्म पिटक के ग्रन्थों की सूची में इसका तीसरा स्थान है[१]। डा० बी० सी० लाहा ने भी क्रम में इसका तीसरा स्थान स्वीकार किया है[२]। डा० भरत सिंह उपाध्याय ने इसे तीसरा होने में आपत्ति की है। उनके अनुसार इसे अभिधर्म पिटक का अन्तिम ग्रन्थ मानना युक्त है[३]। धम्मसंगणि, विभंग, कथावत्थु, पुग्गल-पञ्ञत्ति, धातुकथा, यमक, तथा पट्ठान रूप से अभिव्यक्त क्रम को उन्होंने परम्परा-नुकूल बतलाया है। साथ ही उनके अन्यान्य अंगों पर विचार करते हुए अभिधर्म पिटक के ग्रन्थों का अधिक ठीक कालक्रम यह स्वीकार किया है—पुग्गलपञ्ञत्ति, धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, यमक, पट्ठान और कथावत्थु[४]। इस प्रसंग में श्रीमती रीज डेविड्स तथा एस० जेड० आंग के कथावत्थु के अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका में व्यक्त विचार विशेषतः द्रष्टव्य हैं।

२. कथावत्थु के प्रणयन की पृष्ठभूमि

कथावत्थु-अट्ठकथा से प्रकट है कि सम्राट् अशोक को बौद्ध धर्म के प्रति अपार श्रद्धा थी। बौद्ध शासन की रक्षा तथा भिक्षुओं की सुख-सुविधा के लिए राजा की ओर से प्रति दिन पाँच लाख रुपयों का व्यय होने लगा था। बुद्ध, धर्म एवं संघ की महती पूजा होने लगी थी। उनके आचार्य न्यग्रोध स्थविर को सर्व प्रकार का राजकीय संरक्षण प्राप्त था। नगर के चार द्वारों पर निःशुल्क भैषज्य आदि की व्यवस्था थी। भिक्षुओं को सभी सुविधायें तथा अपूर्व राजसम्मान प्राप्त था[५]।

बौद्ध भिक्षुओं की ये सुविधायें अन्य तैर्थिकों के लिए लोभ का कारण बन

---

१. धम्मसंगणि-विभंगं च, कथावत्थु च पुग्गलं।
धातु-यमक-पट्ठानं, अभिधम्मो ति वुच्चति॥
म० बो० वं० ९४।

२. ए हिस्ट्री आफ पालि लिटरेचर, १. ३१६।

३. पालि साहित्य का इतिहास, ३४१।

४. पालि साहित्य का इतिहास, ३४६।

५. सासने पटिलद्धसद्धो असोको धम्मराजा दिवसे दिवसे बुद्धपूजाय सतसहस्सं, धम्मपूजाय सतसहस्सं, संघपूजाय सतसहस्सं, अत्तनो आचरियस्स निग्रोधत्थेरस्स सतसहस्सं चतूसु द्वारेसु भेसजत्थाय सतसहस्सं ति पञ्चसतसहस्सानि परिच्चजन्तो सासने उळारं लाभसक्कारं पवत्तेसि। प० प० अ० ७।

गई। वे सामान्य अन्न-वस्त्र भी न पाकर बड़े खिन्न हो उठे। उन्होंने सुखमय जीवन व्यतीत करने का एक मात्र मार्ग भिक्षुजीवन समझ, स्वयं केश मुण्डित कर काषाय वस्त्र धारण कर अपने को सौगत बतलाते हुए संघ में सम्मिलित हो गये। वे ऐसा करते हुए बाह्य रूप से भिक्षु तो अवश्य प्रतीत होते थे, पर उनका धार्मिक जीवन पूर्ववत् ही था। उनमें कोई अग्नि-परिचर्या करता था, कोई सूर्य की आराधना करता था, कोई पञ्चाग्नि के मध्य तपस्या करते देखा जाता था, कोई धर्म, विनय तथा बुद्ध के उपदेशों का अपने ढंग से अर्थ करता था। वे इस प्रकार की मिथ्या-दृष्टियों से आक्रान्त उपोसथ के समय संघ में भी प्रविष्ट होते थे तथा सौगत भिक्षुओं द्वारा भर्त्सित हो शासन को मलिन बनाने में यत्नवान हो उठते थे। उनके आगमन से संघ में ऐसी धार्मिक अव्यवस्था आ गई कि यह निर्धारण करना कठिन हो गया कि कौन कार्य बुद्ध प्रतिपादित हैं तथा कौन अन्य तैर्थिकों के हैं, कारण सभी अपने को सौगत ही कहा करते थे। अव्यवस्था की ऐसी दशा में उपोसथ तथा पवारणा जैसे धार्मिक कृत्य विरमित हो गये। भिक्षुओं के प्रमुख निवास स्थान अशोकाराम में सात वर्षों तक उपोसथ न हुआ[1]।

बौद्ध धर्म की इस दशा से सम्राट् अशोक अत्यधिक व्यथित हुए। उन्होंने अपने धर्म मन्त्री के सहाय्य से उपोसथ कराना चाहा पर उनके उद्देश्य को उस मंत्री द्वारा सम्यक् रूप से न ग्रहण किये जाने के कारण अशोकाराम में अनेक भिक्षुओं की हत्या हो गई। इस घटना से उनकी आन्तरिक व्यथा अधिक तीव्र हो उठी तथा संभवतः गुरुतर पाप भागी पांच आनन्तरिक कर्मों के स्मरण ने उनकी विह्वलता में अभिवृद्धि की। उनके सामने अब दो समस्यायें थी—भिक्षुओं की की गई हत्या के पाप से मुक्ति तथा संघ की संशुद्धि। इस उद्देश्य से उन्होंने प्रज्ञावान् स्थविर मौद्गलीपुत्र तिष्य को सादर निमन्त्रित कर इनके समाधान के लिए याचना की। स्थविर ने भिक्षुओं की हत्या की घटना की पृष्ठभूमि का विश्लेषण करते हुए इस सिद्धान्त के प्रकाश में कि "क्लिष्ट चेतना के विना कर्म क्लिष्ट नहीं होता है", यह बतलाया कि उसमें अशोक का कोई दोष नहीं है। इस प्रसंग में उन्होंने तित्तिर-जातक' के प्रसंगों का भी उल्लेख किया[2]। उनके ऐसे वचन से राजा के विप्रतिसार शान्त हुए।

---

१. तदा भिक्खुसंघो न तेहि सद्धिं उपोसथं वा पवारणं व अकासि। असोकारामे सत्तवस्सानि उपोसथो उपच्छिज्जि। प० प० अ० ८।

२. पटिच्च कम्मं नत्थी ति, किलिट्ठं चेतनं विना।
थेरो बोधेसि राजानं, वत्वा तित्तिरजातकं॥ म० वं० ३९।

पुनः स्थविर ने एक सप्ताह तक राजा को धार्मिक प्रवचनों से अभितृप्त कर सातवें दिन अशोकाराम में जा संघ की संशुद्धि का यत्न प्रारम्भ किया। उन्होंने एक प्रकार के धारणायुक्त, भिक्षुओं को बुला उनसे पूछना प्रारम्भ किया कि 'भगवान् बुद्ध का क्या मत था'। इस पर उन लोगों ने अपनी-अपनी पूर्व मान्यताओं के अनुसार ही बुद्ध को शाश्वतवादी, आंशिक शाश्वतवादी, अन्तानन्तवादी, अमरा-विक्षेपवादी, अधित्यसमुत्पन्नवादी, संज्ञीवादी, असंज्ञीवादी आदि बतलाया। स्थविर की ऐसी परीक्षा से राजा को भी स्पष्ट हो गया कि वे भिक्षु न हैं, अन्य तैर्थिक हैं। उन्होंने ऐसे साठ हजार तैर्थिकों को स्वेत वस्त्र दे संघ से निकाल दिया। अवशेष भिक्षुओं से पूछने पर उन्होंने बतलाया कि भगवान् बुद्ध "विभज्जवादी" हैं। उनके ऐसे उत्तर से सन्तुष्ट हो, 'संघ शुद्ध हो गया', भिक्षु उपोसथ करें, ऐसी आरक्षा दे राजा ने नगर में प्रवेश किया। भिक्षु संघ ने पाटलीपुत्र के अशोकाराम में उपोसथ किया। परम्परा के अनुसार उस उपोसथ में साठ लाख भिक्षु सम्मिलित थे।

भिक्षुओं के ऐसे समागम में स्थविर मौद्गलीपुत्र तिष्य ने सौगत शासन-विषयक उत्पन्न तथा उत्पद्यमान समस्याओं का आकलन कर उनके निवारणार्थ शास्ता द्वारा दिये गये नयों के अनुसार स्थापित मात्रिकाओं का विस्तार किया। इनमें पाँच सौ सूत्र स्व पक्ष के थे तथा पाँच सौ पर पक्ष के। इन्हीं एक हजार सूत्रों के योग से उन्होंने 'कथावत्थु' प्रकरण का प्रणयन किया[१]।

तैर्थिकों के निष्कासन तथा कथावत्थु के प्रणयन से ही शासन-संशुद्धि के प्रश्न का पूर्ण समाधान नहीं था। शासन की भीत्ति है—'बुद्धवचन'। उसके सुग्रहण से ही शासन की दृढ़ता समझी जा सकती है। इस उद्देश्य से स्थविर ने साठ लाख भिक्षुओं में से एक हजार त्रिपिटकधर भिक्षुओं को चुन उस अशोकाराम में तृतीय संगीति का आयोजन किया तथा प्रथम एवं द्वितीय संगीति की भांति ही वहाँ समस्त बुद्धवचन का विभिन्न नयों से संगायन किया गया। इस क्रम में अभिधर्म पिटक का

१. तस्मिं समागमे मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो यानि च तदा उप्पन्नानि वत्थूनि, यानि च आयतिं उप्पज्जिस्सन्ति, सब्बेसं पि तेसं पटिबाहनत्थं सत्थारा दिन्ननयवसेन तथागतेन ठपितमातिकं विभजन्तो सकवादे पञ्च सुत्तसतानि परवादे पञ्चा ति सुत्तसहस्सं आहरित्वा इमं परप्पवादमथनं आयतिलक्खणं कथावत्थुप्पकरणं अभासि। प० प० अ० ९।

संगायन करते हुए 'कथावत्थु' का भी संगायन किया गया[१]।

यहाँ दर्शनीय बात यह है कि प्रकृत प्रकरण में जो कथावत्थु के प्रणयन का विवरण उपलब्ध है, वह दो चरणों में सम्पन्न है। अशोक के संरक्षण में अशोकाराम में जो सात वर्षों के अनन्तर उपोसथ के लिए साठ लाख भिक्षुओं के संघ का समागम हुआ, उसी में 'कथावत्थु' का आख्यान अर्थात् प्रणयन हुआ, तथा उन भिक्षुओं से चुने हुए एक हजार भिक्षुओं के योग से जो तृतीय संगीति हुई, उसमें इसका संगायन हुआ। यह विवरण 'महावंस' 'अट्ठसालिनी' आदि ग्रन्थों में उपलब्ध वर्णन से कुछ पार्थक्य स्थापित करता है। महावंस के अनुसार 'कथावत्थु' का आख्यान तथा संगायन तृतीय संगीति में ही हुआ[२]। अट्ठसालिनी में भी जो 'कथावत्थु' के विस्तार विषयक भविष्यवाणी है, उसमें सहस्र भिक्षुओं की सभा मध्य इसके होने का उल्लेख है[३]। इन दो प्रकार के कथनों पर विचार करने से यह स्वाभाविक सा है कि पहले 'कथावत्थु' के स्वरूप का निर्धारण हुआ होगा तथा इसके अनन्तर उसका संगायन हुआ होगा। ऐसी दशा में 'कथावत्थु-अट्ठकथा' का विवरण ही युक्त प्रतीत होता है।

कथावत्थु के प्रणयन-प्रसंग से ज्ञात होता है कि इसकी रचना एक सहस्र सुत्तों (सूत्रों) के योग से की गई थी, जिनमें पाँच सौ सूत्र स्व पक्ष के थे, तथा पाँच सौ पर पक्ष के। यहां 'सुत्त' शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं प्रतीत होता है। अट्ठकथाकार भी इसके व्याकरण में शान्त हैं। यदि एक एक शंका-स्थल या मत को एक सुत्त तथा उस एक एक के निराकरण को एक एक सुत्त माना जाय तो इस ग्रन्थ में पाँच सौ मत तथा पाँच सौ निराकरण होने चाहिए। अध्ययन से केवल दो सौ सत्ताइस शंका-स्थलों की ही प्राप्ति होती है, जो प्रकृत प्रकरण में निराकृत हैं। इस प्रकार शंका-स्थल तथा निराकरण के योग से भी चार सौ चौवन सुत्तों का ही विवरण प्राप्त हो सकता है। ऐसी दशा में इस प्रकार की शंका का भी जन्म हो सकता है कि सम्प्रति प्राप्त कथावत्थु असम्पूर्ण प्रकरण है। इसका एक बड़ा अंश, जिसमें (१०००-४५४=५४६) पाँच सौ छयालीस शंका समाधान अवशेष हैं, अप्राप्त हैं।

---

१. तत्थ अभिधम्मं संगायन्तो इमं यथाभासितं पकरणं संगहं आरोपेसि। प. प. अ. ९।

२. कथावत्थुप्पकरणं, परवादप्पद्दनं।
अभासि तिस्सथेरो च, तस्मिं संगीतिमण्डले॥ म. वं. ४०।

३. मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो नाम भिक्खु भिक्खुसहस्समज्झे निसिन्नो सकवादे पञ्च सुत्तसतानि परवादे पञ्चा ति सुत्तसहस्सं समोधानेत्वा दीघनिकायप्पमाणं कथावत्थुप्पकरणं भाजेस्सती ति। अ. सा. ५।

पर किसी भी परम्परा से इस आशंका की संपुष्टि नहीं देखी जाती है। फलतः इस दिशा में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि उस समय 'सुत्त' विषयक कोई गणन-प्रक्रिया विद्यमान रही होगी जो काल-प्रवाह के संघर्षण के फलस्वरूप अभी विस्मृत सी हो गई है, जो गवेषणीय है।

३. कथावत्थु की प्रामाणिकता

परम्परा के अनुसार 'कथावत्थु' की गणना अभिधर्म पिटक के पांचवे प्रकरण के रूप में की जाती है। अन्य ग्रन्थों की भांति यह भी बुद्धदेशित तथा प्रथम संगीति में संगायित बतलाया जाता है[1]। पुनः वही परम्परा प्रसंग भेद से इस कथन का भी संपोषण करती है कि कथावत्थु का प्रणयन भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के दो सौ अट्ठारह वर्ष बाद सम्राट् अशोक के काल में मौद्गलीपुत्र तिष्य नामक स्थविर द्वारा किया गया[2]। इन दोनों कथनों को लक्ष्य कर एक स्वाभाविक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि जब कथावत्थु का प्रणयन मौद्गलीपुत्र तिष्य द्वारा हुआ तो वह बुद्धवचन कैसे हो सकता है तथा बुद्धवचन न होने पर उसकी गणना अभिधर्मपिटक के अन्तर्गत कैसे युक्त कही जा सकती है।

यह सत्य है कि सभी बौद्ध सम्प्रदाय अभिधर्मपिटक को सात प्रकरणों से युक्त बतलाते हैं,केवल वितण्डावादियों द्वारा कथावत्थु की प्रामाणिकता पर आक्षेप दर्शाया जाता है। वे सात प्रकरणों के आख्यान-क्रम में कभी तो 'कथावत्थु' के स्थान पर 'महाधातुकथा तथा कभी 'महाधम्महदय' नामक ग्रन्थों के नाम उपस्थित करते हैं, पर उनकी स्वतन्त्र उपलब्धि के प्रश्न पर शान्त हो जाते हैं[3]।

तब इस दिशा में वास्तविकता क्या हो सकती है ? इसका उत्तर परम्परा से ऐसा प्राप्त है कि भगवान् बुद्ध ने अभिधर्म की देशना करते हुए कथावत्थु की भी देशना की थी, पर उसका उपदेश केवल मात्रिकाओं के रूप में था। बुद्ध सर्वज्ञ थे। उन्होंने उन मात्रिकाओं का विस्तार उस समय युक्त न समझा, कारण उसकी

---

१. पकरणपरिच्छेदतो पनेस धम्मसंगणि-विभंग-धातुकथा-पुग्गलपञ्ञत्ति-कथावत्थु-यमक-पट्ठानानं सत्तन्नं पकरणानं वसेन ठितो। अयमेत्थ आचरियानं समानकथा।
अ. सा. ४।

२. मम परिनिब्बानतो अट्ठारसवस्साधिकानं द्विन्नं वस्ससतानं मत्थके मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो ......कथावत्थुप्पकरणं भाजेस्सती ति। अ. सा. ४-५।

३. अ. सा. ४।

आवश्यकता न थी। उनके सामने वह क्षण भी स्पष्ट था, जब उनके विस्तार की आवश्यकता हो सकती थी। इसलिए उस क्षण को लक्ष्य कर उन्होंने भविष्यवाणी की कि "मेरे निर्वाण के दो सौ अठारह वर्ष बाद मौद्गलीपुत्र तिष्य नामक भिक्षु एक हजार भिक्षुओं के मध्य आसीन हो स्व पक्ष के पाँच सौ सूत्रों तथा पर पक्ष के पांच सौ सूत्रों के योग से एक सहस्र सूत्रों से उपेत दीघनिकाय के आकार का 'कथावत्थु' प्रकरण का आख्यान करेंगे"। इससे यह प्रकट होता है कि मात्रिकाओं की स्थापना तथा भविष्य में उनके विस्तार की योजना भगवान् बुद्ध द्वारा ही की गयी थी। इसलिए स्थविर मौद्गलीपुत्र तिष्य ने अपने ज्ञान से 'कथावत्थु' का प्रणयन नहीं किया था, वरन् भगवान् द्वारा दर्शित नयों के अनुसार स्थापित मात्रिकाओं का विस्तार मात्र किया था[1]।

तब इससे यह फलित होता है कि 'कथावत्थु' के दो भाग हैं—'मात्रिका तथा उनका विस्तार'। इनमें मात्रिकाओं की स्थापना भगवान् बुद्ध द्वारा की गई थी तथा उनका विस्तार एवं विश्लेषण मौद्गलीपुत्र तिष्य द्वारा किया गया था। पर इस कथन से भी प्रश्न का समाधान नहीं प्रतीत होता है, कारण जो कथावत्थु उपलब्ध है, उसमें यह दर्शाना कठिन है कि उसके इतने अंश मात्रिका हैं तथा इतने उनकी व्याख्या। वह अभी एक पूर्ण इकाई रूप में उपलब्ध है। साथ ही ऐसा स्वीकार कर लेने पर भी इतना तो स्पष्ट सा है कि इस सम्पूर्ण प्रकरण का कुछ भाग स्थविर मौद्गलीपुत्र तिष्य द्वारा रचित है और वह श्रावक भाषित होने के कारण बुद्ध वचन नहीं हो सकता है। ऐसी दशा में 'कथावत्थु' की प्रामाणिकता विवादग्रस्त ही रह जाती है।

इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि बुद्धवचन दो प्रकार के होते हैं—बुद्ध भाषित तथा बुद्ध अनुमोदित। बुद्धभाषित की स्वीकृति के सम्बन्ध में तो कुछ कहना ही नहीं है। बुद्ध-अनुमोदित के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि त्रिपिटक में ऐसे अनेक सुत्त हैं, जिनका उपदेश बुद्ध के शिष्यों द्वारा किया गया था। कालान्तर में वे बुद्ध द्वारा अनुमोदित हुए तथा अनुमोदनोपरान्त वे भी बुद्ध वचन कहलाये[2]। उदाहरण स्वरूप 'सम्मादिट्ठिसुत्त'[3] का उपदेश सारिपुत्र द्वारा दिया गया था।

१. मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो पि इदं पकरणं देसेन्तो न अत्तनो ञाणेन देसेसि, सत्थारा पन दिन्ननयेन ठपितमातिकाय देसेसि। अ० सा० ५।

२. एवं सत्थारा अनुमोदनकालतो पट्ठाय पन सकलं सुत्तन्तं बुद्धभासितं नाम जातं। आनन्दत्थेरादीहि वित्थारितसुत्तन्तेसु पि एसेव नयो। अ० सा० ६।

३. म० नि० १. ६२-७५।

'मधुपिण्डिकसुत्त'[1] महाकात्यायन द्वारा उपदिष्ट था। इनके उपदेश प्रसंग से विदित होता है कि कालान्तर में इन्हें भगवान् द्वारा अनुमोदन प्राप्त था। फलतः वे बुद्ध वचन के रूप में स्वीकृत हैं। इसी न्याय से कहा जा सकता है कि 'कथावत्थु' के आख्यान का अनुमोदन भगवान् द्वारा पूर्व में ही प्राप्त था। इसलिए यह सम्पूर्ण प्रकरण बुद्ध वचन के रूप में ही स्वीकृत है।

परम्परा से प्राप्त इस कथन से यद्यपि जिज्ञासा-परितृप्ति में तावत्कालिक विरमिति हो सकती है पर नितरां शान्ति नहीं। अनुमोदन के जो प्रसंग आये हैं, वहाँ सर्वत्र सुत्त की देशना के अनन्तर ही अनुमोदन है, कारण उपदिष्ट सुत्त का श्रवण कर ही बुद्ध अनुमोदन किया करते थे। पर कथावत्थु के पक्ष में यह बात चरितार्थ नहीं हो सकती है। जब देशना ही नहीं हुई तो उसका अनुमोदन कैसा? यदि पूर्वानुमोदन ही इष्ट कहा जाय तो वह देशना करने का हो सकता है, उपदिष्ट सामग्री के विषय में नहीं। ऐसी दशा में कथावत्थु की प्रामाणिकता में अन्य सबल प्रमाणों की अपेक्षा विद्यमान है।

४. अठारह आचार्यवाद

भगवान् बुद्ध ने बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' की उदात्त भावना से जिस धर्म शासन की स्थापना की थी, वह उनके जीवन काल में अखण्ड बना रहा। विभिन्न कुलों से प्रव्रजित कुलपुत्र संघ में क्षीरोदकी भाव से बिहार करते थे। भगवान् ने सर्वदा उनकी अखण्डता, समग्रारामता तथा एकता पर बल दिया। पर उनके महा-परिनिर्वाण के अनन्तर शीघ्र ही संघ की अखण्डता की भित्ति प्रकम्पित देखी जाने लगी। ऐसे प्रकम्पन का प्रथम रूप 'सुभद्र' के वचनों में देखा जाता है, जब वे तथागत के महापरिनिर्वाण के प्रसंग में ऐसा कहते हुए सुने गए कि "आयुस्मान्, शोक न करें, रोदन न करें, हमलोग महाश्रमण से मुक्त हो गये, जो (सर्वदा) ऐसा कहा करते थे कि यह विहित है, यह विहित नहीं है[2], आदि।

इसका दूसरा रूप प्रथम संगीति के अन्त में देखा जाता है। महाकाश्यप ने पाँच सौ अर्हत् भिक्षुओं के योग से जो बुद्धवचन का संगायन कर तीन पिटकों में विभक्त

---

१. म० नि० १. १४६-१६७।

२. अलं, आवुसो, मा सोचित्थ, मा परिदेवित्थ। सुमुत्ता मयं तेन महासमणेन। उपद्दुता च मयं होम, इदं वो कप्पति, इदं वो न कप्पती ति। चु. व. ४०६।

कर सुव्यवस्थित रूप दिया, वह सर्वमान्य नहीं हुआ। दक्षिणा पथ से आये स्थविर पोराण को प्रथम संगीति के वृत्तान्त तथा त्रिपिटक के ग्रहण की बात कहे जाने पर उन्होंने उक्त कार्य की प्रशंसा करते हुए भी संगीत त्रिपिटक को उस रूप में ग्रहण करने से अस्वीकार किया। उन्होंने उसे उसी रूप में धारण करना युक्त बतलाया, जैसा उन्होंने भगवान् से सुन रखा था[१]।

तीसरा स्पष्टतर रूप भगवान् के महापरिनिर्वाण के एक सौ वर्ष बाद 'वज्जी पुत्रों' अर्थात् वज्जी गणतन्त्र के भिक्षुओं के दस विनय विरुद्ध आचरण में देखा जाता है[२]। इस घटना के अनन्तर संघ की समग्रारामता छिन्न-भिन्न हो गई तथा अल्प काल में ही इसके कई सम्प्रदाय देखे जाने लगे।

द्वितीय संगीति में दोनों पक्ष के चार-चार भिक्षुओं के योग से गठित उब्बाहिका द्वारा यद्यपि उपस्थित अधिकरण की शान्ति आपाततः हो गई पर भेद की रेखा मिट न सकी[३]। संघ से निष्कासित दस हजार वज्जिपुत्रों ने अपने अनुरूप एक नये संघ की स्थापना की, जिसका नाम महासंघ पड़ा। इसके अनुयायी महासांघिक कहलाये। भेद की दृष्टि से यह प्रथम आचार्यकुल अर्थात् सम्प्रदाय कहा जाता है।

कुछ ही समय के अनन्तर इससे गोकुलिक तथा एकव्यावहारिक नामक दो आचार्यकुल उत्पन्न हुए। पुनः गोकुलिक से पण्णत्तिवादी तथा बाहुलिय दो आचार्यकुल हुए। ये बहुश्रुतिक नाम से भी आख्यात हुए। उनके मध्य से पुनः एक

---

१. थेरेहि, आवुसो पुराण, धम्मो च विनयो च सङ्गीतो उपेहि तं संगीतं ति। सुसंगीतावुसो, थेरेहि भिक्खूहि धम्मो च विनयो च। अपि च यथेव मया भगवतो सम्मुखा सुतं, सम्मुखा पटिग्गहितं, तथेवाहं धारेस्सामी ति। चु. व. ४१२।

२. तदा वेसालिया भिक्खू, अनेके वज्जिपुत्तका।
सिंगिलोणं द्वंगुलं, तथा गामन्तरं पि च॥
आवासानुमताचिण्णं, अमथितं जलोगि च।
निसीदनं अदसकं, जातरूपादिकं इति॥
दसवत्थूनि दीपेंसु, कप्पन्ती ति अलज्जिनो। म. व. १४.

३. पाचीनके च चतुरो, चतुरो पावेय्यके पि च।
उब्बाहिकायं सम्मन्ति, भिक्खू तं वत्थुसन्तिया॥ म. व. १७।

× × ×

तेहि पन धम्मसंगाहकत्थेरेहि निग्गहिता दस सहस्सा वज्जिपुत्तका भिक्खू पक्खं परियेसमाना अत्तनो अनुरूपं दुब्बलपक्खं लभित्वा विसुं महासंघिकाचरियकुलं नाम अकंसु। प. प. अ. ४।

नये आचार्यकुल की उत्पत्ति हुई, जो चैत्यवादी कहलाये। इस प्रकार महासांघिक नामक आचार्यकुल की स्थापना काल से दो सौ वर्षों के मध्य पाँच आचार्यकुल उत्पन्न हुये।

अपर पार्श्व में स्थविरवादी परम्परा भी अखण्ड नहीं रही। उक्त अवधि में ही महिशासक तथा वज्जीपुत्रिय दो आचार्य कुल स्थविरवाद से उत्पन्न हुए। वज्जिपुत्रियों की समग्रता शीघ्र ही भिन्न हो गई। वह धर्मोत्तरीय भद्र यानिक, छन्नागारिक, तथा सम्मितिय नामक चार आचार्य कुलों में विभक्त हो गया। महिशासक भी सर्वास्तिवादी तथा धर्मगुप्तिक दो आचार्यकुलों में विभक्त हो गये। पुनः सर्वास्तिवाद से काश्यपिक तथा काश्यपिक से सांक्रान्तिक नामक आचार्यकुल उत्पन्न हुए। सांक्रान्तिक से सूत्रवादी उत्पन्न हुए। इस प्रकार दो सौ वर्षों की अवधि में स्थविरवाद ग्यारह आचार्यकुलों (संप्रदायों) में विभक्त हो गया। स्थविरवाद के साथ इनकी संख्या बारह बतलायी जाती है। इस प्रकार ये बारह तथा छः महासांघिकों के योग से बौद्ध शासन के अठारह आचार्यकुल हो गये। इनमें स्थविरवाद तो अपने मूल रूप में बना रहा तथा अन्य सत्तरह उसके भेद या सम्प्रदाय हुए।

ये विभेद मूलतः सिद्धान्त विषयक थे। फलस्वरूप प्रत्येक सम्प्रदाय ने अपने सिद्धान्त के अनुरूप धार्मिक साहित्य का सृजन किया तथा उसे बुद्ध देशित तथा अनुमोदित बतलाया। इनके अतिरिक्त भी हेमवतिक, राजगिरिक, सिद्धार्थिक, पूर्वशैलीय, अपरशैलीय तथा वाजिरिय नामक छः आचार्यकुलों की उत्पत्ति की भी चर्चा मिलती है[१]।

अशोक के काल में उक्त अठारह आचार्यकुल विद्यमान थे तथा वे सभी सौगत परम्परा के अन्तर्गत समझे जाते थे। इन अठारह कुलों से युक्त ही बौद्ध शासन की प्रवृत्ति इष्ट बतलायी जाती थी। अशोक को इन सब के प्रति श्रद्धा थी तथा उनके द्वारा प्रदत्त सुविधायें सब के लिए समान थी[२]। इन आचार्यकुलों का सुगम अवबोध निम्नलिखित तालिका से किया जा सकता है—

---

१. प. प. अ. ४—७, दी. वं. ३६।

२. पुरिमकानं पन अट्ठारसन्नं आचरियवादानं वसेन पवत्तमाने सासने पटिलद्धसद्धो असोको धम्मराजा...... उळारं लाभसक्कारं पवत्तेसि। प. प. अ. ७।

बुद्ध-शासन

१

- (१) महासांघिक (छः कुल)
  - (२) एकव्यावहारिक
  - (३) गोकुलिक
  - (४) पण्णत्तिवादी
  - (५) बाहुलिक
    - (६) चैत्यवादी

२

- (१) स्थविरवाद (बारह कुल)
  - (२) महीसासक
    - (३) सर्वास्तिवादी
      - (४) काश्यपीय
        - (५) सांक्रान्तिक
          - (६) सूत्रवादी
    - (७) धर्मगुप्तिक
  - (८) वज्जिपुत्रीय
    - (९) धर्मोत्तरीय
    - (१०) भद्रयानिक
    - (११) छन्नागारिक
    - (१२) सम्मितिय

५. पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

धातुकथा, पुग्गलपञ्ञात्ति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठान अभिधर्म पिटक के पांच प्रकरण अर्थात् ग्रन्थ हैं। इन पांच ग्रन्थों पर एक साथ भाष्य लिखे जाने के कारण इसे 'पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा' कहा जाता है। इसकी रचना पांचवी शताब्दी के प्रारम्भ में आचार्य बुद्धघोष द्वारा की गई है। कहा जाता है कि आचार्य बुद्धघोष ने अपने गुरु की आज्ञा से अट्ठकथाओं के उद्धार के लिए पांचवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लंका की यात्रा की थी। उन्होंने अनुराधपुर महाविहार में निवास कर त्रिपिटक सहित अट्ठकथाओं का सर्वेक्षण कर उनका पालि में प्रणयन किया था[1]।

---

1. The king Mahanama, as the Ceylonese chronicle shows reigned in the first half of the 5th Century A. D.; and as Buddhaghosa visited Ceylon and worked there during this period, we can be certain about the age he lived in.
—A History of Pali Literature, vol. II, P. 389
by B. C. Law.

o o o

........he would belong to the 5th Century A. D. It is, however, confirmed by the fact that a work by Buddhaghosa was already translated into chinese in 489. A. D.
—History of Indian Literature, vol. II,
p.190 by Winternitz.

o o o

सम्बुद्धपरिनिब्बाना, नववस्ससतेसु च।
छपञ्ञासतिकन्तेसु, महानामो नराधिपो॥
धम्मेन दसविधेन, लंकारज्जं अकारयी।
बुद्धघोसो ति घोसोहि, बुद्धो विय महीतले॥
लंकादीपम्हि आगम्म, लंकादीपहितावहं।
परिवत्तेसि सब्बापि, सीहलट्ठकथा तदा।
सब्बेसं मूलभासायं, मागधानं निरुत्तिया॥
स० सं० ३५।

o o o

The Kathāvatthu-atthakathā is a Commentary on the Kathāvatthupakaraṇa written by Buddhaghosa.
—A History of Pali Literature—Vol. II,
p. 477 by B. C. Law.

अट्ठसालिनी की प्रारम्भ-गाथाओं में अभिव्यक्त परम्परा के अनुसार अट्ठकथाओं की रचना भगवान् बुद्ध द्वारा की जाने की सूचना मिलती है। प्रथम संगीति में त्रिपिटक के साथ साथ इनका भी संगायन हुआ था तथा कालान्तर में भी वे तथा-रूप संगापित हुईं। महेन्द्र ने अपनी सिंहल-यात्रा के क्रम में इन्हें त्रिपिटक के साथ लंका पहुँचाया[1]। संभवतः सिंहलवासियों ने अपनी सुविधानुसार इन्हें सिंहली भाषा में अनूदित कर लिया था।

कहा जाता है कि आचार्य बुद्धघोष के लंका जाने के पूर्व वहां महा-अट्ठकथा, महापच्चरी-अट्ठकथा तथा महाकुरुन्दी-अट्ठकथा नामक तीन सिंहल-अट्ठकथायें विद्यमान थीं। इनमें महापच्चरी-अट्ठकथा अभिधर्मपिटक की अट्ठकथा थी। आचार्य बुद्धघोष ने इसी के आधार पर अभिधर्मपिटक के ग्रन्थों पर पालि भाषा में अट्ठकथायें लिखी[2]। 'गन्धवंस' के अनुसार अभिधर्म के सात प्रकरणों पर लिखी गई अट्ठकथा का नाम 'परमत्थ-अट्ठकथा' बतलाया जाता है। इसके लेखक महाबुद्धघोषाचार्य कहे गये[3] है। इन सब उत्सों से अभिधर्म की अट्ठकथाओं के लेखक आचार्य बुद्धघोष सिद्ध होते हैं।

६. कथावत्थु-अट्ठकथा

कथावत्थु-अट्ठकथा अभिधर्म के पञ्चम प्रकरण कथावत्थु का भाष्य है। इसमें कथावत्थु में आगत विषयों का विश्लेषण, परिष्करण एवं मूल्यांकन किया गया है। इसलिए इसकी प्रवृत्ति कथावत्थु के अनुसार ही है। इसमें भी कथावत्थु की भांति तेइस वर्ग तथा दो सौ सत्ताइस शंकास्थल हैं। केवल इसमें वर्णित विषय की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने के उद्देश्य से प्रारम्भ में निदानकथा नामक एक भूमिका दी गई है। इसमें भगवान् बुद्ध के देशना-काल से लेकर अशोक के समय तक के बौद्ध

---

१. या महाकस्सपादीहि, वसीहट्ठकथा पुरा।
संगीता अनुसंगीता, पच्छा पि च इसीहि या॥
आभटा पन थेरेन, महिन्देनेधमुत्तमं।
यं दीपं दीपवासीनं, भासाय अभिसंखता॥
अ० सा० २।

२. तदनन्तरं अभिधम्मपिटके महापच्चरियट्ठकथा सीहलभासं परिवत्तेत्वा मूलभासाय मागधिकाय निरुत्तिया अट्ठसालिनी नाम धम्मसंगणि-अट्ठकथं च ठपेसि। तथा सम्मोह-विनोदनी नाम विभंगप्पकरणट्ठकथं च ठपेसि। स० सं० ३५।

३. ग. वं. ५९.।

शासन के विकास का संक्षिप्त रूप पूर्व पीठिका के रूप में चित्रित है। इससे आगे वर्णित विषय के सुखावबोध में प्रभूत सहायता मिलती है।

अन्य वर्गों के प्रसंग में इसकी प्रवृत्ति 'चुल्लनिद्देस' तथा 'महानिद्देस'[1] में आगत शैली का अनुसरण करती है। मूल ग्रन्थ में प्रयुक्त सभी पदों की यहाँ व्याख्या नहीं है, वरन् जो पद व्याख्येय हैं, उन्हें उदाहृत कर उनमें निहित अर्थ, परम्परा, तथा मान्यताओं का उत्तानिकरण किया गया है। उदाहरणतः महावग्ग में प्रथम विवेच्य प्रसंग 'पुग्गलकथा' है। इसमें "पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना ति" प्रथम वाक्य है। इसमें सभी पद व्याख्येय हैं। फलतः 'पुग्गल', 'उपलब्भति', 'सच्चिकट्ठो', तथा 'परमत्थो' चारो पदों की व्याख्या की गई है। यथा 'पुग्गल' का अर्थ 'आत्मा, सत्त्व या जीव' है। 'उपलब्भति' से 'प्रज्ञा द्वारा प्राप्त होना या बोध होना' द्योतित होता है, आदि। कहीं कहीं कुछ पदों की व्याख्या कर अवशेष के सम्बन्ध में केवल 'सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति' (क० व० अ० १०७) अर्थात् 'शेष अंश स्पष्ट है', कहकर व्याख्या विरमित हो जाती है। ऐसे भी प्रसंग देखे जाते हैं, जहाँ कुछ पदों का स्पष्टतर विश्लेषण कर अवशेष को मूल ग्रन्थ के प्रकाश में समझने का संकेत मिलता है, यथा "तं सब्बं पालिअनुसारेनेव वेदितब्बं" (क० व० अ० १२२)। यत्र तत्र अट्ठकथाकार ने प्रसंग के पूर्वापर में सामंजस्य दर्शाने या अपने कथन को सम्पुष्ट करने के लिए अन्यत्र आगत बुद्धवचन का समाहरण किया है (क० व० अ० १२०, १०४)। इस प्रकार कथावत्थु के विषय को सर्व विध बोधगम्य बनाना अट्ठकथाकार का उद्देश्य प्रतीत होता है।

७. कथावत्थु के मत एवं उनके सम्प्रदाय

पूर्व में कहा जा चुका है कि कथावत्थु के तेईस वर्गों में दो सौ सत्ताइस दार्शनिक सिद्धान्तों को कथन-पर्याय से पूर्व पक्ष में रख कर स्थविरवादी दृष्टिकोण से उनका खण्डन किया गया है। मूल ग्रन्थ में यह कहीं भी अभिदर्शित नहीं है कि यह मत अमुक सम्प्रदाय का है। अट्ठकथा में प्रायः प्रत्येक मत के पक्ष में यह दर्शाने का यत्न है कि यह अमुक सम्प्रदाय या सम्प्रदायों का है। इनमें वज्जिपुत्रीय, सम्मितिय, सर्वास्तिवादी, महासांघिक, पूर्वशैलीय, अपरशैलीय आदि ऐसे मतों का उल्लेख है, जो अशोक के काल तक बुद्ध-शासन के अठारह सम्प्रदायों में विभक्त हो जाने के कारण स्थविरवाद से भिन्न सतरह आचार्य कुलों के मतों के रूप में

१. ये खुद्दकनिकाय के दो ग्रन्थ हैं।

देखे जाते थे। साथ ही कुछ ऐसे भी मत हैं, जिनकी उत्पत्ति तथा विकास अशोक के उत्तर कालीन है। इसे लक्ष्य कर प्रश्न यह उत्पन्न हो सकता है कि जब कथावत्थु की रचना का सम्बन्ध भगवान् बुद्ध से बतलाया जाता है तथा उनके काल में इन सम्प्रदाओं का जन्म ही नहीं हुआ था, तो भगवान् ने किस आधार पर उन्हें उदाहृत कर निराकृत किया।

इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि भगवान्, ने कथावत्थु में जिन मतों का खण्डन किया है, उन्हें किसी सम्प्रदाय का मत मानकर खण्डन नहीं किया है। वे सर्वज्ञ थे तथा धर्मशासन की रक्षा उनका उद्देश्य था। इस दृष्टि से अनागत में धर्म-शासन को लक्ष्य कर जिन-जिन आक्षेपों की संभावना हो सकती थी, उन्हें अधिकतम रूप में आकलित कर उनकी स्थापना तथा निराकरणरूप मात्रिकाओं की स्थापना की। मौद्गलीपुत्र तिष्य के सम्बन्ध में भी ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उनके सम्मुख विपक्षियों की पंक्ति थी और उन्होंने एक-एक के साथ विवाद करते हुए, जितने विपक्षी थे, उतने मतों का आख्यान तथा निराकरण किया, वरन् स्थापित मात्रिकाओं के सम्बन्ध में निर्देशित नयों का अनुसरण तथा सम्यक् रूप से परिष्करण मात्र ही उनका कार्य था[१]। या यों भी कहा जा सकता है कि "कथावत्थु के विचारक ने उन विरोधी सिद्धान्तों का खण्डन किया था, जो बौद्ध वायुमण्डल में विच्छिन्न शंकाओं के रूप में प्रवाहित अवश्य हो रहे थे, किन्तु निश्चित सम्प्रदाओं के साथ उनका अभी सम्बन्ध स्थापित नहीं हुआ था"[२]।

जब वास्तविकता ऐसी है तो अट्ठकथाकार ने 'सकवादीपुच्छा', 'परवादीपुच्छा', 'सकवादीपटिञ्ञा', 'परवादीपटिञ्ञा' आदि क्यों कहा हैं? उत्तर है कि स्थविरवादी मत तथा इतर मतों में पार्थक्य दर्शाते हुए उनके सिद्धान्तगत अर्थ के सुखावबोध के लिए ही वैसा कहा गया है[३]।

---

१. कस्स पनायं पुच्छा, कस्स पटिजानना ति ? असुकस्सा ति न वत्तब्बा। भगवता हि इमस्मिं पकरणे नानप्पकारानं लद्धीनं विसोधनत्थं तन्तिवसेन मातिका ठपिता। सा थेरेन सत्थारा दिन्ननयेव ठत्वा तन्तिवसेन विभत्ता। न हि थेरा यत्तका एत्थ वादमग्गा दस्सिता, तत्तकेहि वादीहि सद्धिं वादेन विग्गाहित कथं कथेसि। प. प. अ. ११.।

२. पालि साहित्य का इतिहास, ४२६.।

३. एवं सन्ते पि पन तासं तासं कथानं अत्थस्स सुखावधारणत्थं सकवादीपुच्छा, परवादी पुच्छा, सकवादीपटिञ्ञा, परवादीपटिञ्ञा ति एवं विभागं दस्सेत्वा व अत्थवण्णनं करिस्साम। प० प० अ० ११।

पुनः श्रट्ठकथाकार ने प्रायः प्रत्येक मत के साथ जो एक या कई सम्प्रदाश्रों का सम्बन्ध दर्शाया है, उसके सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि कथावत्थु की रचना-काल के सम्बन्ध में परम्परा तथा श्रालोचक छट्ठी शताब्दी पूर्व से लेकर दो सौ छयालीस ई० पूर्व श्रशोक के काल तक बतलाते हैं। इसकी श्रट्ठकथा का रचना काल है—पांचवी शताब्दी का पूर्वार्द्ध। श्रतः मूल ग्रन्थ तथा श्रट्ठकथा के रचना काल में श्रवधि की एक लम्बी दूरी है। इस श्रवधि में बौद्ध धर्म के विकास के इतिहास में प्रभूत परिवर्द्धन, परिवर्त्तन एवं विकसन की रेखायें देखी जाती हैं। जिस काल में श्रट्ठकथा लिखी गई उस काल तक बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदाश्रों का स्वरूप निश्चित हो चुका था तथा उस परम्परा में उनकी प्रतिष्ठा भी हो चुकी थी। कोई भी कलाकार श्रपनी कला को युग के प्रभाव से वंचित नहीं रख सकता है। इसलिए श्राचार्य बुद्धघोष ने कथावत्थु के सिद्धान्तों की व्याख्या करते समय जिन-जिन सिद्धान्तों की समता उस काल में प्रचलित या परम्परा से प्राप्त जिन-जिन सम्प्रदाश्रों के सिद्धान्तों से देखी होगी, उन्हें उनके साथ सम्बन्धित कर दिया होगा। श्रट्ठकथा की रचना के समय श्रशोक कालीन तथा उनके उत्तर काल में उत्पन्न सभी सम्प्रदाश्रों एवं उनकी मान्यताश्रों का विवरण श्रट्ठकथाकार के सम्मुख विद्यमान था। इस पृष्ठभूमि में ही उन्होंने सिद्धान्तों का व्याकरण करते हुए उसके श्रनुयायियों तथा सम्प्रदाश्रों का भी उल्लेख किया है[1]।

इस प्रकार श्रट्ठकथा में जिन सिद्धान्तों का खण्डन किया गया है, तथा श्रट्ठकथाकार ने जिनकी संगति जिन-जिन सम्प्रदाश्रों से दर्शायी है, उनका संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित प्रकार से दिया जा सकता है :—

वर्ग—१

१. प्रथम प्रश्न पुद्गल के सम्बन्ध में है। पुद्गल शब्द यहाँ श्रात्मा, जीव या सत्त्व का श्रधिवचन है। कुछ विचारक इसकी सत्ता में विश्वास करते थे। उन्हें ऐसी धारणा भगवत् वचन "श्रत्थि पुग्गलो श्रत्तहिताय पटिपन्नो" के सम्यक् श्रनवबोध के कारण कही जा सकती है। ऐसे विचारकों में वज्जिपुत्रक, सम्मितिय तथा कई श्रन्य तैर्थिकों के नाम प्राप्त होते हैं। श्रन्य तैर्थिकों का श्रभिप्राय यहाँ संभवतः वैदिक तथा जैन परम्परा के चिन्तकों से है। (प. प. श्र. ११.)।१।

---

१. के पन पुग्गलवादिनो ति ? सासने वज्जिपुत्तका, चेव समितिया च, बहिद्धा च बहू अञ्ञतित्थिया। प० प० अ० ११।

× × ×

पालि साहित्य का इतिहास ४२६-२७।

२. अर्हत्व की अवस्था से अर्हत् के पतन की संभावना है। सम्मितिय, वज्जिपुत्रक, सर्वास्तिवादी तथा कुछ महासांघिकों की ऐसी मान्यता थी। स्थविरवाद के अनुसार श्रोतापन्न, सकृदागामी तथा अनागामी के पक्ष में ऐसी संभावना कही जा सकती है। अर्हत् की अवस्था अच्युत पद है (प. प. अ. ४४)। २।

३. देवताओं के मध्य ब्रह्मचर्यवास की संभावना नहीं है। यह सम्मितियों का मत था। स्थविरवाद के अनुसार ब्रह्मचर्यवास का अर्थ प्रव्रज्या तथा मार्गभावना है। प्रव्रज्या देवताओं के मध्य संभव नहीं है, पर असंज्ञीसत्त्व को छोड़ अन्य देवों में मार्गभावना संभव है (प. प. अ. ५०)। ३।

४. संयोजनों का विनाश अंशतः होता है; सम्मितियों की ऐसी धारणा थी। स्थविरवाद के अनुसार संयोजन पूर्णतः प्रहीण होते हैं। प्रहीण संयोजनों का कुछ अवशेष नहीं रहता है। (प. प. अ. ५२)। ३।

५. पृथक्जन द्वारा भी काम, राग, व्यापाद आदि क्लेशों का (गृही जीवन में) विनाश संभव है। सम्मितियों में ऐसी मान्यता देखी जाती है। स्थविरवाद के अनुसार गृही अनागामी अवस्था तक प्राप्त कर सकते हैं। वे अर्हत् नहीं हो सकते हैं (प. प. अ. ५३)। ४।

६. भूत, भविष्यत् एवं वर्तमान में सभी धर्मों का अस्तित्व है, ऐसी सर्वास्तिवादियों की मान्यता थी। स्थविरवाद के अनुसार भूत निरुद्ध हो गया है, भविष्यत् अभी आया ही नहीं है, इसलिए वर्तमान में ही किसी की विद्यमानता कही जा सकती है। (प. प. अ. ५४)। ५।

७. स्कन्ध, आयतन, धातु आदि के प्रसंग में अतीत, अनागत एवं वर्तमान की सत्ता है। इस मान्यता के समर्थक सम्प्रदाय का नाम नहीं मिलता है। संभवतः यह सिद्धान्त भी प्रश्न छः के पूरक रूप में सर्वास्तिवादियों का रहा होगा (प. प. अ. ६२)। ६।

८. भूत, भविष्यत् आदि का अंशतः अस्तित्व है। काश्यपिक इसमें विश्वास करते थे। स्थविरवाद में यह अस्वीकृत है (प. प. अ. ६३)। ७।

९. सभी धर्म स्मृति-उपस्थान हैं; अन्धक इसमें विश्वास करते थे। पूर्वशैलीय, राजगिरिय तथा सिद्धार्थिक भी उनके अनुयायी थे (प. प. अ. ६५)। ८।

१०. अतीत आदि तीन काल में अभिव्यक्त धर्म एक प्रकार से हैं, अन्य प्रकार से नहीं हैं, आदि अन्धकों तथा उनके अनुयायियों को स्वीकार था। स्थविरवाद द्वारा यह निराकृत है। (प. प. अ. ६६)। ९।

वर्ग–२

११. अर्हत् का शुक्र विसर्जन संभव है, ऐसा पूर्वशैलीय तथा अपर-शैलियों का विश्वास था। यस्मात् शुक्र विसर्जन रागजनित है तथा अर्हतों का राग प्रहीण रहता है, अतः अर्हतों के पक्ष में यह असंभव है; ऐसा स्थविरवादी कहते हैं (प० प० अ० ६७) ।१।

१२-१४. अज्ञान, संशय आदि अर्हतों को हो सकते हैं, पूर्वशैलियों का यह मत था। स्थविरवादियों में ऐसी धारणा नहीं है (प० प० अ० ६८) ।२, ३,४।

१५. समाधि की अवस्था में वचन का उद्गीरण संभव है। पूर्वशैलीय इसमें विश्वास करते थे। स्थविरवाद में यह अस्वीकृत है (प० प० अ० ६८) ।५।

१६. 'दुःख, दुःख' का उच्चारण करने मात्र से मनुष्य दुःख का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इस कारण वह दुःखाहारी कहलाता है। वह मार्गपरियापन्न है, ऐसा पूर्वशैलीय मानते थे। स्थविरवादी इसमें विश्वास नहीं करते हैं (प० प० अ० ७०) ।६।

१७. एक ही चित्त दिनभर या अधिक देर तक स्थित रहता है, यह अन्धकों का मत था। स्थविरवादी चित्त को लहुपरिवर्त्ती मानते हैं (प० प० अ० ७०) ।७।

१८. सभी वस्तुयें तप्त अग्नि अंगार सदृश हैं, गोकुलिकों का मत था। भगवान् के इस वचन "सब्बं, भिक्खवे, आदित्तं" के सम्यक् अनवबोध के कारण उनकी ऐसी धारणा थी (प० प० अ० ७१) ।८।

१९. अन्धक, सर्वास्तिवादी, सम्मितिय तथा भद्रयानिकों का विश्वास था कि स्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामो, तथा अर्हत् नामक अवस्थाओं का साक्षात्कार विभागशः संभव है। एक एक की प्राप्ति के समय क्लेशों का अंशतः प्रहाण होता है, पूर्णतः नहीं। उनकी ऐसी धारणा का कारण "अनुपुब्बेन मेधावी……निद्धमे मलमत्तनो" नामक वचन के सम्यक् अनवबोध कहा जा सकता है (प० प० अ० ७१) ।९।

२०. भगवान् बुद्ध का व्यवहार लोकुत्तर है, ऐसी अन्धकों की स्वीकृति थी (प० प० अ० ७३)।१०।

२१. प्रतिसंख्यानिरोध तथा अप्रतिसंख्यानिरोध दोनों निरोध सत्य अर्थात् निर्वाण है, यह महीशासक तथा अन्धकों की मान्यता थी (प० प० अ० ७३) ।११।

वर्ग—३

२२. तथागत के दस बल श्रावकों को भी प्राप्त हो सकते हैं, ऐसी धारणा कुछ वचनों के सम्यक् रूप से नहीं ग्रहण करने के कारण अन्धकों में विद्यमान थी (प० प० अ० ७५) ।१।

२३. आस्रवक्षयज्ञान ही केवल आर्य नहीं है, वरन् पूर्व के नव बल भी आर्य हैं, ऐसा अन्धक मानते थे (प० प० अ० ७७) ।२।

२४. सराग चित्त विमुक्त होता है। अन्धकों का यह मत था। उनका कथन है कि जिस प्रकार मलिन वस्त्र धोया जाता हुआ मल से मुक्त हो जाता है, उसी प्रकार रागयुक्त चित्त ही मुक्त होता है (प० प० अ० ७८) ।३।

२५. विमुच्यमान विमुक्त है। यह किसका मत था, नहीं दर्शाया गया है (प० प० अ० ७९) ।४।

२६. अष्टमक पुद्गल का मिथ्या-दृष्टि-पर्युत्थान प्रहीण रहता है, ऐसा अन्धक तथा सम्मितिय मानते थे (प० प० अ० ८०) ।५।

२७. अष्टमक पुद्गल को मार्ग क्षण में इन्द्रियां प्राप्त होती हैं, पूर्व से प्राप्त नहीं रहती हैं, ऐसा अन्धकों को मान्य था (प० प० अ० ८१) ।६।

२८. चतुर्थ ध्यान से आबद्ध मंस चक्षु ही दिव्य चक्षु में परिणत हो जाता है; अन्धक तथा सम्मितिय इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० ८२) ।७।

२९. (ध्यान) धर्म से युक्त मंस श्रोत्र दिव्य श्रोत्र में परिणत होता है। इस मत की संगति किसी से नहीं दर्शायी गई है (प० प० अ० ८३) ।८।

३०. दिव्य चक्षु का होना ही कर्मानुकूलगमन का ज्ञान है। इस मत की समता नहीं दर्शायी गई है (प० प० अ० ८३) ।९।

३१. देवताओं में संवर है। इस मत की भी संगति नहीं है। (प० प० अ० ८५) ।१०।

३२. असंज्ञी सत्त्वों में संज्ञा है, ऐसा अन्धकों का मत था (प०प०अ० ८५) ।११।

३३. नैवसंज्ञानासंज्ञा नामक देवलोक में संज्ञा है, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। अन्धकों की ऐसी धारणा थी। (प० प०अ० ८६) ।११।

वर्ग—४

३४. गृही भी अर्हत् हो सकता है, ऐसा उत्तरापथक मानते थे (प० प० अ० ८७) ।१।

३५. उत्पत्ति के क्षण ही अर्हत् कोई हो सकता है, ऐसा उत्तरापथक मानते थे। (प० प० अ० ८७) ।२।

३६. अर्हत् की सभी वस्तुयें (धर्म) आस्रव अर्थात् मल से रहित होती हैं, ऐसा उत्तरापथकों को मान्य था। (प० प० अ० ८८) ।३।

३७. अर्हत् चार फलों से युक्त रहता है, ऐसा उत्तरापथकों को मान्य था। (प० प० अ० ८९) ।४।

३८. अर्हत् छः प्रकार की उपेक्षा वेदनाओं से युक्त रहता है। इस मान्यता के सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है। (प० प० अ० ९०) ।५।

३९. बोधि मात्र से बुद्ध हो जाते हैं, ऐसा उत्तरापथकों का विश्वास था। बोधि से यहाँ अभिप्राय चार मार्ग ज्ञान तथा सर्वज्ञता ज्ञान से है। (प० प० अ० ९०) ।६।

४०. महापुरुष के लक्षणों से युक्त कोई भी बोधिसत्त्व हो सकता है, ऐसा उत्तरापथक मानते थे। (प० प० अ० ९२) ।७।

४१. बोधिसत्त्व ने भगवान् काश्यप की देशनानुसार ही ब्रह्मचर्यवास पूर्ण किया था। अन्धकों का ऐसा विश्वास था। (प० प० अ० ९२) ।८।

४२. अर्हत्त्व के साक्षात्कार के लिए प्रतिपन्न पुरुष तीन श्रामण्य फलों से सम्पन्न रहता है, ऐसा अन्धक मानते थे। (प० प० अ० ९३) ।९।

४३. सभी संयोजनों (चित्तमलों) का प्रहाण ही अर्हत्व है। अन्धक ऐसा मानते थे। (प० प० अ० ९४) ।१०।

वर्ग—५

४४. विमुक्तिज्ञान होना ही विमुक्त होना है, ऐसा अन्धकों का मत था। (प० प० अ० ९५) ।१।

४५. शैक्ष्य को अशैक्ष्य-विषयक ज्ञान रहता है, ऐसी उत्तरापथकों की धारणा थी। (प० प० अ० ९६) ।२।

४६. पृथ्वी-कसिण पर ध्यान करता हुआ जो पृथ्वी संज्ञी होता है, उसका वह ज्ञान विपरीत ज्ञान है। अन्धक ऐसा मानते थे। (प० प० अ० ९७) ।३।

४७. अनियत पुरुष को नियाम सम्बन्धी ज्ञान रहता है। यह उत्तरापथकों का मत था। (प० प० अ० ९७) ।४।

४८. आर्यों का जो कुछ भी ज्ञान है, वह लोकोत्तर है, इस न्याय से सभी प्रकार के ज्ञान प्रतिसम्भिदा कहे जा सकते हैं, ऐसा अन्धकों का विश्वास था। (प० प० अ० ९८) ।५।

४९. सांवृतिक ज्ञान सत्यों को आलम्बन कर प्रवृत्त होता है, यह अन्धकों का मत था। (प० प० अ० ९९) ।६।

५०. परचित्त-ज्ञान का चित्त ही आलम्बन है। यह अन्धकों का मत था (प० प० अ० ९९) ।७।

५१. सम्पूर्ण भविष्य का ज्ञान संभव है। अन्धक ऐसा मानते थे (प० प० अ० १००) ।८।

५२. यह भी अन्धकों का विश्वास था कि सम्पूर्ण वर्तमान का ज्ञान संभव है (प० प० अ० १०१) ।९।

५३. श्रावकों का फल का ज्ञान रहता है, ऐसा अन्धक मानते थे (प० प० अ० १०२) ।१०।

वर्ग–६

५४. नियाम असंस्कृत है। नियाम का अर्थ है—आर्य मार्ग। यह अन्धकों का मत था (प० प० अ० १०४) ।१।

५५. पूर्वशैलीय तथा महीशासकों का मत था कि प्रतीत्यसमुत्पाद असंस्कृत है (प० प० अ० १०४) ।२।

५६. चार आर्यसत्य असंस्कृत हैं, ऐसा पूर्वशैलीय का मत था (प०प०अ० १०५)।३।

५७. आकाशानन्त्यायतन असंस्कृत है। इस मत के सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है (प० प० अ० १०६) ।४।

५८. निरोधसमापत्ति असंस्कृत है, ऐसा अन्धकों का विश्वास था (प० प० अ० १०७) ।५।

५९. आकाश असंस्कृत है, ऐसी उत्तरापथक एवं महीशासकों की मान्यता थी (प. प. अ. १०७) ।६।

६०. आकाश सनिदर्शन (दृश्य) है। अन्धक ऐसा मानते थे (प० प० अ० १०८) ।७।

६१. पृथ्वी धातु सनिदर्शन है। यह अन्धकों का मत था (प०प०अ० १०८) ।८।

६२-६३. चक्षुन्द्रिय सनिदर्शन है। कायकर्म सनिदर्शन हैं। संभवतः ये मान्यतायें भी अन्धकों की थी (प० प० अ० १०८) ।९,१०।

वर्ग–७

६४. कुछ धर्मों (वस्तुओं) का अन्य धर्मों (वस्तुओं) के साथ संग्रह संभव नहीं है। राजगिरिक तथा सिद्धार्थिक इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १०९) ।१।

६५. कोई धर्म किसी धर्म के साथ सम्प्रयुक्त नहीं हैं। (तिल में तेल के समान वेदना आदि संज्ञा में अनुप्रविष्ट नहीं हैं। ऐसी दशा में 'ज्ञान सम्प्रयुक्त' वचन निरर्थक हो जाता है)। राजगिरिक तथा सिद्धार्थिक इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १०९) ।२।

६६. राजगिरिक तथा सिद्धार्थिक ऐसा भी मानते थे कि चैतसिक नहीं हैं (प० प० अ० ११०) ।३।

६७. दान देना एक चैतसिक है, राजगिरिक तथा सिद्धार्थिकों का मत था (प० प० अ० १११) ।४।

६८. दान के उपभोग से पुण्य की वृद्धि होती है, ऐसा राजगिरिक, सिद्धार्थिक तथा सम्मितिय मानते थे (प० प० अ० ११२) ।५।

६९. राजगिरिक एवं सिद्धार्थिकों का मत था कि यहां दिये गये दान से परलोक (अन्यत्र) में पितृगण जीवन यापन करते हैं (प० प० अ० ११४) ।६।

७०. अन्धकों का विश्वास था कि पृथ्वी कर्मविपाक है। पृथ्वी शब्द से 'पृथ्वी ऐश्वर्य' अभिप्रेत है (प० प० अ० ११५) ।७।

७१. अन्धक इसमें भी विश्वास करते थे कि वृद्ध होना तथा मरण को प्राप्त करना विपाक है (प० प० अ० ११६) ।८।

७२. आर्य धर्म (चार मार्ग चित्त) विपाक नहीं (उत्पन्न करते) हैं, यह अन्धकों का मत था। उनका कहना था कि क्लेश प्रहाणमात्र ही श्रामण्यफल है, चित्त चैतसिक धर्म नहीं (प० प० अ० ११७) ।९।

७३. अन्धकों की मान्यता थी कि विपाक अन्य विपाक को उत्पन्न करता है अर्थात् विपाकधर्मा है (प० प० अ० ११८) ।१०।

वर्ग–८

७४. अन्धक तथा उत्तरापथकों की ऐसी मान्यता थी कि असुरकाय के साथ छः गतियां अर्थात् छः लोक हैं। इनमें निरय, पशुपक्षीलोक, प्रेतलोक, मनुष्यलोक, तथा देवलोक स्थविरवादी को मान्य थे (प० प० अ० १२०) ।१।

७५. अन्तरभव अर्थात् मरने एवं उत्पन्न होने के मध्य का जीवन है। पूर्वशैलीय तथा सम्मितियों का ऐसा मत था (प० प० अ० १२१) ।२।

७६. पञ्च कामगुण कामधातु हैं। पाँच इन्द्रियों द्वारा उनके विषयों का उपभोग ही पाँच कामगुण हैं। पूर्वशैलीय इन्हीं पाँच कामगुणों को कामधातु मानते थे (प० प० अ० १२२) ।३।

७७. रूपायतन, शब्दायतन आदि पाँच आयतन ही काम हैं, ऐसा पूर्वशैलीयो का मत था (प० प० अ० १२४) ।४।

७८. रूपी धर्म अर्थात् रूप वाले पदार्थों का नाम रूप धातु है, ऐसा अन्धक कहा करते थे (प० प० अ० १२४) ।५।

७९. अरूपी धर्म अर्थात् रूपरहित पदार्थ अरूपधातु हैं। इस मत के सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है (प० प० अ० १२५) ।६।

८०. रूपलोक में छः आयतनों से सम्पन्न प्राणी होते हैं, अन्धक तथा सम्मितिय दोनों का इसमें विश्वास था (प० प० अ० १२५) ।७।

८१. अरूपलोक में रूप की संभावना है, ऐसा अन्धकों का मत था (प० प० अ० १२६) ।८।

८२. कुसल चित्त से समुत्पन्न कार्यकर्म रूप है, जो कुसल हैं। कायविज्ञप्ति तथा वचीविज्ञप्ति रूप हैं। ये चित्त से उत्पन्न होते हैं। इन्हीं को लक्ष्य कर महीशासक तथा सम्मितियों की ऐसी धारणा थी कि कुसलचित्त से उत्पन्न रूप भी कुशल है। (प० प० अ० १२६) ।६।

८३. चित्त से विप्रयुक्त रूप जीवितिन्द्रय नहीं है, ऐसा पूर्वशैलीय तथा सम्मितिय मानते थे (प० प० अ० १२७) ।१०।

८४. (अकुशल) कर्म के कारण अर्हत् का अर्हत्व से पतन संभव है। यह पूर्वशैलीय तथा सम्मितियों का मत था (प० प० अ० १२६) ।११।

वर्ग–९

८५. अपने संस्कारों में दोष तथा निर्वाण में गुण का दर्शन करने से संयोजनों का प्रहाण हो जाता है। यह अन्धकों का मत था (प० प० अ० १३०) ।१।

८६. पूर्वशैलियों का विश्वास था कि संयोजन अमृतारम्मण हैं (प० प० अ० १३१) ।२।

८७. रूप आलम्बन ग्रहण करता है, ऐसा उत्तरापथकों का मत था (प० प० अ० १३२) ।३।

८८. अनुशय अनारम्मण हैं। वे चित्तविप्रयुक्त, अहेतुक तथा अव्याकत होने के कारण अनारम्मण हैं। अन्धकों तथा कुछ उत्तरापथकों का यह मत था (प० प० अ० १३२) ।४।

८९. ज्ञान अनारम्मण है, ऐसा अन्धकों का विश्वास था (प० प० अ० १३३) ।५।

९०. अतीत को आलम्बन कर प्रवृत्त चित्त अनारम्मण है। उत्तरापथकों की यह धारणा थी (प० प० अ० १३३) ।६।

९१. सभी चित्त वितर्कानुपतित अर्थात् वितर्क से युक्त हैं। पूर्वशैलीय ऐसा मानते थे (प० प० अ० १३४) ।७।

९२. वितर्क, विचार करते हुए शब्द वितर्क के विस्तार रूप में उत्पन्न होता है, ऐसा पूर्वशैलीयों का विचार था (प० प० अ० १३४) ।८।

९३. वाणी चित्त के अनुरूप तदनुगतिक नहीं होती है। पूर्वशैलीय इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १३५) ।९।

९४. चित्त के अनुकूल तथा तदनुगतिक कायकर्म नहीं होते हैं। पूर्व शैलीयों को यह मान्य था (प० प० अ० १३५) ।१०।

९५. अतीत तथा भविष्यत् की प्राप्ति संभव है। मनुष्य भूत तथा भविष्यत् से सम्पन्न हो सकता है। यह अन्धकों का मत था। (प० प० अ० १३६) ।११।

वर्ग—१०

९६. पुनर्जन्म के रूप में प्रवृत्ति दिलानेवाले पञ्च स्कन्धों के निरुद्ध होने के पूर्व पञ्च स्कन्धों की उत्पत्ति हो जाती है। उनके नहीं उत्पन्न होने से भवंग के निरुद्ध हो जाने के कारण सन्ततिविच्छेद का दोष प्राप्त होगा, ऐसा अन्धक मानते थे। (प० प० अ० १३७) ।१।

९७. मार्ग-प्रतिपन्न पुरुष का रूप मार्ग है। अर्थात् सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म तथा सम्यक् आजीविका को रूप मानते हुए महीशासक, सम्मितिय तथा महासांघिकों की ऐसी धारणा थी कि मार्ग समंगी का रूप मार्ग है। (प० प० अ० १३८) ।२।

९८. पञ्च विज्ञान समंगी अर्थात् पाँच इन्द्रियों के विषयों का उपभोग करते हुए मार्ग की भावना संभव है। महासांघिकों का यह मत था। (प० प० अ० १३८) ।३।

९९. पञ्च विज्ञान कुशल भी हैं, अकुशल भी। इस मत के सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है (प० प० अ० १४०) ।४।

१००. पञ्च विज्ञान भोग युक्त हैं, ऐसा महासांघिकों का मत था (प० प० अ० १४१) ।५।

१०१. मार्ग का अभ्यास करता हुआ पुरुष दो-दो प्रकार के शील का आचरण करता है, यह महासांघिकों का मत था (प० प० अ० १४१) ।६।

१०२. महासांघिकों का विश्वास था कि शील अचैतसिक है (प० प० अ० १४२) ।७।

१०३. शील चित्त का अनुगमन नहीं करता है। वह चित्तानुपरिवर्त्ती नहीं कहा जा सकता है। यहां मत का उल्लेख नहीं है (प० प० अ० १४२) ।८।

१०४. महासांघिक ऐसी धारणा में लिप्त थे कि केवल धारण मात्र से शील बढ़ता है (प० प० अ० १४२) ।९।

१०५. महासांघिक तथा सम्मितिय इसमें विश्वास करते थे कि विज्ञप्ति (काय विज्ञप्ति, वचीविज्ञप्ति) शील है (प० प० अ० १४३) ।१०।

१०६. महासांघिकों का यह भी मत था कि अविज्ञप्ति दुःशील्य है (प० प० अ० १४३) ।११।

वर्ग—११

१०७-१०९. अनुशय अव्याकृत हैं। महासांघिक तथा सम्मितिय इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १४४) ।१-३। इसमें कामरागानुशय, प्रतिघानुशय तथा मानानुशय गृहीत हैं।

११०. अज्ञान के विगत हो जाने पर तथा ज्ञानविप्रयुक्त चित्त के विद्यमान रहने पर 'ज्ञानी' नहीं कहा जा सकता है। मार्गज्ञान से अज्ञान के विगत हो जाने पर चक्षुविज्ञान आदि ज्ञानविप्रयुक्त चित्त के विद्यमान रहने पर मार्ग चित्त की प्रवृत्ति नहीं होती है, इस कारण 'ज्ञानी' नहीं कहा जा सकता है। यह महासांघिकों का मत था (प० प० अ० १४४) ।४।

१११. पूर्वशैलीयों का मत था कि ज्ञान चित्तविप्रयुक्त है (प० प० अ० १४५) ।५।

११२. लोकोत्तर मार्गक्षण में योगावचर 'यह दुःख है', ऐसा वचन बोलता है। है। उसके ऐसा उच्चारण से ही दुःख का ज्ञान हो जाता है। यह अन्धकों का मत था (प० प० अ० १४५) ।६।

११३. महासांघिकों का कथन था कि ऋद्धिबल से युक्त पुरुष कल्प तक रह सकता है (प० प० अ० १४६) ।७।

११४. चित्त-सन्तति (चित्त का अव्यवच्छिन्न प्रवाह) समाधि है। सर्वास्तिवादी तथा उत्तरापथक इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १४७) ।८।

११५. धर्मका स्थित-भाव अर्थात् इदं प्रत्ययता परिनिष्पन्न है, ऐसा अन्धकों का विश्वास था (प० प० अ० १४८) ।९।

११६. अन्धकों का यह भी मत था कि अनित्यता परिनिष्पन्न (स्वयं निष्पन्न) है (प० प० अ० १४८) ।१०।

वर्ग—१२

११७. संवर तथा असंवर कर्म हैं। महासांघिक ऐसा मानते थे। (प. प. अ. १५०) । १ ।

११८. सभी कर्म विपाक प्रदान करते हैं। महासांघिकों की ऐसी धारणा थी (प. प. अ. १५१) । २ ।

११९. महासांघिक इसमें विश्वास करते थे कि शब्द विपाक है (प. प. अ. १५१) । ३ ।

१२०. चक्षु आदि छः इन्द्रियां विपाक हैं। यह महासांघिकों की धारणा थी प. प. अ १५२) । ४ ।

१२१. स्रोतापन्न को 'सत्तखत्तुपरमो' कहा गया है। वह अधिक से अधिक सात वार इस लोक में जन्म लेकर निर्वाण प्राप्त करता है, यह स्थविरवादी मान्यता है। उत्तरापथकों का कहना है कि सात वार उसका जन्म लेना निश्चित है। इसके अनन्तर ही वह निर्वाण पा सकता है (प. प. अ. १५२) । ५ ।

१२२. 'कोलंकोल' पुरुष का कितने कुलों में सञ्चरण होगा, यह निश्चित है। वे उस अवधि की समाप्ति करते हैं। इस मत के सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है (प. प. अ. १५३) । ६ ।

१२३. 'एकबीजी' पुरुष के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यह निश्चित है कि वह एक वार ही स्कन्धात्मक शरीर धारण करता है। इसके उपरान्त उसका निर्वाण हो जाता है। इस मत के सम्प्रदाय का भी उल्लेख नहीं है (प. प अ. १५३) । ७ ।

१२४. दृष्टि-सम्पन्न-पुरुष जानबूझ कर जीवों की हत्या करता है, ऐसा पूर्वशैलीय, अपरशैलीय मानते थे (प. प. अ. १५३) । ८ ।

१२५. उत्तरापथकों की मान्यता थी कि दृष्टि-सम्पन्न पुरुषों की दुर्गति प्रहीण हो जाती है (प. प. अ. १५४)। ६।

१२६. सप्तम-भविक पुरुष अर्थात् स्रोतापन्न पुरुष की दुर्गति प्रहीण रहती है। यह मत किसका था, इसका उल्लेख नहीं है (प. ये. अ. १५४)। १०।

वर्ग—१३

१२७. संघभेद जैसे हीन कर्म करने के कारण दण्डित मनुष्य कल्प तक नरक में वास करता है। यह राजगिरिकों का मत था (प. प. अ. १५५)। १।

१२८. कल्प तक नरक में संवास करता हुआ वह कुशल चित्त नहीं प्राप्त करता है। उत्तरापथकों का इसमें विश्वास था (प. प अ. १५५)। २।

१२९. मातृघात आदि आनन्तरिक कर्मों को करके आगे कुशल कर्मों की ओर प्रवृत्त हो सकता है। यह उत्तरापथकों का मत था (प. प. अ. १५६)। ३।

१३०. आनन्तरिक कर्म को मिच्छत्तनियाम तथा आर्य मार्ग को समत्तनियाम कहा जाता है। इन्हें छोड़ सभी त्रयभूमिक धर्म अनियत हैं। इस पृष्ठभूमि में पूर्व शैलीय विचारकों का मत है कि नियत पुरुष अपने नियाम को अवश्य प्राप्त करता है। (प० प० अ० १५८) ।४।

१३१. नीवरणों से युक्त पुरुष ही नीवरण का परित्याग करता है, ऐसी उत्तरापथकों की मान्यता है (प० प० अ० १५८) ।५।

१३२. संयोजनों से युक्त पुरुष संयोजनों का परित्याग करता है। इस मत के सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है। (प० प० अ० १५९) ।६।

१३३. ध्यानस्थ पुरुष ध्यान का आस्वादन करता है। ध्यान की इच्छा ही उसके चित्त का आलम्बन है। अन्धक ऐसा मानते थे (प० प० अ० १५९) ।७।

१३४. उत्तरापथकों की मान्यता थी कि असात अर्थात् अप्रिय वस्तुओं के लिए भी आसक्ति संभव है (प० प० अ० १६०) ।८।

१३५. धर्म-तृष्णा अर्थात् छः आलम्बनों में अन्तिम आलम्बन धर्मालम्बन की तृष्णा अव्याकृत है। पूर्वशैलीय ऐसा मानते थे (प० प० अ० १६०) ।९।

१३६. धर्मालम्बन की इच्छा दुःख की जननी नहीं है, ऐसा पूर्व शैलीयों का मत था (प० प० अ० १६१) ।१०।

वर्ग—१४

१३७. कुशल अकुशल का या अकुशल कुशल का जनक होता है, यह महासांघिकों का मत था (प० प० अ० १६२) ।१।

१३८. मां के गर्भ में प्रवेश के क्षण ही (सत्त्व के) चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जीह्वा, काय तथा मन नामक छः आयतन एक साथ उत्पन्न होते हैं। स्पष्टतः औपपातिक सत्त्व के प्रतिसन्धिचित्त के साथ ही छः आयतनों की उत्पत्ति होती है, ऐसा पूर्वशैलीय मानते थे (प० प० अ० १६२) ।२।

१३९. चक्षुविज्ञान, श्रोत्रविज्ञान आदि छः विज्ञान एक के अनन्तर दूसरे उत्पन्न होते हैं। उत्तरापथको की यह धारणा थी। (प० प० अ० १६३) ।३।

१४०. सम्यक् वचन तथा सम्यक् कर्म चार महाभूतो के आश्रय से उत्पन्न होते हैं, ऐसा उत्तरापथक मानते थे (प० प० अ० १६४) ।४।

१४१. कामराग-अनुशय तथा कामराग का परिउत्थान दो वस्तुयें हैं। ऐसा अन्धक मानते थे। (प० प० अ० १६४) ।५।

१४२. चित्त का परि-उत्थान अर्थात् प्रकाशन चित्त से विप्रयुक्त होता है। अन्धक ऐसा मानते थे। इसकी पुष्टि में कहा गया है कि कभी-कभी अनित्य, अनात्म्य भाव का चिन्तन करते हुए पुरुष को आसक्ति उत्पन्न हो जाती है, या 'अशुभ के रूप में चिन्तन करूंगा', ऐसा सोंचता हुआ मनुष्य शुभ के रूप में चिन्तन करने लगता है (प. प. अ. १६५) । ६ ।

१४३. रूप-राग रूप-धातु में ही आबद्ध या परियापन्न है। अन्धक एवं सम्मितिय ऐसा मानते थे (प. प. अ. १६५) । ७ ।

१४४. शाश्वतवाद, अशाश्वतवाद आदि मिथ्यादृष्टियां अव्याकृत हैं। विपाक न उत्पन्न करने के कारण विपाक, क्रिया, रूप तथा निर्वाण अव्याकृत कहे गये हैं। पुनः लोक शाश्वत या अशाश्वत है, आदि दृष्टियों को भगवान् ने अव्याकृत हैं। दोनों शब्द दो प्रसंगों में दो अर्थों में प्रयुक्त हैं, पर दोनों का एक अर्थ दर्शाते हुए 'मिथ्या दृष्टियाँ' अव्याकृत हैं, ऐसा अन्धक तथा उत्तरापथक मानते थे (प. प. अ. १६६) । ८ ।

१४५. मिथ्या दृष्टियों से युक्त पुरुष अपरियापन्न अर्थात् लोकोत्तर है। पूर्वशैलीय इसमें विश्वास करते थे (प. प. अ. १६७) । ९ ।

वर्ग--१५

१४६. महासांघिकों की ऐसी मान्यता थी कि जो धर्म जिस धर्म से 'हेतुप्रत्य' से सम्बन्धित है, वह उससे आरम्मण, समनन्तर तथा अनन्तर प्रत्ययों से सम्बन्धित नहीं हो सकता है। प्रत्येक धर्म की प्रत्ययता व्यस्थित है। (प. प. अ १६८)। १।

१४७ अविद्या के प्रत्यय से संस्कार की उत्पत्ति होती है, पर संस्कारों के प्रत्यय से अविद्या की नहीं। इसलिए अविद्या का संस्कारों के साथ प्रत्ययता है, संस्कारों का अविद्या के साथ नहीं। यह महासांघिकों की मान्यता थी (प. प. अ. १६८)। २।

१४८. काल के नाम से आख्यात अध्व परिनिष्पन्न है। इस मत के सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है (प. प. अ. १६९)। ३।

१४९. क्षण, लय तथा मूहूर्त्त परिनिष्पन्न है। इसके मत का उल्लेख नहीं है (प. प. अ. १६९)। ४।

१५०. चार आस्रव अनास्रव हैं। हेतुवादी का यह मत था (प. प. अ. १६९)। ५।

१५१. लोकोत्तर धर्मों का जरामरण लोकोत्तर है। इसे महासांघिक मानते थे (प. प. अ. १७०)। ६।

१५२. संज्ञावेदयितनिरोधसमापत्ति लोकुत्तर है। यह हेतुवादियों का मत था (प. प. अ. १७०)। ७।

१५३. संज्ञोवेदयितनिरोधसमापत्ति लौकिक है। इस मत का उल्लेख नहीं है (प. प. अ. १७१)। ८।

१५४. राजगिरिय ऐसा मानते थे कि निरोधसमापत्ति की अवस्था में मृत्यु हो सकती है। (प. प. अ. १७१)। ९।

१५५. संज्ञा से पूर्णतः विरागवश प्रवृत्त भावना असंज्ञीसमापत्ति, निरोध-समापत्ति तथा संज्ञावदयितनिरोधसमापत्ति कहलाती है। यह लोकिय तथा लोकोत्तर दो प्रकार की होती है। पृथक्जन की लोकिय समापत्ति का नाम है असञ्ञासत्तपिका। आर्यों की लोकोत्तर समापत्ति नासञ्ञासत्तुपिका कहलाती है। इस भेद को न जान हेतुवादी कहा करते हैं कि निरोधसमापत्ति असञ्ञा-सत्तुपिका है (प. प. अ. १७२)। १०।

१५६. अन्धक तथा सम्मितिय ऐसा मानते थे कि कर्म कर्मसंचय से भिन्न है (प. प. अ. १७३)। ११।

वर्ग—१६

१५७. महासांघिकों का मत है कि कोई व्यक्ति अपने ध्यानिक बल से दूसरे के चित्त को संयमित कर सकता है (प. प. अ. १७५) । १ ।

१५८. कोई अन्य व्यक्ति दूसरे के चित्त का प्रग्रहण कर सकता है। इसके मत का उल्लेख नहीं है। संभवतः यह भी महासांघिकों का मत था (प. प. अ. १७५) । २ ।

१५९. हेतुवादी इस मान्यता में विश्वास करते थे कि कोई अन्य व्यक्ति दूसरे के मन में सुख उत्पन्न कर सकता है (प. प. अ. १७५) । ३ ।

१६०. 'सभी संस्कार अनित्य हैं' ऐसा चिन्तन करते हुए सभी संस्कारों का एक साथ चिन्तन करता है, इसे पूर्वशैलीय तथा अपरशैलीय मानते थे (प० प० अ० १७६) ।४।

१६१. रूप हेतु है, ऐसा उत्तरापथक मानते थे। वस्तुतः कुशल मूल के नाम से आख्यात अलोभ, अद्वेष तथा अमोह एवं अकुशल मूल के नाम से विख्यात लोभ, द्वेष तथा मोह हैं। इस आशय को न समझते हुए केवल भगवत् वचन—"चार महाभूत हेतु हैं" के अनवबोध के कारण उक्त धारण की प्रवृत्ति होती है (प० प० अ० १७७) ।५।

१६२. रूप सहेतुक है। इस मत के सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है (प० प० अ० १७७) ।६।

१६३. काय कर्म कुशल तथा अकुशल हैं; इस वचन को आश्रय कर 'कायविज्ञप्ति, वचीविज्ञप्ति कुशल भी है, अकुशल भी; ऐसी धारणा बना महीशासक तथा सम्मितियों की मान्यता थी कि 'रूप कुशल हैं' (प० प० अ० १७७) ।७।

१६४. चित्त चैतसिक की भाँति रूप भी विपाक है, क्योंकि यह कर्म से उत्पन्न होता है। अन्धक तथा सम्मितिय इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १७८) ।८।

१६५. कामावचर कर्म से उत्पन्न रूप कामावचर कहलाता है। उसी प्रकार रूपावचर अरूपावचर कर्मों से उत्पन्न रूप रूपावचर तथा अरूपावचर है, ऐसा अन्धकों का विश्वास था (प० प० अ० १७८) ।९।

१६६. रूप-राग तथा अरूप-राग क्रमशः रूप धातु तथा अरूप-धातु से युक्त हैं, अन्धक इसे मानते थे (प० प० अ० १७९) ।१०।

वर्ग—१७

१६७. अर्हंत के दान, संविभाग, चैत्यवन्दना आदि कर्मों के देख अन्धकों की यह मान्यता थी कि अर्हत् भी पुण्य का संचय करते हैं (प० प० अ० १८०) ।१।

१६८ अर्हतों की अकाल मृत्यु नहीं होती है। राजगिरिक तथा सिद्धार्थिक इसे मानते थे (प० प० अ० १८०) ।२।

१६९. सब कुछ कर्म से ही होता है अर्थात् समस्त कर्मक्लेशविपाकवृत्त कर्म से ही संभव है। ऐसा राजगिरिक एवं सिद्धार्थिक मानने थे (प० प० अ० १८१) ।३।

१७०. हेतुवादी इसमें विश्वास करते थे कि समस्त प्रकार के दुःख इन्द्रियबद्ध हैं (प० प० अ० १८) ।४।

१७१. यस्मात् आर्यमार्ग दुःखनिरोधगामिनिप्रतिपदा है, इसलिए आर्यमार्ग को छोड़ अवशेष सभी संस्कार दुःख हैं। हेतुवादी इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १८४) ।५।

१७२. 'संघ दक्षिणा ग्रहण करता है' ऐसा नहीं कहना चाहिए। यह वैतुल्यकों, का मत था। वैतुल्यक महापुण्यवादी या महाशून्यवादी भी कहलाते थे (प० प० अ० १८४) ।६।

१७३. यह भी नहीं कहा जा सकता है कि 'संघ दक्षिणा को परिशुद्ध करता है'। यह भी वैतुल्यकों का मत था (प० प० अ० १८५) ।७।

१७४. 'संघ खाता पीता है', ऐसा नहीं कहना चाहिए। वैतुल्यकों का इसमें विश्वास था (प० प० अ० १८५) ।८।

१७५. 'संघ को देने से महापुण्य होता है', ऐसा भी नहीं कहना चाहिए। यह भी वैतुल्यकों का मत था (प० प० अ० १८६) ।९।

१७६. 'बुद्ध को दान देने से बहुत फल होता है', यह नहीं कहना चाहिए। वैतुल्यक इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १८६) ।१०।

१७७. दान देनेवाले द्वारा शुद्ध होता है, न कि ग्रहण करने वाले द्वारा, ऐसा उत्तरापथकों का विश्वास था (प० प० अ० १८७) ।११।

वर्ग—१८

१७८. भगवान् बुद्ध तुषितलोक में उत्पन्न हुए तथा वहीं निवास करते हैं। वे मनुष्य लोक में नहीं आते हैं। वे केवल निर्मित रूप ही यहाँ दर्शाते हैं। वैतुल्यक इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १८८) ।१।

१७९. वैतुल्यक इसमें भी विश्वास करते थे कि भगवान् ने धर्मोपदेश नहीं किया है। तुषितपुर में स्थित हो उन्होंने धर्मदेशना के लिए अभिनिर्मित बुद्ध को भेजा था। उनसे ग्रहण कर आनन्द द्वारा धर्मोपदेश किया गया, बुद्ध द्वारा नहीं (प० प० अ० १८८) ।२।

१८०. उत्तरापथक ऐसा मानते थे कि बुद्ध को करुणा नहीं थी। उनका कहना था कि राग तथा करुणा एक है (प० प० अ० १८९) ।३।

१८१. भगवान् बुद्ध के मलमूत्र में भी एक दिव्य सुगन्ध होता है, ऐसा कुछ अन्धक तथा उत्तरापथक मानते थे (प० प० अ० १८९) ।४।

१८२. एक आर्य मार्ग से चार श्रामण्यफलों की प्राप्ति की जा सकती है। कुछ अन्धक तथा उत्तरापथक इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १९०) ।५।

१८३. महीशासक तथा कुछ अन्धकों का मत था कि एक ध्यान के अनन्तर दूसरे ध्यान में साधक प्रवेश करता है (प० प० अ० १९१) ।६।

१८४. पाँच प्रकार के ध्यान कहे गये हैं, पर समाधि तीन प्रकार की बतलायी गई है। यहाँ अवितर्क-विचारमात्र समाधि के अवकाश को नहीं जानते हुए, 'प्रथम तथा द्वितीय ध्यान के मध्य एक ध्यानन्तरिका है', ऐसा सम्मितिय तथा कुछ अन्धक मानते थे (प० प० अ० १९१) ।७।

१८५. योगावचर समाधि की अवस्था में शब्द सुनता है। पूर्वशैलियों की ऐसी धारणा थी (प० प० अ० १९२) ।८।

१८६. महासांघिकों का कहना है कि (प्रसाद) चक्षु रूप को देखता है (प० प० अ० १९३) ।९।

वर्ग–१९

१८७. साधक अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के क्लेशों का परित्याग करता है, ऐसा कुछ उत्तरापथक मानते थे (प० प० अ० १९५) ।१।

१८८. शून्यता संस्कार-स्कन्ध से सम्बन्धित है। यह अन्धकों का मत था (प० प० अ० १९५) ।२।

१८९. श्रामण्यफल (चार मार्ग तथा चार फल) असंस्कृत हैं। पूर्वशैलीय इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० १९७) ।३।

१९०. जो कुछ प्राप्त होता है, उसे प्राप्ति कहा जाता है। यह प्राप्ति असंस्कृत है, ऐसा पूर्वशैलीय मानते थे (प० प० अ० १९७) ।४।

१६१. रूपादि सभी धर्मों की रूपादि स्वभावता का नाम तथता है। वह तथता असंस्कृत है, ऐसा कुछ उत्तरापथकों का विश्वास था (प० प० अ० १९७) ।५।

१६२. निर्वाण-धातु कुशल है, अन्धक ऐसा मानते थे (प० प० अ० १९८ ।६।

१६३. कुछ उत्तरापथक इसमें विश्वास करते थे कि पृथक्-जन को भी अत्यन्त नियामता है (प० प० अ० १९८) ।७।

१६४. श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि तथा प्रज्ञा पांच इन्द्रियां हैं। ये इन्द्रियां लोकिय नहीं हो सकती हैं, ऐसा हेतुवादी तथा महीशासक मानते थे (प० प० अ० २००) ।८।

वर्ग–२०

१६५. बिना जानबूझ कर भी माता पिता की हत्या करने से मनुष्य आनन्तरिक कर्म का भागी होता है। कुछ उत्तरापथक इसमें विश्वास करते थे (प० प० अ० २०१) ।१।

१६६. पृथक्-जन को ज्ञान नहीं हो सकता है, ऐसा हेतुवादी मानते थे। हेतुवादी लोकिय तथा लोकोत्तर ज्ञान के भेद को न जानते हुए लोकोत्तर ज्ञान (मार्गज्ञान तथा फलज्ञान) को ही एक मात्र ज्ञान समझ उसकी संभावना पृथक्-जन के पक्ष में नहीं दर्शाते हैं (प० प० अ० २०२) ।२।

१६७. नरक में नरकपाल नहीं हैं, अन्धकों का ऐसा विश्वास था (प० प० अ० २०२) ।३।

१६८. देवलोक में पशु पक्षी होते हैं। यह अन्धकों का मत था। ऐसे मत का आधार एरावण आदि हस्तिवर्णा देवपुत्र हैं (प० प० अ० २०३) ।४।

१६९. महासांघिकों का कथन था कि बुद्धप्रतिपादित मार्ग पांच अंगों से युक्त है, न कि आठ अंगों से (प० प० अ० २०४) ।५।

२००. धर्मचक्रप्रवर्तन-प्रसंग में कथित द्वादसाकार ज्ञान को लक्ष्य कर पूर्वशैलियों का मत था कि द्वादसवस्तुक ज्ञान लोकोत्तर है (प० प० अ० २०५) ।६।

वर्ग—२१

२०१. उत्तरापथकों की मान्यता थी कि संगीतियों के माध्यम से बुद्ध-शासन में अभिनवकरण हुआ है (प० प० अ० २०६) ।१।

२०२. पृथक्-जन कामलोक, रूपलोक तथा अरूपलोक से एक ही क्षण में आबद्ध हो सकता है। यह कुछ उत्तरापथकों का मत था (प० प० अ० २०६) ।२।

२०३. कुछ संयोजनों के प्रहाण के बिना अर्हत्व की प्राप्ति संभव है। महासांघिक ऐसा मानते थे (प० प० अ० २०७) ।३।

२०४. बुद्ध या उनके शिष्यों को इच्छानुकूल परिस्थिति बना देने की ऋद्धि प्राप्त थी। अन्धक ऐसा मानते थे (प० प० अ० २०८) ।४।

२०५. बुद्धों में एक दूसरे की अपेक्षा हीन, प्रणीतभाव भी हैं, ऐसा अन्धकों का मत था (प० प० अ० २०६) ।५।

२०६. विश्व की समस्त दिशाओं में बुद्धों का निवास है। महासांघिक ऐसा मानते थे (प० प० अ० २०८) ।६।

२०७. सभी पदार्थों का अपना अपना निश्चित स्वभाव है। इस दृष्टि से सभी धर्म नियत हैं। उत्तरापथकों का यह मत था (प० प० अ० २०६) ।७।

२०८. सभी कर्म अपने स्वभाव से नियत हैं। यह उत्तरापथकों का मत था (प० प० अ० २१०) ।८।

वर्ग—२२

२०६. कुछ संयोजनों के प्रहाण बिना ही निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है। अन्धक ऐसा मानते थे (प. प. अ. २११) । १ ।

२१०. अन्धक इसमें विश्वास करते थे कि अर्हत् कुशल चित्त के साथ परिनिर्वाण प्राप्त करते हैं (प. प. अ. २११) । २ ।

२११. अर्हत् ध्यान की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त करता है। कुछ उत्तरापथक ऐसा मानते थे (प. प. अ. २११) । ३ ।

२१२. गर्भ में सत्त्व को धर्माभिसमय अर्थात् स्रोतापत्ति अवस्था का लाभ संभव है। कुछ उत्तरापथक इसमें विश्वास करते थे (प. प. अ. २१२) । ४ ।

२१३-१५. गर्भ की अवस्था में सत्त्व को अर्हत्व का लाभ हो सकता है। यह भी उत्तरापथकों का मत था। सोये हुए, प्रमाद में पड़े हुए, या स्मृतिविहीन दशा में भी अर्हत्व की प्राप्ति संभव है (प. प. अ. २१३) । ५-७ ।

२१६. स्वप्न दशा को प्राप्त चित्त अव्याकृत रहता है। कुछ उत्तरापथकों की मान्यता थी (प. प. अ. २१३) । ८ ।

२१७. सभी पदार्थ क्षणिक हैं। कोई एक क्षण भी स्थित हो आसेवन प्रत्यय (पुनरावृत्ति) का आसेवन नहीं करता है। इसलिए किसी पदार्थ की आसेवन-प्रत्ययता नहीं है। कुछ उत्तरापथक ऐसा कहते थे (प. प. अ. २१३) । ६ ।

२१८. सभी धर्मों (पदार्थों) की स्थिति एक चित्त क्षण के लिए है। ऐसा पूर्वशैलीय तथा अपरशैलीय मानते थे (प. प. अ. २१४) । १० ।

वर्ग—२३

२१९. स्त्री-पुरुष को विचारतः एक होकर मैथुन धर्म का प्रतिसेवन करना चाहिए। अन्धक तथा वैतुल्यक ऐसा मानते थे (प. प. अ. २१५)। १।

२२०. अर्हन्तों के वेष में अ-मानुषी प्राणी मैथुन धर्म का सेवन करते हैं। ऐसी कुछ उत्तरापथकों की मान्यता थी (प. प. अ. २१५)। २।

२२१-२५ बोधिसत्त्व अपने अलौकिक ऐश्वर्य की इच्छा से पशु आदि योनियों में, गर्भ में प्रवेश करते हैं, दुष्कर क्रिया, कठिन तपस्या करते हैं, अन्य शास्ताओं को उपदेश करते हैं आदि। यह मत अन्धकों का था (प, प. अ. २१५) । ३-७ ।

२२६. राग राग के अनुरूप या द्वेष द्वेष के अनुरूप, या मोह मोह के अनुरूप नहीं हो सकता है, यह अन्धकों का मत था (प. प. अ. २१६)। ८।

२२७. "दुःख उत्पन्न होता है, दुःख स्थित रहता है, वह निरुद्ध होता है" आदि वचन को लक्ष्य कर ऐसा कहा जाता है कि दुःख परिनिष्पन्न है तथा इसके व्यतिरिक्त अवशेष स्कन्ध, आयतन, धातु, इन्द्रिय आदि धर्म अपरिनिष्पन्न हैं अर्थात् उत्पन्न नहीं होते हैं। इस आधार पर कुछ उत्तरापथकों तथा हेतुवादियों की मान्यता थी कि रूप अपरिनिष्पन्न हैं (प. प. अ. २१७)। ९।

ऊपर में कथावत्थु में चर्चित दो सौ सत्ताइस मतों का अत्यन्त संक्षिप्त परिचय दिया गया। वस्तुतः ये सभी मत एक एक सम्प्रदाय के सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनकी उत्पत्ति एवं विकास का एक बृहत् इतिहास है। बौद्ध-शासन के इतिहास एवं सिद्धान्तगत प्रभेदों की काल की सरणी में समझने के लिए इन मतों का बहुमूल्य योग देखा जा सकता है। इनका समीक्षात्मक अध्ययन बौद्ध-शासन के नव सौ वर्षों के क्रमिक विकास का अध्ययन मात्र कहा जा सकता है।

इन समस्त सिद्धान्तों का उद्गम विन्दु बुद्ध वचन है। सभी अपनी मान्यताओं की सम्पुष्टि में बुद्ध वचन को ही प्रमाण के रूप में उपस्थित करते हैं। पर इन मतों में जो विभेद की रेखायें हैं, वे उन बुद्ध वचनों के अर्थ को अपने-अपने दृष्टिकोण के कारण हैं। कहीं-कहीं ऐसा देखा जाता है कि बुद्ध वचन के देशना-प्रसंग या पूर्वापर-भाव के प्रति सम्यक् दृष्टिपात न कर केवल वचन के कुछ अंश को लेकर ऐसा मतभेद खड़ा हो गया है। पुद्गलवाद की परीक्षा भी इस दृष्टि से

की जा सकती है। कहीं-कहीं विभेद के कारण आपाततः तुच्छ सा प्रतीत होते हैं पर उनके यथार्थ बोध एवं सम्यक् मूल्यांकन के लिए उनकी उत्पत्ति की पृष्ठभूमि, सामाजिक एवं धार्मिक परिवेश आदि का अध्ययन आवश्यक है।

कथावत्थु-अट्ठकथा की निदानकथा में अठारह सम्प्रदायों का उल्लेख है। इनमें स्थविरवाद मूल है तथा अन्य सत्रह उससे निष्पन्न सम्प्रदाय हैं। प्रकृत प्रकरण में मतों की स्थापना एवं खण्डन क्रम में इन समस्त सत्रह सम्प्रदायों के नाम नहीं देखे जाते हैं। वहाँ एकव्यावहारिक, प्रज्ञप्तिवादी, बहुश्रुतिक, चैत्यवादी, सांक्रान्तिक, सूत्रवादी, धर्मगुप्तिक, धर्मोत्तरीय, छन्नागारिक के मतों की चर्चा नहीं है। साथ ही अन्धक, पूर्वशैलीय, अपरशैलीय, उत्तरापथक, राजगिरिय, सिद्धार्थिक, हेतुवादी, वैतुल्यक तथा महाशून्यवादी सम्प्रदायों के नये नाम उपलब्ध होते हैं। इनमें हेमवतिक, राजगिरिय, पूर्वशैलीय, अपरशैलीय, सिद्धार्थिक एवं वाजिरिय की चर्चा तो अट्ठकथाकार ने की है, पर उन्होंने अठारह आचार्यवादों में उनका ग्रहण नहीं किया है (ते इध अनधिप्पेता)। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि 'कथावत्थु-अट्ठकथा' में चर्चित मत केवल अशोक कालीन नहीं हैं, वरन् प्रारंभ से लेकर अट्ठकथाकार के युग तक के कहे जा सकते हैं।

पुनः चर्चित मतों की समीक्षा से यह प्रकट होता है कि एक सम्प्रदाय के अनुयायी कई मतों में विश्वास करते थे। उदाहरण स्वरूप पुद्गल की सत्ता में वज्जिपुत्रक तथा सम्मितिय दोनों की आस्था थी। इसी प्रकार 'अर्हत् के अर्हत्व से पतन की संभावना' में सम्मितिय, वज्जिपुत्रक, सर्वास्तिवादी तथा कुछ महासांघिकों का विश्वास था। इस दृष्टि से प्रस्तुत अट्ठकथा में उल्लिखित किस किस सम्प्रदाय को कौन कौन मत मान्य थे, इसका संकेत निम्नलिखित विवरण से प्राप्त किया जा सकता है—

१. वज्जिपुत्रक १, २।

२. सम्मितिय १, २, ३, ४, ५, १६, २६, २८, ६८, ७५, ८०, ८२, ८३, ८४, ९१, १०१, १५६, १६३, १६४, १८४।

३. सर्वास्तिवादी २, ६, १६, ११४।

४. महासांघिक २, ९७, ९८, १००, १०१, १०२, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, ११३, ११७, ११८, ११९, १२०, १३७, १४५, १४६, १५१, १५७, १५८, १८६, १९९, २०३, २०६।

५. काश्यपिक ८।

६. अन्धक ९, १०, १७, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, ३२, ३३, ४१, ४२, ४३, ४४, ४६, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५८, ६०, ६१, ६२, ६३, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७८, ८०, ८१, ८५, ८८, ८९, ९५, ९६, ११२, ११५, ११६, १३३, १४१, १४२, १४३, १४४, १५६, १६४, १६५, १६६, १६७, १८१, १८२, १८३, १८४, १८८, १९२, १९७, १९८, २०४, २०५, २०९, २१०, २१९, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६।

७. पूर्वशैलीय ९, ११, १२, १३, १४, १५, १६, ५६, ७५, ७६, ७७; ८३, ८४, ८६, ९१, ९२, ९३, ९४, १११, १२४, १३०, १३५, १३६, १३८, १४५, १६०, १८५, १८९, १९०, २००, २१८।

८. अपरशैलीय ९, ११, १२४, १३०, १६०, २१८।

९. गोकुलिक १८।

१०. भद्रयानिक १९।

११. महीशासक २१, ५५, ५९, ८२, ९७, १६३, १८३, १९४।

१२. उत्तरापथक ३४, ३५, ३६, ३७, ३९, ४०, ४५, ४७, ७४, ८७, ८८, ९०, ११४, १२१, १२५, १२८, १२९, १३१, १३४, १३९, १४०, १४४, १६१, १७७, १८०, १८१, १८२, १८७, १९१, १९३, १९५, २०१, २०२, २०७, २०८, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २२०, २२७।

१३. राजगिरिय ९, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, १२७, १५४, १६८, १६९।

१४. सिद्धार्थिक ९, ६४, ६५, ६७, ६८, ६९, १६८, १६९।

१५. हेतुवादी १५०, १५२, १५५, १५९, १७०, १७१, १९४, १९६, २२७।

१६. वैतुल्यक १७३, १७४, १७५, १७६, १७८, १७९, २१९।

१७. महाशून्यवादी १७२।
(वैतुल्यक)

१८. अनिश्चित ७, २५, २९, ३०, ३१, ३८, ५७, ७९, ९९, १०३, १२२, १२३, १२६, १४८, १४९, १५३, १६२।

महेश तिवारी
२९-३-७१

कथावत्थु-अट्ठकथा

विसय-सूची

१५. पन्नरसमो वग्गो १६८

१६. सोळसमो वग्गो १७५

१७. सत्तरसमो वग्गो १८०

१८. अट्ठारसमो वग्गो

१९. एकूनवीसतिमो वग्गो

२०. वीसतिमो वग्गो

२१. एकवीसतिमो वग्गो

संकेत-सूची

अ. सा.=अट्ठसालिनी

अं. नि.=अंगुत्तरनिकायो

क. व.=कथावत्थु

क. व. अ.=कथावत्थुअट्ठकथा

खु. नि.=खुद्दकनिकायो

ग. वं.=गन्धवंसो

चु. व.=चुल्लवग्गो

दी. नि.=दीघनिकायो

दी. वं.=दीपवंसो

प. प. अ.=पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

म. नि.=मज्झिमनिकायो

म. बो. वं.=महाबोधिवंसो

म. वं.=महावंसो

म.=बर्मी

रो.=रोमन

वि.=विनयपिटकं

स. सं.=सद्धम्मसंगहो

सं. नि.=संयुत्तनिकायो

स्या.=स्यामी

सी.=सिंहली

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

कथावत्थु-अट्ठकथा

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

कथावत्थु-अट्ठकथा

वत्थुगाथा

निसिन्नो देवलोकस्मिं, देवसङ्घपुरक्खतो । B. 105 R. 1
सदेवकस्स लोकस्स, सत्था अप्पटिपुग्गलो ॥
सब्बपञ्ञत्तिकुसलो, पञ्ञत्तिपरिदीपनं ।
वत्वा पुग्गलपञ्ञत्तिं, लोके उत्तमपुग्गलो ॥
यं पुग्गलकथादीनं, कथानं वत्थुभावतो ।
कथावत्थुप्पकरणं, सङ्खेपेन अदेसयी ॥
मातिकाठपनेनेव, ठपितस्स सुरालये ।
तस्स मोग्गलिपुत्तेन, विभत्तस्स महीतले ॥
इदानि यस्मा सम्पत्तो, अत्थसंवण्णनाक्कमो ।
तस्मा नं वण्णयिस्सामि, तं सुणाथ समाहिता ति ॥

निदानकथा

यमकपाटिहीरावसानस्मिं हि भगवा तिदसपुरे पारिच्छत्तकमूले ण्डुकम्बलसिलायं वस्सं उपगन्त्वा मातरं कायसक्खिं कत्वा देवपरिसाय भिधम्मकथं कथेन्तो धम्मसङ्गणि-विभङ्ग-धातुकथा-पुग्गलपञ्ञत्तिप्प-रणानि देसयित्वा कथावत्थुदेसनाय वारे सम्पत्ते–"अनागते मम वको महापञ्ञो मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो नाम उप्पन्नं सासनमलं धेत्वा ततियसङ्गीतिं करोन्तो भिक्खुसङ्घस्स मज्झे निसिन्नो सकवादे ञ्च सुत्तसतानि परवादे पञ्चा ति सुत्तसहस्सं समोधानेत्वा इमं करणं भाजेस्सती" ति तस्सोकासं करोन्तो या चेसा पुग्गलवादे ताव तूसु पञ्हेसु द्विन्नं पञ्चकानं वसेन अट्ठमुखा वादयुत्ति, तं आदिं कत्वा R. 2

सब्बकथामग्गेसु असम्पुण्णभाणवारमत्ताय तन्तिया मातिकं ठपेसि । B. 106 अथावसेसं अभिधम्मकथं वित्थारनयेनेव कथेत्वा वुत्थवस्सो सुवण्ण-रजतसोपानमज्झे[1] मणिमयेन सोपानेन देवलोकतो सङ्कस्सनगरे ओरुय्ह सत्तहितं सम्पादेन्तो यावतायुकं ठत्वा अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया परिनिब्बायि ।

अथस्स महाकस्सपप्पमुखो वसीगणो अजातसत्तुराजानं सहायं गहेत्वा धम्मविनयसरीरं सङ्गहं आरोपेसि । ततो वस्ससतस्स अच्चयेन वज्जिपुत्तका भिक्खू दस वत्थूनि दीपयिंसु । तानि सुत्वा काकण्डकस्स ब्राह्मणस्स पुत्तो यसत्थेरो सुसुनागपुत्तं कालासोकं[2] नाम राजानं सहायं गहेत्वा द्वादसन्नं भिक्खुसतसहस्सानं अन्तरे सत्तथेरसतानि उच्चिनित्वा तानि दसवत्थूनि मद्दित्वा धम्मविनयसरीरं सङ्गहं आरोपेसि ।

अट्ठारस आचरियवादा

तेहि पन धम्मसङ्गाहकत्थेरेहि निग्गहिता दससहस्सा वज्जिपुत्तका भिक्खू पक्खं परियेसमाना अत्तनो अनुरूपं दुब्बलपक्खं लभित्वा विसुं महासङ्घिकाचरियकुलं नाम अकंसु । ततो भिज्जित्वा अपरानि द्वे आचरियकुलानि जातानि——गोकुलिका च, एकब्योहारिका[3] च । गोकुलिकनिकायतो भिज्जित्वा अपरानि द्वे आचरियकुलानि जातानि—पण्णत्तिवादा च, बाहुलिया[4] च । बहुस्सुतिका ति पि तेसं येव नामं । तेसं येव अन्तरे चेतियवादा नाम अपरे आचरियवादा उप्पन्ना । एवं महासङ्घिकाचरियकुलतो दुतिये वस्ससते पञ्चाचरियकुलानि उप्पन्नानि । तानि महासङ्घिकेहि सद्धिं छ होन्ति ।

तस्मिं येव दुतिये वस्ससते थेरवादतो भिज्जित्वा द्वे आचरियवादा उप्पन्ना——महिसासका[5] च, वज्जिपुत्तका च । तत्थ वज्जिपुत्तकवादतो भिज्जित्वा अपरे चत्तारो आचरियवादा उप्पन्ना——धम्मुत्तरिया, भद्र-यानिका, छन्नागारिका, समितिया ति । पुन तस्मिं येव दुतिये वस्ससते

१. सोपानानं मज्झे सी. स्या. रो. ।
२. असोकं स्या. रो. ।
३. एकब्बोहारिका रो. ।
४. बाहुलिका सी. रो. ।
५. महिंसासका सी. रो. ।

महिसासकवादतो भिज्जित्वा सब्बत्थिवादा[1] धम्मगुत्तिका ति द्वे आचरियवादा उप्पन्ना। पुन सब्बत्थिवादकुलतो भिज्जित्वा कस्सपिका R. 3
नाम जाता। कस्सपिकेसु[2] भिन्नेसु अपरे सङ्कन्तिका नाम जाता। सङ्कन्तिकेसु भिन्नेसु सुत्तवादा नाम जाता ति थेरवादतो भिज्जित्वा इमे एकादस आचरियवादा उप्पन्ना। ते थेरवादेहि सद्धिं द्वादस होन्ति। B. 107
इति इमे च द्वादस, महासङ्घिकानं च छ आचरियवादा ति सब्बेव[3] अट्ठारस आचरियवादा दुतिये वस्ससते उप्पन्ना। अट्ठारस निकाया ति पि, अट्ठारसाचरियकुलानी ति पि एतेसं येव नामं। एतेसु पन सत्तरस वादा भिन्नका, थेरवादो असम्भिन्नको ति वेदितब्बो। वुत्तं पि चेतं **दीपवंसे**[4]—

"निक्कड्ढिता पापभिक्खू, थेरेहि वज्जिपुत्तका।
अञ्ञं पक्खं लभित्वान, अधम्मवादी बहू जना॥
दससहस्सा समागन्त्वा, अकंसु धम्मसङ्गहं।
तस्मायं धम्मसङ्गीति, महासङ्गीति वुच्चति॥
महासङ्गीतिका भिक्खू, विलोमं अकंसु सासने।
भिन्दित्वा मूलसङ्गहं, अञ्ञं अकंसु सङ्गहं॥
अञ्ञत्र सङ्गहितं[5] सुत्तं, अञ्ञत्र अकरिंसु ते।
अत्थं धम्मं च भिन्दिंसु, विनये निकायेसु च पञ्चसु॥
परियायदेसितं चापि, अथो निप्परियायदेसितं।
नीतत्थं चेव नेय्यत्थं, अजानित्वान भिक्खवो॥
अञ्ञं सन्धाय भणितं, अञ्ञं अत्थं ठपयिंसु ते।
ब्यञ्जनच्छायाय ते भिक्खू, बहुं अत्थं विनासयुं॥
छड्डेत्वान एकदेसं, सुत्तं विनयगम्भीरं।
पतिरूपं सुत्तं विनयं, तं च अञ्ञं करिंसु ते॥

१. सब्बत्थिकवादा स्या.। २. ० पि रो.।
३. सब्बे च रो.। ४. दी. वं. पृ. ३६.।
५. सङ्गहिता म.।

परिवारं अत्थुद्धारं, अभिधम्मं छप्पकरणं।
पटिसम्भिदं च निद्देसं, एकदेसं च जातकं ॥
एत्तकं विस्सज्जित्वान,[१] अञ्ञानि[२] अकरिंसु ते।
नामं लिङ्गं परिक्खारं, आकप्पकरणानि च ॥
पकतिभावं जहित्वा,[३] तं च अञ्ञं अकंसु ते।
पुब्बङ्गमा भिन्नवादा, महासङ्गीतिकारका ॥
108 तेसं च अनुकारेन, भिन्नवादा बहू अहु।
ततो अपरकालम्हि, तस्मिं भेदो अजायथ।
गोकुलिका एकब्योहारि, द्विधा भिज्जित्थ भिक्खवो।
गोकुलिकानं द्वे भेदा, अपरकालम्हि जायथ ॥
बहुस्सुतिका च पञ्ञत्ति, द्विधा भिज्जित्थ भिक्खवो।
चेतिया च[४] पुनवादी, महासङ्गीति भेदका ॥
पञ्चवादा इमे सब्बे, महासङ्गीतिमूलका।
अत्थं धम्मं च भिन्दिंसु, एकदेसं च सङ्गहं ॥
गन्थं च एकदेसम्हि, छड्डेत्वा अञ्ञं अकंसु ते।
नामं लिङ्गं परिक्खारं, आकप्पकरणानि[५] च ॥
पकतिभावं जहित्वा, तं च अञ्ञं अकंसु ते।
विसुद्धत्थेरवादम्हि, पुन भेदो अजायथ ॥
महिसासका[६] वज्जिपुत्तका, द्विधा भिज्जित्थ भिक्खवो।
वज्जिपुत्तकवादम्हि, चतुधा भेदो अजायथ ॥
धम्मुत्तरिका भद्दयानिका,[७] छन्नागारिका च समिति[८]।
महिसासकानं द्वे भेदा, अपरकालम्हि अजायथ ॥
सब्बत्थिवादा धम्मगुत्ता, द्विधा भिज्जित्थ भिक्खवो।
सब्बत्थिवादानं कस्सपिका, सङ्कन्तिकस्सपिकेन[९] च ॥

---

१. विस्सज्जेत्वान सी, विभजित्वान स्या.।
२. अञ्ञं न रो.।
३. विजाहित्वा रो.।
४. व रो.।
५. आकप्पकरणीयानि च रो.।
६. महिंसासका रो.।
७. भद्रयानिका रो.।
८. संमित्ति रो.।
९. कस्सपिकेना पि संकन्तिका रो.।

सङ्कन्तिकानं सुत्तवादी, अनुपुब्बेन भिज्जथ ।
इमे एकादस वादा, सम्भिन्ना थेरवादतो ॥
अत्थं धम्मं च भिन्दिसु, एकदेसं च सङ्गहं ।
गन्थं च एकदेसम्हि, छड्डेत्वा अञ्ञं अकंसु ते ॥
नामं लिङ्गं परिक्खारं, आकप्पकरणानि च । R
पकतिभावं जहित्वा,[१] तं च अञ्ञं अकंसु ते ॥
सत्तरस भिन्नवादा, एकवादो अभिन्नको ।
सब्बेवट्ठारस होन्ति, भिन्नवादेन ते सह ॥
निग्रोधोव महारुक्खो, थेरवादानमुत्तमो । B. 1(
अनूनं अनधिकं च, केवलं जिनसासनं ॥
सन्तका विय रुक्खम्हि, निब्बत्ता वादसेसका ।
पठमे वस्ससते नत्थि, दुतिये वस्ससतन्तरे ।
भिन्ना सत्तरसवादा, उप्पन्ना जिनसासने" ति ॥

छ आचरियवादा

अपरापरं पन हेमवतिका,[२] राजगिरिका, सिद्धत्थिका, पुब्बसेलिया, अपरसेलिया वाजिरिया ति अञ्ञे पि छ आचरियवादा उप्पन्ना । ते इध अनधिप्पेता ।

सासनसंसुद्धिकथा

पुरिमकानं पन अट्ठारसन्नं आचरियवादानं वसेन पवत्तमाने सासने पटिलद्धसद्धो असोको धम्मराजा दिवसे दिवसे बुद्धपूजाय सतसहस्सं, धम्मपूजाय सतसहस्सं, सङ्घपूजाय सतसहस्सं, अत्तनो आचरियस्स निग्रोधत्थेरस्स सतसहस्सं, चतूसु द्वारेसु भेसज्जत्थाय सतसहस्सं ति पञ्चसतसहस्सानि परिच्चजन्तो सासने उळारं लाभसक्कारं पवत्तेसि ।

तित्थिया हतलाभसक्कारा[३] अन्तमसो घासच्छादनमत्तं[४] पि अलभन्ता लाभसक्कारं पत्थयमाना भिक्खूसु पब्बजित्वा सकानि सकानि दिट्ठि-

---

१. विजहित्वा रो. ।
२. हेमवतका रो. ।
३. रहितलाभसक्कारा स्या. ।
४. घासच्छादनं पि स्या. रो. ।

गतानि—"अयं धम्मो, अयं विनयो, इदं सत्थुसासनं" ति दीपेन्ति। पब्बज्जं अलभमाना पि सयमेव केसे छिन्दित्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा विहारेसु विचरन्ता उपोसथकम्मादिकरणकाले सङ्घमज्भं पविसन्ति। ते भिक्खुसङ्घेन[1] धम्मेन विनयेन सत्थुसासनेन निग्गय्हमाना पि धम्मविनयानुलोमाय पटिपत्तिया असण्ठहन्ता अनेकरूपं सासनस्स अब्बुदं च मलं च कण्टकं च समुट्ठापेन्ति। केचि अग्गिं परिचरन्ति, केचि पञ्चातपे तपन्ति, केचि आदिच्चं अनुपरिवत्तन्ति, केचि "धम्मं R. 6 च विनयं च वोभिन्दिस्सामा" ति तथा तथा पग्गण्हिंसु। तदा भिक्खुसङ्घो न तेहि सद्धिं उपोसथं वा पवारणं वा अकासि। असोकारामे सत्त वस्सानि उपोसथो उपच्छिज्जि।

राजा "आणाय कारेस्सामी" ति वायमन्तो पि कारेतुं नासक्खि, अञ्ञदत्थु दुग्गहितगाहिना बालेन अमच्चेन अनेकेसु भिक्खूसु जीविता वोरोपितेसु विप्पटिसारी अहोसि। सो तं च विप्पटिसारं तं च सासने उप्पन्नं अब्बुदं च[2] वूपसमेतुकामो B. 110 "को नु खो इमस्मिं अत्थे पटिबलो" ति सङ्घं पुच्छित्वा "मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो महाराजा" ति सुत्वा सङ्घस्स वचनेन अहोगङ्गा[3] पब्बततो थेरं पक्कोसापेत्वा इद्धिपाटिहारियदस्सनेन थेरस्स आनुभावे[4] निब्बिचिकिच्छो अत्तनो कुक्कुच्चं पुच्छित्वा विप्पटिसारं वूपसमेसि। थेरो पि तं राजुय्याने येव वसन्तो सत्त दिवसानि समयं उग्गण्हापेसि। सो उग्गहितसमयो सत्तमे दिवसे असोकारामे भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा साणिपाकारं परिक्खिपापेत्वा साणिपाकारन्तरे निसिन्नो एकलद्धिके एकलद्धिके भिक्खू एकतो एकतो कारेत्वा एकमेकं भिक्खुसमूहं पक्कोसापेत्वा पुच्छि—"भन्ते,[5] किं वादी सम्मासम्बुद्धो" ति? ततो सस्सतवादिनो—"सस्सतवादी" ति आहंसु। एकच्चसस्सतिका, अन्तानन्तिका, अमराविक्खेपिका, अधिच्चसमुप्पन्निका, सञ्ञीवादा,

१. भिक्खू संघेन रो.।
२. म. पोत्थके नत्थि।
३. अधो ० स्या., अहोगङ्ग ० रो.।
४. आनुभावेन स्या. रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि।

असञ्ञीवादा, नेवसञ्ञीनासञ्ञीवादा, उच्छेदवादा, दिट्ठधम्मनिब्बानवादा–"दिट्ठधम्मनिब्बानवादी" ति आहंसु ।

राजा पठममेव समयस्स उग्गहितत्ता नयिमे भिक्खू अञ्ञतित्थिया इमे ति ञत्वा तेसं सेतकानि वत्थानि दत्वा उप्पब्बाजेसि । ते सब्बे पि सट्ठिसहस्सा अहेसुं । अथ अञ्ञे भिक्खू पक्कोसापेत्वा पुच्छि–"किं वादी, भन्ते, सम्मासम्बुद्धो" ति ? "विभज्जवादी, महाराजा" ति । एवं वुत्ते राजा थेरं पुच्छि–"विभज्जवादी भन्ते सम्मासम्बुद्धो" ति ? "आम, महाराजा" ति । ततो राजा–'सुद्धं, दानि भन्ते, सासनं, करोतु भिक्खुसङ्घो उपोसथं' ति आरक्खं दत्वा नगरं पाविसि ।

समग्गो सङ्घो सन्निपतित्वा उपोसथं अकासि । तस्मिं सन्निपाते सट्ठिभिक्खुसतसहस्सानि अहेसुं । तस्मिं समागमे मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरो यानि च तदा उप्पन्नानि वत्थूनि, यानि च आयतिं उप्पज्जिस्सन्ति, R. 7 सब्बेसं पि तेसं पटिबाहनत्थं सत्थारा दिन्ननयवसेनेव तथागतेन ठपितमातिकं विभजन्तो सकवादे पञ्च सुत्तसतानि परवादे पञ्चा ति सुत्तसहस्सं आहरित्वा इमं[1] परप्पवादमथनं आयतिलक्खणं **कथावत्थुप्पकरणं** अभासि ।

ततो सट्ठिसतसहस्ससङ्घेसु[2] भिक्खू उच्चिनित्वा तिपिटकपरियत्तिधरानं पभिन्नपटिसंभिदानं भिक्खूनं सहस्समेकं गहेत्वा यथा महाकस्सपत्थेरो च यसत्थेरो च[3] धम्मं च विनयं च संगायिंसु; एवमेव[4] सङ्गायन्तो सासनमलं विसोधेत्वा ततियसंगीतिं अकासि । तत्थ अभि- B. 111 धम्मं संगायन्तो इमं यथा भासितं पकरणं सङ्गहं आरोपेसि ।

तेन वुत्तं––

"यं पुग्गलकथादीनं, कथानं वत्थुभावतो ।
कथावत्थुप्पकरणं, सङ्खेपेन अदेसयी ॥

१. इदं रो. ।
२. सतसहस्ससंघेसु-रो. ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. एवमेवं रो. ।

मातिकाठपनेनेव, ठपितस्स सुरालये ।
तस्स मोग्गलिपुत्तेन, विभत्तस्स महीतले ॥
इदानि यस्मा सम्पत्तो, अत्थसंवण्णनाक्कमो ।
तस्मा नं वण्णयिस्सामि, तं सुणाथ समाहिता" ति ॥

निदानकथा निट्ठिता

१. महावग्गो

१. पुग्गलकथा

१. सुद्धसच्चिकट्ठो

१. अनुलोमपच्चनीकवण्णना

१. तत्थ **पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना** ति B. 112 (क० व० ३) अयं पुच्छा । **आमन्ता** ति अयं पटिजानना । कस्स पनायं पुच्छा, कस्स पटिजानना ति ? असुकस्सा ति न वत्तब्बा । भगवता हि इमस्मिं पकरणे नानप्पकारानं लद्धीनं विसोधनत्थं तन्तिवसेन[1] मातिका ठपिता । सा थेरेन सत्थारा दिन्ननये ठत्वा तन्तिवसेन विभत्ता । न हि थेरो यत्तका एत्थ वादमग्गा दस्सिता, तत्तकेहि वादीहि[2] सद्धिं वादेन विग्गाहिककथं कथेसि । एवं सन्ते पि पन तासं तासं[3] कथानं अत्थस्स सुखावधारणत्थं सकवादीपुच्छा, परवादीपुच्छा, सकवादीपटिञ्ञा, परवादीपटिञ्ञा ति एवं विभागं दस्सेत्वा व[4] अत्थवण्णनं करिस्साम ।

पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना ति हि[5] अयं सकवादीपुच्छा । ताय "ये अत्थि पुग्गलो ति एवंलद्धिका पुग्गलवादिनो, ते एवं पुच्छितब्बा" ति दीपेति । के पन पुग्गलवादिनो ति ? सासने R. 8 वज्जिपुत्तका चेव समितिया च बहिद्धा च बहू अञ्ञतित्थिया ।

तत्थ **पुग्गलो** ति अत्ता, सत्तो जीवो । **उपलब्भती** ति पञ्ञाय उपगन्त्वा लब्भति, ञायती ति अत्थो । **सच्चिकट्ठपरमत्थेना** ति एत्थ **सच्चिकट्ठो** ति मायामरीचिआदयो विय अभूताकारेन अग्गहेतब्बो भूतट्ठो । **परमत्थो** ति अनुस्सवादिवसेन अग्गहेतब्बो उत्तमत्थो । उभ-

---

१. ० वसेनेव रो. ।
२. वादेहि स्या. ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. रो. पोत्थके नत्थि ।
५. रो. पोत्थके नत्थि ।

येनापि यो परतो "पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेन, रूपं च उपलब्भती" ति आदिना खन्धायतनधातुइन्द्रियवसेन सत्तपञ्ञासविधो धम्मप्पभेदो दस्सितो । यथा सो भूतेन सभावट्ठेन उपलब्भति, किं[1] एवं तव पुग्गलो उपलब्भती ति पुच्छति । परवादी **आमन्ता** ति पटिजानाति । पटिजाननञ्हि कत्थचि "आम भन्ते" ति आगच्छति, कत्थचि "आमो" ति पटिजाननं[2] आगच्छति । इध पन "आमन्ता" ति आगतं । तत्रायं अधिप्पायो–सो हि यं तं परतो वुत्तं भगवता–"अत्थि
B. 113 पुग्गलो अत्तहिताय पटिपन्नो" ति (अं० नि० २-१००) सुत्तं आगतं, तं गहेत्वा यस्मा पन भगवा सच्चवादी न विसंवादनपुरेक्खारो वाचं भासति, नापि अनुस्सवादिवसेन धम्मं देसेति, सदेवकं पन लोकं सयं अभिञ्ञा[3] सच्छिकत्वा पवेदेति, तस्मा यो तेन[4] वुत्तो "अत्थि पुग्गलो अत्तहिताय पटिपन्नो" ति, सो सच्चिकट्ठपरमत्थेनेव अत्थी ति लद्धिं गहेत्वा "आमन्ता" ति पटिजानाति ।

अथस्स तादिसस्स लेसवचनस्स छलवादस्स ओकासं अददमानो सकवादी **यो सच्चिकट्ठो** ति आदिमाह । तत्रायं अधिप्पायो – य्वायं परतो "सप्पच्चयो अप्पच्चयो, सङ्खतो असङ्खतो, सस्सतो, असस्सतो सनिमित्तो अनिमित्तो" ति एवं परिदीपितो रूपादिसत्तपञ्ञासविधो धम्मप्पभेदो आगतो; न सम्मुतिसच्चवसेन, नापि अनुस्सवादिवसेन गहेतब्बो । अत्तनो पन भूतताय एव सच्चिकट्ठो, अत्तपच्चक्खताय[5] च परमत्थो । तं सन्धायाह–"यो सच्चिकट्ठो परमत्थो, ततो सो
R. 9 पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना" ति ।

ततो ति करणवचनमेतं[6], तस्मा तेन सच्चिकट्ठपरमत्थेन सो पुग्गलो उपलब्भती ति अयमेत्थ अत्थो । इदं वुत्तं होति – रुप्पनादिभेदेन वा सप्पच्चयादिभेदेन वा आकारेन यो सच्चिकट्ठपरमत्थो उपलब्भति, किं ते पुग्गलो[7] पि तेनाकारेन उपलब्भती ति ? **न हेवं वत्तब्बे** ति

१. म० पोत्थके नत्थि ।
२. पटिजाननं ति सी.; पटिजानन्तो ति रो. ।
३. अभिञ्ञाय रो. ।
४. ० भगवता स्या. ।
५. अत्तनो पच्चक्खताय रो. ।
६. कारणवचनमेतं रो. ।
७. ० सो स्या. ।

अवजानना परवादिस्स। सो हि तथारूपं पुग्गलं अनिच्छन्तो अवजानाति। तत्रायं पदच्छेदो–'न हि एवं वत्तब्बे' ति, न हि एवं ति पि वट्टति। द्विन्नं पि एवं न वत्तब्बो ति अत्थो।

आजानाहि निग्गहं ति सकवादिवचनं। यस्मा ते पुरिमाय वत्तब्बपटिञ्ञाय पच्छिमा नवत्तब्बपटिञ्ञा, पच्छिमाय च पुरिमा न सन्धियति, तस्मा पि[1] निग्गहं पत्तो। तं निग्गहं दोसं अपराधं सम्पटिच्छाही ति अत्थो। एवं निग्गहं आजानापेत्वा इदानि तं ठपनाय चेव अनुलोमपटिलोमतो पापनारोपनानं च वसेन पाकटं करोन्तो **हञ्चि पुग्गलो** ति आदिमाह।

तत्थ **हञ्चि पुग्गलो उपलब्भती** ति यदि पुग्गलो उपलब्भति, सचे पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना ति अत्थो। अयं ताव परवादीपक्खस्स ठपनतो निग्गहपापनारोपनानं लक्खणभूता अनुलोमठपना B. 114
नाम। **तेन वत रे** ति आदि अनुलोमपक्खे निग्गहस्स पापितत्ता अनुलोमपापना नाम। तत्थ **तेना** ति कारणवचनं। **वता** ति ओकप्पनवचनं। **रे** ति आमन्तनवचनं। इदं वुत्तं होति---तेन[2], रे वत्तब्बे वत[2], रे हम्भो, भद्रमुख, तेन कारणेन वत्तब्बो येवा ति[3]। **यं तत्थ वदेसी** ति आदि अनुलोमपक्खे निग्गहस्स आरोपितत्ता अनुलोमरोपना नाम। यं तस्स[4] परियोसाने मिच्छा ति पदं तस्स पुरतो इदं 'ते' ति आहरितब्बं। इदं ते मिच्छा ति अयञ्हेत्थ अत्थो। परतो च पाळियं एतं आगतमेव।

नो चे पन वत्तब्बे ति आदि "न हेवं वत्तब्बे" ति पटिक्खित्तपक्खस्स ठपितत्ता पटिलोमतो निग्गहपापनारोपनानं लक्खणभूता पटिलोमठपना नाम। **नो च वत रे** ति आदि पटिलोमपक्खे निग्गहस्स पापितत्ता पटिलोमपापना नाम। पुन **यं तत्थ वदेसी** ति आदि R. 10
पटिलोमपक्खे निग्गहस्स आरोपितत्ता पटिलोमरोपना नाम। इधा पि

---

१. रो. पोत्थके नत्थि।
२–२. तेन वत रे वतब्बे ति स्या.; वतब्बं वत रे रो.।
३. ० अत्थो रो.।
४. चस्स स्या. रो.।

परियोसाने मिच्छा-ति-पदस्स पुरतो इदं ते ति आहरितब्बमेव । परतो पि एवरूपेसु ठानेसु एसेव नयो ।

तत्रायं आदितो पट्ठाय सङ्खेपत्थो – यदि पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेन, तेन वत भो[1] सो उपलब्भती ति वत्तब्बो । यं पन तत्थ वदेसि "वत्तब्बो खो पुरिमपञ्हे 'सच्चिकट्ठपरमत्थेन उपलब्भती' ति, नो च वत्तब्बो दुतियपञ्हे 'ततो सो पुग्गलो उपलब्भती' ति", इदं ते मिच्छा ति एवं ताव अनुलोमतो ठपनापापनारोपना होन्ति । अथ न वत्तब्बो दुतियपञ्हे "ततो सो उपलब्भती" ति, पुरिमपञ्हे पि न वत्तब्बो व । यं पनेत्थ वदेसि "वत्तब्बो खो पुरिमपञ्हे 'सच्चिकट्ठपरमत्थेन उपलब्भती' ति, नो च वत्तब्बो दुतियपञ्हे 'ततो सो पुग्गलो उपलब्भती' ति," इदं ते मिच्छा ति एवं पटिलोमतो ठपनापापनारोपना होन्ति । एवमेतं निग्गहस्स च अनुलोमपटिलोमतो चतुन्नं पापनारोपनानं च वुत्तत्ता उपलब्भती ति आदिकं अनुलोमपञ्चकं नाम । एत्थ च किञ्चा पि अनुलोमतो पापनारोपनाहि एको, पटिलोमतो पापनारोपनाहि
B. 115 एको ति द्वे निग्गहा कता । 'आजानाहि निग्गहं' ति एतस्सेव पनेत्थ पुग्गलो उपलब्भती ति पठमं वादं निस्साय पठमस्स निग्गहस्स द्वीहाकारेहि आरोपितत्ता एकोवायं निग्गहो ति पठमो निग्गहो ।

२. इदानि पच्चनीकनयो होति । तत्थ पुच्छा परवादिस्स । सो हि "अत्थि पुग्गलो अत्तहिताय पटिपन्नो" ति गहितत्ता "नुपलब्भती" ति (क० व० ४) असम्पटिच्छन्तो एवं पुच्छति । सकवादी यथा रूपादिधम्मा उपलब्भन्ति, एवं अनुपलब्भनीयतो **आमन्ता** ति पटिजानाति । पुन इतरो[2] अत्तना[3] अधिप्पेतं सच्चिकट्ठं येव सन्धाय **यो सच्चिकट्ठो** ति आदिमाह । सम्मुतिसच्चपरमत्थसच्चानि वा एकतो कत्वा पि एवमाह । सकवादी 'पुग्गलो' ति उपादापञ्ञत्तिसब्भावतो[4] पि द्विन्नं सच्चानं एकतो कत्वा पुच्छितत्ता पि न **हेवं** ति पटिक्खिपति ।

---

१. रे स्या.; ततो रो. ।
२. ० परवादी स्या. ।
३. अत्तनो रो. ।
४. ० संभावतो रो. ।

इदानि किञ्चा पि तेन पठमं परमत्थसच्चवसेन नुपलब्भनीयता
सम्पटिच्छिता,[1] पच्छा सम्मुतिसच्चवसेन वोमिस्सकवसेन[2] वा पटि- R. 11
क्खित्ता। परवादी पन 'नुपलब्भती' ति वचनसामञ्ञमत्तं[3] छलवादं
निस्साय यं तया पठमं पटिञ्ञातं, तं[4] पच्छा पटिक्खित्तं ति भण्डनस्स
पटिभण्डनं विय अत्तनो कतस्स निग्गहकम्मस्स पटिकम्मं करोन्तो
आजानाहि पटिकम्मं ति आह। इदानि यथास्स अनुलोमपञ्चके
सकवादिना वादट्ठपनं कत्वा अनुलोमपटिलोमतो पापनारोपनाहि
निग्गहो पाकटो कतो, एवं पटिकम्मं पाकटं करोन्तो **हञ्चि पुग्गलो**
ति आदिमाह। तं हेट्ठा वुत्तनयेनेव अत्थतो वेदितब्बं। यस्मा पनेत्थ
ठपना नाम परवादीपक्खस्स ठपनतो[5] "अयं तव दोसो" ति दस्सेतुं
ठपनमत्तमेव होति, न निग्गहस्स वा पटिकम्मस्स वा पाकटभावकरणं,
पापनारोपनाहि पनस्स पाकटकरणं होति। तस्मा इदं अनुलोमपटि-
लोमतो पापनारोपनानं वसेन चतूहाकारेहि। पटिकम्मस्स कतत्ता
पटिकम्मचतुक्कं नामा ति एकं चतुक्कं वेदितब्बं।

.३. एवं पटिकम्मं कत्वा इदानि य्वास्स[6] अनुलोमपञ्चके
सकवादिना निग्गहो कतो, तस्स तमेव छलवादं निस्साय दुक्कटभावं
दस्सेन्तो **त्वञ्चे पन मञ्ञसी** ति (क० व० ४) आदिमाह।
तत्थ **त्वं चे पन मञ्ञसी** ति यदि त्वं मञ्ञसि। **वत्तब्बे खो** ति
इदं पच्चनीके आमन्ता ति पटिञ्ञं सन्धाय वुत्तं। **नो च वत्तब्बे** ति B. 116
इदं पन न हेवा ति अवजाननं सन्धाय वुत्तं। **तेन तव तत्था** ति तेन
कारणेन त्वंयेव तस्मिं नुपलब्भती ति पक्खे—"हेवं पटिजानन्तं ति
आमन्ता" ति एवं पटिजानन्तो। **हेवं निग्गहेतब्बे** ति पुन न हेवा
ति अवजानन्तो एवं निग्गहेतब्बो। **अथ तं निग्गण्हामा** ति अथेवं
निग्गहारहं तं निग्गण्हाम। **सुनिग्गहितो च होसी** ति सकेन मतेन
निग्गहितत्ता सुनिग्गहितो च भवसि।

---

१. सम्पटिच्छित्वा स्या.।
२. मिस्सकवसेन रो.।
३. सामञ्ञत्ता रो.।
४. रो. पोत्थके नत्थि।
५. रो. पोत्थके नत्थि।
६. य्वायं रो.।

R. 12 एवमस्स निग्गहेतब्बभावं दस्सेत्वा इदानि तं निग्गण्हन्तो **हञ्ची** ति आदिमाह । तत्थ ठपनापापनारोपना हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बा । परियोसाने पन **इदं ते मिच्छा** ति इदं तव वचनं मिच्छा होती ति अत्थो । इदं छलवादेन चतूहि आकारेहि निग्गहस्स कतत्ता निग्गहचतुक्कं नाम ।

४. एवं निग्गहं कत्वा पि[1] इदानि "यदि अयं मया तव मतेन कतो निग्गहो दुन्निग्गहो, यो मम तया हेट्ठा अनुलोमपञ्चके कतो निग्गहो, सो पि दुन्निग्गहो" ति दस्सेन्तो **एसे चे दुन्निग्गहिते** ति (क० व० ५) आदिमाह । तत्थ **एसे चे दुन्निग्गहिते** ति एसो चे तव वादो मया दुन्निग्गहितो । अथ वा एसो चे तव मया कतो निग्गहो दुन्निग्गहो । **हेवमेवं तत्थ दक्खा** ति तत्था पि तया मम हेट्ठा कते निग्गहे एवमेवं पस्स । इदानि य्वास्स हेट्ठा सकवादिना निग्गहो कतो, तं "वतब्बे खो" ति आदिवचनेन दस्सेत्वा पुन तं निग्गहं अनिग्गहभावं उपनेन्तो **नो च मयं तया** ति आदिमाह । तत्थ **नो च मयं तया तत्थ हेताय पटिञ्ञाय** ति आदीसु अयमत्थो––यस्मा सो तया मम कतो निग्गहो दुन्निग्गहो, तस्मा मयं तया तत्थ अनुलोमपञ्चके आमन्ता ति एताय पटिञ्ञाय एवं पटिजानन्ता पुन न हेवा ति पटिक्खेपे कते पि "आजानाहि निग्गहं" ति एवं न निग्गहेतब्बोयेव । एवं अनिग्गहेतब्बं पि मं निग्गण्हासि, ईदिसेन पन निग्गहेन दुन्निग्गहिता मयं होम ।

इदानि यं निग्गहं सन्धाय "दुन्निग्गहिता च होमा" ति अवोच, तं दस्सेतुं **हञ्चि पुग्गलो ...पे०... इदं ते मिच्छा** ति आह । एवमिदं
B. 117 अनुलोमपटिलोमतो चतूहि पापनारोपनाहि निग्गहस्स उपनीतत्ता उपनयनचतुक्कं नाम होति ।

५. इदानि–"न हेवं निग्गहेतब्बे" ति आदिकं निग्गमनचतुक्कं[2] नाम होति । तत्थ **न हेवं निग्गहेतब्बे** ति (क० व० ५) यथाहं तया

---

१. रो. पोत्थके नत्थि । २. निगमनचतुक्कं सी. ।

निग्गहितो, न हि एवं निग्गहेतब्बो। एतस्स हि निग्गहस्स दुन्निग्गहभावो मया साधितो। **तेन ही** ति तेन कारणेन, यस्मा एस निग्गहो दुन्निग्गहो, तस्मा यं मं निग्गण्हासि हञ्चि पुग्गलो…पे०…इदं ते मिच्छा ति, इदं निग्गण्हनं तव मिच्छा ति अत्थो। **तेन हि ये कते निग्गहे** ति येन कारणेन इदं मिच्छा, तेन कारणेन यो तया निग्गहो R. 13 कतो, सो दुक्कटो। यं मया पटिकम्मं कतं, तदेव सुकतं। या पि चेसा[1] पटिकम्मचतुक्कादिवसेन कथामग्गसम्पटिपादना कता, सा पि सुकता[2]। एवमेतं[3] पुग्गलो उपलब्भती ति आदिकस्स अनुलोमपञ्चकस्स नुपलब्भती ति आदिकानं पटिकम्मनिग्गहोपनयननिग्गमनचतुक्कानं वसेन अनुलोमपच्चनीकपञ्चकं नाम निद्दिट्ठं ति वेदितब्बं। एत्तावता[4] सकवादिनो पुब्बपक्खे सति परवादिनो वचनसामञ्ञमत्तेन छलवादेन जयो होति।

(२) पच्चनीकानुलोमवण्णना

६. इदानि यथा परवादिनो पुब्बपक्खे सति सकवादिनो धम्मेनेव तथेन[5] सुजयो होति, तथा वादुप्पत्तिं दस्सेतुं **पुग्गलो नुपलब्भती** ति (क० व० ६) पच्चनीकानुलोमपञ्चकं आरद्धं। तत्थ पच्चनीके पुच्छा परवादिस्स, रूपादिभेदं[6] सच्चिकट्ठपरमत्थं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स। सुद्धसम्मुतिसच्चं वा परमत्थमिस्सकं वा सम्मुतिसच्चं सन्धाय **यो सच्चिकट्ठो** ति पुन अनुयोगो परवादिस्स, सम्मुतिवसेन नुपलब्भती ति नवत्तब्बत्ता मिस्सकवसेन वा अनुयोगस्स संकिण्णत्ता **न हेवं** ति पटिक्खेपो सकवादिस्स। पटिञ्ञातं[7] पटिक्खिपती ति वचनसामञ्ञमत्तेन **आजानाहि निग्गहं** ति आदिवचनं परवादिस्स। एवमयं पुग्गलो नुपलब्भती ति दुतियवादं निस्साय दुतियो निग्गहो होती ति वेदितब्बो। एवं तेन छलेन निग्गहो आरोपितो।

---

१. एसा रो.। २. ० ति रो.।
३. एवमेवं रो.। ४. एवं ताव रो.।
५. तथेव भूतेन स्या.; तथेन भूतेन रो.। ६. रुपादिभेदेन रो.।
७. पटिञ्ञा तं रो.।

B. 118 ७-१०. इदानि[1] धम्मेन समेन अत्तनो वादे जयं दस्सेतुं अनुलोमनये पुच्छा सकवादिस्स, अत्तनो लद्धिं निस्साय पटिञ्ञा परवादिस्स। लद्धिया ओकासं अदत्वा परमत्थवसेन पुन अनुयोगो सकवादिस्स, परमत्थवसेन पुग्गलस्स अभावतो पटिक्खेपो परवादिस्स। ततो परं धम्मेन समेन अत्तनो जयदस्सनत्थं **आजानाहि पटिकम्मं** ति आदि सब्बं सकवादीवचनमेव होति। तत्थ सब्बेसं पटिकम्मनिग्गहोपनयन-निग्गमनचतुक्कानं हेट्ठा वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो। एवमिदं पुग्गलो
R. 14 नुपलब्भती ति आदिकस्स पच्चनीकपञ्चकस्स उपलब्भती ति आदीनं पटिकम्मनिग्गहोपनयननिग्गमनचतुक्कानं च वसेन पच्चनीकानुलोम-पञ्चकं नाम निद्दिट्ठं होति। एवमेतानि पठमसच्चिकट्ठे द्वे पञ्चकानि निद्दिट्ठानि। तत्थ पुरिमपञ्चके परवादिस्स सकवादिना कतो निग्गहो सुनिग्गहो। सकवादिस्स पन परवादिना छलवादं निस्साय पटिकम्मं कत्वा अत्तना[2] साधितो जयो दुज्जयो। दुतियपञ्चके सकवादिस्स पर-वादिना कतो निग्गहो दुन्निग्गहो। परवादिस्स पन सकवादिना धम्मवादं निस्साय पटिकम्मं कत्वा अत्तना साधितो जयो सुजयो ति पठमसच्चिकट्ठो[3]।

तत्थेतं वुच्चति––

"निग्गहो परवादिस्स, सुद्धो पठमपञ्चके।
असुद्धो पन तस्सेव, पटिकम्मजयो तहिं॥
निग्गहो सकवादिस्स, असुद्धो दुतियपञ्चके।
विसुद्धो पन तस्सेव, पटिकम्मजयो तहिं॥
तस्मा द्वीसु पि ठानेसु, जयो व सकवादिनो।
धम्मेन हि जयो नाम, अधम्मेन कुतो जयो॥
सच्चिकट्ठे यथा चेत्थ, पञ्चकद्वयमण्डिते।
धम्माधम्मवसेनेव, वुत्तो जयपराजयो॥
इतो परेसु सब्बेसु, सच्चिकट्ठेसु पण्डितो।
एवमेव विभावेय्य, उभो जयपराजये" ति॥

---

१. ० तस्सेव पटिञ्ञाय सी. स्या.। २. अत्तनो रो.।
३. ० निट्ठितो रो.।

२. ओकाससच्चिकट्ठो

१. अनुलोमपच्चनीकवण्णना

११. एवं सुद्धिकसच्चिकट्ठं वित्थारेत्वा इदानि तमेव अपरेहि B. 119
ओकासादीहि नयेहि वित्थारेतुं पुन **पुग्गलो उपलब्भती** ति (क०व०९) आदि आरद्धं। तत्थ पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा परवादिस्स। **पुन सब्बत्था** ति सरीरं सन्धाय अनुयोगो सकवादिस्स, रूपस्मिं अत्तानं समनुपस्सनादोसं च 'अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरं' ति आपज्जनदोसं च दिस्वा पटिक्खेपो परवादिस्स। सेसमेत्थ अनुलोमपच्चनीकपञ्चके हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। पाठो पन सङ्खित्तो। तत्थ यस्मा सरीरं सन्धाय R. 15
"सब्बत्थ न उपलब्भती" ति वुत्ते सरीरतो बहि उपलब्भती ति आपज्जति। तस्मा पच्चनीके पटिक्खेपो सकवादिस्स,पठमं अनुजानित्वा पच्छा अवजानाती ति छलवादस्स वसेन पटिकम्मं परवादिस्स। सेसं पाकटमेव।

३. कालसच्चिकट्ठो

१. अनुलोमपच्चनीकवण्णना

१२. दुतियनये **सब्बदा** ति (क० व० १०) पुरिमपच्छिमजातिकालं च धरमानपरिनिब्बुतकालं च सन्धाय अनुयोगो सकवादिस्स, स्वेव खत्तियो सो ब्राह्मणो ति आदीनं आपत्तिदोसं च धरमानपरिनिब्बुतानं विसेसाभावदोसं च दिस्वा पटिक्खेपो परवादिस्स। सेसं पठमनये[1] वुत्तसदिसमेव।

---

१. पठमनयेन रो.।

४. अवयवसच्चिकट्ठो

१. अनुलोमपच्चनीकवण्णना

१३. ततियनये **सब्बेसू** ति (क० व० १०) खन्धायतनादीनि सन्धाय अनुयोगो सकवादिस्स, रूपस्मिं अत्ता, चक्खुस्मिं अत्ता ति आदिदोसभयेन पटिक्खेपो परवादिस्स। सेसं तादिसमेवा ति।

ओकासादि सच्चिकट्ठवण्णना निट्ठिता

२. पच्चनीकानुलोमवण्णना

B. 120 १४-१६. एवमेतानि तीणि[1] अनुलोमपच्चनीकपञ्चके अनुलोममत्तवसेनेव ताव पटिपाटिया भाजेत्वा पुन पच्चनीकानुलोमपञ्चके पच्चनीकमत्तवसेनेव भाजेतुं **पुग्गलो नुपलब्भती** ति आदि आरद्धं। तत्थ अनुलोमपञ्चकस्स पाळियं[2] सङ्खिपित्वा आगते पच्चनीके वुत्तनयेनेव पच्चनीकस्स च पाळियं सङ्खिपित्वा आगते अनुलोमे वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो। एत्तावता सुद्धिकस्स चेव इमेसं च तिण्णं ति चतुन्नं सच्चिकट्ठानं एकेकस्मिं[3] सच्चिकट्ठे अनुलोमपच्चनीकस्स पच्चनीकानुलोमस्स चा ति द्विन्नं द्विन्नं पच्चनीकानं वसेन अयं[4] अट्ठमुखा नाम वादयुत्ति निद्दिट्ठा होती ति वेदितब्बा। या एकेकस्मिं मुखे[5] एकेकस्स निग्गहस्स वसेन **अट्ठकनिग्गहो** ति पाळियं लिखियति। तत्थेतं वुच्चति—

"एवं चतुब्बिधे पञ्हे, पञ्चकद्वयभेदतो।
एसा अट्ठमुखा नाम, वादयुत्ति पकासिता॥
R. 16 अट्ठेव निग्गहा तत्थ, चत्तारो तेसु[6] धम्मिका[6]।
अधम्मिका च चत्तारो, सब्बत्थ सकवादिनो।
जयो पराजयो चेव[7], सब्बत्थ परवादिनो" ति॥

सच्चिकट्ठवण्णना निट्ठिता

१. एवं इमानि तीणि रो.; ०मुखानि स्या.। २. पालिं रो.।
३. एकस्मिं रो.। ४. रो. पोत्थके नत्थि।
५. पक्खे स्या.। ६-६. ते सुधम्मिका रो.।
७. त्वेव रो.।

५. सुद्धिकसंसन्दनवण्णना

१७-२७. इदानि रूपादीहि सद्धि सच्चिकट्ठसंसन्दनं होति । तत्थ **रूपञ्चा** ति (क० व० १२) यथा रूपं परमत्थतो उपलब्भति, किं ते पुग्गलो पि तथेव उपलब्भती ति सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, अत्थि पुग्गलो ति वचनमत्तं गहेत्वा पटिञ्ञा परवादिस्स । यदि ते रूपं विय परमत्थतो पुग्गलो अत्थि, रूपतो वेदनादीनं विय पुग्गलस्सा पि अञ्ञत्तं[1] आपज्जती ति अनुयोगो सकवादिस्स, समयसुत्तविरोधं दिस्वा पटिक्खेपो परवादिस्स । सेसं अत्थतो पाकटमेव । धम्मतो पनेत्थ B. 121
सत्तपञ्ञासभेदस्स सच्चिकट्ठपरमत्थस्स वसेन सकवादीपक्खमूलके अनुलोमपच्चनीके[2] सत्तपञ्ञास अनुलोमपञ्चकानि दस्सितानि । पटिकम्मचतुक्कादीनि सङ्खित्तानि । परवादीपक्खमूलके पि पच्चनीकानुलोमे सत्तपञ्ञास पटिलोमपञ्चकानि दस्सितानि । पटिकम्मचतुक्कादीनि[3] सङ्खित्तानि । तत्थ "वुत्तं भगवता" ति वचनमत्तेन पुग्गलस्स अत्थितं रूपस्स च[4] सच्चिकट्ठपरमत्थवसेन उपलब्भनीयतं दस्सेत्वा उभिन्नं अञ्ञत्तं पटिजानापनत्थं **वुत्तं भगवता** ति अनुयोगो परवादिस्स, सम्मुतिपरमत्थानं एकत्तनानत्तपञ्हस्स ठपनीयत्ता पटिक्खेपो सकवादिस्स । सेसमिधा पि अत्थतो पाकटमेवा ति ।

सुद्धिकसंसन्दनवण्णना निट्ठिता

६. ओपम्मसंसन्दनवण्णना

२८-३६. इदानि रूपादीहेव सद्धिं ओपम्मवसेन सच्चिकट्ठ- R. 17
संसन्दनं होति । तत्थ रूपवेदनानं उपलद्धिसामञ्ञेन अञ्ञत्तपुच्छा च[5] पुग्गलरूपानं उपलद्धिसामञ्ञपुच्छा चा ति पुच्छाद्वयं पि

१. अञ्ञथत्तं स्या. । २. अनुलोमपञ्चके स्या. ।
३. ० चतुक्कानि रो. । ४. रो. पोत्थके नत्थि ।
५. व रो. ।

सकवादिस्स, उभो पि पटिञ्ञा परवादिस्स। परवादिना अनुञ्ञातेन उपलद्धिसामञ्ञेन रूपवेदनानं विय रूपपुग्गलानं अञ्ञत्तानुयोगो सकवादिस्स, पटिक्खेपो इतरस्स। सेसमिधा पि अत्थतो पाकटमेव। धम्मतो पनेत्थ रूपमूलकादीनं चक्कानं च वसेन सकवादीपक्खे वीसाधिकानि नव निग्गहपञ्चकसतानि दस्सितानि। कथं? खन्धेसु ताव रूपमूलके चक्के चत्तारि, तथा वेदनादिमूलकेसू ति वीसति। आयतनेसु चक्खायतनमूलके चक्के एकादस, तथा सेसेसू ति द्वत्तिससतं। धातूसु चक्खुधातुमूलके चक्के सत्तरस, तथा सेसेसू ति छाधिकानि तीणि सतानि। इन्द्रियेसु चक्खुन्द्रियमूलके चक्के एकवीसति, तथा सेसेसू ति द्वासट्ठाधिकानि चत्तारि सतानि। एवं सब्बानि पि वीसाधिकानि नव निग्गहपञ्चकसतानि होन्ति।

३७-४५. परवादीपक्खे पि **रूपं उपलब्भती** ति(क० व० २२) अनुलोमवसेनेव रूपवेदनादीनं अञ्ञत्तपटिञ्ञं कारेत्वा पुन अत्थि
B. 122 पुग्गलो ति सुत्तं निस्साय छलवसेन पुग्गलस्स रूपादीहि उपलद्धिसामञ्ञं आरोपेत्वा अञ्ञत्तानुयोगो कतो। सेसमिधा पि अत्थतो उत्तानमेव। धम्मतो पि सकवादीपक्खे वुत्तनयेन[1] वीसाधिकानि नव पटिकम्मपञ्चकसतानि दस्सितानि।

रूपादीहि सद्धिं ओपम्मवसेन सच्चिकट्ठसंसन्दनं निट्ठितं

७. चतुक्कनयसंसन्दनवण्णना

४६-५२. इदानि यं सच्चिकट्ठपरमत्थेन उपलब्भति, तेन यस्मा रूपादीसु[2] सत्तपञ्ञासाय सच्चिकट्ठपरमत्थेसु अञ्ञतरेन भवितब्बं; रूपादिनिस्सितेन वा, अञ्ञत्र वा रूपादीहि, रूपादीनं वा निस्सयेन, तस्मा इमिना **चतुक्कनयेन** सच्चिकट्ठसंसन्दनं आरद्धं। तत्थ **रूपं पुग्गलो**

१. ० नयेनेव रो.। २. ० वा रो.।

ति (क० व० २५) अनुयोगो सकवादिस्स, उच्छेददिट्ठिभयेन **न हेवा** ति पटिक्खेपो परवादिस्स, निग्गहारोपनं सकवादिस्स। किं पनेतं युत्तं, ननु रूपं वेदना ति वुत्तं[1] पि पटिक्खिपितब्बमेवा ति ? आम पटिक्खिपितब्बं। R 18 तं पन रूपतो वेदनाय अञ्ञसभावसब्भावतो[2], न अञ्ञत्ताभावतो। अयं च रूपादीसु एकधम्मतो पि पुग्गलस्स अञ्ञत्तं न इच्छति, तस्मा युत्तं। अयं च अनुयोगो रूपं पुग्गलो···पे०··· अञ्ञाताविन्द्रियं पुग्गलो ति सकलं परमत्थसच्चं सन्धाय आरद्धो। सकलं पन पच्चत्तलक्खणवसेन एकतो वत्तुं न सक्का ति तन्तिवसेन अनुयोगलक्खणमत्तमेतं ठपितं। तेन[3] विञ्ञू अत्थं विभावेन्ति। वादकामेन पन इमं लक्खणं गहेत्वा यथा यथा[4] परवादिस्स ओकासो न होति, तथा तथा[5] वत्तब्बं। इति तन्तिवसेन अनुयोगलक्खणस्स ठपितत्ता पि युत्तमेव। इमिना नयेन सब्बानुयोगेसु अत्थो वेदितब्बो।

अयं पन विसेसो—**रूपस्मिं पुग्गलो** ति (क० व० २५) आदीसु यथा एकं महाभूतं निस्साय तयो महाभूता, वत्थुरूपं निस्साय विञ्ञाणं रूपस्मिं ति वत्तुं वट्टति, किं ते एवं रूपस्मिं पुग्गलो ? यथा च सभागविनिब्भोगतो वेदनादयो सब्बधम्मा, अरूपा[6] वा पन चत्तारो खन्धा, निब्बानमेव वा "अञ्ञत्र रूपा" ति वत्तुं वट्टति, किं ते एवं पुग्गलो ? यथा च चित्तसमुट्ठानानं रूपानं निस्सयवसेन "वेदनाय B. 123
रूपं···पे०···विञ्ञाणस्मिं रूपं" ति वत्तुं वट्टति, किं ते एवं पुग्गलो ति ? सब्बानुयोगेसु पन उच्छेददिट्ठिभयेन चेव समयविरोधेन च पटिक्खेपो परवादिस्स। सेसमेत्थ अत्थतो पाकटमेव। धम्मतो पनेत्थ सत्तपञ्ञासाय सच्चिकट्ठेसु एकेकस्मिं[7] चत्तारि चत्तारि कत्वा निग्गहवसेन अट्ठवीसाधिकानि द्वे पञ्चकसतानि दस्सितानि। परवादी-पक्खे पि पटिकम्मवसेन तत्तकानेव। या पनेत्थ अत्थि पुग्गलो ति

---

१. वुत्तो रो.। २. ० संभावतो रो.।
३. तनेतं स्या.। ४. रो. पोत्थके नत्थि।
५. रो. पोत्थके नत्थि। ६. आरुप्पे रो.
७. एकेकस्मिं अत्थे स्या.।

वुत्ते सकवादिस्स पटिञ्ञा, सा सुत्ते आगतेन सम्मुतिवसेन। यो रूपं पुग्गलो ति आदीसु पटिक्खेपो, सो सक्कायदिट्ठिपञ्हस्स ठपनीयत्ता। परवादिस्स पटिकम्मं छलवसेनेवा ति।

चतुक्कनयसंसन्दनं निट्ठितं
निट्ठिता च संसन्दनकथा

८. लक्खणयुत्तिवण्णना

R. 19 ५३. इदानि लक्खणयुत्ति नाम होति। तत्थ यस्मा ठपेत्वा निब्बानं सेसो सच्चिकट्ठपरमत्थो पच्चयपटिबद्धताय सप्पच्चयो, पच्चयेहि समागम्म कतत्ता सङ्खतो, उप्पज्जित्वा निरुज्झनतो सदा अभावतो[1] असस्सतो[2], उप्पत्तिकारणसङ्खातस्स निमित्तस्स अत्थिताय सनिमित्तो, निब्बानं वुत्तप्पकाराभावतो अप्पच्चयं असङ्खतं सस्सतं अनिमित्तं ति इदं सच्चिकट्ठस्स लक्खणं। तस्मा यदि पुग्गलो पि सच्चिकट्ठपरमत्थो व, तस्सा पि इमिना लक्खणेन भवितब्बं ति सन्धाय **पुग्गलो सप्पच्चयो** ति (क० व० २९) आदयो अट्ठ पि अनुयोगा सकवादिस्स, पटिक्खेपो परवादिस्स। आजानाहि निग्गहं ति आदि पनेत्थ सङ्खित्तं। एवमेतानि सकवादीपक्खे अनुलोमपच्चनीके अनुलोममत्तवसेन अट्ठ पञ्चकानि वेदितब्बानि।

५४. परवादीपक्खे पि पच्चनीकानुलोमे पच्चनीकमत्तवसेन[3] अट्ठेव। तत्थ यस्मा परवादिना सुत्तवसेन सम्मुतिसच्चं साधितं, सम्मु-
B. 124 तिया च सप्पच्चयादिभावो नत्थि, तस्मा याथावतो[4] च पटिक्खेपो सकवादिस्स। छलवसेन पन वत्तब्बं "आजानाहि पटिकम्मं" ति आदि सब्बं इधा पि सङ्खित्तमेव।

लक्खणयुत्तिकथावण्णना निट्ठिता

---

१. ० च रो.। २. ० च रो.।
३. ० वसेनेव स्या. रो.। ४. यथासंभवतो च स्या.।

६. वचनसोधनवण्णना

५५-५६. इदानि वचनसोधनं होति । तत्थ यदेतं पुग्गलो उपलब्भती ति वचनं[1], तं[1] सोधेतु **पुग्गलो उपलब्भति, उपलब्भति पुग्गलो** ति । (क. व. ३०) पुच्छा सकवादिस्स । तस्सत्थो––यदेतं पुग्गलो उपलब्भती ति पदद्वयं, तं[2] एकत्थं वा भवेय्य नानत्थं वा । यदि ताव नानत्थं, यथा अञ्ञं रूपं, अञ्ञा वेदना, एवं अञ्ञो पुग्गलो, अञ्ञो उपलब्भती ति आपज्जति । अथेकत्थं, यथा यं चित्तं तं मनो, एवं R. 20
स्वेव पुग्गलो, सो उपलब्भती ति आपज्जति । तेन तं वदामि "यदि ते यो पुग्गलो, सो उपलब्भति, एवं सन्ते यो यो उपलब्भति, सो सो पुग्गलो ति आपज्जति, किं[3] सम्पटिच्छसि एतं" ति ? ततो पुग्गलवादी यस्मा पुग्गलस्स उपलब्भतं इच्छति, न उपलब्भमानानं पि रूपादीनं पुग्गलभावं, तस्मा **पुग्गलो उपलब्भति, उपलब्भति के हि चि पुग्गलो के हि चि न पुग्गलो** ति आदिमाह ।

तस्सत्थो–मम पुग्गलो अत्थि पुग्गलो ति सत्थु-वचनतो उपलब्भति । यो पन उपलब्भति, न सो सब्बो पुग्गलो, अथ खो के हि चि पुग्गलो के हि चि न पुग्गलो ति । तत्थ **को-कारत्थे के-**कारो, **हि-**कारो च[4] निपातमत्तो । कोचि पुग्गलो, कोचि न पुग्गलो ति अयं पनेत्थ अत्थो । इदं वुत्तं होति–पुग्गलो पि हि रूपादीसु पि यो कोचि धम्मो उपलब्भति येव, तत्थ पुग्गलो व पुग्गलो[5] । रूपादीसु पन कोचि पि न पुग्गलो ति । ततो तं सकवादी आह–**पुग्गलो के हि चि उपलब्भति के हि चि न उपलब्भती** ति ।

तस्सत्थो––पुग्गलो उपलब्भती ति पदद्वयस्स अत्थतो एकत्ते यदि उपलब्भती ति अनुञ्ञातो धम्मो पुग्गलतो अनञ्ञो पि कोचि पुग्गलो कोचि न पुग्गलो, पुग्गलो पि ते कोचि उपलब्भति, कोचि न उपलब्भती B. 125

१-१. वचनत्थ रो. । २. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. रो. पोत्थके नत्थि । ४. ० चिकारो च स्या. ।
५. को कोवा पुग्गलो स्या. ।

ति आपज्जति, किं सम्पटिच्छसि एतं ति ? सो पुग्गलस्स अनुपलद्धि अनिच्छन्तो **न हेवं** ति पटिक्खिपति । इतो परं "आजानाहि निग्गहं" ति आदि सब्बं सङ्खित्तं । वित्थारतो पन वेदितब्बं । **पुग्गलो सच्चिकट्ठो** ति आदीसु पि एसेव नयो । सब्बानि हेतानि उपलब्भति वेवचनानेव, अपि च यस्मा "पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना" ति अयं पुग्गलवादिनो पटिञ्ञा, तस्मास्स यथेव पुग्गलो उपलब्भती ति लद्धि, एवमेवं पुग्गलो सच्चिकट्ठो ति पि आपज्जति । या पनस्स पुग्गलो अत्थी ति लद्धि, तस्सा विज्जमानो ति वेवचनमेव, तस्मा सब्बानिपेतानि वचनानि सोधितानि ।

R. 21 ६०. तत्थ यं अवसाने **"पुग्गलो अत्थि, अत्थि न सब्बो पुग्गलो"** ति आदि वुत्तं, तत्रायमधिप्पायो—यञ्हेतं परवादिना[1] "पुग्गलो अत्थि, अत्थि केहिचि पुग्गलो, केहिचि न पुग्गलो" ति वुत्तं, तं यस्मा अत्थतो पुग्गलो अत्थि, अत्थि न सब्बो पुग्गलो ति एत्तकं होति, तस्मा नं सकवादी सम्पटिच्छापेत्वा इदानि नं एवं अनुयुञ्जति । तया हि "अत्थि पुग्गलो अत्तहिताय पटिपन्नो" ति वचनमत्तं निस्साय "पुग्गलो अत्थी" ति लद्धि गहिता, यथा च भगवता एतं वुत्तं, तथा[2] "सुञ्ञतो लोकं अवेक्खस्सु, मोघराजा, सदा सतो" ति (सु० नि० १.४३७) आदिना नयेन "नत्थी" ति पि वुत्तं, तस्मा यथेव ते "पुग्गलो अत्थि, अत्थि न सब्बो पुग्गलो" ति लद्धि, तथा पुग्गलो नत्थि, नत्थि न[3] सब्बो पुग्गलो ति पि आपज्जति, किं एतं सम्पटिच्छसी ति ? अथ नं असम्पटिच्छन्तो **न हेवा** ति (क० व० ३१) पटिक्खिपति । सेसमेत्थ निग्गहादिविधानं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति

वचनसोधनवण्णना निट्ठिता

---

१. परवादिनो रो. । २. यथा रो. ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।

१०. पञ्ञत्तानुयोगवण्णना

६१-६६. इदानि पञ्ञत्तानुयोगो नाम होति। रूपधातुया हि पुग्गलवादी रूपिं पुग्गलं पञ्ञपेति, तथा अरूपधातुया अरूपिं। तस्स तं लद्धिं भिन्दितुं सब्बा पि पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा च पटिक्खेपो च इतरस्स। सो हि **रूपी** ति (क० व० ३१) वुत्ते रूपकायसब्भावतो B. 126 चेव तथारूपाय च[1] पञ्ञत्तिया अत्थिताय पटिजानाति। **कामी** ति वुत्ते वीतरागसब्भावतो चेव तथारूपाय च पञ्ञत्तिया नत्थिताय[2] पटिक्खिपति। **अरूपी** ति वुत्ते पि अरूपक्खन्धसब्भावतो चेव तथारूपाय च पञ्ञत्तिया अत्थिताय[3] पटिजानाति। द्वीसु पि नयेसु सत्तो ति पुग्गलस्स वेवचनवसेन वुत्तं।

६७. इदानि यस्मा सो "काये कायानुपस्सी" ति आगतट्ठाने अञ्ञो कायो अञ्ञो पुग्गलो ति इच्छति, तस्मा तं लद्धिं भिन्दितुं **कायो ति वा सरीरं ति वा** ति (क० व० ३१) आदि सकवादीपुच्छा होति। तत्थ **कायं अप्पियं करित्वा** ति कायं अप्पेतब्बं अल्लियापेतब्बं एकीभावं उपनेतब्बं अविभजितब्बं कत्वा पुच्छामी ति अत्थो। **एसेसे** ति एसो सोयेव। एसे[4] एसे ति पि पाठो[4]। एसो एसोयेवा[5] R. 22 ति अत्थो। एकट्ठे ति एकट्ठो। **समे समभागे तज्जाते** ति समो समभागो तज्जातिको। वचनमत्तेयेवेत्थ भेदो। अत्थतो पन कायोव[6] एसो ति पुच्छति। परवादी नानत्तं अपस्सन्तो **आमन्ता** ति पटिजानाति। **पुग्गलो ति वा जीवो ति वा** ति पुच्छाय पि एसेव नयो। **अञ्ञो कायो** ति पुट्ठो पन कायानुपस्सनाय एवंलद्धिकत्ता[7] पटिजानाति। **अञ्ञं जीवं** ति पुट्ठो पन आहच्च भासितं सुत्तं पटिक्खिपितुं असक्कोन्तो अवजानाति। ततो परं "आजानाहि निग्गहं" ति आदि उत्तानत्थमेव।

---

१. ० तं रो.। २. ० च रो.।
३. ० च रो.। ४-४. एसे सो ति पि पाठो रो.।
५. सो येवा ति रो.। ६. कायो च रो.।
७. एवं तं लद्धिकत्ता रो.।

६८. परवादीपक्खे पन **अञ्ञो कायो अञ्ञो पुग्गलो** ति (क० व० ३३) पुट्ठो सकवादी ठपनीयपञ्हत्ता पटिक्खिपति, परवादी छलवसेन पटिकम्मं करोति । तं पि उत्तानत्थमेवा ति ।

पञ्ञत्तानुयोगवण्णना निट्ठिता

११. गतिअनुयोगवण्णना

६९-७२ इदानि गतिपरिवत्तनमुखेन[1] चुतिपटिसन्धिअनुयोगो होति । तत्थ यस्मा पुग्गलवादी "स सत्तक्खत्तुपरमं सन्धावित्वान पुग्गलो" ति (सं० नि० २.१५७) आदीनि सुत्तानि निस्साय पुग्गलो B. 127 सन्धावती ति लद्धिं गहेत्वा वोहरति, तस्मास्स तं लद्धिं भिन्दितुं सन्धावती ति पुच्छा सकवादिस्स । तत्थ **सन्धावती** ति (क०व०३३) संसरति गमनागमनं करोति । अत्तनो लद्धिवसेन पटिञ्ञा परवादिस्स । **सो पुग्गलो** ति आदयो अनुयोगो पि सकवादिस्स, पटिक्खेपो इतरस्स । तत्थ **सो** ति सोयेवा ति अत्थो । एवं पन अनुयुत्तो सस्सतदिट्ठिभयेन पटिक्खिपति । **अञ्ञो** ति पुट्ठो उच्छेददिट्ठिभयेन । **सो च अञ्ञो चा** ति पुट्ठो एकच्चसस्सतदिट्ठिभयेन । **नेव सो न अञ्ञो** ति पुट्ठो अमराविक्खेपदिट्ठिभयेन । पुन चत्तारो पि पञ्हे एकतो पुट्ठो चतुन्नं पि दिट्ठीनं भयेन पटिक्खिपित्वा पुन यानिस्स सुत्तानि निस्साय लद्धि उप्पन्ना[2] तानि[3] दस्सेन्तो तेन हि पुग्गलो **सन्धावती** ति आदिमाह ।

R. 23 ७६. पुन सकवादिना "स्वायं[4] तव लद्धिया सन्धावति, किं सो अस्मिञ्च परस्मिञ्च लोके एकोयेवा" ति अधिप्पायेन **स्वेवा** ति (क० व० ३५) नियमेत्वा पुट्ठो सस्सतभया पटिक्खिपित्वा पुन[5] दळ्हं कत्वा तथेव पुट्ठो यस्मा सो पुग्गलो व न अञ्ञो भावो, "सो ततो चुतो इधूपपन्नो" ति (दी० नि० १.७१) आदि[6] सुत्तं पि अत्थि, तस्मा

१. ० पखित्ति ० रो. ।
२. ० ति रो. ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. स्वायं रो. ।
५. रो. पोत्थके नत्थि ।
६. आदिकं वचनं रो. ।

पटिजानाति। **स्वेव मनुस्सो** ति पुट्ठो मनुस्सस्सेव देवत्ताभावतो पटिक्खिपति।

७७. पुन पुट्ठो "अहं तेन समयेन सुनेत्तो नाम सत्था अहोसिं" ति (अं० नि० ३-२३३) आदि सुत्तवसेन पटिजानाति। अथस्स सकवादी देवमनुस्सुपपत्तीनं नानत्ततो[1] वचनं मिच्छा ति पकासेन्तो **मनुस्सो हुत्वा** ति (क० व० ३५) आदिमाह[2]।

७८. तत्थ **हेवं मरणं न हेहिती** ति (क० व० ३५) एवं सन्ते मरणं न भविस्सती ति अत्थो। इतो परं यक्खो पेतो ति अत्तभावनानत्तवसेन अनुयोगनानत्तं वेदितब्बं।

८२. **खत्तियो** ति (क० व० ३६) आदीनि जातिवसेन चेव अङ्गवेकल्लादिवसेन च वुत्तानि।

८७. पुन **न वत्तब्बं** ति (क० व० ३७) परवादिना[3] पुट्ठो इधट्ठकस्स[3] उपपत्तिवसेन परलोकस्स गमनाभावतो पटिञ्ञा सकवादिस्स पुन सोतापन्नस्स भवन्तरे पि सोतापन्नभावाविजहनतो दुतियपटिञ्ञा पि तस्सेव। **हञ्ची** ति आदिवचनं परवादिस्स। B. 128

८८. पुन देवलोके उपपन्नस्स मनुस्सत्ताभावदस्सनेन[4] अनुयोगो सकवादिस्स।

८९. ततो परं **अनञ्ञो अविगतो** ति (क० व० ३७) एत्थ **अनञ्ञो** ति सब्बाकारेन एकसदिसो। **अविगतो** ति एकेना पि आकारेन अविगतो ति अत्थो। **न हेवं** ति देवलोके उपपन्नस्स मनुस्सभावाभावतो एवमाह।

९०. पुन दळ्हं कत्वा अनुयुत्तो "स्वेव पुग्गलो सन्धावती" ति लद्धिया अनुजानाति। **हत्थच्छिन्नो** ति (क० व० ३७) आदि आकारविगमनदस्सनेन अविगतो **सन्धावती** ति लद्धिभिन्दनत्थं वुत्तं। तत्थ **अळच्छिन्नो** ति यस्स अंगुट्ठका छिन्ना। **कण्डरच्छिन्नो** ति यस्स महान्हारू छिन्ना।

---

१. ० तव रो.। २. गाथमाह रो.।
३-३. पुट्ठेन इध ठितस्स स्या.। ४. मनुस्साभावदस्सनेन रो.।

६१. **सरूपो** ति आदीसु पठमे पञ्हे इमिना रूपकायेन सद्धिं अगमनं सन्धाय पटिक्खिपति। दुतिये अन्तराभवपुग्गलं सन्धाय पटिजानाति। R. 24 सो हि तस्स लद्धिया सरूपोव गन्त्वा मातुकुच्छिं पविसति। अथस्स तं रूपं भिज्जति। **तं जीवं** ति (क० व० ३८) येन रूपसङ्घातेन सरीरेन सद्धिं गच्छति, किमस्स तदेव जीवं तं सरीरं ति पुच्छति। परवादी इध सरीरनिक्खेपा सुत्तविरोधा च पटिक्खिपति।

सवेदनो ति आदीसु असञ्ञूपपत्तिं सन्धाय पटिक्खिपति, तदञ्ञं उपपत्तिं सन्धाय पटिजानाति। **तं जीवं** ति येन वेदनादिसङ्घातेन सरीरेन सद्धिं गच्छति। किमस्स तदेव जीवं तं सरीरं ति पुच्छति। तं जीवं तं सरीरं, अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरं ति एतिस्सा हि लद्धिया पञ्च पि खन्धा सरीरं ति अधिप्पेता। परवादी सुत्तविरोधा पटिक्खिपति।

६२. **अरूपो** ति (क० व० ३८) आदीसु पठमे पञ्हे अन्तराभवं सन्धाय पटिक्खिपति। दुतिये अरूपा[1] रूपं[1] उपपज्जमानं सन्धाय B. 129 पटिजानाति। **अञ्ञं, जीवं** ति यं रूपसङ्घातं सरीरं पहाय अरूपो सन्धावति, किं ते तं सरीरं अञ्ञं, अञ्ञं[2] जीवं ति पुच्छति। इतरो सुत्तविरोधा पटिक्खिपति।

अवेदनो ति आदीसु[3] सञ्ञीभवं[4] सन्धाय पटिक्खिपति, तदञ्ञं उपपत्तिं[5] सन्धाय पटिजानाति। **अञ्ञं जीवं** ति यं वेदनादिसङ्घातं सरीरं पहाय अवेदनो अविञ्ञाणो सन्धावति, किं ते तं अञ्ञं[6] सरीरं, अञ्ञं जीवं ति पुच्छति। इतरो सुत्तविरोधा पटिक्खिपति।

६३. **रूपं सन्धावती** ति (क० व० ३८) आदीसु ये रूपादयो खन्धे उपादाय पुग्गलं पञ्ञपेति, किं ते तस्मिं पुग्गले सन्धावन्ते तं पि रूपं सन्धावती ति पुच्छति। परवादी "अविज्जानीवरणानं सत्तानं तण्हासंयोजनानं सन्धावतं संसरतं" ति सत्तस्सेव सन्धावनवचनतो पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो यस्मा रूपादिधम्मेन[7] विना पुग्गलो नत्थि,

---

१-१. आरुप्पा आरुप्पं सी.। २. रो. पोत्थके नत्थि।
३. आदि रो.। ४. असञ्ञभावं रो.।
५. उपपत्तिभावं स्या.। ६. रो. पोत्थके नत्थि।
७. ० धम्मे म.।

तस्मा तस्मिं सन्धावन्ते तेन पि रूपेन सन्धावितब्बं ति सञ्ञाय पटिजानाति। वेदनादीसु पि एसेव नयो।

६४. **रूपं न सन्धावती** ति (क० व० ३८) आदीसु यस्मा ते रूपं पुग्गलो न होति, स्वेव च सन्धावती ति वदेसि, तस्मा तं पुच्छामि, किं R. 25 ते रूपं न सन्धावती ति अत्थो। इतरो पुग्गले[१] सन्धावन्ते[१] न सक्का तस्स उपादानभूतेन रूपेन सन्धावितुं ति सञ्ञाय पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो सत्तानञ्ञेव[२] सन्धावनवचनतो पटिजानाति। सेसमेत्थ उत्तानमेव।

गाथानं पन अयमत्थो[३]––आयस्मतो मतेन रुक्खं उपादाय छाया विय, इन्धनं उपादाय अग्गि विय च, खन्धे[४] उपादाय पुग्गलो; रूपादीनं सन्धावने असति तेसु खन्धेसु भिज्जमानेसु सो तव पुग्गलो भिज्जति चे, एवं सन्ते उच्छेदो भवति दिट्ठि, उच्छेददिट्ठि ते आपज्जति। कतरा या[५] बुद्धेन विवज्जिता अकुसलदिट्ठि। या पन "उच्छेदवादी समणो गोतमो" ति परियायभासिता, न तं वदामा ति दस्सेति। अथा पि तेसु[६] खन्धेसु भिज्जमानेसु सो पुग्गलो न भिज्जति, एवं सन्ते सस्सतो पुग्गलो होति। ततो सो निब्बानेन समसमो आपज्जति। **समसमो** ति B. 130 अतिविय समो, समेन वा समो, समभावेनेव समो। यथेव[७] निब्बानं नुप्पज्जति न भिज्जति, एवं ते पुग्गलो[८] पि तेन समसमो ति।

गतिपरिवत्तनमुखेन चुतिपटिसन्धानुयोगो निट्ठितो
निट्ठिता च अनुयोगवण्णना

१२. उपादापञ्ञत्तानुयोगवण्णना

६५. इदानि उपादापञ्ञत्तानुयोगो होति। तत्थ पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञापटिक्खेपो परवादिस्स। सो हि रुक्खं उपादाय

१-१. पुग्गलेन सन्धावन्तेन सी., स्या.। २. सत्तावञ्चेव स्या.।
३. अयमेवत्थो रो.। ४. यो खन्धे रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि। ६. ० तेसु रो.।
७. यथा च स्या.। ८. सो पुग्गलो पि न भिज्जते। पुग्गलो स्या.।

छायाय विय, इन्धनं उपादाय अग्गिस्स विय च, रूपादीनि[1] उपादाय पुग्गलस्स पञ्ञत्तिं पञ्ञापनं अवबोधनं इच्छति, तस्मा "**रूपं उपादाया**" ति (क० व० ३९) पुट्ठो पटिजानाति। पुन यथा रुक्खुपादाना छाया रुक्खो विय, इन्धनुपादानो च अग्गि इन्धनं विय अनिच्चा-
R. 26 दिधम्मो, एवं ते रूपादिउपादानो पुग्गलो रूपादयो विय अनिच्चो ति इममत्थं पुट्ठो अत्तनो लद्धियं ठत्वा पटिक्खिपति।

९७. **नीलं रूपं उपादाय नीलो** ति (क० व० ३९) आदीसु नीलरूपेन सद्धिं पुग्गलस्स एकत्तं, एकसरीरे नीलादीनं बहूनं वसेन बहुभावं च अनिच्छन्तो पटिक्खिपति।

९८. **कुसलं वेदनं** ति एत्था पि वेदनाय सद्धिं एकत्तं एकसन्ताने बहूनं कुसलवेदनानं वसेन बहुभावं च अनिच्छन्तो पटिक्खिपति। दुतियनये[2] मग्गकुसलो ति आदि वचनसब्भावतो छेकट्ठं सन्धाय पटिजानाति। **सफलो** ति (क० व० ४०) आदीनि पुट्ठो तथारूपस्स वोहारस्स अभावतो पटिक्खिपति।

९९. अकुसलपक्खे अछेकट्ठं सन्धाय पटिजानाति।

१००. अब्याकतपक्खे सस्सतादिवसेन अब्याकतभावं सन्धाय पटिजानाति। सेसमेत्थ हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

B. 131 १०४. **चक्खुं उपादाया** ति (क०व० ४२) आदीसु "चक्खुमा विसमानीव···पे०···पापानि परिवज्जये" ति (खु० नि० १.१२२) आदिवोहारसब्भावतो पटिजानाति। चक्खुमत्तादिनिरोधेन पुग्गलनिरोधं अनिच्छतो पटिक्खिपति।

१०७. **रूपं उपादाय वेदनं उपादाया** ति (क० व० ४३) एत्थ अञ्ञे पि[3] रूपमूलका दुकतिकचतुक्का[4] वेदितब्बा। यस्मा पन खन्धे उपादाय पुग्गलस्स पञ्ञत्ति, तस्मा द्वे पि तयो पि चत्तारो पि पञ्च पि उपादाय पञ्ञत्तिं पटिजानाति। एकसन्ताने[5] पन द्विन्नं पञ्चन्नं वा अभावा पटिक्खिपति। आयतनादीसु पि एसेव नयो।

---

१. चक्खुरूपादीनि स्या.।
२. ० नयेन रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि।
४. ० पञ्चका रो.।
५. ० सन्तानेन रो.।

११२. इदानि यं उपादाय यस्स पञ्ञत्ति, यथा तस्स अनिच्चताय तस्सा पि अनिच्चता, ततो च[1] अञ्ञत्तं सिद्धं, एवं तस्स पुग्गलस्सा पि आपज्जती ति दस्सेतुं **यथा रुक्खं** ति (क० व० ४४) आदिमाह। तत्थ **उपादाया** ति पटिच्च आगम्म, न विना तं ति अत्थो। परवादी पन तथा अनिच्छन्तो लद्धियं ठत्वा पटिक्खिपति।

११५. **निगळो** ति (क० व० ४५) सङ्खलिकबन्धनं। **नेगळिको** ति तेन बन्धको[2] **यस्स रूपं सो रूपवा** ति यस्मा यस्स रूपं सो रूपवा होति, तस्मा यथा न निगळो ···पे०···अञ्ञो रूपवा ति अत्थो।

११६. **चित्ते चित्ते** ति आदीसु सरागादिचित्तवसेन सरागादितं सन्धाय चित्तानुपस्सनावसेन पटिजानाति। **जायती** ति (क० व० R. 27 ४५) आदिना' नयेन पुट्ठो पुग्गलस्स खणिकभावं अनिच्छन्तो पटिक्खिपति। "सो" ति वा "अञ्ञो" ति वा पुट्ठो सस्सतुच्छेदभयेन पटिक्खिपति। पुन न वत्तब्बं "कुमारको" ति वा "कुमारिका" ति वा पुट्ठो लोकवोहारसमुच्छेदभयेन वत्तब्बं ति पटिजानाति। सेसमेत्थ पाकटमेव।

११८. इदानि परवादी अञ्ञेनाकारेन लद्धिं पतिट्ठापेतुकामो **न वत्तब्बं पुग्गलो उपलब्भती** ति (क० व० ४६) आदिमाह। तत्थ **न वत्तब्बं** ति किं ते इमिना एवं बहुना उपादापञ्ञत्तानुयोगेन, इदं ताव वदेहि, किं न वत्तब्बं "पुग्गलो उपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेना" ति। ततो सकवादिना आमन्ता ति वुत्ते[3] **ननु यो पस्सती** ति आदिमाह। तत्थ **यो** ति पुग्गलो। **यं** ति रूपं। **येना** ति चक्खुना। B. 132 **सो** ति पुग्गलो। **तं** ति रूपं। **तेना** ति चक्खुना। इदं वुत्तं होति–ननु यो यं रूपं येन चक्खुना पस्सति, सो तं रूपं तेन चक्खुना पस्सन्तो पुग्गलो ति। सकवादी किञ्चा पि चक्खुविञ्ञाणस्स निस्सयभावं

१. पि. रो.। २. बन्धनेन ० रो.।
३. वुत्तो रो.।

गच्छन्तं चक्खुमेव रूपं पस्सति, तथा सोतमेव सद्दं सुणाति…पे०… विञ्ञाणमेव धम्मं विजानाति, "अत्थि अरहतो चक्खु, पस्सति अरहा चक्खुना रूपं" ति आदिसम्मुतिवसेन पन आमन्ता ति पटिजानाति।

१२०. ततो छलवादं निस्साय परवादिना पुग्गलस्स वत्तब्बताय साधिताय तमेव वादं परिवत्तेत्वा **पुग्गलो उपलब्भती** ति (क० व० ४७) आदिमाह। तत्थ **यो न पस्सती** ति अन्धो असञ्ञसत्तो अरूपं उपपन्नो निरोधं समापन्नो, अनन्धो पि च अञ्ञत्र दस्सनसमया न पस्सति नाम। सेसवारेसु पि एसेव नयो। सेसं पाळिवसेनेव अत्थतो वेदितब्बं।

१२२. सुत्तसंसन्दनायं दिब्बस्स चक्खुनो रूपगोचरत्ता **रूपं पस्सती** ति (क० व० ४८) आह। दुतियवारे "सत्ते पस्सामी" ति वचनतो **पुग्गलं पस्सती** ति आह। ततियवारे "रूपं दिस्वा पुग्गलं विभावेती" ति लद्धितो **उभो पस्सती** ति आह। यस्मा पन पस्सितब्बं
R. 28 नाम दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातं ति चतुब्बिधे रूपसङ्गहे रूपायनमेव सङ्गहितं, तस्मा सकवादी "रूपं पुग्गलो, पुग्गलो रूपं, उभो रूपं" ति अनुयोगं करोति। तस्सत्थो पाकटोयेवा ति।

उपादापञ्ञत्तानुयोगवण्णना निट्ठिता

१३. पुरिसकारानुयोगवण्णना

१२३. इदानि पुरिसकारानुयोगो होति। तत्थ कम्मे सति नियमतो तस्स कारकेन[1] पि भवितब्बं ति लद्धिया पुच्छा परवादिस्स, तथारूपानं कम्मानं अत्थिताय पटिञ्ञा सकवादिस्स। पुन **कत्ता कारेता** ति (क० व० ४८) पुच्छा परवादिस्स। तत्थ **कत्ता** ति तेसं कम्मानं कारको। **कारेता** ति आणत्तिदेसनादीहि उपायेहि कारापको[2]।
B. 133 इदानि यस्मा परवादी पुग्गलं सन्धाय कत्ता ति पुच्छति, न करणमत्तं, तस्मा पटिक्खेपो सकवादिस्स।

१. कारणेनापि रो.। २. कारको रो.।

१२४. **तस्स कत्ता कारेता** ति (क० व० ४८) एत्थ यदि यं यं उपलब्भति, तस्स[1] तस्स कत्ता पुग्गलो ते उपलब्भति[1], किं तस्सा पि कारको च कारापको[2] च अञ्ञो पुग्गलो उपलब्भती ति अत्थो। परवादी तथा अनिच्छन्तो इस्सरनिम्मानवादभयेन पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो यस्मा पुग्गलं मातापितरो जनेन्ति नामं करोन्ति पोसेन्ति, तस्मास्स ते कारका। ये च पन तं कल्याणमित्ता वा आचरिया वा तानि तानि विज्जाट्ठानसिप्पायतनानि[3] सिक्खापेन्ति, ते कारापका नामा ति इममत्थं सन्धाय पटिजानाति। पुरिमकम्ममेव तस्स[4] कत्ता चेव कारापेता चा ति अधिप्पेतं।

१२५. **तस्स तस्सेवा** ति (क० व० ४९) इमिना इदं पुच्छति–यदि कम्मानं कारकस्स कत्ता तस्सा[5] पि कत्ता तस्सा[6] पि कत्ता[6] अत्थेव, एवं सन्ते पुरिमेन पुरिमेन अवस्सं पच्छा पच्छा पुग्गलो कातब्बो ति इमिना पि ते[7] कम्मानं कारकेन पुग्गलेन आयतिं अञ्ञो पुग्गलो कातब्बो, तेना पि अञ्ञो ति[8] नत्थि दुक्खस्स अन्तकिरिया, नत्थि वट्टस्स उपच्छेदो, नत्थि अप्पच्चयपरिनिब्बानं। पच्चयाभावेन पच्चय- R. 29
पटिबद्धस्स दुक्खस्स अभावा यं निब्बानं वुत्तं, नत्थि ते तं ति। अथ वा **तस्स तस्सेवा** ति यदि कम्मं कम्ममत्तं न होति, तस्स पन कारको पुग्गलो, तस्सा पि कारको, तस्सा[9] पि कारको[9] ति एवं पुग्गलपरम्परा अत्थि। एवं सन्ते या एसा कम्मवट्टस्स अप्पवत्तिकरणेन दुक्खस्स अन्तकिरिया वुत्ता, सा नत्थी ति अत्थो। परवादी तं अनिच्छन्तो पटिक्खिपति। इतो अपरासु पि उपलब्भति सामञ्ञेन कारकपुच्छासु पुग्गलंयेव सन्धाय "कत्ता कारेता" ति वुत्तं, न पच्चये[10]। न हि महापथवीआदीनं पच्चया नत्थि।

१-१. पुग्गलो उपलब्भति, पुग्गलो तवेव उपलब्भति स्या.; ०पुग्गलो ते उपलब्भति रो.।
२. रो. पोत्थके नत्थि। ३. ० ट्ठानि रो.।
४. अस्स रो.। ५. कस्सा रो.।
६-६. रो. पोत्थके नत्थि। ७. तेसं स्या.।
८. पि. रो.। ९-९. रो. पोत्थके नत्थि।
१०. पच्चयो रो.।

१३५. **अञ्ञो कल्याणपापकानं कम्मानं कत्ता** ति पञ्हो "सङ्खारवन्तं वा अत्तानं" ति आदि दिट्ठिभया पटिक्खित्तो ।

१३६. **विपाको उपलब्भती** ति (क० व० ५०) आदि विपाकपटिसंवेदीवसेन पुग्गलं दस्सेन्तस्स लद्धिभिन्दनत्थं वुत्तं[1] । तत्थ
B. 134 **विपाकपटिसंवेदी** ति अनुयोगो परवादिस्स, विपाकपवत्तितो अञ्ञस्स वेदकस्स अभावा पटिक्खेपो सकवादिस्स । पुन पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स ।

१३८. **तस्स पटिसंवेदी** ति (क० व० ५०) तस्स विपाकपटिसंवेदकस्स पटिसंवेदी यस्मा पन पटिसंवेदितब्बो नाम विपाको, न च पुग्गलो विपाको, तस्मा पटिक्खेपो परवादिस्स । पुन पुट्ठो यस्मा पुञ्ञविपाके ठितत्ता विपाकपटिसंवेदी पुत्तं वा पतिं वा माता वा जाया वा परिचुम्बति[2] परिसज्जति, तस्मा तथारूपं पटिसंवेदितं सन्धाय पटिजानाति परवादी ।

तस्स तस्सेवा ति यदि विपाको विपाकमत्तं न होति, तस्स पन पटिसंवेदी पुग्गलो, तस्सा[3] पि पटिसंवेदी[3] तस्सा पि पटिसंवेदी ति एवं पुग्गलपरम्परा अत्थि । एवं सन्ते या एसा विपाकवट्टस्स अप्पवत्तिकरणेन[4] दुक्खस्स अन्तकिरिया वुत्ता, सा नत्थी ति अत्थो । इतो परं उपलब्भति[5] सामञ्ञेन पटिसंवेदीपुच्छासु[6] हेट्ठा वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो ।

१४२. **अञ्ञो कल्याणपापकानं कम्मानं विपाकपटिसंवेदी** ति
R. 30 (क० व० ५१) पञ्हो "वेदनवन्तं वा अत्तानं" ति आदि दिट्ठिभया पटिक्खित्तो ।

१४३. **दिब्बं सुखं** ति (क० व० ५१) आदि कल्याणपापकानं कम्मानं विपाकं भाजेत्वा दस्सनवसेन आरद्धं । तं सब्बं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं । सकवादिनो चेत्थ पुग्गलवसेनेव पटिसंवेदीपटिक्खेपो वेदितब्बो, न वेदयितवसेन ।

---

१. आरद्धं रो. ।
२ परिमुच्चति स्या. ।
३-३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. ० कारणेन रो. ।
५. उपलब्भती ति रो. ।
६. ० वेदी ति पुच्छासु रो. ।

१४८. **महापथवी** (क० व० ५२) आदीनि हि आरम्मणं कत्वा वेदयितानं उप्पत्ति अप्पटिसिद्धा ।

१७०. **कत्ता कारेता विपाकपटिसंवेदी** ति आदि वोमिस्सकनयवसेन आरद्धं । तत्थ **सो करोती** ति (क० व० ५५) यं त्वं कत्ता ति च पटिसंवेदी ति च वदेसि, किं सोयेव करोति, सो पटिसंवेदेति । अयमनुयोगो सकवादिस्स, सुत्तविरोधभयेन पटिक्खेपो परवादिस्स ।

१७१. पुन पुट्ठो "इध नन्दति पेच्च नन्दती" ति (खु० नि० १.१६) B. 135
आदि सुत्तवसेन पटिञ्ञा तस्सेव । अथस्स वचनोकासं पटिबाहन्तो सकवादी **सयंकतं सुखदुक्खं** ति (क० व० ५५) आह ।

१७२. तत्थ **अञ्ञो करोती** ति (क० व० ५५) कारकवेदकानं अञ्ञत्तपुच्छावसेन वुत्तं । ततो परवादी सुत्तविरोधभयेन पटिक्खिपित्वा[1] पुन पुट्ठो "मनुस्सभूतो कत्वा देवभूतो पटिसंवेदेती" ति मञ्ञमानो पटिजानाति । एवंवादिनो पन परंकतं सुखदुक्खं आपज्जती ति तस्स वसेन पुट्ठो पुन पटिक्खिपति ।

१७४. **सो च अञ्ञो चा** ति (क० व० ५५) कारकवेदकानं एकत्तअञ्ञत्तपुच्छावसेन वुत्तं । ततो परवादी सुत्तविरोधभयेनेव पटिक्खिपित्वा पुन पुट्ठो पुरिमे द्वे पि नये एकतो कत्वा पटिजानाति । एवंवादिनो पन सयंकतं च परंकतं च सुखदुक्खं आपज्जती ति तस्स वसेन पुट्ठो[2] पुन[2] पटिक्खिपति ।

१७६. **नेव सो करोती** ति (क० व० ५६) कारकवेदकानं एकत्तअञ्ञत्तपटिक्खेपवसेन वुत्तं । ततो परवादी सुत्तविरोधवसेनेव[3] पटिक्खिपित्वा पुन पुट्ठो यस्मा मनुस्सो देवलोकूपपत्तिया कम्मं कत्वा न मनुस्सभूतो व पटिसंवेदेति, नापि येन कम्मं कतं, ततो अञ्ञो व पटिसंवेदेति, तस्मा कारकतो[4] वेदको नेव सो होति, न अञ्ञो ति मञ्ञमानो पटिजानाति । लद्धिमत्तमेवेतं । एवंवादिनो पन असयंकारं अपरंकारं अधिच्चसमुप्पन्नं सुखदुक्खं आपज्जती ति तस्स R. 31

---

१. वचनोकासं ० स्या. ।
२-२. पुन पुट्ठो पन रो. ।
३. ० भयेनेव रो. ।
४. कारकतो ति रो. ।

वसेन पुट्ठो पुन पटिक्खिपति। अपि च इमस्मिं वोमिस्सकनये आदितो पट्ठाय इमिना पि नयेन अत्थो वेदितब्बो। यस्मा हि अयं पुग्गलवादी कम्मानं कारकं चेव वेदकं च इच्छति, तस्मास्स यो कारको, तेनेव वा वेदकेन भवितब्बं, अञ्ञेन वा उभोहि वा भवितब्बं, उभोहि वा पि न भवितब्बं ति इदमापन्नं होति। एवमापन्नमेव अनुयोगं अनुयुञ्जन्तो सकवादी "सो करोती" ति आदयो चत्तारो पि विकप्पे आह। सेसं वुत्तप्पकारमेव।

परियोसाने पन चत्तारो पि पञ्हा एकतो पुट्ठा। तत्थ पटिक्खेपो च[1] पटिजानना च सयंकतादिदोसप्पत्ति च पुरिमनयेनेव
B. 136 वेदितब्बा। इतो परं "कल्याणपापकानी" ति अवत्वा हेट्ठा वुत्तनया एव "कम्मं अत्थी" ति आदिना विकप्पेन दस्सिता। तेसं पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो।

पुरिसकारानुयोगवण्णना निट्ठिता
कल्याणवग्गो ति पि एतस्सेव नामं

१४. अभिञ्ञानुयोगवण्णना

१९३. इतो परं अभिञ्ञानुयोगादिवसेन अरहत्तसाधना होति। तत्थ **आमन्ता** ति (क० व० ५८) सकवादिना पटिञ्ञाते परवादी "बहिद्धा अनिन्द्रियबद्धरूपे[2] इद्धिविधादिविसेसाधिगमो नत्थि, अज्झत्तं अत्थि, तस्मा[3] इद्धादिनिब्बत्तकेन पुग्गलेन भवितब्बं" ति **मञ्ञमानो ननु अत्थि कोचि इद्धिं विकुब्बती** ति आदिमाह। तं सब्बं उत्तानत्थमेव।

अभिञ्ञानुयोगवण्णना निट्ठिता

१. रो. पोत्थके नत्थि।
२. रूपेन रो.।
३. ० एत्थ रो.।

१५-१९. ञातकानुयोगादिवण्णना

१९७. इदानि **माता** ति (क० व० ५९) आदिको ञातकानुयोगो। **खत्तियो** ति आदिको जातिअनुयोगो। **गहट्ठो पब्बजितो** ति पटिपत्तिअनुयोगो। **देवो मनुस्सो** ति उपपत्तिअनुयोगो। **सोतापन्नो** ति आदिको पटिवेधानुयोगो, अरियानुयोगो ति पि वुच्चति। R. 23
ते सब्बे उत्तानत्थायेव। "अरहा हुत्वा न अरहा" ति पनेत्थ मोघपञ्हत्ता न वुत्तं।

ञातकानुयोगादिवण्णना निट्ठिता

२०-२१. संघानुयोगादिवण्णना

२०६. **चत्तारो पुरिसयुगा** ति (क० व० ६१) आदि संघानुयोगो, सो पि उत्तानत्थोयेव।

२०९. **सङ्खतो** ति आदि सच्चिकट्ठसभावानुयोगो। तत्थ **ततिया कोटी** ति पुच्छा सकवादिस्स। तथारूपस्स सच्चिकट्ठस्स अभावतो पटिक्खेपो परवादिस्स। पुन पुट्ठो पुग्गलं सन्धाय पटिञ्ञा तस्सेव।

B. 137
२११. **अञ्ञो पुग्गलो** ति (क० व० ६२) पञ्हे पि सङ्खतेहि खन्धेहि अञ्ञत्तं अनिच्छन्तो पटिक्खेपो तस्सेव।

२१२. **खन्धा सङ्खता** ति (क० व० ६२) आदि सङ्खतासङ्खतानि सरूपेन दस्सेत्वा अञ्ञत्तपुच्छनत्थं[1] वुत्तं।

२१३. **रूपं सङ्खतं** ति (क० व० ६३) आदि खन्धे[2] विभागतो दस्सेत्वा अञ्ञत्तपुच्छनत्थं वुत्तं।

२१४. **पुग्गलस्स उप्पादो** ति (क० व० ६३) पुच्छा सकवादिस्स, "जातिधम्मा जराधम्मा, अथो मरणधम्मिनो" ति आदि सुत्तवसेन पटिञ्ञा परवादिस्स। सङ्खतभावं पनस्स सो न इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति।

---

१. अञ्ञत्थ ० रो.। २. खन्धेहि रो.।

२१५. पुन **न उप्पादो पञ्ञायती** ति (क० व० ६३) आदिना नयेन पुट्ठो "दुक्खमेव हि सम्भोति, दुक्खं तिट्ठति वेति[1] चा" ति (सं० नि० १.१३५) आदिवचनतो पुग्गलस्स उप्पादादयो नाम न युज्जन्ती ति पटिजानाति ।

२१६. **अत्थत्थम्ही** ति (क० व० ६३) अत्थं वुच्चति[2] निब्बानं । तत्थ **अत्थो** ति पुच्छति । तस्स अत्थिताय[3] सस्सतं, नत्थिताय । उच्छेदो आपज्जति । तदुभयं पि अनिच्छन्तो पच्छा पटिक्खिपति ।

सङ्खानुयोगादिवण्णना निट्ठिता

२२. पटिवेधानुयोगादिवण्णना

२१७. भवं निस्साय पञ्हे **भवं** ति (क० व० ६४) उपपत्तिभवं[4] ।

२१८. वेदनं[5] वेदियमानपञ्हे वेदनं वेदियमानो परिग्गहितवेदनो योगावचरो व पजानाति, बालपुथुज्जनो नप्पजानाति ।

२२४. कायानुपस्सनादिपञ्हा उत्तानत्थायेव ।

२२६. पारायनगाथाय **सुञ्ञतो लोकं अवेक्खस्सू** ति (क० व० ६६) सत्तसुञ्ञतवसेन खन्धलोकं ओलोकेही ति अत्थो ।

२२८. **पुग्गलो अवेक्खती** ति सकवादिपुच्छा । परवादिस्स हि "सुञ्ञतो लोकं अवेक्खस्सू" ति गाथाय यो अवेक्खति, सो पुग्गलो
R. 33 ति लद्धि, तस्मा नं एवं पुच्छति । **सह रूपेना** ति रूपकायेन सद्धिं । ततो अनिस्सटो हुत्वा ति अत्थो । इदं पञ्चवोकारवसेन अनुजानित्वा पुन तं जीवं ति पुट्ठो सुत्तविरोधभयेन पटिक्खिपति । **विना रूपेना** ति इदं चतुवोकारवसेन अनुजानित्वा पुन अञ्ञं जीवं ति पुट्ठो सुत्त-

१. वेदी रो. ।
२. पुच्छति रो. ।
३. ० पुग्गलं रो. ।
४. उपपत्तिभावं रो. ।
५. वेदियं रो. ।

विरोधभयेनेव पटिक्खिपति । "अब्भन्तरगतो" ति च "बहिद्धा निक्खमित्वा" ति च इदं "सह रूपेन विना रूपेना" ति हेट्ठा वुत्तस्स लक्खणवचनं । तत्थ **अब्भन्तरगतो** ति रूपस्स अन्तोगतो, इतो वा एत्तो वा अनिक्खमित्वा रूपपरिच्छेदवसेनेव ठितो हुत्वा ति अत्थो । **निक्खमित्वा** ति रूपपरिच्छेदं अतिक्कमित्वा । रूपं अनिस्सितो हुत्वा ति अत्थो ।

२३१. **अनत्ता** ति (क० व० ६७) अत्तना जीवेन पुग्गलेन रहितो । एकधम्मे पि पुग्गलो नत्थी ति अत्थो । एवं सब्बसुत्तानं आगमट्ठकथासु वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो । इध पन सन्धाय-भासितमत्तमेव वक्खाम ।

२३७. **वुत्तं भगवता सप्पिकुम्भो** ति (क० व० ७०) आदि "सब्बाव देसना यथारुतवसेनेव[1] अत्थतो न गहेतब्बा" ति दस्सनत्थं आभतं[2] । यथा हि सुवण्णं गहेत्वा कतो[3] सुवण्णविकारो कुम्भो सुवण्णकुम्भो ति वुच्चति, न एवं सप्पिं गहेत्वा कतो सप्पिस्स विकारो सप्पिकुम्भो नाम अत्थि । यस्मिं पन कुम्भे सप्पि पक्खित्तं, सो सप्पिकुम्भो नामा ति अयमेत्थ अत्थो । तेलकुम्भादीसु पि एसेव नयो । यथा च निब्बानं निच्चं धुवं, न एवं भत्तं वा यागु वा अत्थि । कालपरिच्छेदं पन[4] अकत्वा दिवसे दिवसे दस्सामा ति पञ्ञत्तवसेन "निच्चभत्तं धुवयागू" ति वुच्चती ति अयमेत्थ अत्थो ।

"अत्थि पुग्गलो अत्तहिताय पटिपन्नो" ति आदीसु पि यथा रूपादयो धम्मा पच्चत्तलक्खणसामञ्ञलक्खणवसेन अत्थि, न एवं पुग्गलो । रूपादीसु पन सति 'एवं नामो' 'एवं गोत्तो' ति वोहारो B. 139
होति । इति इमिना लोकवोहारेन लोकसम्मुतिया लोकनिरुत्तिया अत्थि पुग्गलो ति अयमेत्थ अत्थो । वुत्तं पि चेतं भगवता—"इमा खो R. 34

१. यथावुत्तवसेनेव स्या. । २. आहतं रो. ।
३. ततो रो. । ४. वा पन रो. ।

चित्त, लोकसमञ्ञा लोकनिरुत्तियो लोकवोहारा लोकपञ्ञत्तियो" ति (दी० नि० १. १६७)। रूपादिधम्मा पन विना पि लोकसम्मुतिं पच्चत्तसामञ्ञलक्खणवसेन पञ्ञापनतो अत्थी ति अयमेत्थ अत्थो।

बुद्धानं पन **द्वे कथा** सम्मुतिकथा च परमत्थकथा च[1]। तत्थ सत्तो, पुग्गलो, देवो, ब्रह्मा ति आदिका **सम्मुतिकथा** नाम। अनिच्चं, दुक्खं, अनत्ता, खन्धा, धातुयो, आयतनानि, सतिपट्ठाना, सम्मप्पधाना ति आदिका परमत्थकथा नाम।

तत्थ यो सम्मुतिदेसनाय सत्तो ति वा ...पे०... ब्रह्मा ति वा[2] वुत्ते जानितुं पटिविज्झितुं निय्यातुं अरहत्तजयग्गाहं गहेतुं सक्कोति, तस्स भगवा आदितो व सत्तो ति वा पुग्गलो ति वा पोसो ति वा देवो ति वा ब्रह्मा ति वा कथेति। यो[3] परमत्थदेसनाय अनिच्चं ति वा दुक्खं ति वा ति आदीसु अञ्ञतरं सुत्वा व[4] जानितुं[5] पटिविज्झितुं निय्यातुं अरहत्तजयग्गाहं गहेतुं सक्कोति। तस्स अनिच्चं ति आदीसु अञ्ञतरं कथेति। तथा सम्मुतिकथाय बुज्झनकसत्तस्स[6] न पठमं परमत्थकथं कथेति। सम्मुतिकथाय पन बोधेत्वा[7] पच्छा परमत्थकथं कथेति। परमत्थकथाय बुज्झनकसत्तस्सा पि न पठमं सम्मुतिकथं कथेति। परमत्थकथाय पन बोधेत्वा पच्छा सम्मुतिकथं कथेति। पकतिया पन पठममेव परमत्थकथं[8] कथेन्तस्स देसना लूखाकारा होति। तस्मा बुद्धा पठमं सम्मुतिकथं कथेत्वा पच्छा परमत्थकथं कथेन्ति। ते सम्मुतिकथं कथेन्ता पि सच्चमेव सभावमेव अमुसा व कथेन्ति। परमत्थकथं कथेन्ता पि सच्चमेव सभावमेव अमुसा व कथेन्ति। अयञ्हि--

"दुवे सच्चानि अक्खासि, सम्बुद्धो वदतं वरो।
सम्मुतिं परमत्थं च, ततियं नुपलब्भति"॥

---

१. चा ति रो.।
२. चा ति रो.।
३. सो रो.।
४. रो. पोत्थके नत्थि।
५. विजानितुं रो.।
६. ० पि रो.।
७. ठत्वा रो.।
८. सम्मतिकथं कथेत्वा पच्छा परमत्थकथं स्या.।

तत्थ–– B. 140

"सङ्केतवचनं सच्चं, लोकसम्मुतिकारणं ।
परमत्थवचनं सच्चं, धम्मानं तथलक्खणं[1]" ति ।।

अपरो नयो––द्वे भगवतो देसना परमत्थदेसना च खन्धादि- R. 35
वसेन, सम्मुतिदेसना च सप्पिकुम्भादिवसेन । न हि भगवा समञ्ञं अतिधावति । तस्मा "अत्थि पुग्गलो" ति वचनमत्ततो अभिनिवेसो न कातब्बो ।

सत्थारा हि––

"पञ्ञत्तिं अनतिक्कम्म, परमत्थो पकासितो ।
समञ्ञं[2] नातिधावेय्य,[2] तस्मा अञ्ञो पि पण्डितो ।
परमत्थं पकासेन्तो, समञ्ञं[3] नातिधावये" ।।

सेसं[4] सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

पुग्गलकथा निट्ठिता

१. तथा लक्खणं रो. । २-२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. सामञ्ञो रो. । ४. सेसा रो. ।

२. परिहानिकथा

१. वादयुत्तिपरिहानिवण्णना

B. 141 २३९. इदानि परिहानिकथा[1] होति। परिहानिधम्मो अपरिहानिधम्मो[2], "द्वेमे, भिक्खवे, धम्मा सेक्खस्स, भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ति"। "पञ्चिमे, भिक्खवे, धम्मा समयविमुत्तस्स भिक्खुनो परिहानाय संवत्तन्ती" ति (अं० नि० १.८८) एवमादीनि हि सुत्तानि निस्साय सम्मितिया वज्जिपुत्तका सब्बत्थिवादिनो एकच्चे च महासङ्घिका अरहतो पि[3] परिहानिं इच्छन्ति, तस्मा ते वा होन्तु अञ्ञेयेव वा, येसं अयं लद्धि, तेसं लद्धिभिन्दनत्थं **परिहायति अरहा अरहत्ता** ति (क० व० ७१) पुच्छा सकवादिस्स। तत्र **परिहायती** ति द्वे परिहानियो पत्तपरिहानि च अप्पत्तपरिहानि च।

तत्थ "दुतियं पि खो आयस्मा गोधिको तम्हा सामयिकाय[4] चेतोविमुत्तिया परिहायी" ति (सं० नि० १.११९) अयं पत्तपरिहानि नाम[5]। "मा वो सामञ्ञत्थिकानं सतं सामञ्ञत्थो परिहायी" ति (म० नि० १.३३३) अयं अप्पत्तपरिहानि। तासु इध पत्तपरिहानि अधिप्पेता। तञ्हि सन्धाय **आमन्ता** ति पटिञ्ञा परवादिस्स। सकसमये[6] पन इमं पत्तपरिहानिं नाम लोकियसमापत्तिया व इच्छन्ति, न अरहत्तादीहि सामञ्ञफलेहि। परसमये पि[7] नं सब्बसामञ्ञफलेसु सब्बभवेसु सब्बकालेसु सब्बेसं च पुग्गलानं न[8] इच्छन्ति। तं पन
R. 36 तेसं लद्धिमत्तमेवा ति सब्बं लद्धिजालं भिन्दितुं पुन **सब्बत्था** ति आदिना नयेन देसना वड्ढिता।

---

१. ० नाम स्या.।
२. ०ति रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि।
४. सामयिताय म.; समाधिकाय रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि।
६. सकवादिसमये रो.।
७. हि रो.।
८. रो. पोत्थके नत्थि।

तत्थ यस्मा परवादी कमेन परिहायित्वा सोतापत्तिफले ठितस्स अरहतो परिहानिं न इच्छति, उपरिफलेसु ठितस्सेव इच्छति। यस्मा च रूपारूपभवेसु ठितस्स न इच्छति, कम्मारामतादीनं पन परिहानिय-धम्मानं भावतो कामभवे ठितस्सेव इच्छति, तस्मा "सब्बत्था" ति पुट्ठो पटिक्खिपति। पुन दळ्हं कत्वा पुट्ठो कामभवं सन्धाय पटिजानाति। सब्बस्मिं पि हि कामभवे परिहानिकरा कामगुणा अत्थि, तस्मा तत्थ परिहायती ति तस्स लद्धि।

ततियपुच्छाय **परिहानी** ति परिहानीकरे धम्मे पुच्छति। तत्थ[1] B. 142
यस्मा[1] परिहानि नाम कम्मारामतादिधम्मा, विसेसतो वा कामराग-ब्यापादा एव, ते च रूपारूपभवे नत्थि, तस्मा "न हेवं" ति पटिक्खेपो परवादिस्स।

सब्बदा ति कालपुच्छा। तत्थ पठमपञ्हे योनिसोमनसिकारकाले अपरिहायनतो पटिक्खिपति। दुतिये अयोनिसोमनसिकरोतो रत्तिभागे वा दिवसभागे वा सब्बदा परिहायनतो पटिजानाति। ततिये परिहानिकरधम्मसमायोगे सति मुहुत्तमेव परिहानि नाम होति, ततो पुब्बे अपरिहीनस्स पच्छा परिहीनस्स च[2] परिहानि[3] नाम नत्थी ति पटिक्खिपति।

सब्बेव अरहन्तो ति पञ्हानं पठमस्मिं तिक्खिन्द्रिये सन्धाय पटिक्खिपति[4]। दुतियस्मिं मुदिन्द्रिये सन्धाय पटिजानाति। ततियस्मिं पि तिक्खिन्द्रिया व अधिप्पेता। तेसञ्हि सब्बेसं पि परिहानि न होती ति तस्स लद्धि।

सेट्ठिउदाहरणे पठमपुच्छा परवादिस्स, दुतिया सकवादिस्स। तत्रायं अधिप्पायो – यं मं तुम्हे पुच्छथ – "अरहा अरहत्ता परि-हायन्तो[5] चतूहि फलेहि परिहायती" ति, तत्र वो पटिपुच्छामि "चतूहि सतसहस्सेहि सेट्ठी सेट्ठित्तं[6] करोन्तो[7] सतसहस्सेहि परिहीने[8] सेट्ठी

१-१. तस्मा रो.।
२. स्या. पोत्थके नत्थि।
३. अपरिहानि रो.
४. पटिजानाति स्या.।
५. ० च रो.।
६. सेट्ठत्तं रो.।
७. धारेन्तो रो.।
८. परिहीनो रो.।

सेट्ठित्ता परिहीनो होती" ति । ततो सकवादिना एकदेसेन परिहानिं
सन्धाय "आमन्ता" ति वुत्ते **सब्बसापतेय्या परिहीनो होती** ति
पुच्छति । तथा अपरिहीनत्ता सकवादी न हेवा ति वत्वा अथ नं –
R. 37 "एवमेव अरहा पि[1] परिहायति च । न च चतूहि फलेही" ति उप्पन्न-
लद्धिकं दुतियं भब्बपञ्हं पुच्छति । परवादी सेट्ठिनो अभब्बताय नियमं
अपस्सन्तो पटिजानित्वा अरहतो चतूहि फलेहि परिहानिभब्बतं पुट्ठो
"नियतो सम्बोधिपरायणो" ति (अ० नि० १.२१५) वचनस्स
अयोनिसो अत्थं गहेत्वा लद्धियं ठितो सोतापत्तिफलतो परिहायितुं
अभब्बतं सन्धाय पटिक्खिपति । तं पनस्स लद्धिमत्तमेवा ति ।

एत्तावता वादयुत्ति नाम निट्ठिता होति

२. अरियपुग्गलसंसन्दनपरिहानिवण्णना

B. 143 २४०. इदानि अरियपुग्गलसंसन्दना आरद्धा । तत्थ यस्मा
केचि अरहतो व[2] परिहानिं इच्छन्ति, केचि अनागामिनो पि,[3] केचि
सकदागामिस्स पि । सातोपन्नस्स पन सब्बे पि न इच्छन्तियेव । ये
अरहत्ता परिहायित्वा अनागामिसकदागामिभावे[4] ठिता, तेसं परिहानिं
इच्छन्ति, न इतरेसं अनागामिसकदागामिनं । सोतापन्नस्स पन ते पि
सब्बथा[5] पि न इच्छन्तियेव, तस्मा पेय्यालमुखेन पुच्छा कता । तत्थ
तेसं लद्धिवलेन पटिञ्ञा च पटिक्खेपो[6] च वेदितब्बा । "परिहायति
अनागामी अनागामिफला" ति हि पञ्हस्मि ये अनागामिनो परिहानिं
न इच्छन्ति, तेसं वसेन पटिक्खेपो । ये पकतिअनागामिनो वा अरहत्ता
परिहायित्वा ठितअनागामिनो वा परिहानिं इच्छन्ति, तेसं वसेन
पटिञ्ञा ति इदमेत्थ नयमुखं । तस्सानुसारेन सब्बपेय्याला अत्थतो
वेदितब्बा ।

---

१. न पि रो.।
२. च रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. अनागामीसकदागामीभूयिभावे स्या.।
५. सब्बदा पि स्या.।
६. परिक्खेपा रो.।

२४१. यं पनेत्थ "सोतापत्तिफलस्स अनन्तरा अरहत्तंयेव सच्छिकरोती" ति वुत्तं, तं परिहीनस्स पुन वायमतो अरहत्तप्पत्तिं सन्धाय वुत्तं। इतरो[1] सोतापत्तिफलानन्तरं अरहत्तस्स अभावा पटिक्खिपति।

२४२. ततो परं "परिहानि नामेसा किलेसप्पहानस्स वा मन्दताय भवेय्य, मग्गभावनादीनं वा अनधिमत्तताय, सच्चानं वा R. 38 अदस्सनेना" ति एवमादीनं वसेन अनुयुञ्जितुं **कस्स बहुतरा किलेसा पहीना** ति (क० व० ७४) आदि वुत्तं। तं सब्बं उत्तानाधिप्पायमेव सुत्तानं पनत्थो आगमट्ठकथासु वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

२६२. **समयविमुत्तो अरहा अरहत्ता परिहायती** ति (क० व० ८८) एत्थ मुदिन्द्रियो समयविमुत्तो, तिक्खिन्द्रियो असमयविमुत्तो ति तेसं लद्धि। एकसमये पन अवसिप्पत्तो झानलाभी समयविमुत्तो, वसिप्पत्तो झानलाभी चेव सब्बे च अरियपुग्गला अरिये विमोक्खे असमयविमुत्ता ति सन्निट्ठानं। सो पन तं अत्तनो लद्धिं गहेत्वा समयविमुत्तो परिहायति, B. 144 इतरो न परिहायती" ति आह। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव।

अरियपुग्गलसंसन्दनपरिहानिवण्णना निट्ठिता

३. सुत्तसाधनपरिहानिवण्णना

२६५. इदानि सुत्तसाधना होति। तत्थ **उच्चावचा** ति उत्तमहीनभेदतो उच्चा च अवचा च। **पटिपादा** ति (क० व० ९१) पटिपदा। **समणेन पकासिता** ति बुद्धसमणेन जोतिता। सुखापटिपदा हि खिप्पाभिञ्ञा उच्चा। दुक्खापटिपदा दन्धाभिञ्ञा अवचा। इतरा द्वे एकेनङ्गेन उच्चा, एकेन अवचा। पठमं वुत्ता एव वा[2] उच्चा, इतरो तिस्सो पि अवचा। ताय चेताय[3] उच्चावचाय पटिपदाय **न पारं**

१. तं इतरो स्या., रो.।
२. रो. पोत्थके नत्थि।
३. रो. पोत्थके नत्थि।

दिगुणं यं ति, एकमग्गेन द्विक्खत्तुं निब्बानं न गच्छन्ती ति अत्थो । कस्मा ? येन मग्गेन ये किलेसा पहीना, तेन[1] तेसं पुन अप्पहातब्बतो । एतेन परिहानिधम्माभावं दीपेति । **नयिदं एकगुणं मुतं** ति तं च इदं पारं[2] एकवारं येव फुसनारहं[3] न होति । कस्मा ? एकेन मग्गेन
R. 39 सब्बकिलेसानं अप्पहानतो । एतेन एकमग्गेनेव अरहत्ताभावं दीपेति ।

अत्थि छिन्नस्स छेदियं ति छिन्नस्स किलेसवट्टस्स पुन छिन्दितब्बं किञ्चि अत्थी ति पुच्छति । इतरो तिक्खिन्द्रियं सन्धाय पटिक्खिपित्वा पुन पुट्ठो मुदिन्द्रियं सन्धाय पटिजानाति । सकवादी सुत्तं आहरित्वा नत्थिभावं दस्सेति । तत्थ **ओघपासो** ति किलेसोघो चेव किलेसपासो च ।

२६६. **कतस्स पटिचयो** ति (क० व० ६१) भावितस्स मग्गस्स पुन भावना । इधा पि पटिक्खेपपटिजाननानि पुरिमनयेनेव वेदितब्बानि ।

२६७. **परिहानाय संवत्तन्ती** ति (क० व० ६२) परवादिना आभते[4] सुत्ते पञ्च धम्मा अप्पत्तपरिहानाय चेव लोकियसमापत्ति-परिहानाय च संवत्तन्ति । सो[5] पन पत्तस्स अरहत्तफलस्स परिहानाय सल्लक्खेति । तेनेव **अत्थि अरहतो कम्मारामता** ति
B. 145 आह । इतरो पि[6] असमयविमुत्तं सन्धाय पटिक्खिपित्वा इतरं सन्धाय पटिजानाति । कामरागवसेन वा पवत्तमानं[7] तं[7] पटिक्खिपित्वा इतरथा पवत्तमानं[8] पटिजानाति । रागादीनं पन अत्थितं[9] पुट्ठो पटिजानितुं न सक्कोति ।

२६८. **किं परियुट्ठितो** ति (क० व० ६२) केन परियुट्ठितो अनुबद्धो अज्झोत्थतो वा हुत्वा ति अत्थो । अनुसयपुच्छाय पि

---

१. रो. पोत्थके नत्थि ।
२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. ० पि स्या., रो. ।
४. आहत रो. ।
५. यो रो. ।
६. रो. पोत्थके नत्थि ।
७-७. पवत्तमानतं रो. ।
८. पवत्तमानतं रो. ।
९. अत्थी ति रो. ।

तिक्खिन्द्रियमुदिन्द्रियवसेनेव पटिक्खेपपटिजाननानि वेदितब्बानि । कल्याणानुसयो ति वचनमत्तसामञ्ञेन वा पटिजानाति । **रागो उपचयं गच्छती** ति भावनाय पहीनं सन्धायाह । परतो दोसमोहेसु पि एसेव नयो । सक्कायदिट्ठिआदीनं पन दस्सनेन पहीनत्ता उपचयं न इच्छति । सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

निट्ठिता च सुत्तसाधना
परिहानिकथा निट्ठिता

३. ब्रह्मचरियकथा

१. सुद्धब्रह्मचरियकथावण्णना

B. 146 २६९. इदानि ब्रह्मचरियकथा होति । तत्थ द्वे ब्रह्मचरियवासा, R. 40 मग्गभावना च पब्बज्जा च । पब्बज्जा सब्बदेवेसु नत्थि । मग्गभावना ठपेत्वा असञ्ञसत्ते सेसेसु अप्पटिसिद्धा[1] । तत्थ ये परनिम्मित-वसवत्तिदेवे उपादाय तदुपरिदेवेसु मग्गभावनं पि न इच्छन्ति सेय्यथापि सम्मितिया, ते सन्धाय **नत्थि देवेसू** ति (क०व० ६४) पुच्छा सकवादिस्स । "तीहि, भिक्खवे, ठानेहि जम्बुदीपका मनुस्सा उत्तरकुरुके च मनुस्से अधिग्गण्हन्ति देवे च तावतिंसे । कतमेहि तीहि ? सूरा सतिमन्तो इध ब्रह्मचरियवासो" ति (अं० नि० ४.३८) इदं सुत्तं निस्साय द्वे पि ब्रह्मचरियवासा नत्थि देवेसू ति उप्पन्नलद्धिवसेन पटिञ्ञा परवादिस्स । पुन द्विन्नं पि ब्रह्मचरियानं अन्तरायिकधम्मवसेनेव[2] **सब्बे देवा जळा** ति पुच्छा सकवादिस्स । तत्थ **हत्थसंवाचिका** ति मूगा विय हत्थमुद्धाय वत्तारो । परतो **अत्थि देवेसू** ति पुच्छा[3] परवादिस्स,[4] मग्गभावनं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स । पटिञ्ञाय अधिप्पायं असल्लक्खेत्वा पब्बज्जावसेन अनुयोगो परवादिस्स ।

२७०. **यत्थ नत्थि पब्बज्जा** ति (क० व० ६५) पञ्हे गिहीनं चेव एकच्चानं च देवानं मग्गपटिलाभं सन्धाय पटिक्खेपो तस्सेव । पुन पुट्ठो पच्चन्तवासिनो चेव असञ्ञसत्ते च सन्धाय पटिञ्ञा तस्सेव । **यो पब्बज्जती** ति आदीसु पुच्छासु पि एसेव नयो । पुन "अत्थि देवेसू" ति पञ्हे पि मग्गभावनं सन्धायेव पटिञ्ञा सकवादिस्स, "सब्बदेवेसू" ति वुत्ते असञ्ञसत्ते[5] सन्धाय पटिक्खेपो तस्सेव ।

---

१. अप्पटिविद्धा रो. ।
२. ० धम्मवसेन रो. ।
३. पञ्हे पि रो. ।
४. रो. पोत्थके नत्थि ।
५. सञ्ञी रो. ।

२७१. **मनुस्सेसू** ति (क० व० ९८) पञ्हद्वये जम्बुदीपके सन्धाय पटिञ्ञा। पच्चन्तवासिनो सन्धाय पटिक्खेपो वेदितब्बो।

अत्थि यत्थ अत्थी ति अत्थि ते देवा, अत्थि वा सो पदेसो, यत्थ अत्थी ति एवं सत्तपदेसविभागमुखेन विस्सज्जनं सकवादिस्स। इमिना नयेन सब्बे एकन्तरिकपञ्हा वेदितब्बा।

२७२. सुत्तानुयोगे **कुहिं फलुप्पत्ती** ति (क० व० १००) तस्स B. 147
अनागामिनो अरहत्तफलुप्पत्ति कुहिं ति पुच्छा सकवादिस्स। **तत्थेवा** ति सुद्धावासेसू ति अत्थो।

हन्द ही ति कारणत्थे निपातो। इदं वुत्तं होति –– यस्मा R.4 1
अनागामिपुग्गलो इध लोके भावितेन मग्गेन तत्थ सुद्धावासेसु फलं सच्छिकरोति, न तत्थ अञ्ञं मग्गं भावेति, तस्मा नत्थि देवेसु ब्रह्मचरियवासो ति।

२. संसन्दनब्रह्मचरियवण्णना

२७३. इदानि यदि अञ्ञत्थ भावितेन मग्गेन अञ्ञत्थ फलसच्छिकिरिया होति, सोतापन्नादीनं पि सिया ति एतमत्थं दस्सेतुं पुन **अनागामी** ति (क० व० १०१) आदीनं संसन्दनपुच्छा सकवादिस्स। तत्थ अनागामिस्स फलसच्छिकिरियाय पटिञ्ञा, सेसानं फलसच्छिकिरियाय पटिक्खेपो परवादिस्स। इध भावितमग्गो हि अनागामी इधविहायनिट्ठो नाम होति। सो इध अनागामिमग्गं भावेत्वा "ओपपातिको तत्थपरिनिब्बायी" ति वचनतो "पुन[1] मग्गभावनं विना उपपत्तिवसेनेव अरहत्तफलं सच्छिकरोती" ति तस्स लद्धि। सोतापन्नसकदागामिनो पन तत्थ मग्गं भावेत्वा तत्रुपपत्तिका नाम होन्ती ति तेसं इधागमनञ्ञेव नत्थि। इति सो अनागामिस्स फलसच्छिकिरियं पुट्ठो पटिजानाति। इतरेसं पटिक्खिपति।

अनागामी पुग्गलो तत्थ भावितेन मग्गेना ति पञ्हे "अनागामिनो तत्थ मग्गभावना व नत्थी" ति लद्धिया पटिक्खिपति। **मग्गो च**

१. पन स्या.।

भावीयति, न च किलेसा पहीयन्ती ति पुच्छा सकवादिस्स, रूपावचरमग्गं सन्धाय पटिञ्ञा इतरस्स। रूपावचरमग्गेन हि सो इधविहायनिट्ठो नाम जातो।

अनागामी पुग्गलो कतकरणीयो ति पञ्हे "ओपपातिको तत्थपरिनिब्बायी" ति वचनतो उपपत्तियावस्स कतकरणीयादिभावं सन्धाय पटिजानाति। **अरहा** ति पञ्हे इधपरिनिब्बायिनो[1] अरहतो वसेनेव पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो तत्थपरिनिब्बायिनो वसेन पटिजानाति।

अत्थि अरहतो पुनब्भवो ति आदीसु पि तत्थपरिनिब्बायी इधपरिनिब्बायीनं वसेनेव अत्थो वेदितब्बो। **अप्पटिविद्धाकुप्पो व**
B. 148 **तत्थपरिनिब्बायती** ति पुट्ठो इधेव भावितेन मग्गेन तस्स[2] अकुप्पपटिवेधं इच्छन्तो पटिक्खिपति।

R. 42 **यथा मिगो** ति पठमं उदाहरणं परवादिस्स, दुतियं सकवादिस्स। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

ब्रह्मचरियकथा निट्ठिता

३. ओधिसोकथावण्णना

२७४. इदानि ओधिसोकथा नाम होति। तत्थ ये सोतापन्नादीनं नानाभिसमयवसेन[3] दुक्खदस्सनादीहि ओधिसो ओधिसो[4] एकदेसेन एकदेसेन[5] किलेसप्पहानं इच्छन्ति सेय्यथापि एतरहि सम्मितियादयो, तेसं तं लद्धिं भिन्दितुं **ओधिसो** ति (क० व० १०३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा परवादिस्स। पुन अनुयोगो सकवादिस्स, एकदेसेन सोतापन्नादिभावस्स अभावतो पटिक्खेपो परवादिस्स। इमिना उपायेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो ति।

ओधिसोकथावण्णना निट्ठिता

---

१. परिनिब्बायितो रो.। २. अरहत्तस्स सी., स्या.।
३. ञाना ० रो.। ४. रो. पोत्थके नत्थि।
५. रो. पोत्थके नत्थि।

४. जहतिकथा

१. नसुत्ताहरणकथावण्णना

२७९. इदानि जहतिकथा[1] नाम होति। तत्थ येसं[2] "झानलाभी पुथुज्जनो सह सच्चाभिसमया अनागामी नाम होति, तस्स पुथुज्जनकालेयेव कामरागब्यापादा पहीना" ति लद्धि सेय्यथापि एतरहि सम्मितियानं, तेसं तं लद्धिं भिन्दितुं **जहति पुथुज्जनो** ति (क० व० १०८) पुच्छा सकवादिस्स, झानविक्खम्भितानं पन तेसं परियुट्ठानं अपस्सन्तस्स पटिञ्ञा परवादिस्स। यस्मा पन तेसं झानविक्खम्भितानं पि अनागामिमग्गेनेव अच्चन्तं पहानं होति, तस्मा पुन **अच्चन्तं** ति B. 149
आदि अनुयोगो सकवादिस्स, तथारूपस्स पहानस्स अभावतो पटिक्खेपो इतरस्स। विक्खम्भेती ति अच्चन्तविक्खम्भनमेव सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स। ततो परं अनागामिमग्गट्ठेन सद्धिं पुथुज्जनसंसन्दनं होति। तं उत्तानत्थमेव।

२८०. ततो परं **अनागामिफले सण्ठाती** ति (क० व० ११०) पुट्ठो झानानागामितं सन्धाय पटिजानाति। **अरहत्ते सण्ठाती** ति पुट्ठो दस्सनमग्गेन उद्धम्भागियानं पहानाभावतो पटिक्खिपति R. 43
अपुब्बं अचरिमं तयो मग्गे ति पुट्ठो तथारूपाय भावनाय अभावा पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो तिण्णं मग्गानं किच्चसब्भावं[3] सन्धाय पटिजानाति। सामञ्ञफलपुच्छासु पि एसेव नयो। **कतमेन मग्गेना** ति पुट्ठो **अनागामिमग्गेना** ति झानानागामितं सन्धाय वदति। पुन संयोजनप्पहानं पुट्ठो तिण्णं[4] अनागामिमग्गेन तेसं किलेसानं अप्पहेय्यत्ता[5] पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो पठममग्गस्सेव झानानागामिग्गभावं सन्धाय पटिजानाति। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

जहतिकथा निट्ठिता

---

१. पजहतिकथा स्या.। २. ० च स्या.।
३. किच्चसभावं सी., स्या.। ४. रो. पोत्थके नत्थि।
५. अप्पहीनत्ता स्या.।

५. सब्बमत्थीतिकथा

१. वादयुत्तिवण्णना

२८२. इदानि सब्बमत्थी ति वादकथा नाम होति । तत्थ येसं "यं किञ्चि रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं ···पे०···अयं वुच्चति रूपक्खन्धो" ति (विभं० ३) आदि वचनतो "सब्बे पि अतीतादिभेदा धम्मा खन्धसभावं न विजहन्ति, तस्मा सब्बं अत्थियेव नामा" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि सब्बमत्थिवादानं, तेसं लद्धिविसोधनत्थं **सब्बमत्थी** ति पुच्छा सकवादिस्स, वुत्तप्पकाराय लद्धिया ठत्वा पटिञ्ञा इतरस्स । **सब्बथा** ति (क० व० ११२) सब्बस्मिं सरीरे सब्बमत्थी ति पुच्छति । **सब्बदा** ति सब्बस्मिं काले सब्बमत्थी ति पुच्छति । **सब्बेन सब्बं** ति सब्बेनाकारेन सब्बमत्थी ति पुच्छति ।
B. 150 **सब्बेसु** ति सब्बेसु धम्मेसु सब्बमत्थी ति पुच्छति । **अयोगं** ति अयुत्तं । नानासभावानञ्हि योगो होति, न एकसभावस्स । इति इमस्मिं पञ्हे रूपं वेदनाय, वेदनं[1] वा रूपेन अनानं एकलक्खणमेव कत्वा सब्बमत्थी ति पुच्छति । **यं पि नत्थि तं पित्थी** ति यं पि छट्ठखन्धादिकं ससविसाणादिकं वा किञ्चि नत्थी ति सिद्धं, तं पि ते अत्थी ति
R. 44 पुच्छति । **सब्बमत्थी ति या दिट्ठि सा दिट्ठि मिच्छादिट्ठी ति, या दिट्ठि सा दिट्ठि सम्मादिट्ठी ति हेवमत्थी** ति इमिना इदं पुच्छति – या ते एसा सब्बमत्थी ति दिट्ठि, सा दिट्ठि अयाथावकत्ता मिच्छादिट्ठी ति एवं या अम्हाकं दिट्ठी, सा दिट्ठी याथावकत्ता सम्मादिट्ठी ति एवं तव समये अत्थी[2] ति पुच्छति[3] । इतरो सब्बेसु पि एतेसु नयेसु वुत्तप्पकाराय अत्थिताय अभावतो पटिक्खिपति । इमेसु पन सब्बेसु पि नयेसु "आजानाहि निग्गहं" ति आदिं कत्वा सब्बो कथामग्गभेदो वित्थारतो वेदितब्बो ति अयं तावेत्थ वादयुत्ति ।

---

१. वेदना रो. । २. नत्थि रो. ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।

२. कालसंसन्दनवण्णना

२८३ – २८४. इदानि अतीतं अत्थी ति कालसंसन्दनं होति। तत्थ **अतीतं अत्थी** ति (क० व० ११३) आदिकं सुद्धिकसंसन्दनं। **अतीतं रूपं अत्थी** ति आदिकं खन्धवसेन कालसंसन्दनं।

२८५. **पच्चुप्पन्नं रूपं अप्पियं करित्वा** ति (क० व० ११६) अतीतानागतं पहाय पच्चुप्पन्नरूपमेव अप्पियं अविभजितब्बं करित्वा। **रूपभावं जहती** ति पञ्हे निरुद्धस्सा पि रूपस्स रूपक्खन्धसङ्गहितत्ता पटिक्खिपति। **रूपभावं न जहती** ति पटिलोमपञ्हे पि रूपक्खन्धेन सङ्गहितत्ता व पटिजानाति। **ओदातं वत्थं अप्पियं करित्वा** ति एत्थ किञ्चा पि न सब्बं वत्थं ओदातं, इमिना पन वत्थं ति अवत्वा "ओदातं वत्थं अप्पियं करित्वा" ति वुत्ते सकवादिना एकत्थता अनुञ्ञाता। **ओदातभावं जहती**[1] ति पञ्हे वण्णविगमं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स। **वत्थभावं जहती** ति एत्थ पन पञ्ञत्तिया अविगतत्ता[2] पटिक्खेपो तस्सेव। पटिलोमे पि एसेव नयो।

२८६. **अतीतं अतीतभावं न जहती** ति (क० व० ११७) पुट्ठो[3] "यदि जहेय्य, अनागतं वा पच्चुप्पन्नं वा सिया" ति मञ्ञमानो पटिजानाति। **अनागतं अनागतभावं न जहती** ति पुट्ठो पन "यदि न[4] जहेय्य, अनागतमेवस्स,[5] पच्चुप्पन्नभावं न पापुणेय्या" ति मञ्ञमानो B. 151
पटिक्खिपति। पच्चुप्पन्नपञ्हे पि अतीतभावं अनापज्जनदोसो सिया ति पटिक्खिपति। अनुलोमपञ्हेसु पि इमिना व नयेन अत्थो वेदितब्बो।

२८७. एवं सुद्धिकनयं वत्वा पुन खन्धवसेन[6] दस्सेतुं **अतीतं** R. 45
रूपं ति (क० व० ११८) आदि वुत्तं। तं सब्बं[7] पाळिअनुसारेनेव सक्का जानितुं।

---

१. न ० स्या.।
२. अधिगहितत्ता रो.।
३. ० पन रो.।
४. स्या. पोत्थके नत्थि।
५. अनागतमेव स्या.।
६. ० वसेनेव रो.।
७. ० पि रो.।

३. वचनसोधनवण्णना

२८८. इदानि "अतीतं न्वत्थी" ति आदि वचनसोधना[1] होति। तत्थ **हञ्चि अतीतं न्वत्थी** ति (क० व० १२१) यदि अतीतं नो अत्थी ति अत्थो। **अतीतं अत्थी ति मिच्छा** ति अतीतं च तं अत्थि चा ति मिच्छा एव। **तञ्ञेव अनागतं तं पच्चुप्पन्नं** ति पुट्ठो अनागतक्खणेयेवस्स पच्चुप्पन्नताय अभावं सन्धाय कालनानत्तेन पटिक्खिपति।

दुतियं पुट्ठो यं उप्पादतो पुब्बे अनागतं अहोसि, तस्स उप्पन्नकाले पच्चुप्पन्नत्ता पटिजानाति। **हुत्वा होति हुत्वा होती** ति यदेतं[2] तया "अनागतं हुत्वा पच्चुप्पन्नं होती" ति वदता तञ्ञेव अनागतं तं पच्चुप्पन्नं ति लद्धिवसेन "अनागतं वा पच्चुप्पन्नं वा हुत्वा होती" ति वुत्तं[3]। किं ते तं पि हुत्वा होती ति? इतरो हुत्वा भूतस्स पुन हुत्वा अभावतो **न हेवं** ति पटिक्खिपति।

दुतियं[4] पुट्ठो यस्मा तं अनागतं हुत्वा पच्चुप्पन्नं होन्तं "हुत्वा होती" ति सङ्ख्यं गतं, तस्मा पटिजानाति। अथ नं सकवादी "यदि ते तं[5] अनागतं हुत्वा पच्चुप्पन्नं होन्तं 'हुत्वा होती' ति सङ्ख्यं गतं, पुन हुत्वा होति, यं अनागतं न हुत्वा पच्चुप्पन्नं न होन्तं 'न हुत्वा न होती' ति सङ्ख्यं गतं ससविसाणं, किं ते तं पि पुन न[6] हुत्वा न होती" ति अधिप्पायेन **न हुत्वा न होति न हुत्वा न होती** ति पञ्हं पुच्छति। इतरो "यं नत्थि, तं नत्थिताय, एवं अनागतं न हुत्वा पच्चुप्पन्नं न होती ति न हुत्वा न होति नाम ताव होतु, पुन नहुत्वानहोतिभावो पनस्स कुतो" ति मञ्ञमानो पटिक्खिपति। R. 46 **तञ्ञेव पच्चुप्पन्नं तं अतीतं** ति पञ्हे पि पच्चुप्पन्नक्खणेयेवस्स अतीतताय अभावं सन्धाय कालनानत्ता पटिक्खिपति।

---

१. वचनतो सोधना स्या.।
२. यदेवं रो.।
३. ० होति रो.।
४. ० पि रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि।
६. रो. पोत्थके नत्थि।

दुतियपञ्हे पुट्ठो यं[1] अतीतभावतो पुब्बे पच्चुप्पन्नं अहोसि, तस्सेव अतीतत्ता पटिजानाति। **हुत्वा होति हुत्वा होती** ति यदेतं[2] तया "पच्चुप्पन्नं हुत्वा अतीतं होती" ति वदता "तञ्ञेव पच्चुप्पन्नं तं अतीतं ति लद्धिवसेन "पच्चुप्पन्नं वा अतीतं वा[3] हुत्वा होती" ति वुत्तं, किं ते तं पि हुत्वा होती ति? इतरो हुत्वा भूतस्स पुन हुत्वा अभावतो **न हेवं** ति पटिक्खिपति। B. 152

दुतियपञ्हे यस्मा तं पच्चुप्पन्नं हुत्वा अतीतं होन्तं "हुत्वा होती" ति[4] सङ्खं गतं, तस्मा पटिजानाति। अथ नं सकवादी "यदि ते तञ्ञेव[5] पच्चुप्पन्नं हुत्वा अतीतं होन्तं 'हुत्वा होती' ति सङ्खं गतं, पुन[6] हुत्वा होति, यं[7] पच्चुप्पन्नं न[8] हुत्वा अतीतं न होन्तं 'न[9] हुत्वा न[10] होती' ति सङ्खं गतं ससविसाणं, किं ते तं पि पुन न[11] हुत्वा न होती" ति अधिप्पायेन[12] **न हुत्वा न होति न हुत्वा न होती** ति पञ्हं पुच्छति। इतरो "यं नत्थि, तं नत्थिताय एव पच्चुप्पन्नं न[13] हुत्वा अतीतं न होती ति[14] न हुत्वा न होति नाम[15] ताव होतु[15]। पुन न हुत्वा न होतिभावो पनस्स कुतो" ति मञ्ञमानो पटिक्खिपति। उभयं एकतो कत्वा आगते ततियपञ्हे पि इमिनावुपायेन[16] योजना कातब्बा।

अपरो नयो -- यदि तञ्ञेव अनागतं तं[17] पच्चुप्पन्नं, अनागतस्स पच्चुप्पन्ने वुत्तो होतिभावो, पच्चुप्पन्नस्स च[18] अनागते

१. अयं रो.।
२. यदेव तं रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि।
४. यदेतं तया पच्चुप्पन्नं हुत्वा अतीतं होती ति वदता तञ्ञेव पच्चुप्पन्नं, रो. पोत्थके अधिको पाठो।
५. रो. पोत्थके नत्थि।
६. रो. पोत्थके नत्थि।
७. तं पन रो.।
८. रो. पोत्थके नत्थि।
९. रो. पोत्थके नत्थि।
१०. रो. पोत्थके नत्थि।
११. रो. पोत्थके नत्थि।
१२. अधिप्पायो रो.।
१३. रो. पोत्थके नत्थि।
१४. ० तं रो.।
१५-१५. नमत्ताव होति रो.।
१६. इमिना उभयेन रो.।
१७. रो. पोत्थके नत्थि।
१८. रो. पोत्थके नत्थि।

वुत्तो हुत्वाभावो आपज्जति । एवं सन्ते अनागतं पि हुत्वाहोति[1] नाम । पच्चुप्पन्नं पि हुत्वाहोति येव नाम । तेन तं पुच्छाम – "किं ते एतेसु एकेकं हुत्वा होति हुत्वा होती" ति ? इतरो – "तञ्ञेव अनागतं तं[2] पच्चुप्पन्नं" ति पञ्हे पटिक्खित्तनयेनेव पटिक्खिपित्वा पुन पुट्ठो दुतिये पञ्हे पटिञ्ञातनयेनेव पटिजानाति । अथ नं सकवादी "तञ्ञेव अनागतं तं पच्चुप्पन्नं" ति पञ्हावसेन तेसु एकेकं हुत्वा होति हुत्वा होती ति पटिजानन्तं पुरिमं पटिक्खित्तपञ्हं परिवत्तित्वा पुच्छन्तो **न हुत्वा न होति न हुत्वा न होती** ति पुच्छति । तस्सत्थो –– ननु "तया तञ्ञेव अनागतं तं[3] पच्चुप्पन्नं" ति वुत्ते पठमपञ्हं पटिक्खि-
R. 47 पन्तेन अनागतस्स होतिभावो पच्चुप्पन्नस्स च हुत्वाभावो पटिक्खित्तो ति । तेन अनागतं न होति नाम, पच्चुप्पन्नं न हुत्वा नाम ।

B. 153 दुतियपञ्हे च तञ्ञेव अनागतं तं पच्चुप्पन्नं ति पटिञ्ञातं । एवं सन्ते अनागतं पि न हुत्वा न होति नाम । पच्चुप्पन्नं पि न हुत्वा न होतियेव नाम । तेन तं पुच्छाम – "किं ते एतेसु एकेकं न हुत्वा न होति न हुत्वा न होती" ति ? परवादी सब्बतो अन्धकारेन परियोनद्धो विय तेसं नहुत्वानहोतिभावं अपस्सन्तो न हेवं ति पटिक्खिपति ।

दुतियवारे पि यदि तञ्ञेव पच्चुप्पन्नं तं अतीतं, पच्चुप्पन्नस्स अतीते वुत्तो होतिभावो, अतीतस्स च पच्चुप्पन्ने वुत्तो हुत्वाभावो आपज्जति, एवं सन्ते पच्चुप्पन्नं पि हुत्वाहोति नाम, अतीतं पि हुत्वाहोतियेव नाम । तेन तं पुच्छाम – "किं ते एतेसु एकेकं हुत्वाहोति हुत्वा होती" ति ? इतरो तञ्ञेव पच्चुप्पन्नं[4] तं अतीतं ति पञ्हे पटिक्खित्तनयेनेव पटिक्खिपित्वा पुन पुट्ठो दुतियपञ्हे पटिञ्ञातनयेनेव पटिजानाति । अथ नं सकवादी "तञ्ञेव पच्चुप्पन्नं तं अतीतं" ति पञ्हावसेन तेसु एकेकं हुत्वाहोति हुत्वाहोती ति पटिजानन्तं[5] पुरिमं पटिक्खित्तपञ्हं परिवत्तित्वा पुच्छन्तो **न हुत्वा न होति न हुत्वा न**

१. ० येव रो. ।
२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. अनागतं पच्चुप्पन्नं रो. ।
५. पटिजानन्तस्स स्या. ।

होती ति पुच्छति । तस्सत्थो —– ननु तया तञ्ञेव पच्चुप्पन्नं तं अतीतं ति वुत्ते पठमपञ्हं पटिक्खिपन्तेन पच्चुप्पन्नस्स होतिभावो, अतीतस्स च हुत्वाभावो पटिक्खित्तो ति । तेन पच्चुप्पन्नं न होति नाम । अतीतं न हुत्वा नाम ।

दुतियपञ्हे च ते "तञ्ञेव पच्चुप्पन्नं तं अतीतं" ति पटिञ्ञातं । एवं सन्ते पच्चुप्पन्नं पि न हुत्वा न होति नाम, अतीतं पि न हुत्वा न होति येव नाम । तेन तं पुच्छाम – "किं ते एतेसु[1] एकेकं न हुत्वा न होति, न हुत्वा न होती" ति । परवादी सब्बतो अन्धकारेन परियोनद्धो विय तेसं न हुत्वा न होतिभावं अपस्सन्तो **न हेवं** ति पटिक्खिपति ।

ततियवारे पि यदि तञ्ञेव अनागतं तं पच्चुप्पन्नं तं अतीतं;[2] अनागतपच्चुप्पन्नानं पच्चुप्पन्नातीतेसु वुत्तो होतिभावो, पच्चुप्पन्नातीतानं च अनागतपच्चुप्पन्नेसु वुत्तो हुत्वाभावो आपज्जति । एवं सन्ते R. 48
अनागतं पि हुत्वाहोति नाम । पच्चुप्पन्नं पि अतीतं पि[3] हुत्वाहोति येव नाम । तेन तं पुच्छाम – "किं ते तीसु पि एतेसु एकेकं हुत्वाहोति B. 154
हुत्वाहोती" ति ? इतरो तञ्ञेव अनागतं, तं पच्चुप्पन्नं, तं अतीतं" ति पञ्हे पटिक्खित्तनयेनेव पटिक्खिपित्वा पुन पुट्ठो दुतियपञ्हे पटिञ्ञातनयेनेव पटिजानाति । अथ नं सकवादी – "तञ्ञेव अनागतं, तं पच्चुप्पन्नं, तं अतीतं" ति पञ्हावसेन[4] तेसु एकेकं हुत्वा होति, हुत्वाहोती ति पटिजानन्तं पुरिमं पटिक्खित्तपञ्हं परिवत्तित्वा पुच्छन्तो **न हुत्वा न होति न हुत्वा न होती** ति पुच्छति ।

तस्सत्थो—–ननु तया तञ्ञेव अनागतं, तं पच्चुप्पन्नं, तं अतीतं ति वुत्ते पठमपञ्हं पटिक्खिपन्तेन अनागतपच्चुप्पन्नानं होतिभावो; पच्चुप्पन्नातीतानं च हुत्वाभावो पटिक्खित्तो ति ? तेन अनागतं[5] पच्चुप्पन्नं च[6] होति नाम । पच्चुप्पन्नं च अतीतं च न हुत्वा नाम ।

१. एतेसु एतेसु च. रो. ।
२. ० ति रो. ।
३. स्या. पोत्थके नत्थि ।
४. ० वसेनेव रो. ।
५. ० तेन रो. ।
६. ० न रो. ।

दुतियपञ्हे च[1] ते तञ्ञेव अनागतं, तं पच्चुप्पन्नं, तं अतीतं" ति पटिञ्ञातं। एवं सन्ते अनागतं पि न हुत्वा न होति नाम, पच्चुप्पन्नं पि अतीतं पि न हुत्वा न होति येव नाम। तेन तं पुच्छाम–"किं ते एतेसु एकेकं न हुत्वा न होति न हुत्वा न होती" ति? परवादी सब्बतो अन्धकारेन परियोनद्धो विय तेसं न हुत्वा न होतिभावं अपस्सन्तो **न हेवं** ति पटिक्खिपती ति। निग्गहादीनि पनेत्थ हेट्ठा वुत्तनयेनेव योजेतब्बानि।

वचनसोधनवण्णना निट्ठिता

४. अतीतचक्खुरूपादिकथावण्णना

२८९. **अतीतं चक्खु अत्थी** ति (क॰ व॰ १२२) आदीसु पि चक्खादिभावाविजहनेनेव अत्थितं[2] पटिजानाति। **पस्सती** ति आदीनि पुट्ठो पन[3] तेसं विञ्ञाणानं किच्चाभाववसेन[4] पटिक्खिपति।

५. अतीतञाणादिकथावण्णना

२९०. तेन ञाणेन ञाणकरणीयं करोती ति पञ्हे तस्स ञाणस्स
49 निरुद्धत्ता किच्चभावमस्स अपस्सन्तो पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो
अतीतारम्मणं पच्चुप्पन्नं ञाणं अतीतानं[5] धम्मानं[6] जाननतो अतीतं
B. 155 ञाणं ति लेसेन पच्चुप्पन्नमेव "अतीतं ञाणं" ति कत्वा तेन ञाणेन
ञाणकरणीयस्स[2] अत्थिताय पटिजानाति। अथस्स सकवादी लेसोकासं अदत्वा **तेन ञाणेन दुक्खं परिजानाती** ति (क॰ व॰ १२५) आदिमाह। इतरो अतीतारम्मणेनेव ञाणेन इमेसं चतुन्नं किच्चानं अभावा पटिक्खिपति। अनागतपञ्हे पि एसेव नयो। पच्चुप्पन्नपञ्हो चेव संसन्दनपञ्हो च उत्तानत्थायेव।

---

१. व रो.।
२. अतीतं स्या.।
३. पुन स्या.।
४. ॰ वसेनेव रो.।
५. अतीतारम्मणधम्मानं स्या.।
६. करणीयस्स रो.।

६. अरहन्तादिकथावण्णना

२६१. **अरहतो अतीतो रागो अत्थी** ति (क० व० १२६) आदीसु पि रागादिभावाविजहन्तो एवं पटिजानाति। **सरागो** ति आदीसु सुत्तविरोधभयेन चेव युत्तिविरोधभयेन च पटिक्खिपति।

७. पदसोधनकथावण्णना

२६५. एवं सब्बं पि[1] पाळिअनुसारेनेव विदित्वा परतो **अत्थि सिया अतीतं, सिया न्वातीतं** ति (क० व० १३३) एत्थ एवमत्थो वेदितब्बो। यं अतीतमेव अत्थि, तं अतीतं। यं पच्चुप्पन्नानागतं अत्थि, तं नो अत्थि, तं नो अतीतं[2]। **तेनातीतं न्वातीतं, न्वातीतं अतीतं** ति तेन कारणेन अतीतं नो अतीतं, नो अतीतं अतीतं ति। अनागत-पच्चुप्पन्नपुच्छासु पि एसेव नयो।

८. सुत्तसाधनवण्णना

२६६. **न वत्तब्बं "अतीतं अत्थि अनागतं अत्थी"** ति (क० व० १३५) सुत्तसाधनाय पुच्छा परवादिस्स, पटिञ्ञा सकवादिस्स। पुन अत्तनो लद्धिं निस्साय **यं किञ्चि भिक्खवे रूपं** ति अनुयोगो परवादिस्सेव। दुतियनये पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। एवं सब्बत्थ पुच्छा च पटिञ्ञा च वेदितब्बा। यं पनेतं परवादिना अनागतस्स अत्थिभावसाधनत्थं "ननु वुत्तं भगवता कबळीकारे, चे भिक्खवे" ति सुत्तस्स परियोसाने **अत्थि तत्थ आयतिं पुनब्भवाभिनिब्बत्ती** ति आदि दस्सितं न तं अनागतस्स अत्थिभाव- B. 156
साधकं। तञ्हि हेतूनं परिनिट्ठितत्ता अवस्सं भावितं सन्धाय तत्थ वुत्तं। अयं सुत्ताधिप्पायो। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

सब्बमत्थीतिकथावण्णना निट्ठिता

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. ० ति रो.।

६. अतीतक्खन्धादिकथा

१. नसुत्तसाधनकथावण्णना

R. 50 २६७. इदानि "अतीतं खन्धा" ति (क० व० १३८) आदिकथा होति। तत्थ खन्धादिभावाविजहनतो अतीतानागतानं अत्थितं इच्छन्तस्स **अतीतं खन्धा** ति पुच्छा परवादिस्स, अतीतस्स खन्धसङ्गहितत्ता **आमन्ता** ति पटिञ्ञा सकवादिस्स। पुन **अतीतं नत्थी** ति पुच्छा परवादिस्स, तस्स निरुत्तिपथसुत्तेन अत्थिताय वारितत्ता पटिक्खेपो सकवादिस्स। आयतनधातुपुच्छासु पि अनागत-पञ्हेसु पि पच्चुप्पन्नेन सद्धिं संसन्दित्वा अनुलोमपटिलोमतो आगत-पञ्हेसु पि "अतीतं रूपं" ति आदिपञ्हेसु[1] पि[1] इमिनावुपायेन अत्थो वेदितब्बो।

२. सुत्तसाधनवण्णना

२६८. सुत्तसाधने[2] पन **न वत्तब्बं** ति (क० व० १४२) पुच्छा सकवादिस्स। तत्थ **नत्थि चेते** ति नत्थि च एते धम्मा ति अत्थो। खन्धादिभावे सति नत्थितं अनिच्छन्तस्स **आमन्ता** ति पटिञ्ञा परवादिस्स, अथ नेसं नत्थिभावसाधनत्थं सुत्ताहरणं सकवादिस्स। दुतियपुच्छा पि परवादिस्स, पटिञ्ञा सकवादिस्स, सुत्ताहरणं परवादिस्स। तं[3] पन नेसं खन्धादिभावमेव साधेति, न अत्थिभावं ति आहटं पि अनाहटसदिसमेवा ति।

अतीतं खन्धातिआदिकथावण्णना निट्ठिता

१-१. आदिपञ्हे पि स्या.। २. सुत्तसोधने सी.।
३. न रो।

७. एकच्चं अत्थी ति कथा

१. अतीतादि एकच्चकथावण्णना

२६६. इदानि **एकच्चं अत्थी** ति (क० व० १४३) कथा होति । B. 157
तत्थ ये "एकच्चं अतीतं अत्थी" ति मञ्ञन्ति, सेय्यथापि कस्सपिका;
तेसं लद्धिभिन्दनत्थं **अतीतं अत्थी** ति पुच्छा सकवादिस्स, **एकच्चं अत्थी**
ति विस्सज्जनं परवादिस्स । अयञ्हि अधिप्पायो––अविपक्कविपाकं
अत्थि, विपक्कविपाकं[1] नत्थी ति । एकच्चं निरुद्धं ति अनुयोगो
सकवादिस्स । तस्सत्थो––यदि ते अतीतं एकच्चं अत्थि एकच्चं नत्थि,
एवं सन्ते एकच्चं अतीतं निरुद्धं, एकच्चं अतीतं अनिरुद्धं, तथेव R. 51
ठितं ति आपज्जति । **विगतं** ति आदीसु पि एसेव नयो ।

अविपक्कविपाकधम्मा एकच्चे ति इदं यस्मा येसं[2] सो अविपक्कविपाकानं अत्थितं इच्छति, ते पि अतीतायेव[3] । तस्मा यथा ते अतीतं एकच्चं अत्थि, किं[4] तथा अविपक्कविपाका पि धम्मा एकच्चे अत्थी एकच्चे नत्थी ति चोदेतुं वुत्तं । **विपक्कविपाका** ति इदं येसं सो नत्थितं इच्छति, तेसं वसेन चोदेतुं वुत्तं । **अविपाका** ति इदं अब्याकतानं वसेन चोदेतुं वुत्तं । इति इमेसं तिण्णं रासीनं वसेन सब्बेसु अनुलोमपटिलोमेसु पटिञ्ञा च पटिक्खेपो च वेदितब्बा[5] । अतीता एकदेसं विपक्कविपाका, एकदेसं अविपक्कविपाका ति विप्पकतविपाका[6] वुच्चन्ति । येन हि कम्मेन पटिसन्धि निब्बत्तिता, भवङ्गं पि चुति[7] पि तस्सेव विपाको । तस्मा पटिसन्धितो याव चुति, ताव तं विप्पकतविपाकं नाम होति । तथारूपे धम्मे सन्धायेतं वुत्तं ।

---

१. विपक्कविपाका सी., स्या. ।
२. स्या., रो. पोत्थकेसु नत्थि ।
३. ० धम्मा स्या. ।
४. रो. पोत्थके नत्थि ।
५ वेदितब्बो रो. ।
६. विप्पक्कविपाका रो. ।
७. चुतिं रो. ।

विपच्चिस्सन्ती ति कत्वा ते अत्थी ति पुच्छा सकवादिस्स । यथा धम्मधरस्स पुग्गलस्स निद्दायन्तस्सा पि बहुपवत्तिनो धम्मा अत्थी ति वुच्चन्ति, एवं लोकवोहारवसेन अत्थितं सन्धाय पटिञ्ञा परवादिस्स । **विपच्चिस्सन्ती ति कत्वा पच्चुप्पन्ना** ति दुतियपञ्हे "कम्मानं अविनाससङ्खातो[1] कम्मूपचयो[2] नामेको अत्थी" ति लद्धियं[3] ठत्वा[4] पटिञ्ञा परवादिस्स ।

२. अनागतादि एकच्चकथावण्णना

B. 158 ३००. **अनागतं अत्थी** ति (क० व० १४५) आदीसु पि **एकच्चं अत्थी** ति उप्पादिनो धम्मे सन्धाय वदति । सेसं सब्बत्थ हेट्ठा वुत्तनयत्ता उत्तानत्थमेवा ति ।

एकच्चं अत्थी ति कथावण्णना निट्ठिता

---

१. अविप्पनाससंखातो रो. ।
२. कम्मप्पच्चयो स्या; कम्मपक्चयो रो. ।
३. लद्धिया रो. ।
४. ठपित्वा रो. ।

८. सतिपट्ठानकथावण्णना

२०१. इदानि सतिपट्ठानकथा होति। "तत्थ – चतुन्नं भिक्खवे, R. 52 सतिपट्ठानानं समुदयं च अत्थङ्गमं च देसेस्सामी" ति (सं०नि० ४.१५६) सतिपट्ठानसंयुत्ते वुत्तनयेनेव येसं कायादयो सतिया आरम्मणधम्मे गहेत्वा "सब्बे धम्मा सतिपट्ठाना" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं। अन्धका नाम पुब्बसेलिया, अपरसेलिया, राजगिरिया, सिद्धत्थिका ति इमे पच्छा उप्पन्ननिकाया। तेसं लद्धिविवेचनत्थं पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा परवादिस्स। तत्थ यस्मा "पतिट्ठाति एतेसू[1] ति **पट्ठाना**। का पतिट्ठाति? सति। सतिया पट्ठाना **सतिपट्ठाना**" ति (क० व० १४७) इमिना अत्थेन सतिगोचरा पि सतिपट्ठाना। "पतिट्ठहन्ती ति **पट्ठाना**। का पतिट्ठहन्ति? सतियो। सतियोव पट्ठाना सतिपट्ठाना" ति इमिना अत्थेन सतियोव सतिपट्ठाना। तस्मा द्वे पि वादा परियायेन युज्जन्ति। ये पन[2] तं[2] परियायं पहाय एकन्तेनेव "सब्बे धम्मा सतिपट्ठाना" ति वदन्ति, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, आरम्मणवसेन पटिञ्ञा परवादिस्स। **सब्बे धम्मा सती** ति अनुयुत्तस्स पन सब्बेसं सतिसभावाभावतो पटिक्खेपो तस्सेव। तत्थ **खयगामी** ति आदीनि मग्गविसेसनानि। एकायनमग्गो हि किलेसानं खयभूतं निब्बानं गच्छती ति **खयगामी**। चत्तारि सच्चानि बुज्झन्तो गच्छती ति **बोधगामी**। वट्टं अपचिनन्तो गच्छती ति **अपचयगामी**। एवमेतेहि पदेहि "किं ते सब्बा धम्मा एवरूपो ते एकायनो मग्गो होती" ति पुच्छति। **अनासवा असंयोजनिया** ति आदीनि पि लोकुत्तरभावं पुच्छनत्थाय वुत्तानि। **बुद्धानुस्सती** ति आदीनि पभेदपुच्छावसेन वुत्तानि।

चक्खायतनं सतिपट्ठानं ति आदि सब्बधम्मानं पभेदपुच्छावसेन B. 159 वुत्तं। तत्था पि सतिवसेन पटिक्खेपो, आरम्मणवसेन पटिञ्ञा ति। एवं सब्बपञ्हेसु अत्थो वेदितब्बो। सुत्तसाधना उत्तानत्थायेवा ति।

सतिपट्ठानकथावण्णना निट्ठिता

---

१. तेसू ति रो.। २-२. पनेतं रो.।

६. हेवत्थिकथावण्णना

R. 53 ३०४. इदानि हेवत्थिकथा नाम होति। तत्थ येसं "सब्बे पि अतीतादिभेदा धम्मा रूपादिवसेन अत्थि,[1] अतीतं अनागतपच्चुप्पन्नवसेन, अनागतपच्चुप्पन्नानि वा अतीतादिवसेन नत्थि; तस्मा सब्बमेविदं एवं अत्थि एवं नत्थी" ति[2] लद्धि, सेय्यथापि एतरहि वुत्तप्पभेदानं अन्धकानं; ते सन्धाय **अतीतं अत्थी** ति (क० व० १५०) पुच्छा सकवादिस्स। **हेवत्थि हेव नत्थी** ति विस्सज्जनं परवादिस्स। तत्थ **हेवा** ति एवं। अथ नं सकवादी "यदि अतीतोव एवं[3] अत्थि,[3] एवं नत्थी ति लद्धि, एवं सन्ते सो येव अत्थि, सो येव नत्थि नामा" ति पुच्छन्तो **सेवत्थि, सेव नत्थी** ति आह। इतरो तेनेव सभावेन अत्थितं, तेनेव नत्थितं सन्धाय पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो सकभावेनेव[4] अत्थितं, परभावेनेव[5] नत्थितं सन्धाय पटिजानाति। ततो परं **अत्थट्ठो नत्थट्ठो** ति अत्थिसभावो नत्थिसभावो नाम होती ति पुच्छति। इमिनावुपायेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो। परियोसाने पन **"तेन हि अतीतं हेवत्थि, हेव नत्थी"** ति च "तेन हि रूपं हेवत्थि, हेव नत्थी" ति चा ति आदीनि वत्वा किञ्चा पि परवादिना लद्धि पतिट्ठापिता, अयोनिसो पतिट्ठापितत्ता पनेसा अप्पतिट्ठापिता येवा ति।

निट्ठिता हेवत्थिकथावण्णना

महावग्गो समत्तो।

---

१. अत्थी ति दो.। २. ० येसं रो.। ३-३. रो. पोत्थके नत्थि। ४. सकभावेन रो.। ५. परभावेन रो.।

२. दुतियो वग्गो

१. परूपाहारवण्णना

१. इदानि परूपाहारकथा नाम होति। तत्थ ये अरहत्तं पटि- B 160, R 54
जानन्तानं अप्पत्ते पत्तसञ्ञीनं अधिमानिकानं कुहकानं वा अरहत्तं पटिजानन्तानं सुक्कविस्सट्ठिं[1] दिस्वा "मारकायिका देवता अरहतो असुचिं उपसंहरती" ति मञ्ञन्ति; सेय्यथापि एतरहि पुब्बसेलिया च अपरसेलिया च; ते सन्धाय **अत्थि अरहतो** ति (क० व० १५४) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। इदानि यस्मा सुक्कविस्सट्ठि नाम रागसमुट्ठाना होति, तस्मा **अत्थि अरहतो रागो** ति अनुयोगो आरद्धो। सो सब्बो पि उत्तानत्थोयेव।

२. मारकायिका देवता अत्तनो ति आदिपञ्हे यस्मा तासं देवतानं सुक्कविस्सट्ठि नाम नत्थि, अञ्ञेसं पि सुक्कं गहेत्वा[2] न[2] उपसंहरन्ति, अरहतो पन[3] सुक्कमेव नत्थि, तस्मा **न हेवं** ति पटिक्खिपति।

नेव अत्तनो ति पञ्हे पन निम्मिनित्वा उपसंहरन्ती ति लद्धिया पटिजानाति। लोमकूपेही ति पञ्हे सप्पितेलानं विय लोमकूपेहि[4] उपसंहरणाभावं दिस्वा पटिक्खिपति।

हन्द ही ति वचसायत्थे[5] निपातो। "अरहा नु खो अहं, नो" ति एवं विमतिं गाहयिस्सामा ति एवं वचसायं[6] कत्वा उपसंहरन्ती ति अत्थो। **अत्थि अरहतो विमती** ति पुट्ठो अट्ठवत्थुकं विचिकिच्छं सन्धाय पटिक्खिपति, दुतियं पुट्ठो इत्थिपुरिसानं नामगोत्तादीसु सन्निट्ठानाभावं सन्धाय पटिजानाति।

३. **अत्थि तस्स आसयो** ति (क० व० १५७) तस्स सुक्कस्स उच्चारपस्सावानं[7] विय पतिट्ठानोकासो अत्थी ति पुच्छति।

---

१. असुचि ० स्या.। २-२. गहेत्वान रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि। ४. लोमकूपे रो.।
५. व्यवसायत्थे सी., स्या.; ववस्सग्गत्थे रो.। ६. व्यवसायं सी., स्या.; ववसायं रो.।
७. उच्चारपस्सावट्ठानं रो.।

६. **सधम्मकुसलस्सा** ति अत्तनो अरहत्तधम्ममत्तेयेव कुसलस्स। पञ्ञाविमुत्तं सन्धायेवं वदति। **परधम्मकुसलस्सा** ति (क० व० १५६) सधम्मतो[1] परस्मिं अट्ठसमापत्तिधम्मे पि कुसलस्स। उभतोभागविमुत्तं
B. 161, R. 55 सन्धायेवं वदति। सेसमेत्थ पाळिअनुसारेनेव वेदितब्बं ति।

परूपाहारकथावण्णना निट्ठिता

२-३-४. अञ्ञाणादिकथावण्णना

८-१९. इदानि अञ्ञाणं, कङ्खा, परवितरणा ति तिस्सो[2] कथा नाम होन्ति। तत्थ येसं "अरहतो इत्थिपुरिसादीनं नामगोत्तादीसु ञाणप्पवत्तिया[3] अभावेन अत्थि अञ्ञाणं, तत्थेव सन्निट्ठानाभावेन[4] अत्थि कङ्खा। यस्मा च नेसं तानि वत्थूनि परे वितरन्ति पकासेन्ति आचिक्खन्ति, तस्मा नेसं अत्थि परवितरणा" ति इमा लद्धियो, सेय्यथापि एतरहि पुब्बसेलियादीनं; तेसं ता[5] लद्धियो[5] भिन्दितुं तीसु पि कथासु पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा च पटिक्खेपो च इतरस्स। तत्थ सब्बेसु पि पञ्हेसु चेव विस्सज्जनेसु च पाळिं अनुगन्त्वा व अत्थो वेदितब्बो ति।

अञ्ञाणादिकथावण्णना निट्ठिता

५. वचीभेदकथावण्णना

२०. इदानि वचीभेदकथा नाम[6] होति। तत्थ येसं "सोतापत्तिमग्गक्खणे पठमं झानं समापन्नस्स दुक्खं ति वाचा भिज्जती" ति लद्धि, सेय्येथापि एतरहि पुब्बसेलियादीनं; ते सन्धाय **समापन्नस्स अत्थि वचीभेदो** ति (क० व० १७९) पुच्छा सकवादिस्स,

१. धम्मतो रो.। २. ० व रो.।
३. ञाणुप्पत्तिया स्या.। ४. ० नेव रो.।
५-५. तं लद्धिं रो.। ६. रो. पोत्थके नत्थि।

लद्धियं ठत्वा पटिञ्ञा परवादिस्स। पुन **सब्बत्था** ति तयो भवे सन्धाय पुट्ठो अरूपं सन्धाय पटिक्खिपति। **सब्बदा** ति कालवसेन पुट्ठो पठममग्गक्खणे पठमज्झानिकसमापत्तितो[१] अञ्ञं सब्बं समापत्तिकालं सन्धाय पटिक्खिपति। **सब्बेसं समापन्नानं** ति पुट्ठो[२] लोकियसमापत्तियो समापन्ने सन्धाय पटिक्खिपति। सब्बसमापत्तीसू ति पुट्ठो दुतियज्झानादिकं लोकुत्तरं सब्बं च लोकियसमापत्तिं सन्धाय पटिक्खिपति।

कायभेदो ति अभिक्कमादिवसेन[३] पवत्तकायविञ्ञत्ति। इदं B. 162, R· 56
"यानि चित्तानि वचीविञ्ञत्तिं समुट्ठापेन्ति, तानेव कायविञ्ञत्तिं। एवं सन्ते कस्मा कायभेदो पि न होती" ति चोदनत्थं पुच्छति। इतरो लद्धिवसेन पटिक्खिपति चेव पटिजानाति च। इदानि यदि सो मग्गक्खणे "दुक्खं" ति वाचं भासति, "समुदयो" ति आदिकं पि भासेय्य। यदि वा तं न भासति, इतरं पि न भासेय्या ति चोदनत्थं **दुक्खं ति जानन्तो** ति आदयो पञ्हा वुत्ता। इतरो पन अत्तनो लद्धिवसेनेव पटिजानाति चेव पटिक्खिपति च। लोकुत्तरं पठमज्झानं समापन्नो दुक्खदुक्खं ति विपस्सती ति हिस्स लद्धि।

२२. **ञाणं** ति (क० व० १८१) लोकुत्तरं चतुसच्चञाणं। **सोतं** ति सोतविञ्ञाणं अधिप्पेतं, येन तं सद्दं सुणाति। द्विन्नं फस्सानं ति सोतसम्फस्समनोसम्फस्सानं।

२३. **नो वत रे वत्तब्बे** ति यदि अविसेसेन यंकिञ्चि समापन्नस्स नत्थि वचीभेदो, न अविसेसेन वत्तब्बं[४] "समापन्नस्स अत्थि वचीभेदो" ति। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव सद्धिं सुत्तसाधनाय। यं पनेतेन[५] "सिखिस्स आनन्द, भगवतो" ति परियोसाने सुत्तं आभतं, तत्थ येन समापत्तिचित्तेन सो[६] वचीभेदो समुट्ठितो, कायभेदो पि तेन समुट्ठातियेव,[७] न च[७] तं लोकुत्तरं पठमज्झानचित्तं, तस्मा असाधकं ति।

वचीभेदकथावण्णना निट्ठिता

---

१. पठमज्झानसमापत्तितो रो.। २. रो. पोत्थके नत्थि।
३. पटिक्कमवसेन रो.। ४. व वत्तब्बं रो.।
५. पनेतं स्या.। ६. यो रो.।
७-७. येव रो.।

६. दुक्खाहारकथावण्णना

२८. इदानि दुक्खाहारकथा नाम होति । तत्थ "दुक्खं दुक्खं[1] ति वाचं भासन्तो दुक्खे ञाणं आहरति, तं दुक्खाहारो नाम वुच्चति । तं च पनेतं मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय **दुक्खाहारो** ति (क० व० १८६) पुच्छा R. 57 सकवादिस्स, पटिञ्ञा परवादिस्स । **ये केची** ति पठमपञ्हे अवि- B. 163 पस्सके सन्धाय पटिक्खिपति, दुतियपञ्हे विपस्सके सन्धाय पटिजानाति, तं पनस्स लद्धिमत्तमेव । तस्मा "सब्बे ते" ति वादस्स भिन्दनत्थं **बालपुथुज्जना** ति आदिमाह । तं उत्तानत्थमेवा ति ।

दुक्खाहारकथावण्णना निट्ठिता

७. चित्तट्ठितिकथावण्णना

२९. इदानि चित्तट्ठितिकथा नाम होति । तत्थ येसं समापत्ति-चित्तं चेव भवङ्गचित्तं च अनुप्पबन्धेन पवत्तमानं दिस्वा "एकमेव चित्तं चिरं तिट्ठती" ति लद्धि सेय्यथापि एतरहि हेट्ठा वुत्तप्पभेदानं अन्धकानं, तं लद्धिविसोधनत्थं **एकं, चित्तं दिवसं[2] तिट्ठती** ति (क०व०१८७) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा परवादिस्स । **उपड्ढदिवसो उप्पादक्खणो** ति एत्थ ठितिक्खणं अनामसित्वा "अनिच्चा वत सङ्खारा, उप्पादवयधम्मिनो" ति (सं० नि० १.१५८) देसनानयेन[3] उप्पादवयवसेनेव पुच्छा कता ।

ते धम्मा चित्तेन लहुपरिवत्ता ति पुट्ठो चित्ततो लहुतर-परिवत्तिनो धम्मे अपस्सन्तो पटिक्खिपति । दुतियं पुट्ठो यस्स चित्तस्स दीघट्ठितिं[4] इच्छति, तं सन्धाय पटिजानाति । **यावतायुकं तिट्ठती** ति पञ्हे "चुल्लासीतिसहस्सानि, कप्पा तिट्ठन्ति ये मरू" ति (म०नि०३६) आदि वचनवसेन आरुप्पतो अञ्ञत्र पटिक्खिपति, आरुप्पे

१. रो. पोत्थके नत्थि । २. ० पि स्या., रो. । ३. वेसनावसाने रो. । ४. दीघप्पवत्तिं रो. ।

पटिजानाति । **मुहुत्तं मुहुत्तं** उप्पज्जती ति पञ्हे परवादिस्स "उप्पादवयधम्मिनो" ति आदि सुत्तविरोधभयेन पटिजानाति । ठितिं पनस्स लद्धिवसेन इच्छति । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

चित्तट्ठितिकथावण्णना निट्ठिता

८. कुक्कुळकथावण्णना

३२. इदानि कुक्कुळकथा नाम होति । तत्थ येसं "सब्बं भिक्खवे, आदित्तं सब्बे सङ्खारा दुक्खा" ति (खु० नि० ४३) आदीनि सुत्तानि अयोनिसो गहेत्वा "निप्परियायेनेव सब्बे सङ्खारा कुक्कुळा B. 164
वीतच्चितङ्गारसमिस्सा छारिकनिरयसदिसा" ति लद्धि, सेय्यथापि R 58
एतरहि गोकुलिकानं; तेसं नानप्पकारसुखसन्दस्सनेन तं लद्धिं विवेचेतुं पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा परवादिस्स । तत्थ **अनोधिं कत्वा** ति (क० व० १६१) ओधिं मरियादं कोट्ठासं अकरित्वा, अविसेसेन सब्बे येवा ति अत्थो । सेसं सब्बं पाळिनयेनेव वेदितब्बं सद्धिं सुत्तसाधनाया ति ।

कुक्कुळकथावण्णना निट्ठिता

९. अनुपुब्बाभिसमयकथावण्णना

३३. इदानि अनुपुब्बाभिसमयकथा नाम होति ।
तत्थ येसं—
"अनुपुब्बेन मेधावी, थोकं थोकं खणे खणे ।
कम्मारो रजतस्सेव, निद्धमे मलमत्तनो" ति (खु० नि० १.३६)—

आदीनि सुत्तानि अयोनिसो गहेत्वा "सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्नो एकच्चे किलेसे दुक्खदस्सनेन पजहति, एकच्चे समुदयनिरोधमग्गदस्सनेन, तथा सेसा पी ति एवं सोळसहि कोट्ठासेहि अनुपुब्बेन किलेसप्पहानं कत्वा अरहत्तपटिलाभो होती" ति एवरूपा नानाभिसमयलद्धि उप्पन्ना, सेय्यथापि एतरहि अन्धकसब्बत्थिकसम्मितियभद्रयानिकानं; तेसं लद्धिविवेचनत्थं **अनुपुब्बाभिसमयो** ति (क०व०१६४)

पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **अनुपुब्बेन सोतापत्तिमग्गं** ति पुट्ठो पन एकस्स मग्गस्स बहुभावापत्तिभयेन पटिक्खिपति । दुतियं पुट्ठो दुक्खदस्सनादिवसेन पटिजानाति । तानि वा चत्तारि पि ञाणानि एको सोतापत्तिमग्गोयेवा ति पटिजानाति, फलं पन एकमेव इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति । सकदागामिमग्गादीसु पि एसेव नयो ।

३८. **मग्गे दिट्ठे फले ठितो** ति (क० व० १९८) पञ्हे यस्मा दुक्खदस्सनादीहि दस्सनं अपरिनिट्ठितं, मग्गदस्सनेन परिनिट्ठितं नाम होति, तदा सो[1] फले[1] ठितो ति सङ्खं गच्छति, तस्मा पटिजानाति ।

B. 165 ३९. **दुक्खे दिट्ठे चत्तारि सच्चानी** ति (क० व० १९९) पुच्छा
R. 59 परवादिस्स, एकाभिसमयवसेन पटिञ्ञा सकवादिस्स[2] । पुन **दुक्खसच्चं चत्तारि सच्चानी** ति अनुयोगे चतुन्नं पि नानासभावत्ता पटिक्खेपो तस्सेव[3] ।

रूपक्खन्धो अनिच्चतो दिट्ठे ति पुच्छा सकवादिस्स, समुद्दतो एकबिन्दुस्स रसे पटिविद्धे सेसउदकस्स पटिवेधो विय एकधम्मे अनिच्चादितो पटिविद्धे सब्बे पि पटिविद्धा होन्ती ति लद्धिया पटिञ्ञा परवादिस्स ।

चतूहि ञाणेही ति दुक्खे ञाणादीहि । **अट्ठहि ञाणेही** ति सावकानं साधारणेहि सच्चञाणेहि चेव पटिसम्भिदाञाणेहि च । **द्वादसहि ञाणेही** ति द्वादसङ्गपटिच्चसमुप्पादञाणेहि । **चतुचत्तारीसाय ञाणेही** ति " जरामरणे ञाणं, जरामरणसमुदये ञाणं" ति एवं निदानवग्गे वुत्तञाणेहि । **सत्तसत्ततिया ञाणेही** ति "जरामरणं भिक्खवे, अनिच्चं सङ्खतं पटिच्चसमुप्पन्नं खयधम्मं वयधम्मं विरागधम्मं निरोधधम्मं" ति (सं० नि० २.२४) एवं तत्थेव वुत्तञाणेहि । सेसमेत्थ पाळिनयेनेव वेदितब्बं सद्धि सुत्तसाधनेना ति ।

अनुपुब्बाभिसमयकथावण्णना निट्ठिता

१-१. सोतापत्तिफले रो. । २. परवादिस्स रो. ।
३. ० च रो. ।

१०. वोहारकथावण्णना

४१. इदानि वोहारकथा नाम होति। तत्थ बुद्धो भगवा लोकुत्तरेन वोहारेन वोहरती ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, लद्धिवसेन पटिञ्ञा परवादिस्स। **लोकुत्तरे सोते** ति आदीनि तस्स अयुत्तवादीभाव-दीपनत्थं वुत्तानि। अयञ्हेत्थ अधिप्पायो—"सद्दायतनमेव ते लोकुत्तरं, उदाहु सोतादीनि पी" ति।

हञ्चि बुद्धस्स भगवतो वोहारो लोकिये सोते पटिहञ्ञती ति (क० व० २०१) एत्थ यदि सो[1] लोकुत्तरे पटिहञ्ञेय्य। लोकुत्तरो सिया ति एवमत्थो न गहेतब्बो। लोकिये पटिहञ्ञमानस्स पन लोकुत्तरता नाम नत्थी ति अयमेत्थाधिप्पायो। **लोकियेन विञ्ञाणेना** ति एत्था पि लोकियेनेवा ति अत्थो। इतरथा अनेकन्तता सिया। B. 166, R. 60 लोकुत्तरञ्हि लोकियेन पि ञाणेन ञायती। एवं सब्बं यथानुरूपतो वेदितब्बं। **सब्बे ते मग्गं भावेन्ती** ति पञ्हेसु ये मग्गं नप्पटिलभन्ति, ते सन्धाय पटिक्खिपति। ये पटिलभन्ति, ते सन्धाय पटिजानाति।

४५. सोवण्णमयाया ति सुवण्णमयाय। इदं परवादिस्स उदाहरणं। **एळण्डियाया** ति एळण्डमयाय। इदं सकवादिस्स उदाहरणं। लोकियं वोहरन्तस्स लोकियो ति अयं पि एका लद्धि। सा एतरहि एकच्चानं अन्धकानं लद्धि[2]। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

वोहारकथावण्णना निट्ठिता

११. निरोधकथावण्णना

४७. इदानि निरोधकथा नाम होति। तत्थ येसं अप्पटिसङ्खा-निरोधं च पटिसङ्खानिरोधं च द्वे पि एकतो कत्वा निरोधसच्चं ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि महिसासकानं चेव अन्धकानं च; ते सन्धाय

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. अत्थि रो.।

द्वे निरोधा ति (क० व० २०५) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा परवादिस्स। **द्वे दुक्खनिरोधा** ति पञ्हेसु यस्मा द्वे दुक्खसच्चानि न इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति। यस्मा द्वीहाकारेहि दुक्खं निरुज्झती ति इच्छति, तस्मा पटिजानाति। **द्वे निरोधसच्चानी** ति पञ्हेसु द्विन्नं दुक्खसच्चानं निरोधवसेन अनिच्छन्तो पटिक्खिपति। द्वीहाकारेहि दुक्खस्स निरुज्झनतो पटिजानाति। **द्वे ताणानी** ति आदीसु पि एसेव नयो।

अत्थि द्विन्नं निब्बानानं ति आदीसु पुच्छासु उच्चनीचतादीनि अपस्सन्तो पटिक्खिपति।

अप्पटिसङ्खानिरुद्धे ति ये पटिसङ्खाय लोकुत्तरेन ञाणेन अनिरुद्धा सुद्धपकतिकत्ता वा उद्देसपरिपुच्छादीनं वा वसेन न[1] समुदाचरणतो निरुद्धा ति वुच्चन्ति, ते सङ्खारे। **पटिसङ्खा निरोधेन्ती** ति। लोकुत्तर-
R. 61 ञाणेन निरोधेन्ति अनुप्पत्तिभावं गमेन्ति। **ननु अप्पटिसङ्खानिरुद्धा**
B. 167 **सङ्खारा** ति पुच्छा परवादिस्स[2]। तत्थ भग्गानं पुन अभञ्जनतो अप्पटिसङ्खानिरुद्धानं वा अरियमग्गे उप्पन्ने तथा निरुज्झनतो[3] व सकवादी अच्चन्तभग्गतं पटिजानाति। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

निरोधकथावण्णना निट्ठिता
दुतियो वग्गो समत्तो

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. सकवादिस्स सी. स्या. रो.।
३. निरुद्धतो रो।

३. ततियो वग्गो

१. बलकथावण्णना

१. इदानि बलकथा नाम होति। तत्थ येसं **अनुरुद्धसंयुत्ते** "इमेसं च R. 62 पनाहं, आवुसो, चतुन्नं सतिपट्ठानानं भावितत्ता **बहुलीकतत्ता** ठानं च ठानतो अट्ठानं च अट्ठानतो यथाभूतं पजानामी" ति (सं०नि०४.२६०) आदीनि दससुत्तानि अयोनिसो गहेत्वा "तथागतबलं सावकसाधारणं" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, लद्धियं ठत्वा पटिञ्ञा परवादिस्स। तथागतबलं च नामेतं सावकेहि साधारणं पि अत्थि असाधारणं पि साधारणासाधारणं पि।

तत्थ आसवानं खये ञाणं साधारणं। इन्द्रियपरोपरियत्तिञाणं असाधारणं। सेसं साधारणं च असाधारणं च।

ठानाट्ठानादीनि हि सावका पदेसेन जानन्ति, तथागता निप्पदेसेन। इति तानि उद्देसतो साधारणानि, न[1] निद्देसतो। अयं पन अविसेसेन सब्बं पि साधारणं ति आह। तमेनं ततो विवेचेतुं **तथागतबलं सावकबलं** ति (क० व० २०७) पुन अनुयोगो आरद्धो।

तत्थ पठमपञ्हे निद्देसतो सब्बाकारविसयतं सन्धाय पटिक्खिपति। दुतियपञ्हे उद्देसतो[2] ठानाट्ठानमत्तादिजाननवसेन पटिजानाति। **तञ्ञेवा** ति आदि पञ्हेसु सब्बाकारेन निन्नानाकरणताय[3] अभावेन पटिक्खिपति। **पुब्बयोगो** च **पुब्बचरिया** च अत्थतो एकं, तथा **धम्मक्खानं** च **धम्मदेसना** च।

इन्द्रियपरोपरियत्तिपञ्हे एकदेसेन साधारणतं सन्धाय सावकविसये पटिजानाति।

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. निद्देसतो रो.।
३. नानाकरणत्ताय स्या.।

B. 168 २. इदानि यस्मा उद्देसतो ठानाट्ठानादीनि सावको जानाति,
R. 63 तस्मा सावकस्स तथा जाननं पकासेत्वा तेन जाननमत्तसामञ्ञेन तेसं सावकसाधारणत्तं[1] पतिट्ठापेतुं **सावको ठानाट्ठानं जानाती** ति (क०व०२०८) आदयो परवादिपञ्हा होन्ति । तत्थ इन्द्रियपरोपरियत्ति-ञाणं छन्नं असाधारणञाणानं अञ्ञतरं ति न गहितं । **आसवक्खयेन वा आसवक्खयं** ति यं तथागतस्स आसवक्खयेन सद्धिं सावकस्स आसवक्खयं पटिच्च वत्तब्बं सिया नानाकरणं, तं[2] नत्थि । **विमुत्तिया वा[3] विमुत्ति** ति पदे पि एसेव नयो । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव ।

३. इदानि यं सकवादिना "आसवानं खये ञाणं साधारणं" ति अनुञ्ञातं, तेन सद्धिं संसन्दित्वा सेसानं पि साधारणभावं[4] पुच्छितुं पुन **आसवानं खये** ति (क०व०२०९) आदयो परवादिपञ्हा व होन्ति । तेसं विस्सज्जने सकवादिना आसवक्खये विसेसाभावेन तं ञाणं साधारणं ति अनुञ्ञातं । इतरेसु पि विसेसाभावेन साधारणता पटिक्खित्ता । पुन ठानाट्ठानादीनं आसवक्खयेनेव सद्धिं संसन्दित्वा असाधारणपुच्छा परवादिस्सेव । तत्थ आसवक्खयञाणे पटिक्खेपो, सेसेसु[5] च पटिञ्ञा सकवादिस्स । ततो इन्द्रियपरोपरियत्तेन सद्धिं संसन्दित्वा असाधारणपुच्छा परवादिस्स । सा सङ्खिपित्वा दस्सिता । तथा पि इन्द्रियपरोपरियत्ते पटिञ्ञा, सेसेसु च[6] पटिक्खेपो सकवादिस्स । ततो ठानाट्ठानादीहि सद्धिं संसन्दित्वा इन्द्रियपरोपरियत्तस्स साधारणपुच्छा परवादिस्स । सा पि सङ्खिपित्वा व[7] दस्सिता । तत्थ इन्द्रियपरोपरियत्ते पटिक्खेपो । सेसेसु च[8] पटिञ्ञा सकवादिस्सा ति ।

बलकथावण्णना निट्ठिता

---

१. साधारणत्थं रो. ।
२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. च रो. ।
४. असाधारणभावं रो. ।
५. ० पि स्या., रो. ।
६. रो. पोत्थके नत्थि ।
७. रो. पोत्थके नत्थि ।
८. रो. पोत्थके नत्थि ।

२. अरियं-ति-कथावण्णना

४. इदानि अरियं-ति-कथा नाम होति। तत्थ येसं "न केवलं आसवक्खयञाणमेव अरियं, अथ खो पुरिमानि पि नव बलानि अरियानि" चेव लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते सन्धाय **अरियं** ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। पुन यदि[1] तं[1] अरियं, मग्गादीसु तेन अञ्ञतरेन भवितब्बं ति मग्गादिवसेन पुच्छा सकवादिस्स, पटिक्खेपो इतरस्स। B. 169

पुन सुञ्ञतारम्मणादिवसेन पुच्छा सकवादिस्स। तत्थ द्वे सुञ्ञता– R. 64
सत्तसुञ्ञता च सङ्खारसुञ्ञता च। सत्तसुञ्ञता नाम दिट्ठिया परिकप्पितेन[2] सत्तेन सुञ्ञा पञ्चक्खन्धा। सङ्खारसुञ्ञता नाम सब्बसङ्खारेहि सुञ्ञं विवित्तं निस्सटं निब्बानं। तत्थ परवादी निब्बानारम्मणतं सन्धाय पटिक्खिपति, सङ्खारारम्मणतं सन्धाय पटिजानाति। **मानसि करोती** ति पुट्ठो पि निब्बानमेव सन्धाय पटिक्खिपति, सङ्खारे सन्धाय पटिजानाति। ततो सकवादिना "ठनाट्ठानादिमनसिकारो[3] सङ्खारारम्मणो, सुञ्ञतमनसिकारो निब्बानारम्मणो" ति इमं नयं गहेत्वा "द्विन्नं फस्सानं द्विन्नं चित्तानं समोधानं होती" ति पुट्ठो लेसोकासं अलभन्तो पटिक्खिपति। अनिमित्तापणिहितेसु पि एसेव नयो।

सत्तनिमित्ताभावतो हि खन्धा अनिमित्ता। सङ्खारनिमित्ताभावतो निब्बानं। एकधम्मस्मिं पि आरोपेत्वा ठपेतब्बसङ्खातेन च पणिदहितब्बट्ठेन[4] पणिहितसङ्खं[5] गतेन सत्तपणिधिना[6] अप्पणिहिता खन्धा। तण्हापणिधिना तण्हाय वा आरम्मणभूतेन सब्बसङ्खारपणिधिना अप्पणिहितं निब्बानं। तस्मा इधा पि पटिक्खेपो च पटिञ्ञा च पुरिमनयेनेव वेदितब्बा।

१-१. यदिदं सी., स्या.।
२. परिकप्पितब्बेन स्या.।
३. ठावाट्ठानमनसिकारो रो.।
४. पणिहितब्बट्ठेन सी.।
५. पणिधीति-संखं रो.।
६. ० च सी., रो.।

ततो "यथा सतिपट्ठानादयो लोकुत्तरधम्मा अरिया चेव सुञ्ञतादि-आरम्मणा च, किं ते एवं ठानाट्ठानञाणं" ति अनुलोमपटिलोमपुच्छा होन्ति। तत्थ सब्बा पि पटिञ्ञा सब्बे च[1] पटिक्खेपा परवादिस्सेव। इमिनावुपायेन सेसञाणेसु पि पुच्छाविस्सज्जनं वेदितब्बं। पाळियं पन सेसानि सङ्खिपित्वा अवसाने चुतूपपातञाणमेव विभत्तं। ततो परं सकसमये पि "अरियं" ति सिद्धेन[2] आसवानं खयञाणेन सद्धिं संसन्दित्वा सेसञाणानं अनुलोमतो च पटिलोमतो च अरियभावपुच्छा
R. 65 होन्ति। ता सब्बा परवादिस्स, पटिञ्ञा पटिक्खेपो च सकवादिस्स। ते उत्तानत्थायेव। पाळियं पनेत्थ पठमनवमानेव[3] दस्सेत्वा सत्त ञाणानि सङ्खित्तानी ति।

अरियं-ति-कथावण्णना निट्ठिता

३. विमुत्तिकथावण्णना

B. 170 १०. इदानि विमुत्तिकथा नाम होति। तत्थ येसं "वीतराग-चित्तानं विमुत्तिपयोजनं नाम नत्थि। यथा पन मलिनं वत्थं धोवियमानं मला विमुच्चति, एवं सरागं चित्तं रागतो विमुच्चती" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते सन्धाय **सरागं** ति (क० व० २१५) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। ततो **रागसहगतं** ति आदिना नयेन पुट्ठो मग्गक्खणे चित्तं विमुच्चति नाम। तदा च एवरूपं चित्तं नत्थी ति पटिक्खिपति।

सफस्सं ति आदिना नयेन पुट्ठो पि[4] यथा फस्सो च चित्तं च उभो रागतो विमुच्चन्ति, एवं रागस्स विमुत्तिं अपस्समानो पटिक्खिपति। सदोसादीसु पि इमिनावुपायेन अत्थो वेदितब्बो।

विमुत्तिकथावण्णना निट्ठिता

---

१. पि रो.। २. सब्बेन रो.।
३. पठमनयेनेव स्या.। ४. व रो.।

४. विमुच्चमानकथावण्णना

१३. इदानि विमुच्चमानकथा नाम होति। तत्थ येसं "झानेन विक्खम्भनविमुत्तिया विमुत्तं,[1] मग्गक्खणे समुच्छेदविमुत्तिया विमुच्चमानं नाम होती" ति लद्धि, ते सन्धाय **विमुत्तं विमुच्चमानं** ति (क० व० २१८) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस।

पुन **एकदेसं** ति पुच्छा सकवादिस्स। तत्थ **एकदेसं** ति भावनपुंसकं। यथा[2] विमुत्तं, एकदेसेन वा एकदेसे वा अविमुत्तं होति[2] किं एवं एकदेसं विमुत्तं, एकदेसं अविमुत्तं ति पुच्छति। किं कारणा एवं पुच्छती ति? "विमुत्तं विमुच्चमानं" ति विप्पकतभावेन वुत्तत्ता। यथा हि करियमाना कटादयो विप्पकतत्ता एकदेसेन कता एकदेसेन अकता होन्ति, तथा इदं पि एकदेसं विमुत्तं एकदेसं अविमुत्तं ति आपज्जति। ततो परवादी कटादीनं विय चित्तस्स एकदेसभावा R. 66 पठमपञ्हे पटिक्खिपित्वा दुतिये विमुच्चमानस्स अपरिनिट्ठितविमुत्तिताय पटिजानाति। लोकियज्झानक्खणं वा सन्धाय पटिक्खिपति। न हि तं तदा समुच्छेदविमुत्तिया विमुच्चमानं। लोकुत्तरज्झानक्खणं सन्धाय पटिजानाति। तञ्हि तदा समुच्छेदविमुत्तिया विमुत्तेकदेसेन विमुच्चमानन्तिस्स लद्धि। ततो सकवादी "यदि ते एकमेव चित्तं B. 171 एकदेसं विमुत्तं एकदेसं अविमुत्तं, एवं सन्ते यो एकेनेव[3] चित्तेन सोतापन्नो होति, सो पि ते एकदेसं सोतापन्नो, एकदेसं न सोतापन्नो आपज्जती" ति चोदनत्थं **एकदेसं सोतापन्नो** ति आदिमाह। इतरो तं विधानं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। सेसवारेसु पि एसेव नयो।

उप्पादक्खणपञ्हे यदि एकमेव चित्तं विमुत्तं च विमुच्चमानं च, एकस्मिं खणे विमुत्तं एकस्मिं विमुच्चमानं आपज्जति। किं ते एवरूपं चित्तं ति अत्थो।

---

१. ० चित्तं रो.।

२-२. यथा विमुत्तं एकदेसं विमुत्तं एकदेसेन वा एकदेसे वा विमुत्तं होति रो.।

३. एकदेसेनेव सी.।

सुत्तसाधने पठमसुत्तं परवादिस्स। तत्रास्सायमधिप्पायो –– विमुच्चती ति विप्पकतनिद्देसो। तस्मा यं तस्स योगिनो एवं जानतो एवं पस्सतो एतेहि आसवेहि चित्तं विमुच्चति, तं विमुच्चमानं नाम होती ति। दुतियसुत्तं सकवादिस्स। तत्रास्सायमधिप्पायो – यदि ते विमुच्चती ति वचनतो विमुत्तं विमुच्चमानं, इध विमुच्चती ति वचनाभावतो विमुत्तमेव सिया, न विमुच्चमानं ति।

इदानि "यथा ते विप्पकतविमुत्तिताय विमुच्चमानं,[1] किं एवं विप्पकतरागादिताय रज्जमानादीनि पि अत्थी" ति चोदनत्थं पुन **अत्थि चित्तं** ति आदि आरद्धं। परवादिना पि तथारूपं चित्तं अपस्सन्तेन सब्बं पटिक्खित्तं। अथ नं सकवादी "द्वेयेव कोटियो, ततिया नत्थी" ति अनुबोधेन्तो **ननु रत्तञ्चेव अरत्तञ्चा** ति आदिमाह। तस्सत्थो –– ननु भद्रमुख, रागसम्पयुत्तं चित्तं रत्तं[2] विप्पयुत्तं अरत्तं ति द्वेव कोटियो, रज्जमानं नाम ततिया कोटि नत्थी ति? दुट्ठादीसु
R. 67 पि एसेव नयो। अथ नं आमन्ता[3] ति पटिजानित्वा ठितं। विमुत्तिपक्खे[4] पि द्वेयेव कोटियो दस्सेतुं **हञ्चि रत्तञ्चेवा** ति आदिमाह। तस्सत्थो – यदि एता द्वे कोटियो सम्पटिच्छसि, अविमुत्तं चेव विमुत्तं चा ति इमा पि सम्पटिच्छ[5]। किलेससम्पयुत्तञ्हि चित्तं अविमुत्तं, विप्पयुत्तं विमुत्तं। विमुच्चमानं नामा ति परमत्थतो ततिया कोटि नत्थी ति।

विमुच्चमानकथावण्णना निट्ठिता

५. अट्ठमककथावण्णना

B. 172 इदानि अट्ठमककथा नाम होति। तत्थ येसं अनुलोमगोत्रभुमग्गक्खणे किलेसानं समुदाचाराभावतो अट्ठमकस्स सोतापत्तिमग्गट्ठ-

---

१. ० ति रो.। २. ० चित्तं रो.।
३ आमा ति रो.। ४. ० चित्त स्या.।
५. सम्पटिच्छति रो.।

पुग्गलस्स द्वे परियुट्ठाना पहीना ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं चेव सम्मितियानं च; तेसं अञ्ञतरं सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, मग्गक्खणतो पट्ठाय दिट्ठिया अनुप्पत्तिं सन्धाय पटिञ्ञा इतरस्स। ततो यस्मा दिट्ठि नामेसा सोतापन्नस्सेव पहीना, न मग्गट्ठस्स, तस्मा **अट्ठमको पुग्गलो सोतापन्नो** ति अनुयोगो सकवादिस्स। विचिकिच्छा-पञ्हे पि एसेव नयो। अनुसयपञ्हे परियुट्ठानतो अञ्ञो अनुसयो ति तेसं लद्धि, तस्मा "न हेवं" ति पटिक्खित्तं।

सीलब्बतपरामासपञ्हे पि[1] सीलब्बतपरामासपरियुट्ठानं ति वोहारं न पस्सति, तस्मा पटिक्खिपति। परियुट्ठानमेवस्स[2] पहीनं ति लद्धि।

मग्गो भावितो ति पञ्हे तस्मिं खणे भावेति, न भावितो। तस्मा पटिक्खिपति। **अमग्गेना** ति आदि अनुयोगो पठममग्गेनेव पहीन-भावं[3] सन्धाय पटिक्खिपति। यदि हि अमग्गेन पहीयेथ, गोत्रभु-पुग्गलादीनं पि पहीयेथा ति आपज्जनतो। उप्पज्जिस्सती ति पुच्छा परवादिस्स, विस्सज्जनं सकवादिस्स। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

अट्ठमककथावण्णना निट्ठिता

६. अट्ठमकस्स इन्द्रियकथावण्णना

१८. इदानि अट्ठमकस्स इन्द्रियकथा नाम होति। तत्थ येसं "अट्ठमको[4] मग्गक्खणे इन्द्रियानि पटिलभति नाम, नो चस्स R. 68 पटिलद्धानि होन्ती" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते सन्धाय **नत्थि सद्धिन्द्रियं** ति (क० व० २२३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **नत्थि सद्धा** ति पुट्ठो पन सद्धिन्द्रियतो सद्धाय नानत्तं सल्लक्खेत्वा पटिक्खिपति। सेसेसु पि एसेव नयो।

१. स्या., रो. पोत्थकेसु नत्थि। २. परियुट्ठानमेव रो.।
३. पट्ठानभावं सी.। ४. ० पुग्गलो सी.।

यथा पन यस्स अत्थि मनो, तस्स मनिन्द्रियं पि अत्थि; एवं B. 173 यस्स सद्धादयो अत्थि, तस्स अत्थि[1] सद्धिन्द्रियादीनि पी ति दीपनत्थं **अत्थि मनो अत्थि मनिन्द्रियं** ति आदि आरद्धं। तं सब्बं उत्तानत्थमेव सद्धि सुत्तसाधनेना ति।

अट्ठमकस्स इन्द्रियकथावण्णना निट्ठिता

७. दिब्बचक्खुकथावण्णना

२०. इदानि दिब्बचक्खुकथा नाम होति। तत्थ येसं चतुत्थज्झानधम्मूपत्थद्धं मंसचक्खुमेव दिब्बचक्खु नाम होती ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय मंसचक्खुं ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स।

पुन "मंसचक्खु दिब्बचक्खु, दिब्बचक्खु मंसचक्खू" ति पुट्ठो तं मत्तमेव तं न होती ति पटिक्खिपति। **यादिसं** ति आदि पुच्छासु पि उभिन्नं एकसभावाभावेनेव पटिक्खिपति।

विसयो ति (क० व० २२७) आदीसु उभिन्नं पि रूपायतनमेव विसयो। मंसचक्खु[2] पन आपाथगतमेव[3] पस्सति। इतरं अनापाथगतं[4] तिरोपब्बतादिगतं पि। दिब्बचक्खुस्स च अतिसुखुमं पि रूपं गोचरो, न तादिसं इतरस्सा ति एवमेतेसं आनुभावगोचरा असदिसा।

उपादिण्णं हुत्वा अनुपादिण्णं होती ति पुट्ठो यस्मा मंसचक्खु उपादिण्णं, दिब्बचक्खु अनुपादिण्णं, न च मंसचक्खुमेव दिब्बचक्खू ति इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो यस्मा "मंसचक्खुस्स R. 69 उप्पादो, मग्गो दिब्बस्स चक्खुनो" ति वचनं निस्साय मंसचक्खुपच्चया दिब्बचक्खु उप्पज्जति, तं च रूपावचरिकानं चतुन्नं महाभूतानं पसादो ति इच्छति, तस्मा पटिजानाति। **कामावचरं हुत्वा** ति पुट्ठो पि

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. मसं चक्खुं रो.।
३. आपातगतमेव सी.। ४. अनापातगतं सी.।

यस्मा न मंसचक्खुमेव दिब्बचक्खू ति इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो रूपावचरज्झानपच्चयेन उप्पन्नत्ता रूपावचरं नाम जातं ति पटिजानाति।

रूपावचरं हुत्वा अरूपावचरं ति पुट्ठो पि ततो परं भावनाय अरूपावचरक्खणे रूपावचरचित्तस्स अभावा पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो अरूपावचरिकानं चतुन्नं महाभूतानं पसादो हुत्वा उप्पज्जती B. 174
ति लद्धिया पटिजानाति। अपरियापन्नभावं पनस्स न इच्छति, तस्मा पटिक्खिपतियेव।

दिब्बचक्खुं धम्मुपत्थद्धं ति (क० व० २२७) कामावचरधम्मेन उपत्थम्भितं हुत्वा। पुन **धम्मुपत्थद्धं** ति लोकुत्तरधम्मेन उपत्थद्धं। **द्वेव चक्खूनी** ति पुट्ठो किञ्चा पि दिब्बचक्खुनो धम्मुपत्थद्धस्स पञ्ञा-चक्खुभावं न इच्छति, पञ्ञाचक्खुस्स पन अत्थिताय पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो मंसचक्खु धम्मुपत्थद्धं दिब्बचक्खु होती ति लद्धिवसेन पटिजानाति। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

दिब्बचक्खुकथावण्णना निट्ठिता

८. दिब्बसोतकथावण्णना

२२. इदानि दिब्बसोतकथा नाम होति। तत्थ[1] **एकं येव सोतं** ति (क० व० २२९) पुट्ठो द्विन्नं अत्थिताय पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो यस्मा तदेव धम्मुपत्थद्धं दिब्बसोतं नाम होति, तस्मा पटिजानाति। सेसं हेट्ठा वुत्तनयमेवा ति।

९. यथाकम्मूपगतञाणकथावण्णना

२४. इदानि यथाकम्मूपगतञाणकथा[2] नाम होति। तत्थ येसं R. 70
"इति दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन ···पे०··· यथाकम्मूपगे सत्ते

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. यथाकम्मूपग ० रो.।

पजानाती" ति (दी० नि० १.७२) सुत्तं अयोनिसो गहेत्वा यथाकम्मूपगतञाणमेव दिब्बचक्खुं ति लद्धि, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। पुन **यथाकम्मूपगतं च मनसि करोती** ति पुट्ठो एकचित्तस्स आरम्मणद्वयाभावा पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो नानाचित्तवसेन पटिजानाति। पुन लेसोकासं अदत्वा **द्विन्नं फस्सानं** ति पुट्ठो पटिक्खिपति। इति यथा इमिना यथाकम्मूपगतपदेन, एवमेव **इमे**[1] **वत भोन्तो, सत्ता** ति आदि पदेहि पि सद्धिं योजनासु अत्थो वेदितब्बो।

B. 175 **आयस्मा सारिपुत्तो यथाकम्मूपगतं ञाणं जानाती** ति (क० व० २३१) इदं सकवादी यस्मा थेरो अप्पिच्छताय अभिञ्ञाञाणानि न वळञ्जेती ति एकच्चे न जानन्ति, तानि पनस्स नेव अत्थी ति मञ्ञन्ति, तस्मा तं "दिब्बचक्खुनो अलाभी थेरो" ति मञ्ञमानं पुच्छति। तेनेव कारणेन "अत्थायस्मतो सारिपुत्तस्स दिब्बचक्खू" ति परतो पुट्ठो पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो यंकिञ्चि सावकेन पत्तब्बं, सब्बं तं थेरेन अनुप्पत्तं[2] ति पटिजानाति। इदानिस्स विक्खेपं करोन्तो सकवादी **ननु आयस्मा सारिपुत्तो** ति आदिमाह। इमञ्हि गाथं थेरो वळञ्जनपणिधिया एव अभावेन आह, न[3] अभिञ्ञाञाणस्स अभावेन। परवादी पन अभावेनेवा ति[4] अत्थं सल्लक्खेति। तस्मा तस्स लद्धिया थेरस्स यथाकम्मूपगतञाणमेव अत्थि, नो दिब्बचक्खु। तेन वुत्तं "तेन हि न वत्तब्बं यथाकम्मूपगतञाणं दिब्बचक्खू" ति।

यथाकम्मूपगतञाणकथावण्णना निट्ठिता

१०. संवरकथावण्णना

R. 71 २६. इदानि संवरकथा नाम होति। तत्थ येसं तावतिंसे देवे उपादाय ततुत्तरि[5] देवेसु यस्मा ते पञ्च वेरानि न समाचरन्ति, तस्मा

१. इतो रो.। २. पत्त रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि। ४. चा ति रो.।
५. ततुत्तरिं रो.।

संवरो अत्थी ति लद्धि, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, वेरसमुदाचारं अपस्सतो पटिञ्ञा इतरस्स। ततो यस्मा संवरो नाम संवरितब्बे असंवरे सति होति, तस्मा असंवरपुच्छा सकवादिस्स, देवेसु पाणातिपातादीनं अभावेन पटिक्खेपो इतरस्स।

अत्थि मनुस्सेसू ति आदि संवरे सति असंवरस्स असंवरे च सति संवरस्स पवत्तिदस्सनत्थं वुत्तं।

पाणातिपाता वेरमणी ति आदिपञ्हेसु पाणातिपातादीनं असमाचरणवसेन पटिञ्ञा, पाणातिपातादीनं नत्थिताय पटिक्खेपो वेदितब्बो। पटिलोमपञ्हा उत्तानत्थायेव।

अवसाने **नत्थि देवेसु संवरो** ति पञ्हे पाणातिपातादीनि कत्वा पुन ततो संवराभावं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स। ततो छलवसेन यदि संवरो नत्थि, सब्बे देवा पाणातिपातिनो ति आदि पुच्छा परवादिस्स। देवानं वेरसमुदाचारस्स अभावेन पटिक्खेपो सकवादिस्स। **न हेवं** ति वचनमत्तं गहेत्वा लद्धिपतिट्ठापनं परवादिस्स। एवं पतिट्ठिता पन[1] लद्धि अप्पतिट्ठिताव होती ति। B. 176

संवरकथावण्णना निट्ठिता

११. असञ्ञकथावण्णना

२८. इदानि असञ्ञकथा नाम होति। तत्थ येसं[2] "सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं" ति वचनतो विना विञ्ञाणेन पटिसन्धि नाम नत्थि। "सञ्ञुप्पादा च[3] पन ते देवा तम्हा काया चवन्ती"[4] ति वचनतो असञ्ञसत्तानं पि चुतिपटिसन्धिक्खणे सञ्ञा अत्थी ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस। ततो नं सकवादी "किं ते तं ठानं सञ्ञाभवो"

१. ते रो.। २. ये रो.।
३. वा रो.। ४. पवत्तन्ती ति स्या.।

R. 72 ति आदीहि चोदेतुं **सञ्ञाभवो सञ्ञागती** ति (क० व० २३३) आदिमाह । तं सब्बं ततो परं च पाळिनयेनेव वेदितब्बं ।

असञ्ञकथावण्णना निट्ठिता

१२. नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकथावण्णना

३१. इदानि नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकथा नाम होति । तत्थ येसं "नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं" ति वचनतो न वत्तब्बं **"तस्मिं भवे सञ्ञा अत्थी"** ति लद्धि[१], सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते **सन्धाय** पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमेत्थ सब्बं पाळिनयेनेव वेदितब्बं ति ।

नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकथावण्णना निट्ठिता

ततियो वग्गो समत्तो

---

१. रो. पोत्थके नत्थि ।

४. चतुत्थो वग्गो

१. गिहिस्स अरहा-ति-कथावण्णना

१. इदानि गिहिस्स अरहा-ति-कथा नाम होति। तत्थ येसं B.177, R.73
यसकुलपुत्तादीनं गिहिब्यञ्जने ठितानं अरहत्तप्पत्तिं दिस्वा "गिहि अस्स अरहा" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **पुच्छा सकवादिस्स**। तत्थ **गिहिस्सा** ति (क० व० २४०) यो गिहि-**संयोजनसम्पयुत्तताय** गिहि, सो अरहं[1] अस्सा ति अत्थो। परवादी पन अधिप्पायं असल्लक्खेत्वा[2] गिहिब्यञ्जनमत्तमेव पस्सन्तो पटिजानाति। इदानिस्स "गिहि नाम गिहिसंयोजनेन होति, न ब्यञ्जनमत्तेन। यथाह भगवा —

'अलङ्कतो चे पि समं चरेय्य,
सन्तो दन्तो नियतो ब्रह्मचारी।
सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं,
सो ब्राह्मणो सो समणो स भिक्खू' ति" (खु० नि० १.३०)॥

इमं नयं दस्सेतुं अत्थि अरहतो ति आदि आरद्धं। तं सब्बं **उत्तानत्थमेवा** ति।

गिहिस्स अरहा-ति-कथावण्णना निट्ठिता

२. उपपत्तिकथावण्णना

२. इदानि उपपत्तिकथा नाम होति। तत्थ येसं "ओपपातिको होति तत्थपरिनिब्बायी" ति (पु० प० २६) वचनानि[3] अयोनिसो गहेत्वा सुद्धावासेसु उपपत्तिया[4] अरहा ति[5] लद्धि, "येसं वा[6]

१. अरहा रो.। २. ० ति रो.।
३. आदीनि ० रो.। ४. उपपन्नो सह ० स्या., रो.
५. होती ति रो.। ६. सी. पोत्थके नत्थि।

उपहच्चपरिनिब्बायी" ति पदं[1] परिवत्तित्वा "उपपज्जपरिनिब्बायी" ति परियापुणन्तानं सह उपपत्तिया अरहा होती ति लद्धि, सेय्यथापि R. 74 एतरहि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस । तत्थ यस्मा उपपत्तिचित्तं[2] नाम लोकियं, तेन सोतापन्नादयो पि न B. 178 होन्ति, पगेव अरहा । तस्मास्स इमं नयं दस्सेतुं **सह उपपत्तिया सोतापन्नो** ति (क० व० २४१) आदि आरद्धं ।

३. **सारिपुत्तो** ति (क० व० २४२) आदि इमेसु महाथेरेसु को एको पि सह उपपत्तिया अरहा नामा ति चोदनत्थं वुत्तं ।

४. **उपपत्तेसियेना** ति (क० व० २४२) पटिसन्धिचित्तेन । तञ्हि उपपत्तिं एसति गवेसति, तस्मा उपपत्तेसियं ति वुच्चति । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

उपपत्तिकथावण्णना निट्ठिता

३. अनासवकथावण्णना

५. इदानि अनासवकथा नाम होति । तत्थ ये धम्मा अनासवस्स अरहतो, सब्बे ते अनासवा ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **अरहतो** ति (क० व० २४३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं अनासवा नाम मग्गादयो, किं तस्स तेयेव उप्पज्जन्ती ति चोदनत्थं **मग्गो फलं** ति आदि आरद्धं । **चक्खु अनासवं** ति पुट्ठो तस्स[3] सासवत्ता पटिक्खिपति । दुतियं पुट्ठो अनासवस्सेतं ति पटिजानाति ।

६. चीवरपञ्हे एको व धम्मो अनासवो सासवो च होती ति लक्खणविरोधभया[4] पटिक्खिपति । दुतियं पुट्ठो अनासवस्स[5] हुत्वा सासवस्स होती ति पटिजानाति । **तञ्ञेव अनासवं** ति पञ्हाद्वये पि

१. इदं रो. । २. उपत्तिचित्तं रो. ।
३. रो. पोत्थके नत्थि । ४. तस्स ० स्या. ।
५. अनासवस्सेव रो. ।

एसेव नयो। सकवादी पन **तञ्ञेवा**[४] ति अनुञ्ञातत्ता "मग्गो अनासवो हुत्वा" ति आदीहि चोदेति। इमिना उपायेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो ति।

अनासवकथावण्णना निट्ठिता

४. समन्नागतकथावण्णना

७. इदानि समन्नागतकथा नाम होति। तत्थ द्वे समन्नागमा B. 179
पच्चुप्पन्नक्खणे समङ्गीभावसमन्नागमो च रूपावचरादीसु अञ्ञतर-
भूमिप्पत्तितो पटिलाभसमन्नागमो च। सो याव अधिगतविसेसा[१] R. 75
न परिहायति, तावदेव लब्भति। येसं पन ठपेत्वा इमे द्वे समन्नागमे अञ्ञो उपपत्तिधम्मवसेन[२] एको समन्नागमो नाम होती ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि उत्तरापथकानं, तेसं पत्तिधम्मो नाम कोचि नत्थी ति अनुबोधनत्थं **अरहा चतूहि फलेहि समन्नागतो** ति (क० व० २४६) पुच्छा सकवादिस्स, पत्तिं सन्धाय पटिञ्ञा इतरस्स। अथस्स "यदि ते अरहा चतूहि खन्धेहि विय चतूहि फलेहि समन्नागतो, एवं सन्ते ये चतूसु फलेसु चत्तारो फस्सादयो, तेहि ते अरहतो समन्नागतता पापुणाती" ति चोदनत्थं **अरहा चतूहि फस्सेही** ति आदि आरद्धं। तं सब्बं परवादिना एकक्खणे चतुन्नं फस्सादीनं अभावा पटिक्खित्तं। अनागामिपञ्हादीसु[३] पि एसेव नयो।

८-१०. **सोतापत्तिफलं वीतिवत्तो** ति न पठमज्झानं विय दुतियज्झानलाभी; पुन अनुप्पत्तिया पन वीतिवत्तो ति पुच्छति। **सोतापत्तिमग्गं** ति आदि यं वीतिवत्तो, तेनस्स पुन असमन्नागमं दस्सेतुं आरद्धं।

तेहि च अपरिहीनो ति पञ्हे यस्मा यथा पच्चनीकसमुदाचारेन लोकियज्झानधम्मा परिहायन्ति, न येवं लोकुत्तरा। मग्गेन हि ये

---

१. विसेसो रो.। २. पटिधम्मवसेन रो.।
३. अनागामिपञ्हेसु पि स्या.।

किलेसा पहीयन्ति, फलेन च पटिप्पस्सम्भन्ति, ते तथा पहीना व तथा पटिप्पस्सद्धायेव च होन्ति, तस्मा सकवादिना आमन्ता ति पटिञ्ञातं। स्वायमत्थो परतो "अरहता चत्तारो मग्गा पटिलद्धा" ति आदीसु पकासितो येव। सेसं उत्तानत्थमेवा ति।

समन्नागतकथावण्णना निट्ठिता

५. उपेक्खासमन्नागतकथावण्णना

B. 180 ११. अरहा छहि उपेक्खाही ति कथाय पि इमिना व नयेन
R. 76 अत्थो वेदितब्बो। अरहा हि छसु द्वारेसु उपेक्खानं उप्पत्तिभब्बताय ताहि[1] समन्नागतो ति वुच्चति, न एकक्खणे सब्बासं उपपत्तिभावेना ति।

उपेक्खासमन्नागतकथावण्णना निट्ठिता

६. बोधियाबुद्धोतिकथावण्णना

१२. इदानि **बोधिया बुद्धो** ति (क० व० २५१) कथा नाम होति। तत्थ **बोधी** ति चतुमग्गञाणस्सा पि सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्सा पि अधिवचनं। तस्मा येसं यथा ओदातेन वण्णेन ओदातो, सामेन वण्णेन सामो, एवं बोधिया बुद्धो ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि उत्तरापथकानं येव; ते सन्धाय पुच्छा च अनुयोगो च सकवादिस्स, पटिञ्ञा च पटिक्खेपो च इतरस्स।

अतीताया ति पञ्हे तस्मिं खणे अभावतो पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो पटिलाभं सन्धाय पटिजानाति। पुन किच्चवसेन पुट्ठो किच्चाभावतो पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो यं तेन ताय करणीयं कतं, तत्थ सम्मोहाभावं[2] पटिजानाति। लेसोकासं पन अदत्वा **दुक्खं परिजानाती** ति आदिना नयेन पुट्ठो तस्स किच्चस्स अभावा पटिक्खिपति।

---

१. हि रो.। २. सम्मोहाभावा रो.।

अनागतपञ्हे तस्मिं खणे मग्गञाणस्स अभावा पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो "अगमा राजगहं बुद्धो" ति (खु० नि० १.३२८) अनागताय बोधिया बुद्धभावं मञ्ञमानो पटिजानाति। **बोधिकरणीयं करोती** ति पुट्ठो तस्मिं खणे किच्चाभावेन पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो यदि न करेय्य, बुद्धो ति न वुच्चेय्य। यस्मा अवस्सं करिस्सति, तस्मा करोति येव नामा ति पटिजानाति। पुन लेसोकासं अदत्वा पुट्ठो पटिक्खिपति। पच्चुप्पन्नपञ्हो[1] सद्धिं संसन्दनाय उत्तानत्थोव।

तिस्सो बोधियो एकतो कत्वा पुट्ठो सब्बञ्ञुतञ्ञाणं सन्धाय तीहि पि बुद्धो ति[2] वत्तब्बभावतो पटिजानाति। पुन तीहि ति पुट्ठो सब्बासं एकक्खणे अभावा पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो अतीतानागत- B. 181 R. 77
पच्चुप्पन्नस्स सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स वसेन पटिजानाति। पुन लेसोकासं अदत्वा सततं समितं ति पुट्ठो पटिक्खिपति।

१३. **न वत्तब्बं बोधिया** ति (क०व० २१३) पुच्छा परवादिस्स, बोधिया अभावक्खणे अबुद्धभावापत्तितो[3] पटिञ्ञा सकवादिस्स। **ननु बोधिपटिलाभा** ति पञ्हे पन यस्मिं सन्ताने बोधिसङ्खातं मग्गञाणं उप्पन्नं, तत्थ बुद्धो ति सम्मुतिसब्भावतो पटिञ्ञा तस्सेव। तस्स अधिप्पायं अजानित्वा हञ्ची ति लद्धिट्ठपना परवादिस्स।

इदानिस्स[4] असल्लक्खणं[4] पाकटं कातुं बोधिपटिलाभा बुद्धो ति बोधिया बुद्धो ति पुच्छा सकवादिस्स। तस्सत्थो – "किं[5] ते यस्मा बोधिपटिलाभा बुद्धो, तस्मा बोधिया बुद्धो" ति। इतरो "बोधिपटिलाभो नाम बोधिया उप्पज्जित्वा निरुद्धाय पि सन्ताने उप्पन्नभावो येव। बोधि नाम मग्गक्खणे ञाणं" ति इमं विभागं असल्लक्खेन्तो व[6] पुन पटिजानाति। ततो सकवादिना **बोधिपटिलाभा बोधी** ति पुट्ठो वचनोकासं अलभन्तो पटिक्खिपती ति।

बोधियाबुद्धोतिकथावण्णना निट्ठिता

इति इमा तिस्सो पि कथा उत्तरापथकानं येव।

१. पञ्हे रो.।
२. पि रो.।
३. बुद्धभावापतितो रो.।
४-४. इदानि यदि सलक्खणं रो.।
५. तं रो.।
६. च रो.।

७. लक्खणकथावण्णना

१४. इदानि लक्खणकथा नाम होति । तत्थ "येहि समन्नागतस्स महापुरिसस्स द्वे व[1] गतियो भवन्ती" ति (दी० नि० १.७७) इमं सुत्तं अयोनिसो गहेत्वा लक्खणसमन्नागतो बोधिसत्तो व होती ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स ।

चक्कवत्तिसत्तो ति पञ्हेसु यस्मा चक्कवत्ती सत्तो पि[2] च[2] बोधिसत्तो पि,[3] तस्मा अबोधिसत्तं सन्धाय पटिक्खिपति । बोधिसत्तं सन्धाय पटिजानाति ।

B. 182, R. 78 द्वत्तिंसिमानी ति सुत्तं बोधिसत्तमेव सन्धाय वुत्तं । सो हि पच्छिमे भवे बुद्धो होति, इतरेसु चक्कवत्ती, तस्मा आभतं पि अनाभतसदिसमेवा ति ।

लक्खणकथावण्णना निट्ठिता

८. नियामोक्कन्तिकथावण्णना

१७. इदानि नियामोक्कन्ति कथा नाम होति । तत्थ येसं घटिकारसुत्ते जोतिपालस्स पब्बज्जं सन्धाय "बोधिसत्तो कस्सपभगवतो पावचने ओक्कन्तनियामो चरितब्रह्मचरियो" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते सन्धाय **बोधिसत्तो** ति (क० व० २५६) पुच्छा सकवादिस्स, लद्धियं ठत्वा पटिञ्ञा इतरस्स । ततो यस्मा नियामो ति वा ब्रह्मचरियं ति वा अरियमग्गस्स नामं, बोधिसत्तानं च ठपेत्वा पारमीपूरणं अञ्ञा नियामोक्कन्ति नाम नत्थि । यदि भवेय्य, बोधिसत्तो सोतापन्नो सावको भवेय्य । न[4] चेतमेवं । केवलञ्हि नं[4]

१. द्वे रो. ।
२-२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. ० अबोधिसत्तो पि रो. ।
४-४. न चेतमेव केवलं हीनं रो. ।

बुद्धा अत्तनो ञाणबले ठत्वा – "अयं बुद्धो भविस्सती" ति ब्याकरोन्ति, तस्मा पुन **बोधिसत्तो** ति अनुयोगो सकवादिस्स। पच्छिमभवं सन्धाय पटिक्खेपो इतरस्स। दुतियपञ्हे जोतिपालकालं सन्धाय पटिञ्ञा तस्सेव। **सावको हुत्वा** ति आदीसु पि एसेव नयो। **अनुस्सवियो** ति अनुस्सवेन[1] पटिविद्धधम्मो[1]। पच्छिमभवं सन्धाय पटिक्खिपित्वा जोतिपालकाले अनुस्सवं सन्धाय पटिजानाति।

१८. **अञ्ञं सत्थारं** ति (क० व० २५७) आळारं रामपुत्तं च सन्धाय वुत्तं। आयस्मा आनन्दो ति आदि "ओक्कन्तनियामा व सावका होन्ति, न इतरे ओक्कन्तनियामा एवरूपा होन्ती" ति दस्सेतुं वुत्तं

सावको जातिं वीतिवत्तो ति याय जातिया सावको, तं वीतिवत्तो अञ्ञस्मिं भवे असावको होती ति पुच्छति। इतरो सोतापन्नादीनं सोतापन्नादि[2] सावकभावतो पटिक्खिपति। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

नियामोक्कन्तिकथावण्णना निट्ठिता

९. अपरा पि समन्नागतकथावण्णना

२०. इदानि अपरा पि समन्नागतकथा नाम होति। तत्थ येसं B. 183, R. 79
"चतुत्थमग्गट्ठो पुग्गलो पत्तिधम्मवसेन तीहि फलेहि समन्नागतो" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ हेट्ठा चतूहि फलेहि समन्नागतकथायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

अपरा पि समन्नागतकथावण्णना निट्ठिता

१-१. अनुस्सवपटिविद्धधम्मे रो.। २. रो. पोत्थके नत्थि।

१०. सब्बसंयोजनप्पहानकथावण्णना

२७. इदानि संयोजनप्पहानकथा नाम होति। तत्थ येसं "निप्परियायेनेव सब्बसंयोजनप्पहानं अरहत्तं" ति लद्धि, सेय्यथापि एतरहि[1] अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। पुन **सब्बे संयोजना** ति (क० व० २६७) पुट्ठो हेट्ठा वुत्तमग्गत्तयेन पहीने सन्धाय पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो तेन मग्गेन अप्पहीनस्स[2] अभावा पटिजानाति। **सक्कायदिट्ठि** आदीसु पि पठममग्गेन पहीनभावं सन्धाय पटिक्खिपति, चतुत्थमग्गेन अनवसेसप्पहानं सन्धाय पटिजानाति। एसेव नयो सब्बत्था ति।

सब्बसंयोजनप्पहानकथावण्णना निट्ठिता
चतुत्थो वग्गो समत्तो

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. अप्पहीनाय रो.।

५. पञ्चमो वग्गो

१. विमुत्तिकथावण्णना

१. इदानि विमुत्तिकथा नाम होति । तत्थ विपस्सना, मग्गो, R. 80
फलं, पच्चवेक्खणं ति चतुन्नं ञाणानं विमुत्तिञाणं ति नामं । तेसु[1] विपस्सनाञाणं निच्चनिमित्तादीहि[2] विमुत्तत्ता, तदङ्गविमुत्तिभावेन वा विमुत्तत्ता विमुत्तिञाणं । मग्गो समुच्छेदविमुत्ति, फलं पटिप्पस्सद्धि- B. 184
विमुत्ति, पच्चवेक्खणञाणं पन विमुत्तिं जानाती ति **विमुत्तिञाणं** (क० व० २६६) । एवं चतुब्बिधे विमुत्तिञाणे निप्परियायेन फलञाणमेव विमुत्ति[3] । सेसानि "विमुत्तानी" ति वा "अविमुत्तानी"[4] ति वा न वत्तब्बानि । तस्मा "इदं नाम विमुत्तिञाणं विमुत्तं" ति अवत्वा अविसेसेनेव "विमुत्तिञाणं विमुत्तं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा परवादिस्स[5] । पुन **यं किञ्ची** ति पुट्ठो पच्चवेक्खणादीनि सन्धाय पटिक्खिपति । **पटिप्पन्नस्सा** ति पुट्ठो मग्गञाणस्स अनासवतं सन्धाय पटिजानाति । यस्मा पन तं सोतापन्नस्स फले ठितस्स ञाणं न होति, तस्मा विमुत्तं नाम न होती ति चोदनत्थं पुन सकवादी **सोतापन्नस्सा** ति आदिमाह । इमिना उपायेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो ।

विमुत्तिकथावण्णना निट्ठिता

२. असेखञाणकथावण्णना

४. इदानि असेखकथा नाम होति । तत्थ यस्मा आनन्दत्थेरादयो सेखा[6] "उळारो भगवा" ति आदिना नयेन असेखे

---

१. ० पि रो. ।
२. निच्चनिमित्तारम्मणादीहि वा स्या.; ० वा रो. ।
३. विमुत्तं रो. ।
४. रो. पोत्थके नत्थि ।
५. इतरस्स रो. ।
६. सेखो रो. ।

R. 81 जानन्ति, तस्मा "सेखस्स असेखञाणं अत्थी" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **जानाति पस्सती** ति (क० व० २७१) इदं अत्तना अधिगतस्स जाननवसेन वुत्तं। **गोत्रभुनो** ति आदि हेट्ठिमाय[1] भूमियं ठितस्स उपरूपरिञाणस्स अभावदस्सनत्थं वुत्तं। **ननु आयस्मा आनन्दो सेखो "उळारो भगवा" ति जानाती** ति परवादी असेखे[2] भगवति[2] पवत्तत्ता[3] तं[3] असेखञाणं ति इच्छति, न पनेतं असेखं। तस्मा एवं पतिट्ठापिता पि लद्धि अप्पतिट्ठापिता व होती ति।

असेखञाणकथावण्णना निट्ठिता

३. विपरीतकथावण्णना

७. इदानि विपरीतकथा नाम होति। तत्थ "य्वायं पथवीकसिणे पथवीसञ्ञी समापज्जति, तस्स तं ञाणं विपरीतञाणं" ति येसं लद्धि,
B. 185 सेय्यथापि अन्धकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। पथविं निस्साय उप्पन्ननिमित्तञ्हि न पथवी येव, तत्र चायं पथवीसञ्ञी। तस्मा विपरीतञाणं ति अयमेतस्स अधिप्पायो। ततो सकवादी "लक्खणपथवी पि ससम्भारपथवी पि निमित्तपथवी पि पथवीदेवता पि सब्बा पथवी येव, तासु पथवी ति ञाणं विपरीतं न होति। अनिच्चे निच्चं ति आदिविपरियेसो पन विपरीतञाणं नाम। किं ते इदं एतेसु अञ्ञतरं" ति चोदेतुं **अनिच्चे निच्चं** (क० व० २७२) ति आदिमाह। इतरो विपल्लासलक्खणाभावं सन्धाय पटिक्खिपति, पथवीनिमित्तं सन्धाय पटिजानाति।

कुसलं ति सेक्खपुथुज्जनानं ञाणं सन्धाय वुत्तं। **अत्थि अरहतो** ति पञ्हेसु पि विपल्लासलक्खणाभावेन[4] पटिक्खिपति। पथवीनिमित्तं सन्धाय पटिजानाति। **सब्बेव पथवी** ति सब्बं तं पथवीकसिणं

---

१. ० हेट्ठिमाय रो.। २-२. असिक्खो भगवा ति स्या.; रो.।
३-३. पवत्तत्तानं रो.। ४. ० एव रो.।

लक्खणपथवी येव होती ति पुच्छति। सकवादी तथा अभावतो R. 82
पटिक्खिपति। **ननु पथवी अत्थि, अत्थि च कोचि पथविं पथवितो समापज्जती** ति पुच्छा सकवादिस्स। तस्सत्थो — ननु निमित्तपथवी अत्थि, अत्थि च कोचि तं पथविं पथवितो येव[1] समापज्जति, न आपतो वा तेजतो वा ति। **पथवी अत्थी** ति आदि "यदि यं यथा अत्थि, तं तथा समापज्जन्तस्स ञाणं विपरीतं होति, निब्बानं अत्थि, तं पि समापज्जन्तस्स सब्बविपरियेससमुग्घातनं मग्गञाणं पि ते विपरीतं होतू"[2] ति दस्सनत्थं वुत्तं ति।

विपरीतकथावण्णना निट्ठिता

४. नियामकथावण्णना

११-१४ इदानि नियामकथा नाम होति। तत्थ यो पुग्गलो सम्मत्तनियामं ओक्कमिस्सति, तं "भब्बो एस धम्मं अभिसमेतुं" ति यस्मा भगवा जानाति, तस्मा "अनियतस्स पुथुज्जनस्सेव सतो पुग्गलस्स नियामगमनाय ञाणं अत्थी" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि[3] उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **अनियतस्सा** ति पुच्छा सकवादिस्स। तत्थ नियामगमनाया ति नियामो वुच्चति मग्गो, मग्गगमनाय मग्गोक्कमनाया ति अत्थो। यं पनस्स ञाणं दिस्वा भगवा "भब्बो अयं" ति जानाति, तं सन्धाय पटिञ्ञा परवादिस्स।

अथस्स सकवादी अयुत्तवादितं दीपेतुं **नियतस्सा** ति विपरीतानु- B 186
योगमाह। तत्थ पठमपञ्हे मग्गेन नियतस्स अनियामगमनाय[4] ञाणं नाम नत्थी ति पटिक्खिपति। दुतिये नत्थिभावेन पटिजानाति। ततिये अनियतस्स नत्थी ति पुट्ठत्ता[5] लद्धिविरोधेन पटिक्खिपति। पुन पठमपञ्हमेव[6] चतुत्थं कत्वा[7] नियतस्स नियामगमनादिवसेन तयो पञ्हा[8] कता[8]।

---

१. च रो.। २. होती ति रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि। ४. नियामगमनाय रो.।
५. पुच्छा रो.। ६. पठमपञ्हे रो.।
७. नत्वा रो.। ८-८. पञ्हकथा रो.।

R. 83 तेसु पठमे यस्मा आदि मग्गेन नियतस्स पुन तदत्थायं ञाणं नत्थि, तस्मा पटिक्खिपति। दुतिये नत्थिभावेनेव पटिजानाति। ततिये लद्धिविरोधेनेव पटिक्खिपति। पुन पठमपञ्हं अट्ठमं कत्वा अनियतस्स अनियामगमनादिवसेन तयो पञ्हा[1] कता[1]। तेसं अत्थो वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। पुन पठमपञ्हमेव द्वादसमं[2] कत्वा तं मूलका **अत्थि नियामो** ति आदयो पञ्हा[3] कता[3]। तत्थ यस्मा नियामगमनाय ञाणं नाम मग्गञाणमेव होति, तस्मा तं सन्धाय **अत्थि नियामो** ति वुत्तं। इतरो पन नियामो ति वुत्ते पटिक्खिपति, ञाणं ति वुत्ते पटिजानाति। **सतिपट्ठानादीसु** पि एसेव नयो। पच्चनीकं उत्तानत्थमेव। **गोत्रभुनो** ति आदि[4] येन[4] यं अप्पत्तं, तस्स तं नत्थी ति दस्सनत्थं वुत्तं। **भगवा जानाती** ति अत्तनो ञाणबलेन जानाति, न तस्स नियामगमनञाण-सब्भावतो[5]। तस्मा इमिना कारणेन पतिट्ठितापिस्स लद्धि अप्पतिट्ठिता येवा ति।

नियामकथावण्णना निट्ठिता

५. पटिसम्भिदाकथावण्णना

१५-१६. इदानि पटिसम्भिदाकथा नाम होति। तत्थ येसं "यं किञ्चि अरियानं ञाणं, सब्बं लोकुत्तरमेवा" ति गहेत्वा "सब्बं ञाणं पटिसम्भिदा" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सम्मुतिञाणपञ्हेसु पथवीकसिण-सम्मुतियं समापत्तिञाणं सन्धाय पटिक्खिपति, निरुत्तिञाणं सन्धाय पटिजानाति। ये केचि सम्मुतिं ति पञ्हे पुथुज्जने सन्धाय पटिक्खिपति। चेतोपरियायपञ्हेसु पुथुज्जनस्स ञाणं सन्धाय पटिक्खिपति, अरियस्स ञाणं सन्धाय पटिजानाति। **सब्बा पञ्ञा** ति (क० व० २७७) पञ्हेसु कसिणसमापत्तिपञ्हं[6] सन्धाय पटिक्खिपति,

१-१. पञ्हकथा रो.।
२. दसमं रो.।
३-३. पञ्हकथा रो.।
४-४. आदिना नयेन रो.।
५. ० ञाणं सभावतो रो.।
६. पठवी ० रो.।

लोकुत्तरं सन्धाय पटिजानाति । पथवीकसिणसमापत्ति ति आदि "या एतेसु एत्तकेसु ठानेसु पञ्ञा, किं सब्बा सा पटिसम्भिदा" ति पुच्छनत्थं वुत्तं । **तेन हि सब्बं ञाणं** ति यस्मा सब्बा लोकुत्तरपञ्ञा R. 84, B. 187 पटिसम्भिदा, तस्मा सब्बं ति वचनं सामञ्ञफलेन सद्धिं पतिट्ठापेती ति ।

पटिसम्भिदाकथावण्णना निट्ठिता

६. सम्मुतिञाणकथावण्णना

१७-१८. इदानि सम्मुतिञाणकथा नाम होति । तत्थ सम्मुतिसच्चं परमत्थसच्चं ति द्वे सच्चानि । ये पन एवं[1] विभागं अकत्वा सच्चं ति वचनसामञ्ञेन सम्मुतिञाणं पि "सच्चारम्मणमेवा" ति वदन्ति, सेय्यथापि अन्धका;[2] ते अयुत्तवादिनो ति तेसं वादविसोधनत्थं अयं कथा आरद्धा । तत्थ **न वत्तब्बं** ति (क० व० २७७) पुच्छा परवादिस्स, परमत्थसच्चं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स । **सम्मुतिसच्चम्हि** ति सम्मुतिं अनुपविट्ठे सच्चम्हि । पच्चत्ते वा भुम्मवचनं, सम्मुतिसच्चं ति अत्थो ।

सम्मुतिञाणं सच्चारम्मणञ्ञेवा ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । ततो नं[3] "यदि तं अविसेसेन सच्चारम्मणञ्ञेव,[4] तेन ञाणेन दुक्खपरिञ्ञादीनि करेय्या" ति चोदेतुं **तेन ञाणेना** ति आदिमाह ।

सम्मुतिञाणकथावण्णना निट्ठिता

७. चित्तारम्मणकथावण्णना

१९-२१. इदानि चित्तारम्मणकथा नाम होति । तत्थ चेतोपरियाये ञाणं ति वचनमत्तमेव गहेत्वा "तं ञाणं चित्तारम्मण-

१. एतं रो. । २. अन्धकानं सी., स्या. ।
३. न रो. । ४. ० ति रो. ।

मेवा" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि[1] अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथस्स "यो सरागादिवसेन चित्तं जानाति, तस्स रागादयो पि आरम्मणा होन्ति, तस्मा न वत्तब्बं तं[2] चित्तारम्मणञ्ञेवा" ति चोदनत्थं **ननु अत्थि कोची** ति (क० व० २७८) आदि आरद्धं। **फस्सारम्मणे** ति फस्ससङ्खाते आरम्मणे। **वेदनारम्मणे** ति आदीसु पि एसेव नयो। पुन **फस्सा-**
R. 85, B 188 **रम्मणे ञाणं न वत्तब्बं** ति पुट्ठो फस्सस्स फुसनलक्खणं मनसिकरोतो फस्सोवारम्मणं[3] होती ति पटिजानाति। **किं पनेतं फस्सपरियाये ञाणं** ति पुट्ठो पन तादिसस्स सुत्तपदस्स अभावा पटिक्खिपति। वेदनादीसु पि एसेव नयो। इदानि यं निस्साय लद्धि, तदेव दस्सेत्वा लद्धिं पतिट्ठापेतुं **ननु चेतोपरियाये ञाणं** ति आदिमाह। सा पनेसा वचनमत्ताभिनिवेसेन पतिट्ठापिता पि अप्पतिट्ठापिता व होती ति।

चित्तारम्मणकथावण्णना निट्ठिता

८. अनागतञाणकथावण्णना

२२-२३. इदानि अनागतञाणकथा[4] नाम होति। तत्थ अनागतं नाम अन्तरं[5] पि अत्थि, अनन्तरं[6] पि। तेसु अनन्तरे एकन्तेनेव ञाणं नत्थि। यथा च अनन्तरे, तथा एकवीथिएकजवन-परियापन्ने पि। तत्थ ये सब्बस्मिं पि अनागते ञाणं इच्छन्ति, सेय्यथापि अन्धका;[7] ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यं ते अनागते ञाणं, किं तेन अनन्तरं अनागतं मूलादिवसेन जानाती" ति चोदेतुं **अनागतं मूलतो** ति (क०व०२७९) आदिमाह। तत्थ **मूलतो** ति आदीनि सब्बानि कारणवेवचनानेव। कारणञ्हि यं अत्तनो फलं करोति, तं तत्थ मूलयति पतिट्ठाती ति

१. रो. पोत्थके नत्थि।
२. रो. पोत्थके नत्थि।
३. फस्सारम्मणं स्या.; फस्सेवारम्मणं रो.।
४. अनागतकथा रो.।
५. अनन्तरं रो.।
६. न अनन्तरं रो.।
७. अन्धकानं सी., स्या.।

मूलं । ततो च[1] तं हिनोति पवत्तयती ति **हेतु** । तदेव तं निदेति[2] "हन्द नं गण्हथा" ति । निय्यातेति विया ति **निदानं** । ततो तं सम्भवती ति **सम्भवो** । पभवती ति **पभवो** । तत्थ च[3] तं समुट्ठाति, तं वा नं समुट्ठापेती ति **समुट्ठानं** । तदेव नं आहरती ति **आहारो** । तं चस्स अपरिच्चजितब्बट्ठेन **आरम्मणं** । तदेव चेतं पटिच्च एती ति **पच्चयो** । ततो नं समुदेती ति **समुदयो** ति वुच्चति । यस्मा पन R. 86 अनन्तरं चित्तं एतेहाकारेहि न सक्का जानितुं, तस्मा **न हेवं** ति पटिक्खिपति ।

अनागतं हेतुपच्चयतं ति[4] या[4] अनन्तरानागते चित्ते हेतुपच्चयता, तं जानाति । ये तत्थ धम्मा हेतुपच्चया[5] होन्ति, ते जानाती ति अत्थो । सेसपदेसु पि एसेव नयो । **गोत्रभुनो** ति आदि यस्मिं अनागते ञाणं न उप्पज्जति, तं सरूपतो दस्सेतुं वुत्तं । **पाटलिपुत्तस्सा** ति सुत्तं यस्मिं अनागते ञाणं उप्पज्जति, तं दस्सेतुं B. 189 आहटं । यस्मा पनेतं न सब्बस्मिं अनागते ञाणस्स साधकं; तस्मा अनाहटमेवा ति ।

अनागतञाणकथावण्णना निट्ठिता

९. पच्चुप्पन्नञाणकथावण्णना

२४-२५. इदानि पच्चुप्पन्नञाणकथा नाम होति । तत्थ येसं "सब्बसङ्खारेसु अनिच्चतो दिट्ठेसु तं पि ञाणं अनिच्चतो दिट्ठं होती" ति वचनं निस्साय "अविसेसेन सब्बस्मिं पच्चुप्पन्ने ञाणं अत्थी" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पटुप्पन्ने[6] ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि अविसेसेन पटुप्पन्ने ञाणं अत्थि, खणपच्चुप्पन्ने पि तेन भवितब्बं । एवं सन्ते द्विन्नं ञाणानं एकतो अभावा तेनेव ञाणेन तं जानितब्बं होती" ति चोदनत्थं[7] **तेना** ति

१. व रो. ।
२. देति रो. ।
३. वा रो. ।
४-४. तंतिया रो. ।
५. हेतुपच्चयेन पच्चया रो. ।
६. पच्चुप्पन्ने ति सी., स्या., रो. ।
७. चोदितुं रो. ।

(क० व० २८०) अनुयोगो सकवादिस्स । तत्थ पठमपञ्हे तेनेव तं जानितुं न सक्का ति पटिक्खेपो इतरस्स । दुतियपञ्हे[1] सन्तति सन्धाय पटिञ्ञा तस्सेव । पटिपाटितो भङ्गं पस्सन्तो[2] भङ्गानुपस्सनेनेव[3] भङ्गानुपस्सनाञाणं पस्सती ति अधिप्पायो[4] । **तेन ञाणेन तं ञाणं जानाती** ति आदीसु पि एसेव नयो । **तेन फस्सेन तं फस्सं** ति आदीनिस्स लेसोकासनिवारणत्थं वुत्तानि । यं पनेतेन
R. 87 लद्धिपतिट्ठापनत्थं **ननु सब्बसङ्खारे** ति आदि वुत्तं । तत्थ नयतो[5] तं ञाणं दिट्ठं होति, न आरम्मणतो ति अधिप्पायेन पटिञ्ञा सकवादिस्स । तस्मा एवं पतिट्ठितापिस्स लद्धि अप्पतिट्ठिताव होति ।

पच्चुप्पन्नञाणकथावण्णना निट्ठिता

१०. फलञाणकथावण्णना

२६. इदानि फले ञाणकथा नाम होति । तत्थ "बुद्धा पि सत्तानं अरियफलप्पत्तिया धम्मं देसेन्ति सावका पि, इति इमिना
B. 190 सामञ्ञेन बुद्धानं विय सावकानं पि तेन तेन सत्तेन पत्तब्बे फले ञाणं अत्थी" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **सावकस्सा** ति (क० व० २८१) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि सावकस्स फले ञाणं अत्थि, यथा बुद्धा समाने पि सोतापत्तिफले अत्तनो ञाणबलेन 'अयं एकबीजि[6], अयं कोलंकोलो, अयं सत्तक्खत्तुपरमो' ति फलस्स कतं पञ्ञपेन्ति, किं ते एवं सावको पी" ति चोदेतुं **सावको फलस्स कतं पञ्ञपेती** ति आह । इतरो पटिक्खिपति ।

अत्थि सावकस्स फलपरोपरियत्ती ति आदि फले ञाणस्स अत्थिताय पच्चयपुच्छनत्थं वुत्तं । अयञ्हेत्थ अधिप्पायो — बुद्धानं "इदं[7] फलं परं, इदं ओपरं"[7] ति एवं फलानं उच्चावचभावजानन-

१. ०पन रो. । २. ० ति हि रो. ।
३. भंगानुपस्सनाञाणेनेव रो. । ४. तस्स ० रो. ।
५. न सतो रो. । ६. बीजी रो. ।
७-७. इदं ओरं, इदं परं रो. ।

सङ्खाता फले[1] परोपरियत्ति नाम अत्थि। तथा इन्द्रियपुग्गल-परोपरियत्तियो[2], तासं[2] अत्थिताय तस्स तस्स पुग्गलस्स तेसं तेसं इन्द्रियानं वसेन तं तं फलं जानन्ति, किं ते सावकस्सा पि एता परोपरियत्तियो अत्थी ति।

अत्थि सावकस्स खन्धपञ्ञत्ती ति आदीनि पि "यदि ते सावकस्स बुद्धानं विय फले ञाणं अत्थि, इमा हि पिस्स पञ्ञत्तीहि भवितब्बं। किमस्स ता अत्थि, सक्कोति सो एता पञ्ञत्तियो अत्तनो बलेन जानितुं वा पञ्ञपेतुं वा" ति चोदनत्थं वुत्तानि। **सावको जिनो** ति आदि R. 88
"यदि सावकस्स बुद्धानं विय फले ञाणं अत्थि, एवं सन्ते स्वेव[3] जिनो" ति चोदनत्थं वुत्तं। **सावको अनुप्पन्नस्सा** ति पञ्हे पि अयमेव नयो। **अञ्ञाणी** ति पञ्हे अविज्जासङ्खातस्स अञ्ञाणस्स विहतत्ता[4] पटिक्खित्तो, न पनस्स बुद्धानं विय फले ञाणं अत्थि। तस्मा अप्पतिट्ठितो व[5] परवादीवादो[6] ति।

फलञाणकथावण्णना निट्ठिता

पञ्चमो वग्गो समत्तो

महापण्णासको च समत्तो

---

१. फला स्या.।
२-२. इन्द्रियपुग्गलापरोपरियत्तियोकासं रो.।
३. एव रो.।
४. विभत्त रो.।
५. च रो.।
६. परवादो ति रो.।

६. छट्ठो वग्गो

६. नियामकथावण्णना

B. 191, R. 89 १-३. इदानि नियामकथा नाम होति। तत्थ **नियामो** ति (क० व० २८३) "भब्बा नियामं ओक्कमितुं कुसलेसु धम्मेसु सम्मत्तं" ति (पु० प० २२) वचनतो अरियमग्गो वुच्चति। यस्मा पन तस्मिं उप्पज्जित्वा निरुद्धे पि पुग्गलो अनियतो नाम न होति, तस्मा "सो नियामो निच्चट्ठेन असङ्खतो" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। ततो "यदि सो असङ्खतो, एवरूपेन तेन भवितब्बं" ति दीपेन्तो **निब्बानं** ति आदिमाह। संसन्दनपुच्छा उत्तानत्थायेव।

अत्थि केची ति आदि नियामस्स सङ्खतभावदीपनत्थं वुत्तं। **मग्गो असङ्खतो** ति पञ्हे तस्स उप्पादनिरोधभावतो पटिक्खिपती ति। नियामो सङ्खतो ति पञ्हे निरुद्धे पि मग्गे नियामस्स अत्थितं सन्धाय पटिक्खिपति। **सोतापत्तिनियामो** ति आदिपञ्हेसु पि अनुलोमतो च पटिलोमतो च इमिना व नयेन अत्थो वेदितब्बो। पञ्च असङ्खतानी ति पुट्ठो पञ्चन्नं असङ्खतानं आगतट्ठानं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो चतुन्नं सम्मत्तनियामानं नियामवचनतो निब्बानस्स च असङ्खतभावतो पटिजानाति। मिच्छत्तनियामपञ्हो नियामवचनमत्तेन असङ्खतताय अयुत्तभावदीपनत्थं वुत्तो ति।

नियामकथावण्णना निट्ठिता

२. पटिच्चसमुप्पादकथावण्णना

४. इदानि पटिच्चसमुप्पादकथा नाम होति। तत्थ येसं निदानवग्गे "उप्पादा वा तथागतानं अनुप्पादा वा तथागतानं ठिताव सा धातु धम्मट्ठितता" ति (सं० नि० २.२४) आदिवचनतो[1] "पटिच्चसमुप्पादो

१. वचनतो रो.।

असङ्खतो" ति लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं च महिसासकानं च; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स ।

५. **अविज्जा असङ्खता** ति (क० व० २८५) आदयो पञ्हा अविज्जादीनं येव पटिच्चसमुप्पादभावदस्सनत्थं वुत्ता । येन पनत्थेन तत्थ एकेकं अङ्गं "पटिच्चसमुप्पादो" ति वुच्चति, सो पटिच्चसमुप्पाद-विभङ्गे वुत्तो येव । B. 192

अविज्जापच्चया सङ्खारा ति या तत्थ धम्मट्ठितता ति आदि येन सुत्तेन लद्धि पतिट्ठापिता, तस्सेव अत्थदस्सनेन लद्धिभिन्दनत्थं वुत्तं । अयञ्हेत्थ अत्थो – या अयं हेट्ठा "ठिताव सा धातु धम्मट्ठितता[1] धम्मनियामता" ति वुत्ता न सा अञ्ञत्र अविज्जादीहि विसुं एका अत्थि । अविज्जादीनं पन पच्चयानं येवेतं नामं । उप्पन्ने पि हि तथागते अनुप्पन्ने पि[2] अविज्जातो सङ्खारा सम्भवन्ति, सङ्खारादीहि च विञ्ञाणादीनि, तस्मा "अविज्जापच्चया सङ्खारा" ति या एतस्मिं पदे सङ्खारधम्मानं कारणट्ठेन ठितता ति धम्मट्ठितता । तेसं येव च धम्मानं कारणट्ठेनेव नियामता ति धम्मनियामता ति अविज्जा वुच्चति । सा च असङ्खता,[3] निब्बानं च असङ्खतं ति पुच्छति । परवादी लद्धिवसेन पटिजानित्वा पुन **द्वे असङ्खतानी** ति पुट्ठो सुत्ताभावेन पटिक्खिपित्वा[4] लद्धिवसेनेव पटिजानाति । सेसपदेसु पि एसेव नयो । हेट्ठा वुत्तसदिसं पन तत्थ वुत्तनयेनेव[5] वेदितब्बं[6] ति ।

पटिच्चसमुप्पादकथावण्णना निट्ठिता

३. सच्चकथावण्णना

८-१०. इदानि सच्चकथा नाम होति । तत्थ येसं "चत्तारिमानि, भिक्खवे, तथानि अवितथानी" ति (सं० नि० ४. ३६९) सुत्तं

१. ० व रो. ।
२. ० हि रो. ।
३. ० ति रो. ।
४. ० व रो. ।
५. वुत्तनयमेवा रो. ।
६. रो. पोत्थके नत्थि ।

निस्साय "चत्तारि सच्चानि असङ्खतानी"[१] ति (क० व० २८७) लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, R. 91 पटिञ्ञा इतरस्स। अयञ्हिस्स अधिप्पायो – दुक्खसमुदयमग्गेसु वत्थुसच्चं सङ्खतं, लक्खणसच्चं असङ्खतं। निरोधे वत्थुसच्चं नाम नत्थि असङ्खतमेव तं ति। तस्मा **आमन्ता** ति आह। तं पनस्स लद्धिमत्तमेव। सो[२] हि दुक्खं वत्थुसच्चं[३] इच्छति, तथा समुदयं मग्गं च। यानि पन नेसं बाधनपभवनिय्यानिकलक्खणानि, तानि लक्खणसच्चं नामा ति, न च बाधनलक्खणादीहि अञ्ञानि दुक्खादीनि नाम अत्थी ति। **ताणानी** ति आदीसु अधिप्पायो वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

B. 193 **दुक्खसच्चं** ति पञ्हे लद्धिवसेन लक्खणं सन्धाय पटिजानाति। **दुक्खं** ति पञ्हे वत्थुं सन्धाय पटिक्खिपति। इतो[४] परं सुद्धिकपञ्हा च संसन्दनपञ्हा च सब्बे पाळिअनुसारेनेव वेदितब्बा। अवसाने लद्धिपतिट्ठापनत्थं आहटसुत्तं अत्थस्स मिच्छा गहितत्ता अनाहटसदिसमेवा ति।

सच्चकथावण्णना निट्ठिता

४. आरूप्पकथावण्णना

११-१२. इदानि आरूप्पकथा नाम होति। तत्थ येसं "चत्तारो आरूप्पा आनेञ्जा"[५] ति वचनं निस्साय "सब्बे पि धम्मा असङ्खता" ति लद्धि, ते सन्धाय **आकासानञ्चायतनं** ति (क० व० २८६) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति। साधकसुत्तं पि अत्थं[६] अजानित्वा आहटत्ता अनाहटसदिसमेवा ति।

आरूप्पकथावण्णना निट्ठिता

---

१. निच्चानि ० म.।
२. यो रो.।
३. वत्वा सच्चं रो.।
४. ततो रो.।
५. अनेञ्जा रो.।
६. रो. पोत्थके नत्थि।

५. निरोधसमापत्तिकथावण्णना

१३-१५. इदानि निरोधसमापत्तिकथा नाम होति। तत्थ **निरोधसमापत्ती** ति (क० व० २६०) चतुन्नं खन्धानं अप्पवत्ति। यस्मा पन सा करियमाना करियति, समापज्जियमाना समापज्जियति, तस्मा निप्फन्ना[1] ति वुच्चति। सङ्खतासङ्खतलक्खणानं पन अभावेन R. 92 न वत्तब्बा "सङ्खता ति वा असङ्खता" ति वा। तत्थ येसं "यस्मा सङ्खता न होति, तस्मा असङ्खता" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव[2] उत्तरापथकानं च; ते सन्धाय **निरोधसमापत्ती** ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **उप्पादेन्ती** ति आदि समापज्जनपटिलाभवसेनेव वुत्तं। यथा पन रूपादयो असङ्खतधम्मे उप्पादेन्ति; न तथा[3] तं[3] केचि उप्पादेन्ति नाम। **निरोधा वोदानं वुट्ठानं** ति फलसमापत्ति वेदितब्बा। असङ्खता[4] पन तं[5] नत्थियेव, तस्मा पटिक्खिपति। B. 194 **तेन ही** ति यस्मा सङ्खता न होति, तस्मा असङ्खता ति लद्धि। इदं पन असङ्खतभावे कारणं न होती ति वुत्तं पि अवुत्तसदिसमेवा ति।

निरोधसमापत्तिकथावण्णना निट्ठिता

६. आकासकथावण्णना

१६-१८. इदानि आकासकथा नाम होति। तत्थ तिविधो आकासो परिच्छेदाकासो, कसिणुग्घाटिमाकासो, अजटाकासो। "तुच्छाकासो" ति पि तस्सेव नामं। तेसु परिच्छेदाकासो सङ्खतो, इतरे[6] द्वे पञ्ञत्तिमत्ता। येसं पन "दुविधो पि यस्मा सङ्खतो न होति, तस्मा असङ्खतो" ति लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं महिसासकानं च; ते सन्धाय **आकासो** ति (क० व० २६२) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

आकासकथावण्णना निट्ठिता

---

१. निरुद्धा ति स्या., निप्पना रो.। २. एव रो.।
३-३. तथागतं रो.। ४. असंखतं रो.।
५. रो, पोत्थके नत्थि। ६. इतरा रो.।

७. आकासो-सनिदस्सनो-ति-कथावण्णना

१९-२०. इदानि आकासो सनिदस्सनो ति कथा नाम होति ।
R. 93 तत्थ येसं ताळच्छिद्दादीसु ञाणप्पवत्तिं निस्साय "सब्बो पि अजटाकासो सनिदस्सनो" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **आकासो सनिदस्सनो** ति (क० व० २६३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि सनिदस्सनो, एवंविधो भवेय्या" ति चोदनत्थं **रूपं ति** आदि वुत्तं । **चक्खुं च पटिच्चा** ति पञ्हेसु एवरूपस्स सुत्तस्स अभावेन पटिक्खिपित्वा तुलन्तरिकादीनं[1] उपलद्धिं निस्साय पटिजानाति । **द्विन्नं रुक्खानं अन्तरं** ति एत्थ रुक्खरूपं चक्खुना दिस्वा अन्तरे रूपाभावतो आकासं ति मनोद्वारविञ्ञाणं उप्पज्जति, न चक्खुविञ्ञाणं । सेसेसु पि एसेव नयो । तस्मा असाधकमेतं ति ।

आकासो-सनिदस्सनो-ति-कथावण्णना निट्ठिता

१०. पथवीधातु-सनिदस्सना-ति-आदिकथावण्णना

२१-२२. इदानि पथवीधातु सनिदस्सना ति आदि कथा नाम
B. 195 होति । तत्थ येसं पासाणउदकजालरुक्खचलनानं[2] चेव पञ्चिन्द्रियपतिट्ठोकासानं च वण्णायतनं कायविञ्ञत्तिकाले हत्थपादादिरूपं च दिस्वा "पथवीधातु आदयो सनिदस्सना" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय सब्बकथासु आदिपुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसं सब्बत्थ पाळिअनुसारेन चेव हेट्ठा वुत्तनयेन[3] च वेदितब्बं ति ।

पथवीधातु सनिदस्सना ति आदिं[4] कत्वा कायकम्मं सनिदस्सनं ति परियोसानकथा निट्ठिता ।

पथवीधातु-सनिदस्सना-ति-आदिकथावण्णना निट्ठिता
छट्ठो वग्गो समत्तो

---

१. थूणन्तरिकादीनं रो. । २. ० थल ० रो. ।
३. वुत्तनयेनेव रो. । ४. आदि रो. ।

७. सत्तमो वग्गो

१. सङ्गहितकथावण्णना

१-४. इदानि सङ्गहितकथा नाम होति । तत्थ यस्मा दामादीहि R. 94
बलिबद्दादयो विय केचि धम्मा केहिचि धम्मेहि सङ्गहिता नाम नत्थि, तस्मा "नत्थि केचि धम्मा केहिचि धम्मेहि सङ्गहिता, एवं सन्ते एकविधेन रूपसङ्गहो ति आदि निरत्थकं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकानं चेव सिद्धत्थिकानं च; ते सन्धाय अञ्ञेनत्थेन सङ्गहभावं दस्सेतुं पुच्छा सकवादिस्स, अत्तनो लद्धिवसेन पटिञ्ञा इतरस्स। इदानि येनत्थेन सङ्गहो लब्भति, तं दस्सेतुं **ननु अत्थि केचि धम्मा** ति (क० व० २९८) आदि आरद्धं। तं सब्बं हेट्ठा वुत्तनयत्ता उत्तानत्थमेव। या पनेसा परवादिना लद्धिपतिट्ठापनत्थं[1] **यथा दामेन वा** ति आदिका उपमा आहटा, सकवादिना तं अनभिनन्दित्वा अप्पटिक्कोसित्वा "हञ्चि दामेन वा" ति तस्स लद्धि भिन्ना ति वेदितब्बा। अयञ्हेत्थ अत्थो — यदि ते दामादीहि बलिबद्दादयो सङ्गहिता नाम, अत्थि[2] केचि धम्मा केहिचि धम्मेहि सङ्गहिता ति।

सङ्गहितकथावण्णना निट्ठिता

२. सम्पयुत्तकथावण्णना

३-४. इदानि सम्पयुत्तकथा नाम होति । तत्थ यस्मा तिलम्हि B. 196
तेलं विय न वेदनादयो सञ्ञादीसु अनुपविट्ठा,[3] तस्मा "नत्थि केचि धम्मा केहिचि धम्मेहि सम्पयुत्ता, एवं सन्ते ञाणसम्पयुत्तं ति आदि निरत्थकं होती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकसिद्धत्थिकानञ्ञेव;[4] ते सन्धाय अञ्ञेनेवत्थेन सम्पयुत्ततं दस्सेतुं पुच्छा R. 95

---

१. अत्तनो ० रो.।
२. नत्थि रो।
३. अनुपविट्ठा रो.।
४. राजगिरिकानं चेव सिद्धत्थिकानं च स्या.।

सकवादिस्स, अत्तनो लद्धिवसेन पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमिधा पि हेट्ठा वुत्तनयत्ता उत्तानत्थमेव । यो पनेसो परवादिना "यथा तिलम्हि तेलं" ति आदिको उपमापञ्हो आहटो, सो यस्मा वेदनासञ्ञानं विय तिलतेलानं लक्खणतो नानत्तववत्थानं[1] नत्थि । सब्बेसु पि हि तिल[2]-अट्ठितचेसु तिलो ति वोहारमत्तं, तेनेव तिलं निब्बत्तेत्वा गहिते पुरिमसण्ठानेन तिलो नाम न पञ्ञायति, तस्मा अनाहटसदिसो व होती ति ।

सम्पयुत्तकथावण्णना निट्ठिता

३. चेतसिककथावण्णना

५-७. इदानि चेतसिककथा नाम होति । तत्थ यस्मा फस्सितादयो नाम नत्थि, तस्मा "चेतसिकेना पि न भवितब्बं, इति नत्थि चेतसिको धम्मो" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकसिद्धत्थिकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **सहजातो** ति (क० व० ३०१) सम्पयुत्तसहजातं सन्धाय वुत्तं । **फस्सिका** ति तादिसं वोहारं अपस्सन्तस्स पुच्छा परवादिस्स । किं वोहारेन, यथा चित्तनिस्सितको ति चेतसिको,[3] एवं सो पि फस्सनिस्सितत्ता फस्सिको ति वुत्ते दोसो नत्थी ति पटिञ्ञा सकवादिस्स । सेसं उत्तानत्थमेवा ति ।

चेतसिककथावण्णना निट्ठिता

४. दानकथावण्णना

B. 197 ८. इदानि दानकथा नाम होति । तत्थ दानं नाम तिविधं – चागचेतना पि, विरति पि, देय्यधम्मो पि । "सद्धा हिरियं कुसलं च
R. 96 दानं" ति (अं० नि० ३. ३३७) आगतट्ठाने चागचेतना दानं ।

१. नानत्थ ० रो. ।　　२. तेल ० रो. ।
३. ० ति रो. ।

"अभयं देती" ति आगतट्ठाने विरति। "दानं देति अन्नं पानं" ति (अं० नि० ३. ३३६,३४४-४५) आगतट्ठाने देय्यधम्मो। तत्थ चागचेतना "देति वा देय्यधम्मं, देन्ति वा एताय देय्यधम्मं" ति दानं। विरति अवखण्डनट्ठेन लवनट्ठेन वा दानं। सा हि उप्पज्जमाना भयभेरवादिसङ्खातं दुस्सील्यचेतनं दाति[1] खण्डेति लुनाति वा[2] ति दानं। देय्यधम्मो दिय्यती ति दानं। एवमेतं तिविधं पि अत्थतो चेतसिको चेव धम्मो देय्यधम्मो चा ति दुविधं होति। तत्थ येसं "चेतसिको व धम्मो दानं, न देय्यधम्मो" ति लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकसिद्धत्थिकानं; ते सन्धाय **चेतसिको** ति (क० व० ३०२) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं देय्यधम्मवसेन चोदेतुं **लब्भा** ति पुच्छा सकवादिस्स, अन्नादीनि विय सो न सक्का दातुं ति पटिक्खेपो इतरस्स। पुन दळ्हं कत्वा पुट्ठे[3] "अभयं देती" ति सुत्तवसेन पटिञ्ञा तस्सेव। फस्सपञ्हादीसु[4] पन फस्सं[5] देती ति आदि वोहारं अपस्सन्तो पटिक्खिपतेव।

९. **अनिट्ठफलं** ति आदि अचेतसिकस्स धम्मस्स दानभावदीपनत्थं वुत्तं। न हि अचेतसिको अन्नादिधम्मो आयतिं विपाकं देति, इट्ठफलभावनियमनत्थं[6] पनेतं वुत्तं ति वेदितब्बं। अयं पि हेत्थ अधिप्पायो – यदि अचेतसिको अन्नादिधम्मो दानं भवेय्य, हितचित्तेन अनिट्ठं अकन्तं भेसज्जं देन्तस्स निम्बबीजादीहि विय निम्बादयो अनिट्ठमेव फलं निब्बत्तेय्य। यस्मा पनेत्थ हितफरणचागचेतना दानं, तस्मा अनिट्ठे पि देय्यधम्मे दानं इट्ठफलमेव होती ति।

एवं परवादिना चेतसिकधम्मस्स दानभावे पतिट्ठापिते सकवादी इतरेन परियायेन देय्यधम्मस्स दानभावं साधेतुं **दानं इट्ठफलं वुत्तं भगवता** ति (क० व० ३०२) आदिमाह। परवादी पन चीवरादीनं इट्ठविपाकतं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। सुत्तसाधनं परवादीवादे पि

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. च रो.।
३. पुट्ठो रो.। ४. तस्स पटिञ्ञादीसु रो.।
५. तस्स रो.। ६. ० नियाचनत्थं रो.।

R. 97 युज्जति सकवादीवादे पि, न पन एकेनत्थेन। देय्यधम्मो इट्ठफलो ति इट्ठफलभावमत्तमेव पटिक्खित्तं। तस्मा **तेन हि न वत्तब्बं** ति[1] इट्ठफल-
B. 198 भावेनेव न वत्तब्बता युज्जति। दातब्बट्ठेन पन देय्यधम्मो दानमेव। दिन्नञ्हि दानानं सङ्करभावमोचनत्थमेव[2] अयं कथा ति।

दानकथावण्णना निट्ठिता

५. परिभोगमयपुञ्ञकथावण्णना

१३. इदानि परिभोगमयपुञ्ञकथा नाम होति। तत्थ "तेसं दिवा च रत्तो च, सदा पुञ्ञं पवड्ढती" ति (सं० नि० १.३१) च "यस्स भिक्खवे, भिक्खु चीवरं परिभुञ्जमानो" ति (अं० नि० २.५७) च एवमादीनि सुत्तानि अयोनिसो गहेत्वा येसं परिभोगमयं नाम पुञ्ञं अत्थी" ति लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकसिद्धत्थिकसम्मितियानं; ते सन्धाय **परिभोगमयं** ति (क० व० ३०४) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "पुञ्ञं नाम फस्सादयो कुसला धम्मा, न ततो परं[3], तस्मा फस्सादीहि ते वड्ढितब्बं" ति चोदेतुं **परिभोगमयो फस्सो** ति आदि आरद्धं। तं सब्बं इतरेन तेसं अवड्ढनतो पटिक्खित्तं। **लताविया** ति आदीनि "किरियाय वा भावनाय[4] वा विना पि यथा लतादीनि सयमेव वड्ढन्ति, किं ते एवं वड्ढन्ती" ति चोदनत्थं वुत्तानि। तथा पनस्स अवड्ढनतो **न हेवा** ति पटिक्खित्तं।

१४. **न समन्नाहरती** ति (क० व० ३०४) पञ्हे पटिग्गाहकानं परिभोगेन पुरिमचेतना वड्ढति, एवं तं होति पुञ्ञं ति लद्धिवसेन पटिजानाति। ततो **अनावट्टेन्तस्सा** ति आदीहि पुट्ठो दायकस्स चाग-चेतनं सन्धाय पटिक्खिपति। तत्थ **अनावट्टेन्तस्सा** ति दानचेतनाय पुरेचारिकेन आवज्जनेन भवङ्गं अनावट्टेन्तस्स अपरिवट्टेन्तस्स[5]।
R. 98 **अनाभोगस्सा** ति निराभोगस्स। **असमन्नाहरन्तस्सा** ति न समन्ना-

१. ति एत्थ रो.। २. सागर० रो.।
३. अञ्ञं रो.। ४. भावताय रो.।
५. अपरिवज्जेन्तस्स स्या.।

हरन्तस्स[1] । आवज्जनञ्हि भवङ्गं[2] विच्छिन्दित्वा अत्तनो गतमग्गे उप्पज्जमानं दानचेतनं समन्नाहरति नाम । एवं किच्चेन इमिना चित्तेन असमन्नाहरन्तस्स पुञ्ञं होती ति पुच्छति ।

अमनसिकरोन्तस्सा ति मनं अकरोन्तस्स । आवज्जनेन[3] हि तदनन्तरं उप्पज्जमानं मनं करोति नाम । एवं अकरोन्तस्सा ति अत्थो । उपयोगवचनस्मिञ्हि एतं भुम्मं । **अचेतयन्तस्सा** ति चेतनं अनुप्पादेन्तस्स । **अपत्थेन्तस्सा** ति पत्थनासङ्खातं कुसलच्छन्दं अकरो- B. 199
न्तस्स । **अप्पणिदहन्तस्सा** ति दानचेतनावसेन चित्तं अट्ठपेन्तस्सा ति अत्थो । **ननु आवट्टेन्तस्सा** ति वारे **आभोगस्सा** ति आभोगवतो । अथ वा आभोगा[4] अस्स, आभोगस्स वा अनन्तरं तं पुञ्ञं होती ति अत्थो ।

१५. **द्विन्नं फस्सानं** ति (क० व० ३०५) आदीसु पि एकक्खणे दायकस्स द्विन्नं फस्सादीनं अभावा पटिक्खिपति, दायकस्स च परिभुञ्जन्तस्स चा[5] ति उभिन्नं फस्सादयो सन्धाय पटिजानाति । अपिचस्स पञ्चन्नं विञ्ञाणानं समोधानं होती ति लद्धि, तस्सा पि वसेन पटिजानाति । अथ नं सकवादी परियायस्स द्वारं पि दहित्वा उजुविपच्चनीकवसेन चोदेतुं **कुसलादि** पञ्हं पुच्छति । तत्रा पि कुसलाकुसलानं एकस्सेकक्खणे सम्पयोगाभावं सन्धाय पटिक्खिपति । परिभोगमयं पन चित्तविप्पयुत्तं उप्पज्जती ति लद्धिया पटिजानाति । अथ नं सकवादी सुत्तेन निग्गण्हाति ।

१६. सुत्तसाधने आरामरोपकादीनं अनुस्सरणपटिसङ्खरणादि-वसेन अन्तरन्तरा[6] उप्पज्जमानं पुञ्ञं सन्धाय **सदा पुञ्ञं पवड्ढती** ति (क० व० ३०६) वुत्तं । **अप्पमाणो तस्स पुञ्ञाभिसन्दो** ति इदं[7] अप्पमाणविहारिनो दिन्नपच्चयत्ता च "एवरूपो मे चीवरं

१. रो. पोत्थके नत्थि ।
२. ० पि रो. ।
३. आवज्जनञ्हि स्या. ।
४. आभोगो अस्स सी., स्या. ।
५. वा रो. ।
६. अनन्तरा रो. ।
७. ० पि स्या. रो. ।

परिभुञ्जती" ति अनुमोदनवसेन च[1] वुत्तं। तं सो **परिभोगमयं** ति R. 99 सल्लक्खेति। यस्मा पन पटिग्गाहकेन पटिग्गहेत्वा अपरिभुत्ते पि देय्यधम्मे पुञ्ञं होति येव, तस्मा सकवादीवादो व बलवा, तत्थ पटिग्गाहकेन पटिग्गहिते ति अत्थो दट्ठब्बो। सेसं उत्तानत्थमेवा ति।

परिभोगमयपुञ्ञकथावण्णना निट्ठिता

६. इतो दिन्नकथावण्णना

१८. इदानि इतो दिन्नकथा नाम होति। तत्थ येसं "इतो दिन्नेन यापेन्ति, पेता कालङ्कता तहिं" ति (खु० नि० १. ६) वचनं निस्साय "यं इतो चीवरादि दिन्नं तेनेव यापेन्ती" ति लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकसिद्धत्थिकानं; ते सन्धाय **इतो दिन्नेना** ति B. 200 (क० व० ३०७) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। पुन चीवरादिवसेन अनुयुत्तो पटिक्खिपति। **अञ्ञो अञ्ञस्स कारको** ति अञ्ञस्स विपाकदायकानं कम्मानं अञ्ञो कारको, न अत्तना व अत्तनो कम्मं करोती ति वुत्तं होति। एवं पुट्ठो पन इतरो सुत्तविरोधभयेन पटिक्खिपति। **दानं देन्तं** ति दानं ददमानं दिस्वा ति अत्थो। तत्थ यस्मा अत्तनो[2] अनुमोदितत्ता[3] च तेसं[3] तत्थ भोगा उप्पज्जन्ति, तस्मास्स इमिना कारणेन लद्धि पतिट्ठपेन्तस्सा पि अप्पतिट्ठिताव होति। न हि ते इतो दिन्नेनेव वत्थुना यापेन्ति। सेसेसु पि सुत्तसाधनेसु एसेव नयो ति।

इतो दिन्नकथावण्णना निट्ठिता

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. अत्तानं रो.।
३-३. अनुमादित्थ व ते रो.।

७. पथवी कम्मविपाको-ति-कथावण्णना

२२. इदानि पथवी कम्मविपाको-ति-कथा नाम होति । तत्थ यस्मा "अत्थि इस्सरियसंवत्तनियं कम्मं, आधिपच्चसंवत्तनियं कम्मं" ति एत्थ इस्सरानं भावो[1] इस्सरियं नाम, अधिपतीनं च भावो[2] आधिपच्चं नाम, पथविस्सरियआधिपच्चसंवत्तनिकं च कम्मं अत्थी ति वुत्तं । तस्मा येसं "पथवी कम्मविपाको" ति लद्धि, सेय्यथापि R. 100
अन्धकानं; ते सन्धाय **पथवी** ति (क० व० ३०६) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **सुखवेदनीया** ति आदि कम्मविपाकसभावदस्सनवसेन वुत्तं । "फस्सो होती" ति आदिना नयेन निद्दिट्ठेसु विपाकेसु फस्सो सुखवेदनीयादिभेदो होति । सो[3] च सञ्ञादयो च सुखवेदनादीहि सम्पयुत्ता, वेदनादयो सञ्ञादीहि, सब्बे पि सारम्मणा, अत्थि च नेसं पुरेचारिकआवट्टनादिसङ्खातं आवज्जनं, कम्मपच्चयभूता चेतना,[4] यो[4] तत्थ इट्ठविपाको, तस्स पत्थना, पणिधानवसेन पवत्ता मूलतण्हा, किं ते एवरूपा पथवी ति पुच्छति । इतरो पटिक्खिपति । पटिलोमपुच्छादीनि उत्तानत्थानेव ।

२३. **कम्मविपाको परेसं साधारणो** ति (क० व० ३११) पञ्हे फस्सादयो सन्धाय पटिक्खिपति, कम्मसमुट्ठानं रूपं च पथवीआदीनं येव च साधारणभावं सन्धाय पटिजानाति । **असाधारणमञ्ञेसं** ति सुत्तं परसमयतो आहरित्वा दस्सितं । **सब्बे सत्ता पथविं परिभुञ्जन्ती** B. 201
ति पञ्हे पथविं अनिस्सिते सन्धाय पटिक्खिपति, निस्सिते सन्धाय पटिजानाति । **पथविं अपरिभुञ्जित्वा परिनिब्बायन्ती** ति पञ्हे[5] आरुप्पे परिनिब्बायन्तानं वसेन पटिजानाति । **कम्मविपाकं अखेपेत्वा** ति इदं परसमयवसेन वुत्तं । कम्मविपाकञ्हि खेपेत्वा व परिनिब्बायन्ती ति तेसं लद्धि । सकसमये पन कतोकासस्स कम्मस्स उप्पन्नं विपाकं अखेपेत्वा परिनिब्बानं नत्थि । तेसं च लद्धिया पथवी साधारणविपाकत्ता उप्पन्नविपाको येव होति । तं विपाकभावेन ठितं अखेपेत्वा

१. सी., रो पोत्थकेसु नत्थि ।
२. सी., रो. पोत्थकेसु नत्थि ।
६. ते रो. ।
४-४. चेतनादयो रो. ।
५ रो. पोत्थके नत्थि ।

परिनिब्बानं न युज्जती ति चोदेतुं वट्टति । इतरो[1] लद्धिवसेन[2] पटिक्खिपति । **चक्कवत्तिसत्तस्स कम्मविपाकं** ति पञ्हे असाधारणं फस्सादिं[3] सन्धाय पटिक्खिपति, साधारणं पटिजानाति । पथवीसमुद्दसूरियचन्दिमादयो हि सब्बेसं साधारणकम्मविपाको ति तेसं लद्धि ।

R. 101 २४. **इस्सरियसंवत्तनियं** ति (क० व० ३१२) एत्थ इस्सरियं नाम बहुधनता । आधिपच्चं नाम सेसजने अत्तनो वसे वत्तेत्वा तेहि गरुकातब्बट्ठेन अधिपतिभावो । तत्थ कम्मं पटिलाभवसेन तंसंवत्तनिकं नाम होति, न जनकवसेन । तस्मा विपाकभावे[4] असाधकमेतं[5] ति ।

पथवीकम्मविपाको-ति-कथावण्णना निट्ठिता

८. जरामरणं विपाको ति कथावण्णना

२५. इदानि जरामरणं विपाको ति कथा नाम[6] होति । तत्थ येसं "अत्थि दुब्बण्णसंवत्तनियं कम्मं अप्पायुकसंवत्तनियं कम्मं" ति एत्थ दुब्बण्णता नाम जरा । अप्पायुकता नाम मरणं । तं संवत्तनियं च कम्मं अत्थि । तस्मा जरामरणं विपाको ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । पटिलोमपञ्हे **अनारम्मणं** ति रूपधम्मानं ताव अनारम्मणमेव,[7] अरूपानं[8] पन जरामरणं सम्पयोगलक्खणाभावा अनारम्मणमेव ।

२६. **अकुसलानं धम्मानं जरामरणं अकुसलानं धम्मानं विपाको** ति पञ्हे जरामरणेन नाम अनिट्ठविपाकेन भवितब्बं ति लद्धिया
B. 202 पटिजानाति । तेनेव कारणेन कुसलानं धम्मानं जरामरणस्स कुसलविपाकतं पटिक्खिपति । परतो चस्स अकुसलविपाकतञ्ञेव पटिजानाति ।

---

१. ० पि रो।
२. ० वसेनेव रो. ।
३. फस्सादीनि रो. ।
४. कम्मविपाकभावे रो. ।
५. असाधारणं रो. ।
६. रो. पोत्थके नत्थि ।
७. ० चेव रो. ।
८. ० पि रो. ।

कुसलानं च अकुसलानं चा ति (क० व० ३१३) पुच्छावसेन एकतो कतं, एकक्खणे पन तं नत्थि। अब्याकतानं अविपाकानं जरामरणं विपाको ति वत्तब्बताय परियायो नत्थि, तस्मा अब्याकतवसेन **पुच्छा न कता**।

२७. **दुब्बण्णसंवत्तनियं** ति एत्थ दुब्बण्णियं नाम अपरिसुद्धवण्णता। अप्पायुकता नाम आयुनो चिरं पवत्तितुं असमत्थता। तत्थ अकुसलकम्मं कम्मसमुट्ठानस्स दुब्बण्णरूपस्स कम्मपच्चयो होति, असदिसत्ता पनस्स तं विपाको न होति। उतुसमुट्ठानादिनो[1] पन तं पटिलाभवसेन आयुनो च उपच्छेदकवसेन[2] पच्चयो होति। एवमेतं R. 102 परियायेन तं संवत्तनिकं नाम होति, न विपाकफस्सादीनं विय जनकवसेन, तस्मा विपाकभावे असाधकं। सेसमेत्थ हेट्ठा वुत्तसदिसमेवा ति

जरामरणं विपाको ति कथावण्णना निट्ठिता

९. अरियधम्मविपाककथावण्णना

२८. इदानि अरियधम्मविपाककथा नाम होति। तत्थ येसं किलेसप्पहानसत्तमेव सामञ्ञफलं, न चित्तचेतसिका धम्मा ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **नत्थि अरियधम्मविपाको** ति (क० व० ३१४) पुच्छा सकवादिस्स। तत्थ **अरियधम्मविपाको** ति मग्गसङ्खातस्स अरियधम्मस्स विपाको। किलेसक्खयमत्तं अरियफलं ति लद्धिया पटिञ्ञा इतरस्स। **सामञ्ञं** ति समणभावो, मग्गस्सेतं नामं। "सामञ्ञं च वो, भिक्खवे, देसेस्सामि सामञ्ञफलं चा" ति (सं० नि० ४.२२) हि वुत्तं। ब्रह्मञ्ञे पि एसेव नयो।

सोतापत्तिफलं न विपाको ति आदीसु सोतापत्तिमग्गादीनं अपचयगामितं[3] सन्धाय अरियफलानं नविपाकभावं पटिजानाति,

१. उतुसमुट्ठानादिभेदेन सी.। २. उच्छेदनवसेन रो.।
३. आचयगामिनं रो.।

B. 203 दानफलादीनं पटिक्खिपति । सो हि[१] आचयगामत्तिकस्स[२] एवं अत्थं धारेति – विपाकसङ्खातं आचयं गच्छन्ति,[३] तं वा आचिनन्ता[४] गच्छन्ती ति आचयगामिनो, विपाकं अपचिनन्ता गच्छन्ती ति अपचयगामिनो ति । तस्मा एवं पटिजानाति च पटिक्खिपति च ।

३०. **कामावचरं कुसलं सविपाकं आचयगामी** ति (क० व० ३१५) आदिका पुच्छा परवादिस्स, पटिञ्ञा च पटिक्खेपो च सकवादिस्स । लोकियञ्हि[५] कुसलं विपाकचुतिपटिसन्धियो चेव वट्टं च आचिनन्तं गच्छती ति आचयगामि । लोकुत्तरकुसलं चुति-पटिसन्धियो चेव वट्टं च अपचिनन्तं गच्छती ति अपचयगामि । R. 103 एवमेतं[६] सविपाकमेव होति, न अपचयगामिवचनमत्तेन अविपाकं । इममत्थं सन्धायेत्थ सकवादिनो पटिञ्ञा च पटिक्खेपो च वेदितब्बा[७] ति ।

अरियधम्मविपाककथावण्णना निट्ठिता

१०. विपाको विपाकधम्मधम्मो ति कथावण्णना

३१. इदानि विपाको विपाकधम्मधम्मो ति कथा नाम[८] होति । तत्थ यस्मा विपाको विपाकस्स अञ्ञमञ्ञादिपच्चयवसेन पच्चयो होति, तस्मा विपाको पि विपाकधम्मधम्मो ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **तस्स विपाको** ति (क० व० ३१६) तस्स विपाकधम्मधम्मस्स विपाकस्स यो विपाको, सो पि ते[९] विपाकधम्मधम्मो होती ति पुच्छति । इतरो आयतिं विपाकदानाभावं सन्धाय पटिक्खिपति । दुतियं पुट्ठो तप्पच्चया पि अञ्ञस्स विपाकस्स उप्पत्तिं सन्धाय पटिजानाति । एवं सन्ते पनस्स

१. च रो. ।
२. आचयगामी ति कस्स रो. ।
३. गच्छति रो. ।
४. आचयं ० रो. ।
५. लोकिकं हि रो.
६. एवञ्चेतं रो. ।
७. वेदितब्बो ति रो. ।
८. रो. पोत्थके नत्थि ।
९. ते वादे रो. ।

कुसलाकुसलस्स विय तस्सा पि विपाकस्स विपाको, तस्सा पि विपाको ति वट्टानुपच्छेदो आपज्जती ति पुट्ठो[1] समयविरोधभयेन पटिक्खिपति ।

विपाको ति वा ति आदिम्हि वचनसाधने[2] पन यदि विपाकस्स
विपाकधम्मधम्मेन एकत्थता[4] भवेय्य, कुसलाकुसलब्याकतानं एकत्थतं[5]
आपज्जेय्या ति पटिक्खिपति । **विपाको च विपाकधम्मधम्मो चा** ति
एत्थ अयं अधिप्पायो – सो हि चतूसु विपाकक्खन्धेसु एकेकं B. 204
अञ्ञमञ्ञपच्चयादीसु पच्चयट्ठेन विपाकधम्मधम्मतं[6] पच्चयुप्पन्नट्ठेन च
विपाकं मञ्ञमानो "विपाको विपाकधम्मधम्मो" ति पुट्ठो आमन्ता ति
पटिजानाति । अथ नं सकवादी "यस्मा तया एकक्खणे चतूसु खन्धेसु
विपाको[7] विपाकधम्मधम्मो पि अनुञ्ञातो, तस्मा तेसं सहगतादिभावो
आपज्जती" ति चोदेतुं एवमाह । इतरो कुसलाकुसलसङ्खातं[8] R. 104
विपाकधम्मधम्मं सन्धाय पटिक्खिपति । **तञ्ञेव अकुसलं** ति यदि ते
विपाको विपाकधम्मधम्मो, यो अकुसलविपाको, सो अकुसलं
आपज्जति । कस्मा[9] ? विपाकधम्मधम्मेन एकत्ता । **तञ्ञेव कुसलं** ति
आदीसु पि एसेव नयो ।

अञ्ञमञ्ञपच्चया ति इदं सहजातानं पच्चयमत्तवसेन वुत्तं, तस्मा असाधकं । महाभूतानं पि च अञ्ञमञ्ञपच्चयता वुत्ता, न च तानि विपाकानि, न[10] च[10] विपाकधम्मधम्मानी ति ।

विपाको विपाकधम्मधम्मो ति कथावण्णना निट्ठिता

सत्तमो वग्गो समत्तो

---

१. तं ० रो. ।
२. साधनेन रो. ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. एकट्ठं रो. ।
५. एकत्तं रो. ।
६. विपाकधम्मधम्मं तं रो. ।
७. ० पि रो. ।
८. कुसलाकुसलसंखातं स्या. ।
९. तस्मा रो. ।
१०-१०. रो. पोत्थके नत्थि ।

८. अट्ठमो वग्गो

१. छगतिकथावण्णना

R. 105 १-२. इदानि छगतिकथा[1] नाम होति। तत्थ असुरकायेन सद्धिं छगतियो ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव उत्तरापथकानं च; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं सकवादी "पञ्च खो पनिमा, सारिपुत्त, गतियो" ति (म० नि० १.१०४) लोमहंसनपरियाये परिच्छिन्नानं गतीनं वसेन चोदेतुं **ननु पञ्च गतियो** ति (क० व० ३१८) आदिमाह। इतरो सुत्तविरोधभयेन पटिजानाति। कस्मा[2] पन सकवादी छ गतियो न सम्पटिच्छति, ननु "चतूहापायेहि च विप्पमुत्तो"[3] ति एत्थ असुरकायो पि गहितो ति। सच्चं गहितो, न पनेसा गति। कस्मा? विसुं अभावतो। असुर-
B. 205 कायस्मिञ्हि कालकञ्चिका[4] असुरा पेतगतिया सङ्गहिता, वेपचित्तिपरिसा देवगतिया, असुरकायो ति विसुं एका गति नाम नत्थि।

इदानि एतमेव अत्थं दस्सेतुं **ननु कालकञ्चिका** ति आदि[5] आरद्धं। तत्थ **समानवण्णा** ति सदिसरूपसण्ठाना बीभच्छा विरूपा दुद्दस्सिका। **समानभोगा** ति सदिसमेथुनसमाचारा। **समानाहारा** ति सदिसखेळसिङ्घाणिकपुब्बलोहितादिआहारा। **समानायुका** ति सदिसआयुपरिच्छेदा। **आवाहविवाहं** ति कञ्ञागहणं चेव कञ्ञादानं च। सुक्कपक्खे **समानवण्णा** ति सदिसरूपसण्ठाना अभिरूपा पासादिका दस्सनीया पभासम्पन्ना। **समानभोगा** ति सदिसपञ्चकामगुणभोगा। **समानाहारा** ति सदिससुधाभोजनादिआहारा। सेसं वुत्तनयमेव। **ननु अत्थि असुरकायो** ति इदं असुरकायस्सेव साधकं। तस्स पन विसुं गतिपरिच्छेदाभावेन न[6] गतिसाधकं ति।

छगतिकथावण्णना निट्ठिता

---

१. गतिकथा रो.
२. तस्मा रो.।
३. विमुत्तो एत्थ रो.।
४. कालकञ्जका रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि।
६. रो. पोत्थके नत्थि।

२. अन्तराभवकथावण्णना

३. इदानि अन्तराभवकथा नाम होति । तत्थ येसं “अन्तरा R. 106 परिनिब्बायी” ति सुत्तपदं अयोनिसो गहेत्वा “अन्तराभवो नाम अत्थि, यत्थ सत्तो दिब्बचक्खुको विय अदिब्बचक्खुको, इद्धिमा विय अनिद्धिमा मातापितिसमागमं चेव उतुसमयं च ओलोकयमानो सत्ताहं वा अतिरेकसत्ताहं वा तिट्ठती” ति लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय **अत्थी** ति (क० व० ३१९) पुच्छा सकवादिस्स, लद्धियं ठत्वा पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं ये च[1] भगवता तयो भवा वुत्ता, तेसं वसेन चोदेतुं **कामभवो** ति आदिमाह । तत्रायं अधिप्पायो – यदि ते अन्तराभवो नाम कोचि भवो अत्थि, तेन कामभवादीनं येव अञ्ञतरेन भवितब्बं पञ्चवोकारभवादिना विय, तेन तं पुच्छामि[2] – “किं ते अयं[3] अन्तराभवो नाम कामभवो, उदाहु रूपभवो अरूपभवो वा” ति ? इतरो तथा अनिच्छन्तो सब्बं पटिक्खिपति । **कामभवस्स** चा ति आदि यदि अन्तराभवो नाम अत्थि, इमेसं भवानं अन्तरा छिन्नं सीमानं सीमन्तरिका विय भवेय्या B. 206 ति चोदेतुं आरद्धं । परवादी पन तथा अनिच्छन्तो सब्बपञ्हे पटिक्खिपति केवलं लद्धिया, न सहधम्मेन । तेनेव नं सकवादी ‘नो वत रे’ ति पटिसेधेति ।

४. **पञ्चमी सा योनी** ति (क० व० ३१९) आदीनि पि यथापरिच्छिन्नयोनिआदीसु सो समोधानं न गच्छति, अथ तेन ततो ततो[4] अतिरेकेन भवितब्बं ति चोदेतुं वुत्तानि । **अन्तराभवूपगं कम्मं** ति यदि सो पि एको भवो, यथा कामभवूपगादीनि कम्मानि अत्थी ति सत्थारा विभजित्वा दस्सितानि, एवं तदुपगेना पि कम्मेन भवितब्बं ति चोदनत्थं वुत्तं । यस्मा पन परसमये अन्तराभवूपगं नाम पाटियेक्कं कम्मं नत्थि, यं यं भवं उपपज्जिस्सति, तदुपगेनेव कम्मेन अन्तराभवे निब्बत्तती ति तेसं लद्धि, तस्मा ‘न हेवं’ ति पटिक्खित्तं । **अत्थि**

१. रो. पोत्थके नत्थि ।
२. पुच्छाम रो. ।
३. यदि रो. ।
४. रो. पोत्थके नत्थि ।

R. 107 **अन्तराभवूपगा सत्ता** ति पुट्ठो पि कामभवूपगा येव नाम ते ति लद्धिया पटिक्खिपति । **जायन्ती** ति आदीनि पुट्ठो पि तत्थ जातिजरामरणानि चेव चुतिपटिसन्धिपरम्परं च अनिच्छन्तो पटिक्खिपति । रूपादिवसेन पुट्ठो पि यस्मा अन्तराभवसत्तस्स[1] अनिदस्सनं रूपं,[2] वेदनादयो[2] पि अञ्ञेसं विय न ओळारिका ति तस्स लद्धि, तस्मा पटिक्खिपति । इमिनाव[3] कारणेन पञ्चवोकारभवभावे पि पटिक्खेपो वेदितब्बो ।

५. इदानि **कामभवो भवो गती** ति (क० व० ३२०) आदि भवसंसन्दनं नाम होति । तत्रायं अधिप्पायो – यदि ते अन्तराभवो नाम कोचि भवो[4] भवेय्य, यथा कामभवादीसु भवगतिआदिभेदो लब्भति, तथा तत्रा[5] पि लब्भेथ । यथा वा तत्थ न लब्भति, तथा इमेसु पि न लब्भेथ । समानस्मिम्हि भवभावे[6] एतेस्वेवेस विभागो अत्थि, न इतरस्मिं ति को एत्थ विसेसहेतू ति । इतरो पुन[7] लद्धिमत्तवसेन तं तं पटिजानाति चेव पटिक्खिपति च ।

६. **सब्बेसञ्ञेव सत्तानं अत्थि अन्तराभवो** ति (क० व० ३२२) पुट्ठो यस्मा निरयूपगअसञ्ञसत्तूपगअरूपूपगानं अन्तराभवं न इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति । तेनेव कारणेन पटिलोमे[8] पटिजानाति । **आनन्तरियस्सा**[9] ति आदि येसं सो अन्तराभवं न इच्छति, ते ताव
B. 207 विभजित्वा दस्सेतुं वुत्तं । तं सब्बं पाळिअनुसारेनेव वेदितब्बं सद्धिं सुत्तसाधनेना ति ।

अन्तराभवकथावण्णना निट्ठिता

३. कामगुणकथावण्णना

८. इदानि कामगुणकथा नाम होति । तत्थ सकसमये ताव **कामधातू** ति वत्थुकामा[10] पि वुच्चन्ति – किलेसकामा पि कामभवो

१. ० भवूपगसत्तस्स रो. ।
२-२. रूपवेदनादयो रो. ।
३. ० च रो. ।
४. गतिभवो सी., रो. ।
५. तत्था रो. ।
६. भवाभावे रो. ।
७. पन रो. ।
८. पटिलोमेन स्या. ।
९. आनन्तरिकस्सादि सी., स्या. ।
१०. ० ति रो. ।

पि[1]। एतेसु[2] हि वत्थुकामा कमनीयट्ठेन कामा, सभावनिस्सत्त-सुञ्ञतट्ठेन धातू ति कामधातु। किलेसकामा[3] कमनीयट्ठेन चेव R. 108 कमनट्ठेन च कामा,[3] यथावुत्तेनेवत्थेन धातू ति कामधातु। कामभवो कमनीयट्ठेन कमनट्ठेन वत्थुकामपवत्तिदेसट्ठेना ति तीहि कारणेहि कामो,[4] यथावुत्तेनेवत्थेन धातू ति कामधातु। परसमये पन–"पञ्चिमे, भिक्खवे, कामगुणा" ति वचनमत्तं निस्साय पञ्चेव कामगुणा कामधातू ति गहितं। तस्मा येसं अयं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय कामधातुनानत्तं बोधेतुं[5] **पञ्चेवा** ति (क० व० ३२३) पुच्छा सकवादिस्स, लद्धिवसेन पटिञ्ञा इतरस्स। **ननु अत्थी** ति आदि किलेसकामदस्सनत्थं वुत्तं। तत्थ **तप्पटिसंयुत्तो** ति कामगुणपटिसंयुत्तो, कामगुणारम्मणो ति अत्थो। **नो च वत रे वत्तब्बे पञ्चेवा** ति इमेसु तप्पटिसंयुत्तछन्दादीसु सति पञ्चेव कामगुणा कामधातू ति न वत्तब्बं। एते पि हि छन्दादयो कमनीयट्ठेन कामा च धातु चा ति पि कामधातु। कमनट्ठेन कामसङ्खाता धातू ति पि कामधातू ति अत्थो।

मनुस्सानं चक्खु ति आदि वत्थुकामदस्सनत्थं वुत्तं। तत्थ परवादी छन्नं पि आयतनानं वत्थुकामभावेन नकामधातुभावं[6] पटिक्खिपित्वा पुन मनो ति पुट्ठो महग्गतलोकुत्तरं सन्धाय नकामधातुभावं पटिजानाति। यस्मा पन सब्बो पि तेभूमकमनो कामधातु येव, तस्मा नं सकवादी सुत्तेन निग्गण्हाति।

६. **कामगुणा भवो** ति (क० व० ३२४) आदि भवस्स कामधातु- B. 208 भावदस्सनत्थं वुत्तं। यस्मा पन कामगुणमत्ते भवो ति वोहारो नत्थि, तस्मा परवादी नहेवा ति पटिक्खिपति। **कामगुणूपगं कम्मं** ति आदि सब्बं कामगुणमत्तस्स नकामधातुभावदस्सनत्थं वुत्तं। कामधातु-सङ्खातकामभवूपगमेव हि कम्मं अत्थि, कामभवूपगा एव च सत्ता

---

१. ति रो.।
२. पि हि रो.।
३-३. किलेसकमनीयट्ठेन च कामा रो.।
४. कामा रो.।
५. चोदेतुं स्या.।
६. कामधातुभावं रो.।

R. 109 होन्ति । तत्थ जायन्ति जियन्ति मियन्ति चवन्ति उपपज्जन्ति, न कामगुणेसू ति इमिना उपायेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो ति ।

कामगुणकथावण्णना निट्ठिता

४. कामकथावण्णना

११-१२. इदानि कामकथा नाम होति । तत्थ येसं "पञ्चिमे भिक्खवे, कामगुणा" ति वचनमत्तं निस्साय रूपायतनादीनि पञ्चेवायतनानि कामा ति लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं; तेसं किलेसकामस्सेव निप्परियायेन कामभावं दस्सेतुं **पञ्चेवा** ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

कामकथावण्णना निट्ठिता

५. रूपधातुकथावण्णना

१३-१४. इदानि रूपधातुकथा नाम होति । तत्थ "रूपिनो[1] धम्मा रूपधातु नामा" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **रूपिनो** ति (क० व० ३२७) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं सकवादी यस्मा रूपधातु नाम रूपभवो, न रूपमत्तमेव, तस्मा तेनत्थेन चोदेतुं **रूपधातू** ति आदिमाह । तं सब्बं कामगुणकथायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं । **साव कामधातू** ति पुट्ठो भूमिपरिच्छेदेन विरोधं पस्समानो पटिक्खिपति । पुन दळ्हं कत्वा पुट्ठो अत्तनो लद्धिवसेन पटिजानाति । एवं सन्ते पन द्वीहि भवेहि समन्नागतता आपज्जति, तेन तं सकवादी **कामभवेन चा** ति आदिमाह । इतरो एकस्स द्वीहि समन्नागतभावतो पटिक्खिपती ति ।

रूपधातुकथावण्णना निट्ठिता

---

१. ०व रो. ।

६. अरूपधातुकथावण्णना

१५-१६. अरूपधातुकथाय पि इमिनावुपायेन अत्थो वेदितब्बो । B. 209
अरूपधम्मेसु पन वेदनाक्खन्धमेव गहेत्वा वेदना भवो ति आदिना नयेनेत्थ देसना कता । तत्थ किं ते अरूपिनो धम्मा ति सङ्खं गता R. 110
वेदनादीसु अञ्ञातरा होती ति एवमत्थो दट्ठब्बो । सेसं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति ।

अरूपधातुकथावण्णना निट्ठिता

७. रूपधातुया-आयतनकथावण्णना

१७. इदानि रूपधातुया आयतनकथा नाम होति । तत्थ येसं "रूपी मनोमयो सब्बङ्गपच्चङ्गी अहीनिन्द्रियो" ति (दी० नि० १.३०) सुत्तं निस्साय ब्रह्मकायिकानं घानादिनिमित्तानि पि आयतनानेवा ति कप्पेत्वा सळायतनिको तेसं अत्तभावो ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय **सळायतनिको** ति (क० व० ३२६) पुच्छा सकवादिस्स, लद्धिवसेन पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं यं तत्थ आयतनं नत्थि, तस्स वसेन चोदेतुं **अत्थि तत्थ घानायतनं** ति आदि आरद्धं । ततो परवादी यं तत्थ अज्झत्तिकानं तिण्णं आयतनानं घानादिकं सण्ठाननिमित्तं तदेव आयतनं ति लद्धिया पटिजानाति । बाहिरानं गन्धायतनादीनं वसेन पुट्ठो घानप्पसादादयो तत्थ न इच्छति, तस्मा तेसं गोचरं पटिसेधेन्तो पटिक्खिपति । पटिलोमपञ्हसंसन्दनपञ्हेसु पि इमिनावुपायेन अत्थो वेदितब्बो ।

१८. अत्थि तत्थ घानायतनं अत्थि गन्धायतनं तेन घानेन तं गन्धं घायती ति तस्मिं येव परसमये[1] एकच्चे आचरिये सन्धाय वुत्तं । ते किर तत्थ छ अज्झत्तिकानि आयतनानि परिपुण्णानि इच्छन्ति, आयतनेन च नाम सकिच्चकेन भवितब्बं ति तेहि घानादीहि ते गन्धादयो

१. पन ० रो. ।

घायन्ति सायन्ति फुसन्ती ति पि इच्छन्ति । तं लद्धिं सन्धाय परवादी आमन्ता ति पटिजानाति ।

B. 210. २०. **अत्थि तत्थ मूलगन्धो** ति (क० व० ३३२) आदीनि पन
R. 111 पुट्ठो अत्थिभावं साधेतुं असक्कोन्तो पटिक्खिपति । **ननु अत्थि तत्थ घाननिमित्तं** ति आदि सण्ठानमत्तस्सेव साधकं, न आयतनस्स, तस्मा उदाहटं पि अनुदाहटसदिसमेवा ति ।

रूपधातुया आयतनकथावण्णना निट्ठिता

८. अरूपे रूपकथावण्णना

२२-२४. इदानि अरूपे रूपकथा नाम होति । तत्थ येसं "विञ्ञाणपच्चया नामरूपं" ति वचनतो आरुप्पभवे पि ओळारिकरूपा निस्सटं सुखुमरूपं अत्थी ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **अत्थि रूपं** ति (क० व० ३३३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

अरूपे रूपकथावण्णना निट्ठिता

९. रूपं कम्मं ति कथावण्णना

२५-३७. इदानि रूपं कम्मं ति कथा नाम होति । तत्थ येसं कायवचीविञ्ञत्तिसङ्खातं रूपमेव कायकम्मं वचीकम्मं नाम, तं च कुसलसमुट्ठानं कुसलं, अकुसलसमुट्ठानं अकुसलं ति लद्धि, सेय्यथापि महिसासकानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय **कुसलेन चित्तेन समुट्ठितं** ति (क० व० ३३४) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं सचे तं कुसलं, य्वायं[1] सारम्मणादिभेदो कुसलस्स लब्भति, अत्थि ते सो तस्सा ति चोदेतुं **सारम्मणं** ति आदि आरद्धं । तत्थ **पत्थना पणिधी** ति चेतनायेवेतं वेवचनं । कुसलचेतना येव हि पकप्पयमाना

१. स्वायं रो. ।

पत्थना ति। पकप्पनवसेन ठितत्ता पणिधी ति च वुच्चति। परतो पन **कुसलेन चित्तेन समुट्ठिता वेदना सञ्ञा चेतना सद्धा** ति आदीसु वेदनादीनञ्ञेव चेत्थ पत्थना पणिधी ति लब्भति, न चेतनाय। कस्मा? द्विन्नं चेतनानं एकतो अभावा, सोतपतितत्ता पन एवं तन्ति गता ति R. 112
वेदितब्बा। **रूपायतनं** ति आदि पुरिमवारे "सब्बन्तं कुसलं" ति संखित्तस्स पभेददस्सनत्थं वुत्तं। सेसा संसन्दननया, वचीकम्मकथा B. 211
"अकुसलेन चित्तेन समुट्ठितं" ति आदिविधानं च सब्बं पाळिअनुसारेनेव वेदितब्बं। **असुची** ति पनेत्थ सुक्कं अधिप्पेतं। सुत्तसाधनं उत्तानत्थमेव।

रूपं कम्मं ति कथावण्णना निट्ठिता

१०. जीवितिन्द्रियकथावण्णना

३८. इदानि जीवितिन्द्रियकथा नाम होति। तत्थ येसं जीवितिन्द्रियं नाम चित्तविप्पयुत्तो अरूपधम्मो, तस्मा रूपजीवितिन्द्रियं नत्थी ति लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **नत्थि रूपीनं धम्मानं आयू** ति (क० व० ३४६) पञ्हे उपादिन्नरूपानं पि तिणकट्ठादीनं पि सन्तानवसेन पवत्तिमेव[1] आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना ति इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति। **अत्थी** ति पञ्हे पि इमिना[2] कारणेन पटिजानाति। **अत्थि अरूपजीवितिन्द्रियं** ति पञ्हे अरूपधम्मानं चित्तविप्पयुत्तं जीवितिन्द्रियसन्तानं नाम अत्थी ति इच्छति, तस्मा पटिजानाति।

३९. **रूपीनं धम्मानं आयु अरूपजीवितिन्द्रियं** ति (क०व०३४७) पञ्हे सत्तसन्ताने रूपिनो वा होन्तु अरूपिनो वा, सब्बेसं चित्तविप्पयुत्तं अरूपजीवितिन्द्रियमेव इच्छति, तस्मा पटिजानाति।

---

१. पवत्तं चेव रो.। २. ०व रो.।

४०. निरोधसमापन्नपञ्हेसु पि चित्तविप्पयुत्तं अरूपजीवितमेव[1] सन्धाय पटिक्खिपति च पटिजानाति च। सकवादी पन तं R. 113 असम्पटिच्छन्तो यं अरूपपवत्ते असति अत्थि, रूपेन तेन[2] भवितब्बं ति चोदेतुं हञ्ची ति (क०व० ३४८) आदिमाह। सङ्खारक्खन्धपञ्हे[3] फस्सादिसङ्खारक्खन्धं सन्धाय पटिक्खिपति, कायकम्मादिसङ्खारक्खन्धं सन्धाय पटिजानाति। कायविञ्ञत्ति वचीविञ्ञत्ति सम्मावाचा सम्मा-कम्मन्तो जीवितिन्द्रियं ति एवमादयो पि धम्मा सङ्खारक्खन्धपरियापन्नातिस्स लद्धि। सकवादी पन तं असम्पटिच्छन्तो यदि निरुद्धे पि अरूपपवत्ते सङ्खारक्खन्धो अत्थि, चतुन्नं पि खन्धानं अत्थिता होतू ति चोदेतुं **अत्थि वेदनाक्खन्धो** ति आदिमाह। इतरो अन्तोसमापत्तिं सन्धाय पटिक्खिपति, समापज्जन्तस्स च वुट्ठहन्तस्स च पुब्बापरभागं सन्धाय पटिजानाति।

B. 212 ४१. असञ्ञसत्तवारे पि एसेव नयो। तस्स हि लद्धिया असञ्ञसत्तानं पटिसन्धिकाले चित्तं उप्पज्जित्वा निरुज्झति, तेन सह चित्तविप्पयुत्तअरूपजीवितिन्द्रियं उप्पज्जित्वा यावतायुकं पवत्तति। तस्मा तेसं जीवितिन्द्रियं नत्थी ति पुट्ठो पटिक्खिपति, अत्थी ति पुट्ठो पटिजानाति। वेदनाक्खन्धादयो पि तेसं पवत्तिवसेन पटिक्खिपति, चुतिपटिसन्धिवसेन पटिजानाति। सकवादी पन तं अनिच्छन्तो[4] "सचे तत्थ एकक्खणे पि वेदनादयो अत्थि, पञ्चवोकारभवत्तं[5] पापुणाती" ति चोदेतुं **पञ्चवोकारभवो** ति (क० व० ३४८) आह। इतरो सुत्तविरोधभया[6] पटिक्खिपति।

४२. **एकदेसं भिज्जती** ति (क० व० ३४८) पञ्हे सम्पयुत्तं भिज्जति, विप्पयुत्तं तिट्ठती ति तस्स लद्धि, तस्मा पटिजानाति। **द्वे जीवितिन्द्रियानी** ति पुच्छा परवादिस्स, पटिञ्ञा सकवादिस्स। रूपारूपवसेन हि द्वे जीवितिन्द्रियानि, तेहि येव सत्तो जीवति, तेसं भङ्गेन

१. अरूपजीवितिन्द्रियमेव रो.।
२. सी., स्या. पोत्थकेसु नत्थि।
३. पञ्हेसु रो.।
४. ० च रो.।
५. ० भवत्थं रो.।
६. ० भयेन रो.।

मरती ति वुच्चति। चुतिक्खणस्मिञ्हि द्वे पि जीवितानि सहेव भिज्जन्ति।

जीवितिन्द्रियकथावण्णना निट्ठिता

११. कम्महेतुकथावण्णना

४४. इदानि कम्महेतुकथा नाम होति। तत्थ येन अरहता R. 114
पुरिमभवे अरहा अब्भाचिक्खितपुब्बो, सो तस्स कम्मस्स हेतु अरहत्ता परिहायती ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय **कम्महेतू** ति (क० व० ३४६) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसं परिहानिकथायं वुत्तनयमेव।

हन्द हि अरहन्तानं अब्भाचिक्खती ति इदं यस्स कम्मस्स हेतु परिहायति, तं सम्पटिच्छापेतुं वदति। अथ नं सकवादी तं पक्खं पटिजानापेत्वा "यदि एवं येहि अरहन्तो न[1] अब्भाचिक्खितपुब्बा, ते सब्बे अरहत्तं पापुणेय्युं" ति चोदेतुं **ये केची** ति आदिमाह। इतरो तस्स कम्मस्स अरहत्तं सम्पापुणने[2] नियामं अपस्सन्तो पटिक्खिपति।

कम्महेतुकथावण्णना निट्ठिता
अट्ठमो वग्गो समत्तो

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. सम्पापुणेय्य रो.।

९. नवमो वग्गो

१. आदिसंसदस्सावीकथावण्णना

B. 213, R. 115 १. इदानि आनिसंसदस्सावीकथा[१] नाम होति । तत्थ सकसमये सङ्खारे आदीनवतो निब्बानं च आनिसंसतो पस्सन्तस्स संयोजनप्पहानं होती ति निच्छयो । येसं पन तेसु द्वीसु पि[२] एकंसिकवादं[३] गहेत्वा "आनिसंसदस्साविनो व[४] संयोजनप्पहानं होती" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथस्स "एकंसिकवादो तया गहितो, आदीनवो पि दट्ठब्बो येवा" ति विभागदस्सनत्थं सकवादी **सङ्खारे** ति आदिमाह ।

सङ्खारे च अनिच्चतो मनसिकरोति, निब्बाने च आनिसंसदस्सावी होती ति (क० व० ३५१) पञ्हस्मिं अयमधिप्पायो –– आनिसंसदस्साविस्स संयोजनानं पहानं होती ति तेसं लद्धि । ननु सङ्खारे अनिच्चतो मनसिकरोतो संयोजना पहीयन्ती ति च पुट्ठो आमन्ता ति पटिजानाति । तेन ते सङ्खारे च अनिच्चतो मनसिकरोति, निब्बाने च आनिसंसदस्सावी होती ति इदं आपज्जति, किं सम्पटिच्छसि एतं ति । ततो परवादी एकचित्तक्खणं सन्धाय पटिक्खिपति, दुतियं पुट्ठो नानाचित्तवसेन पटिजानाति । सकवादी पनस्स अधिप्पायं मद्दित्वा अनिच्चमनसिकारस्स[५] आनिसंसदस्साविताय च एकतो पटिञ्ञातत्ता **द्विन्नं फस्सानं द्विन्नं चित्तानं समोधानं होती** ति पुच्छति । इतरो द्विन्नं समोधानं अपस्सन्तो पटिक्खिपति । **दुक्खतो** ति आदि पञ्हेसु पि एसेव नयो । किं पनेत्थ सन्निट्ठानं, किं अनिच्चादितो मनसिकरोतो संयोजना पहीयन्ति, उदाहु निब्बाने आनिसंसदस्साविस्स, उदाहु द्वे पि एकतो करोन्तस्सा ति । यदि ताव
R. 116

१. आनिसंसकथा रो. ।
२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. एकंसवादं रो. ।
४. एवं रो. ।
५. ० च रो. ।

अनिच्चादितो मनसिकरोतो पहानं भवेय्य, विपस्सनाचित्तेनेव भवेय्य। अथ[1] आनिसंसदस्साविनो, अनुस्सववसेन निब्बाने आनिसंसं पस्सन्तस्स विपस्सनाचित्तेनेव भवेय्य, अथ द्वे पि एकतो करोन्तस्स भवेय्य, द्विन्नं फस्सादीनं समोधानं भवेय्य। यस्मा पन अरियमग्गक्खणे अनिच्चादि-मनसिकारस्स[2] किच्चं निप्फत्तिं गच्छति पुन निच्चतो ति आदिगहणस्स अनुप्पत्तिधम्मभावतो, निब्बाने च[3] पच्चक्खतोव[4] आनिसंसदस्सनं इज्झति, तस्मा किच्चनिप्फत्तिवसेन अनिच्चादितो मनसिकरोतो आरम्मणं कत्वा पवत्तिवसेन च निब्बाने आनिसंसदस्साविस्स संयो-जनानं पहानं होती ति वेदितब्बं। B. 214

२. **निब्बाने सुखानुपस्सी**[5] ति सुत्तं निब्बाने सुखानुपस्सनादि-भावमेव साधेति, न आनिसंसदस्सावितामत्तेन संयोजनानं पहानं। तस्मा आभतं[6] पि[6] अनाभतसदिसमेवा[7] ति।

आनिसंसदस्सावीकथावण्णना निट्ठिता

२. अमतारम्मणकथावण्णना

३. इदानि अमतारम्मणकथा नाम होति। तत्थ येसं "निब्बानं मञ्ञती" ति आदीनं अयोनिसो अत्थं गहेत्वा अमतारम्मणं संयोजनं होती ति लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं सचे अमतारम्मणं संयोजनं, अमतस्स संयोजनियादिभावो आपज्जती ति चोदेतुं **अमतं संयोजनियं** ति (क० व० ३५२) आदिमाह। इतरो सुत्तविरोधभयेन सब्बं पटिक्खिपति। इमिना[8] उपायेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो। **निब्बानं निब्बानतो** ति आहटसुत्तं पन दिट्ठधम्मनिब्बानं सन्धाय भासितं, तस्मा असाधकं ति।

अमतारम्मणकथावण्णना निट्ठिता

---

१. अथ वा रो.। २. अनिच्चादिमनसिकारं तस्स रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि। ४. पच्चवेक्खतो रो.।
५. सुखानुपस्सती ति रो.। ६-६. रो. पोत्थके नत्थि।
७. अनागतसदिसमेवा ति रो.। ८. ० व रो.।

३. रूपं सारम्मणं ति कथावण्णना

R. 117 ६. इदानि रूपं सारम्मणं ति कथा नाम होति। तत्थ रूपं सपच्चयट्ठेन सारम्मणं नाम होति, न अञ्ञं आरम्मणं करोती ति आरम्मणपच्चयवसेन। येसं पन अविसेसेन रूपं सारम्मणं ति लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय आरम्मणत्थस्स[1] विभागदस्सनत्थं पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ पाळिअनुसारेनेव वेदितब्बं। **न वत्तब्बं** ति पञ्हे ओलुब्भारम्मणं[2] सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स। दुतियपञ्हे पि पच्चयारम्मणं सन्धाय पटिञ्ञा तस्सेव। इति सप्पच्चयट्ठेनेवेत्थ सारम्मणता[3] सिद्धा ति।

रूपं सारम्मणं ति कथावण्णना निट्ठिता

४. अनुसया अनारम्मणकथावण्णना

B. 215 ८-१०. इदानि अनुसया अनारम्मणा ति कथा नाम होति। तत्थ येसं अनुसया नाम चित्तविप्पयुत्ता अहेतुका अब्याकता, तेनेव च[4] अनारम्मणा ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव एकच्चानं च उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **अनुसया** ति (क० व० ३५६) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं अनारम्मणेन नाम एवं विधेन भवितब्बं ति चोदेतुं **रूपं** ति आदिमाह। **कामरागो** ति आदि कामरागानुसयतो अनञ्ञत्ता दस्सितं। **सङ्खारक्खन्धो अनारम्मणो** ति पञ्हे चित्तसम्पयुत्तसङ्खारक्खन्धं सन्धाय पटिक्खिपति। अनुसयं[5] जीवितिन्द्रियं कायकम्मादिरूपं च सङ्खारक्खन्धपरियापन्नं, तं सन्धाय पटिजानाति। इमिनावुपायेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो। **सानुसयो** ति पञ्हे पन अप्पहीनानुसयत्ता सानुसयता अनुञ्ञाता। न अनुसयानं पवत्तिसब्भावा[6]। यो हि अप्पहीनो, न सो अतीतो, नानागतो, न पच्चु-

---

१. आरम्मणस्स रो.।
२. ओट्ठब्बारम्मणं रो.।
३. ० पि रो.।
४. रो. पोत्थके नत्थि।
५. ० च रो.।
६. पवत्तिसंभवा रो.।

प्पन्नो च[1]। मग्गवज्झकिलेसो पनेस[2] अप्पहीनत्ता व[3] अत्थी ति वुच्चति। एवरूपस्स च इदं नाम आरम्मणं ति न वत्तब्बं। तस्मा तं[4] पटिक्खित्तं। तं[5] पनेतं न केवलं अनुसयस्स, रागादीनं पि तादिस- R. 118 मेव, तस्मा अनुसयानं अनारम्मणतासाधकं न होती ति।

अनुसया अनारम्मणा ति कथावण्णना निट्ठिता

५. ञाणं अनारम्मणं ति कथावण्णना

११-१२. इदानि ञाणं अनारम्मणं ति कथा नाम होति। तत्थ यस्मा अरहा चक्खुविञ्ञाणसमङ्गी ञाणी ति वुच्चति, तस्स ञाणस्स तस्मिं खणे आरम्मणं नत्थि, तस्मा ञाणं अनारम्मणं ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ अनुसयकथायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

ञाणं अनारम्मणं ति कथावण्णना निट्ठिता

६. अतीतानागतारम्मणकथावण्णना

१३-१५. इदानि अतीतानागतारम्मणकथा[6] नाम होति। तत्थ यस्मा अतीतानागतारम्मणं नाम नत्थि, तस्मा तदारम्मणेन चित्तेन आरम्मणस्स नत्थिताय अनारम्मणेन भवितब्बं ति अतीतं अनारम्मणं B. 216 ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं, ते सन्धाय **अतीतारम्मणं** ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

अतीतानागतारम्मणकथावण्णना निट्ठिता

---

१. रो. पोत्थके नत्थि।
२. पनेसं रो.।
३. नाम रो.।
४. तम्पि रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि।
६. अतीतारम्मणकथा रो.।

७. वितक्कानुपतितकथावण्णना

१६. इदानि वितक्कानुपतितकथा नाम होति। तत्थ
वितक्कानुपतिता नाम दुविधा – आरम्मणतो च सम्पयोगतो च। तत्थ
R.119 असुकचित्तं नाम वितक्कस्सारम्मणं न होती ति नियमाभावतो सिया
सब्बं चित्तं वितक्कानुपतितं, वितक्कविप्पयुत्तचित्तसब्भावतो पन न
सब्बं चित्तं वितक्कानुपतितं। इति इमं विभागं अकत्वा अविसेसेनेव
सब्बं चित्तं वितक्कानुपतितं ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं,
ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ
पाळिवसेनेव निय्याती ति।

वितक्कानुपतितकथावण्णना निट्ठिता

८. वितक्कविप्फारसद्दकथावण्णना

१७. इदानि वितक्कविप्फारसद्दकथा नाम होति। तत्थ यस्मा
"वितक्कविचारा वचीसङ्खारा" ति वुत्ता, तस्मा सब्बसो वितक्कयतो
विचारयतो अन्तमसो मनोधातुपवत्तिकाले पि वितक्कविप्फारो सद्दो येवा
ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय **सब्बसो** ति
(क० व० ३६२) पुच्छा सकवादिस्स. पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं यदि
वितक्कविप्फारमत्तं सद्दो, फस्सादिविप्फारो पि सद्दो भवेय्या ति चोदेतुं
सब्बसो फुसयतो ति आदिमाह। इतरो तादिसं सुत्तलेसं अपस्सन्तो
पटिक्खिपति। **वितक्कविप्फारो सद्दो सोतविञ्ञेय्यो** ति वितक्कस्स
विप्फारमत्तमेव सद्दो ति कत्वा पुच्छति, न वितक्कविप्फारसमुट्ठितं
B. 217 सुत्तपमत्तानं सद्दं, इतरो पटिक्खिपति। **ननु वितक्कविप्फारसद्दो न
सोतविञ्ञेय्यो** ति इदं तस्सेव लद्धिया दस्सेति। सो हि
वितक्कविप्फारमत्तमेव सद्दं वदति, सो न सोतविञ्ञेय्यो ति। इतरो
पन "वितक्कविप्फारसद्दं सुत्वा आदिसती" ति (दी० नि० ३.८०)
वचनतो सोतविञ्ञेय्यो वा[1] ति वदति।

वितक्कविप्फारसद्दकथावण्णना निट्ठिता

---

१ चा रो.।

९. न यथा चित्तस्स वाचा ति कथावण्णना

१८. इदानि न यथा चित्तस्स[1] वाचा ति कथा नाम होति। तत्थ यस्मा कोचि अञ्ञं भणिस्सामी ति अञ्ञं भणति, तस्मा न यथा चित्तस्स वाचा चित्तानुरूपा चित्तानुगतिका न होति, विना पि चित्तेन पवत्तती R 120 ति येसं लद्धि; सेय्यथापि पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि तंसमुट्ठापकं चित्तं न सिया, फस्सादयो पि तस्मिं खणे न सियुं" ति चोदेतुं **अफस्सकस्सा** ति (क० व० ३६२) आदिमाह। **न भणितुकामो** ति आदीसु यस्मा अञ्ञं भणिस्सामी ति अञ्ञं भणन्तो पि भणितुकामो येव नाम होति, तस्मा न हेवा ति पटिक्खिपति।

१९. **ननु अत्थि कोचि अञ्ञं भणिस्सामी** ति (क० व० ३६३) आदीसु चीवरं ति भणितुकामो चीरं ति भणेय्य। तत्थ[2] अञ्ञं भणितुकामताचित्तं, अञ्ञं भणनचित्तं, इति पुब्बभागेन चित्तेन असदिसत्ता अयथाचित्तो नाम होति, तेनस्स केवलं अनापत्ति नाम होति, न पन चीरं ति वचनसमुट्ठापकचित्तं नत्थि, इति अचित्तका सा वाचा ति अत्थं सन्धाय इमिना उदाहरणेन "न यथा चित्तस्स वाचा" ति पतिट्ठापिता पि अप्पतिट्ठापिता व होती ति।

न यथा चित्तस्स वाचा ति कथावण्णना निट्ठिता

१०. न यथा चित्तस्स कायकम्मं ति कथावण्णना

२०-२१. इदानि न यथा चित्तस्स कायकम्मं ति कथा नाम होति। B. 218 तत्थ यस्मा कोचि अञ्ञत्र गच्छिस्सामी ति अञ्ञत्र गच्छति, तस्मा न यथा चित्तस्स कायकम्मं चित्तानुरूपं चित्तानुगतिकं न होति, विना पि चित्तेन पवत्तती ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं येव, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

न यथा चित्तस्स कायकम्मं ति कथावण्णना निट्ठिता

---

१. वितक्कस्स रो.। २. ० तं रो.।

११. अतीतानागतसमन्नागतकथावण्णना

२२-२४. इदानि अतीतानागतेहि समन्नागतकथा नाम होति। R. 121 तत्थ समन्नागतपञ्ञत्ति पटिलाभपञ्ञत्ती ति द्वे पञ्ञत्तियो वेदितब्बा। तासु पच्चुप्पन्नधम्मसमङ्गी समन्नागतो ति वुच्चति। अट्ठ समापत्तिलाभिनो पन समापत्तियो किञ्चा पि न एकक्खणे पवत्तन्ति, अञ्ञा अतीता होन्ति, अञ्ञा अनागता, अञ्ञा पच्चुप्पन्ना, पटिविज्झित्वा अपरिहीनताय पन लाभी ति वुच्चति। तत्थ येसं इमं विभागं अग्गहेत्वा यस्मा झानलाभीनं अतीतानागतानि[1] झानानि पि अत्थि, तस्मा "ते अतीतेन पि अनागतेन पि समन्नागता" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं। ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ[2] उत्तानत्थमेवा ति[2]। "अट्ठविमोक्खझायी" ति आदि पन लाभीभावस्स साधकं, न समन्नागतभावस्सा ति।

अतीतानागतसमन्नागतकथावण्णना निट्ठिता

नवमो वग्गो समत्तो

---

१. वि रो.।   २. रो. पोत्थके नत्थि।

१०. दसमो वग्गो

१. निरोधकथावण्णना

१-२. इदानि निरोधकथा नाम होति। तत्थ येसं उपपत्ते- R. 122
सियं[1] ति सङ्खं गतस्स भवङ्गचित्तस्स भङ्गक्खणेन सहेव[2] किरिया
ति सङ्खं[3] गता[3] कुसला वा अकुसला वा चत्तारो खन्धा चित्तसमुट्ठान- B. 219
रूपं चा ति पञ्चक्खन्धा उप्पज्जन्ति। तेसु हि अनुप्पन्नेसु भवङ्गे[4]
निरुद्धे सन्ततिविच्छेदो भवेय्या" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते
सन्धाय **उपपत्तेसिये** ति (क०व०३६८) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा
इतरस्स। तत्थ **उपपत्तेसिये** ति चतूसु पि पदेसु बहुवचनभुम्मत्थे
एकवचनभुम्मं। उपपत्तेसियेसु पञ्चसु खन्धेसु अनिरुद्धेसू ति अयञ्हेत्थ
अत्थो। **दसन्नं ति** उपपत्तेसियखन्धानं च किरियखन्धानं च वसेन वुत्तं।
तत्थ पठमपञ्हे खन्धलक्खणवसेन किरियवसेन[5] च पञ्चेव नाम ते
खन्धा[6] ति पटिक्खिपति। दुतियपञ्हे पुरिमपच्छिमवसेन उपपत्तेसिय-
किरियवसेन च नानत्तं सन्धाय पटिजानाति। द्विन्नं पन फस्सानं चित्तानं
च समोधानं पुट्ठो सुत्तलेसाभावेन पटिक्खिपति।

किरिया चत्तारो ति रूपेन विना कुसला अकुसला वा
चत्तारो गहिता। **किरियाञाणं** ति परवादिना चक्खुविञ्ञाणसम-
ङ्गिक्खणे अरहतो अनुञ्ञातं अनारम्मणञाणं। **निरुद्धे मग्गो उप्पज्जती**
ति पुच्छा परवादिस्स, अनिरुद्धे अनुपज्जनतो पटिञ्ञा सकवादिस्स।
मतो मग्गं भावेती ति छलेन पुच्छा परवादिस्स। यस्मा पन पटि- R. 123
सन्धितो याव चुतिचित्ता सत्तो जीवति येव नाम, तस्मा सकवादी **न**
हेवं ति पटिक्खिपति।

निरोधकथावण्णना निट्ठिता

---

१. उपपत्ति सिये रो.। २. हेव रो.।
३. संखाता रो. ४. ० चित्ते स्या.।
५. रो. पोत्थके नत्थि। ६. सन्धाया रो.।

२. रूपं मग्गो ति कथावण्णना

३-५. इदानि रूपं मग्गो ति कथा नाम होति। तत्थ येसं "सम्मावाचाकम्मन्ताजीवा रूपं" ति लद्धि, सेय्यथापि महिसासकसम्मितियमहासंघिकानं; ते सन्धाय **मग्गसमङ्गिस्सा** ति (क०व०३६९) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि ते सम्मावाचादयो रूपं, न विरतियो, यथा सम्मादिट्ठादिमग्गो सारम्मणादिसभावो, एवं तं पि रूपं सिया" ति चोदेतुं **सारम्मणो** ति आदिमाह। तत्थ पटिक्खेपो च पटिञ्ञा च परवादिनो लद्धिअनुरूपेन वेदितब्बा। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

रूपं मग्गो ति कथावण्णना निट्ठिता

३. पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स मग्गकथावण्णना

B. 220 ६. इदानि पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स मग्गकथा[1] नाम होति। तत्थ येसं "चक्खुना रूपं दिस्वा न निमित्तग्गाही होती" ति सुत्तं निस्साय "पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स अत्थि मग्गभावना" ति लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "सचे तस्स मग्गभावना अत्थि, पञ्चविञ्ञाणगतिकेन वा मग्गेन, मग्गगतिकेहि वा पञ्चविञ्ञाणेहि भवितब्बं, न च तानि मग्गगतिकानि अनिब्बानारम्मणता अलोकुत्तरत्ता च, न[2] मग्गो पञ्चविञ्ञाणगतिको तेसं[3] लक्खणेन असङ्गहितत्ता" ति चोदेतुं **ननु पञ्चविञ्ञाणा उप्पन्नवत्थुका** ति (क० व० ३७१) आदिमाह। तत्रायं अधिप्पायो – यदि पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स मग्गभावना सिया, येन मनोविञ्ञाणेन मग्गो सम्पयुत्तो, तं पि
R. 124 पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स सिया। एवं सन्ते यदिदं "पञ्चविञ्ञाणा उप्पन्नवत्थुका" ति आदि लक्खणं वुत्तं, तं[4] एवं अवत्वा "छविञ्ञाणा"

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. न च रो.।
३. तेन रो.। ४. रो. पोत्थके नत्थि।

ति वत्तब्बं सिया। तथा पन अवत्वा "पञ्चविञ्ञाणा" त्वेव वुत्तं, तस्मा न वत्तब्बं "पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स अत्थि मग्गभावना" ति। यस्मा चेत्थ अयमेव अधिप्पायो, तस्मा सकवादी तं लक्खणं परवादिं सम्पटिच्छापेत्वा **नो च वत रे वत्तब्बे पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स अत्थि मग्गभावना** ति आह।

अपरो नयो – पञ्चविञ्ञाणा उप्पन्नवत्थुका, मग्गो अवत्थुको पि होति। ते च उप्पन्नारम्मणा, मग्गो नवत्तब्बारम्मणो। ते पुरेजातवत्थुका व, मग्गो अवत्थुको पि। ते पुरेजातारम्मणा, मग्गो अपुरेजातारम्मणो। ते अज्झत्तिकवत्थुका व, मग्गो अवत्थुको पि होति। ते च[1] रूपादिवसेन बाहिरारम्मणा, मग्गो निब्बानारम्मणो। ते अनिरुद्धं वत्थुं निस्सयं कत्वा पवत्तनतो असम्भिन्नवत्थुका, मग्गो अवत्थुको पि। ते अनिरुद्धानेव रूपादीनि आरब्भ पवत्तनतो असम्भिन्नारम्मणा, मग्गो निब्बानारम्मणो। ते नानावत्थुका, मग्गो अवत्थुको वा एकवत्थुको वा। ते[2] नानारम्मणा मग्गो एकारम्मणो[2]। ते अत्तनो अत्तनो व[3] रूपादिगोचरे पवत्तनतो न अञ्ञमञ्ञस्स गोचरविसयं पच्चनुभोन्ति,[4] मग्गो रूपादीसु एकं पि गोचरं न करोति। ते किरियमनोधातुं पुरेचारिकं कत्वा उप्पज्जनतो न असमन्नाहारा न अमनसिकारा उप्पज्जन्ति, मग्गो निरावज्जनो व। ते सम्पटिच्छनादीहि वोकिण्णा उप्पज्जन्ति, मग्गस्स वोकारो येव नत्थि। ते अञ्ञमञ्ञं पुब्बचरिमभावेन उप्पज्जन्ति, मग्गस्स तेहि B. 221 सद्धिं पुरिमपच्छिमता व नत्थि,[5] तेसं अनुप्पत्तिकाले तिक्खविपस्सनासमये, तेसं अनुप्पत्तिदेसे आरुप्पे पि[6] च उप्पज्जनतो। ते सम्पटिच्छनादीहि अन्तरितत्ता न अञ्ञमञ्ञस्स समनन्तरा उप्पज्जन्ति, R. 125 मग्गस्स सम्पटिच्छनादीहि अन्तरितभावो व नत्थि। तेसं अञ्ञत्र अभिनिपाता आभोगमत्तं पि किच्चं नत्थि, मग्गस्स किलेससमुग्घातनं

---

१. रो. पोत्थके नत्थि।
२-२. रो. पोत्थके नत्थि।
३. च रो.।
४. पच्चया पच्चनुभोन्ति रो.।
५. तेसं अनुपत्तिकाले पच्चिवता व नत्थि रो. पोत्थके अधिको पाठो।
६. हि रो.।

किच्चं ति। यस्मा चेत्थ अयं पि अधिप्पायो, तस्मा सकवादी इमेहाकारेहि परवादिं मग्गस्स अपञ्चविञ्ञाणगतिकभावं सम्पटिच्छापेत्वा **नो च वत रे वत्तब्बे पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स अत्थि मग्गभावना** ति आह।

७. **सुञ्ञतं आरब्भा** ति (क० व० ३७१) "यथा लोकुत्तरमग्गो[1] सुञ्ञतं निब्बानं आरब्भ, लोकियो सुद्धसङ्खारपुञ्जं आरब्भ उप्पज्जति, किं ते एवं चक्खुविञ्ञाणं" ति पुच्छति। इतरो "चक्खुं च पटिच्च रूपे चा" ति वचनतो पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो "न निमित्तग्गाही" ति वचनतो यं तत्थ अनिमित्तं, तदेव सुञ्ञतं ति सन्धाय पटिजानाति। **चक्खुं च पटिच्चा** ति पञ्हद्वये पि एसेव नयो।

८-९. **चक्खुविञ्ञाणं अतीतानागतं आरब्भा** ति (क०व० ३७२) एत्थ अयमधिप्पायो — मनोविञ्ञाणसमङ्गिस्स अत्थि मग्गभावना, मनोविञ्ञाणं च अतीतानागतं पि आरब्भ उप्पज्जति, किं ते एवं चक्खुविञ्ञाणं पी ति। **फस्सं आरब्भा** ति आदीसु पि एसेव नयो। **चक्खुना रूपं दिस्वा न निमित्तग्गाही** ति एत्थ जवनक्खणे न निमित्तग्गाहिता वुत्ता, न चक्खुविञ्ञाणक्खणे। तस्मा लोकियमग्गं पि सन्धायेतं असाधकं ति।

पञ्चविञ्ञाणसमङ्गिस्स मग्गकथावण्णना निट्ठिता

४. पञ्चविञ्ञाणा कुसला पी ति कथावण्णना

१०-१३. इदानि पञ्चविञ्ञाणा कुसला पी ति कथा नाम होति। सा हेट्ठा[2] वुत्तनयेनेव अत्थतो वेदितब्बा ति।

पञ्चविञ्ञाणा कुसला पी ति कथावण्णना निट्ठिता

---

१. ० मग्गे रो.। २. यथा रो।

५. साभोगा ति कथावण्णना

१४-१६. इदानि पञ्चविञ्ञाणा[1] साभोगा ति कथा नाम होति। B. 22?, R. 126 तत्थ आभोगो नाम कुसलाकुसलवसेन होति[2] सत्थारा च[3] "चक्खुना रूपं दिस्वा निमित्तग्गाही होति, न निमित्तग्गाही होती" ति आदि वुत्तं, तं अयोनिसो गहेत्वा "पञ्चविञ्ञाणा साभोगा" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ पुरिमकथासदिसमेवा ति।

पञ्चविञ्ञाणा साभोगा ति कथावण्णना निट्ठिता

६. द्वीहि सीलेही ति कथावण्णना

१७-१९. इदानि द्वीहि सीलेही ति कथा नाम होति। तत्थ "सीले पतिट्ठाय नरो सपञ्ञो" ति (सं० नि० १.१४) आदि वचनतो यस्मा लोकियेन सीलेन सीलवा लोकुत्तरं मग्गं भावेति, तस्मा पुरिमेन च लोकियेन मग्गक्खणे लोकुत्तरेन चा ति द्वीहि सीलेहि समन्नागतो नाम होती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं येव, ते सन्धाय **मग्गसमङ्गी** ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि सो एकक्खणे लोकियलोकुत्तरेहि द्वीहि सीलेहि समन्नागतो, द्वीहि फस्सादीहि पि तेन समन्नागतेन भवितब्बं" ति चोदेतुं **द्वीहि फस्सेही** ति आदिमाह। इतरो तथारूपं नयं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। **लोकियेन च लोकुत्तरेन चा** ति पञ्हे पुब्बे समादिन्नं च मग्गक्खणे उप्पन्नसम्मावाचादीनि च सन्धाय पटिजानाति।

लोकिये सीले निरुद्धे ति पुच्छा परवादिस्स, खणभङ्गनिरोधं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स। इतरो पन तं वीतिक्कमं विय सल्लक्खेन्तो **दुस्सीलो** ति आदिमाह। लद्धिपतिट्ठापनं पनस्स पुब्बे अभिन्नसीलतं येव दीपेति, न द्वीहि समन्नागततं[4]। तस्मा अप्पतिट्ठिता व लद्धी ति।

द्वीहि सीलेही ति कथावण्णना निट्ठिता

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. रो. पोत्थके नत्थि।
३. व रो.। ४. समन्नागमं रो.।

१०. विञ्ञत्ति सीलं ति कथावण्णना

३१-३२. इदानि विञ्ञत्ति सीलं ति कथा नाम होति। तत्थ[1] कायविञ्ञत्ति कायकम्मं, वचीविञ्ञत्ति वचीकम्मं ति गहितत्ता "विञ्ञत्ति सीलं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय **विञ्ञत्ती** ति (क० व० ३८४) पुच्छा B. 224, R. 128
सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं यस्मा सीलं नाम विरति, न रूपधम्मो, तस्मा तेनत्थेन चोदेतुं **पाणातिपाता वेरमणी** ति आदिमाह। **अभिवादनं सीलं** ति आदि यथारूपं विञ्ञत्तिं सो "सीलं" ति मञ्ञति[1] तं उद्धरित्वा दस्सेतुं वुत्तं। यस्मा पन सा विरति न होति, तस्मा पुन **पाणातिपाता** ति आदिमाह। लद्धि पनस्स छलेन पतिट्ठितत्ता[2] अप्पतिट्ठिता येवा ति।

विञ्ञत्ति सीलं ति कथावण्णना निट्ठिता

११. अविञ्ञत्ति दुस्सील्यं ति कथावण्णना

३३-३४. इदानि अविञ्ञत्ति दुस्सील्यं ति कथा नाम होति। तत्थ चित्तविप्पयुत्तं अपुञ्ञूपचयं चेव आणत्तिया च पाणातिपातादीसु अङ्गपारिपूरिं सन्धाय "अविञ्ञत्ति दुस्सील्यं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "सचे सा दुस्सील्यं, पाणातिपातादीसु अञ्ञतरा सिया" ति चोदेतुं **पाणातिपातो** ति (क० व० ३८४) आदिमाह। **पापकम्मं समादियित्वा** ति "असुकं नाम घातेस्सामि, असुकं भण्डं अवहरिस्सामी" ति एवं पापसमादानं कत्वा। **उभो वड्ढन्ती** ति पुट्ठो दानक्खणे पापस्स अनुप्पत्तिं सन्धाय पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो चित्तविप्पयुत्तं पापूपचयं सन्धाय पटिजानाति। सेसमेत्थ परिभोगमयकथायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। लद्धिपतिट्ठापनं पिस्स पापसमादिन्नपुब्बभागमेव साधेति; न अविञ्ञत्तिया दुस्सीलभावं ति।

अविञ्ञत्ति दुस्सील्यं ति कथावण्णना निट्ठिता

दसमो वग्गो समत्तो

दुतियपण्णासको च समत्तो

---

१. पञ्ञत्ति स्या.। २. पतिट्ठापितत्ता रो.।

११. एकादसमो वग्गो

१-३. तिस्सो-पि-अनुसयकथावण्णना

B. 225, R. 129

१-९. इदानि अनुसया अब्याकता, अहेतुका, चित्तविप्पयुत्ता ति तिस्सो पि[1] अनुसयकथा नाम होन्ति। तत्थ यस्मा पुथुज्जनो कुसलाब्याकते चित्ते वत्तमाने "सानुसयो" ति वत्तब्बो,[2] यो चस्स तस्मिं खणे हेतु, न तेन हेतुना अनुसया सहेतुका, न तेन चित्तेन सम्पयुत्ता, तस्मा "ते अब्याकता, अहेतुका, चित्तविप्पयुत्ता" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय तीसु पि कथासु पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसं हेट्ठा वुत्तनयत्ता सक्का पाळिमग्गेनेव जानितुं ति, तस्मा न वित्थारितं ति।

तिस्सो पि अनुसयकथावण्णना निट्ठिता

४. ञाणकथावण्णना

१०-११. इदानि ञाणकथा नाम होति। तत्थ मग्गञाणेन अञ्ञाणे विगते पि पुन चक्खुविञ्ञाणादिवसेन ञाणविप्पयुत्तचित्ते वत्तमाने यस्मा तं मग्गचित्तं न पवत्तति, तस्मा "न वत्तब्बं ञाणी" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि अञ्ञाणे विगते 'ञाणी' ति पञ्ञत्ति न सिया, रागादीसु विगतेसु वीतरागादिपञ्ञत्ति पि न सिया ति पुग्गलपञ्ञत्तियं अकोविदोसी" ति चोदेतुं **रागे विगते** ति (क० व० ३९२) आदिमाह। इतरो तेसु विगतेसु सरागादिभावे युत्तिं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। परियोसाने यस्मा ञाणपटिलाभेन सो ञाणी ति वत्तब्बतं अरहति, तस्मा **न हेवं** ति पटिक्खेपो सकवादिस्सा ति।

ञाणकथावण्णना निट्ठिता

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. न वत्तब्बो रो.।

५. ञाणं चित्तविप्पयुत्तं ति कथावण्णना

१२. इदानि ञाणं चित्तविप्पयुत्तं ति कथा नाम होति । B. 226, R. 130
तत्थ यस्मा अरहा चक्खुविञ्ञाणादिसमङ्गी पटिलद्धं मग्गञाणं सन्धाय "ञाणी" ति वुच्चति, न चस्स तं तेन चित्तेन सम्पयुत्तं, तस्मा "ञाणं चित्तविप्पयुत्तं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि ते ञाणं चित्तविप्पयुत्तं[1] चित्तविप्पयुत्तेसु रूपादीसु अञ्ञतरं सिया" ति चोदेतुं **रूपं** ति आदिमाह । इतरो पटिक्खिपति । सेसं हेट्ठा वुत्तनयमेव । परियोसाने पन **पञ्ञवा** ति पुट्ठो पटिलाभवसेन तं पवत्तिं[2] इच्छति, तस्मा पटिजानाती ति ।

ञाणं चित्तविप्पयुत्तं ति कथावण्णना निट्ठिता

६. इदं दुक्खं ति कथावण्णना

१४-१६. इदानि इदं दुक्खं ति कथा नाम होति । तत्थ येसं "लोकुत्तरमग्गक्खणे योगावचरो इदं दुक्खं ति वाचं भासति, एवमस्स इदं दुक्खं ति वाचं भासतो च इदं दुक्खं ति ञाणं पवत्तती" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, मग्गक्खणे तथा वाचाभासनं[3] ञाणप्पवत्तिं च सन्धाय पटिञ्ञा इतरस्स । यस्मा पन सो सेससच्चपटिसंयुत्तं वाचं पुथुज्जनो व[4] भासति, न च तस्स तथा ञाणप्पवत्ती ति इच्छति, तस्मा समुदयादिपञ्हेसु पटिक्खिपति । **रूपं अनिच्चं** ति आदि दुक्खपरियायदस्सनवसेन वुत्तं । इतरो पन सकसमये तादिसं वोहारं अपस्सन्तो पटिक्खिपति । **इति च दन्ति चा** ति आदि यदि तस्स दुक्खे ञाणं पवत्तति, इ-कार दं-कार दु-कार ख-कारेसु पटिपाटिया चतूहि ञाणेहि पवत्तितब्बं ति दस्सेतुं वुत्तं । इतरो पन तथा न इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति ।

इदं दुक्खं ति कथावण्णना निट्ठिता

---

१. ० ति रो. । २. पञ्ञत्तिं रो. ।
२. ० च रो. । ४. च रो. ।

७. इद्धिबलकथावण्णना

B. 227, R. 131

१७. इदानि इद्धिबलकथा नाम होति । तत्थ इद्धिपादभावनानिसंसस्स अत्थं अयोनिसो गहेत्वा "इद्धिबलेन समन्नागतो कप्पं तिट्ठेय्या" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; ते सन्धाय **इद्धिबलेन समन्नागतो कप्पं तिट्ठेय्या** ति (क० व० ३९६) पुच्छा सकवादिस्स । तत्थ कप्पो नाम महाकप्पो, कप्पेकदेसो, आयुकप्पो ति तिविधो । "चत्तारिमानि, भिक्खवे, कप्पस्स असङ्ख्येय्यानी" ति (अं०नि०२.१५०) एत्थ हि महाकप्पो व कप्पो ति वुत्तो । "ब्रह्मकायिकानं देवानं कप्पो आयुप्पमाणं" ति (अं० नि० २.१३२) एत्थ कप्पेकदेसो । "कप्पं निरयम्हि पच्चति, कप्पं सग्गम्हि मोदती" ति (चु० व० ३०७) एत्थ आयुकप्पो । आयुकप्पनं आयुविधानं कम्मस्स विपाकवसेन वा वस्सगणनाय वा आयुपरिच्छेदो ति अत्थो । तेसु महाकप्पं सन्धाय पुच्छति, इतरो पटिजानाति ।

अथ नं सकवादी "सचे ते इद्धिबलेन समन्नागतो, 'यो चिरं जीवति, सो वस्ससतं अप्पं वा भिय्यो' ति[1] (सं० नि० २.१६२) एवं परिच्छिन्ना आयुकप्पा उद्धं महाकप्पं वा महाकप्पेकदेसं वा जीवेय्य इद्धिमयिकेनस्स आयुना भवितब्बं" ति चोदेतुं **इद्धिमयिको सो आयू** ति आदिमाह । इतरो "जीवितिन्द्रियं नाम इद्धिमयिकं नत्थि, कम्मसमुट्ठानमेवा" ति वुत्तत्ता पटिक्खिपति । को पनेत्थ इद्धिमतो विसेसो, ननु अनिद्धिमा पि आयुकप्पं[2] तिट्ठेय्या ति ? अयं विसेसो – इद्धिमा हि यावतायुकं जीवितप्पवत्तिया अन्तरायकरे धम्मे इद्धिबलेन पटिबाहित्वा अन्तरा अकालमरणं निवारेतुं सक्कोति, अनिद्धिमतो एतं बलं नत्थि । अयमेतेसं विसेसो ।

अतीतं अनागतं ति इदं अविसेसेन कप्पं तिट्ठेय्या ति पटिञ्ञातत्ता चोदेति । **द्वे कप्पे** ति आदि "यदि इद्धिमा जीवितपरिच्छेदं अतिक्कमितुं सक्कोति, न केवलं एकं अनेके पि कप्पे तिट्ठेय्या" ति चोदनत्थं वुत्तं ।

१. वा ति रो. । २. ० वा रो. ।

उप्पन्नो फस्सो ति आदि न सब्बं इद्धिया लब्भति, इद्धिया अविसयो पि अत्थी ति दस्सेतुं वुत्तं। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति। R. 132

इद्धिबलकथावण्णना निट्ठिता

८. समाधिकथावण्णना

२१. इदानि समाधिकथा नाम होति। तत्थ येसं एकचित्तक्खणे उप्पन्ना पि एकग्गता समाधानट्ठेन समाधी ति अग्गहेत्वा "सत्त रत्तिन्दिवानि एकन्तसुखपटिसंवेदी विहरितुं" ति (म० नि० १.१३०) आदिवचनं निस्साय "चित्तसन्तति समाधी" ति लद्धि, सेय्यथापि सब्बत्थिवादानं चेव उत्तरापथकानं च; ते सन्धाय **चित्तसन्तती**[१] ति[१] (क० व० ३९८) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि चित्तसन्तति समाधि, चित्तसन्तति[२] नाम अतीता पि अत्थि, अनागता पि अत्थि। न हि एकं पच्चुप्पन्नचित्तमेव चित्तसन्तति नाम होति, किं ते सब्बा पि सा समाधी" ति चोदेतुं **अतीता** ति आदिमाह, इतरो तथा अनिच्छन्तो पटिक्खिपति। B. 228

ननु अतीतं निरुद्धं ति (क० व० ३९९) आदि[३] चित्तसन्ततियं पच्चुप्पन्नमेव चित्तं किच्चकरं, अतीतानागतं निरुद्धत्ता अनुप्पन्नत्ता च नत्थि, कथं[४] तं समाधि नाम होती" ति दस्सेतुं वुत्तं। **एकचित्तक्खणिको** ति पुच्छा परवादिस्स। ततो या[५] सकसमये "समाधिं भिक्खवे, भावेथा" ति आदीसु पच्चुप्पन्नकुसलचित्तसम्पयुत्ता एकग्गता समाधी ति वुत्ता, तं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स। **चक्खुविञ्ञाणसमङ्गी** ति आदि "एकचित्तक्खणिको" ति वचनमत्तं गहेत्वा छलेन वुत्तं, तेनेव सकवादिना पटिक्खित्तं। **ननु वुत्तं भगवता** ति सुत्तं[६] पुरिमपच्छिमेवसेन पवत्तमानस्स समाधिस्स अब्बोकिण्णतं साधेति, न सन्ततिया समाधिभावं, तस्मा असाधकं ति।

समाधिकथावण्णना निट्ठिता

१-१. रो. पोत्थके नत्थि। २. रो. पोत्थके नत्थि।
३. आदिम्हि रो.। ४. अथ रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि। ६. रो. पोत्थके नत्थि।

९. धम्मट्ठितता कथावण्णना

२३. इदानि धम्मट्ठितता कथा नाम होति। तत्थ "ठिता व सा R. 133 धातू" ति वचनं निस्साय "पटिच्चसमुप्पादसङ्खाता धम्मट्ठितता नाम एका अत्थि, सा च परिनिप्फन्ना" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि परिनिप्फन्नानं अविज्जादीनं अञ्ञा धम्मट्ठितता नाम परिनिप्फन्ना B. 229 अत्थि, ताय पि च ते धम्मट्ठितताय अञ्ञा ठितता परिनिप्फन्ना आपज्जती" ति चोदेतुं **ताय ठितता** ति आदिमाह। परवादी एवरूपाय लद्धिया अभावेन पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो अनन्तरपच्चयतं चेव अञ्ञमञ्ञपच्चयतं च सन्धाय पटिजानाति। सेसं हेट्ठा वुत्तनयत्ता उत्तानत्थमेवा ति।

धम्मट्ठितता कथावण्णना निट्ठिता

१०. अनिच्चताकथावण्णना

२४. इदानि अनिच्चताकथा नाम होति। तत्थ "अनिच्चानं[1] रूपादीनं अनिच्चता पि रूपादयो विय परिनिप्फन्ना" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि ते रूपादयो विय अनिच्चता परिनिप्फन्ना, तस्सा पि अञ्ञाय परिनिप्फन्नाय अनिच्चताय भवितब्बं" ति चोदेतुं **ताय अनिच्चताया** ति (क० व० ४००) आदिमाह। इतरो द्विन्नं अनिच्चताय[2] एकतो अभावेन पटिक्खिपित्वा पुन यस्मा सा अनिच्चता निच्चा न होति, तेनेव अनिच्चेन सद्धिं अन्तरधायति, तस्मा पटिजानाति। अथस्स सकवादी लेसोकासं अदत्वा या तेन दुतिया अनिच्चता पटिञ्ञाता, ताय पि ततो पराय पी ति परम्परवसेन अनुपच्छेददोसं आरोपेन्तो **ताय तायेवा** ति आदिमाह। जरा **परिनिप्फन्ना** ति आदि यस्मा उप्पन्नस्स जरामरणतो अञ्ञा अनिच्चता नाम नत्थि, तस्मा अनिच्चता-

१. अनिच्चतानं रो.। २. अनिच्चतानं रो.।

विभागानुयुञ्जनवसेन वुत्तं। तत्रा पि परवादिनो पुरिमनयेनेव पटिञ्ञा च पटिक्खेपो च वेदितब्बो।

२५. रूपं परिनिप्फन्नं ति आदि येसं सा अनिच्चता, तेहि सद्धिं R. 134
संसन्दनत्थं वुत्तं। तत्थ "यथा परिनिप्फन्नानं रूपादीनं अनिच्चताजरामरणानि अत्थि, एवं परिनिप्फन्नानं अनिच्चतादीनं तानि नत्थी" ति मञ्ञमानो एकन्तेन पटिक्खिपति येवा ति।

अनिच्चता कथावण्णना निट्ठिता

एकादसमो वग्गो समत्तो

१२. द्वादसमो वग्गो

१. संवरो कम्मं ति कथावण्णना

B. 230, R. 135 १-३. इदानि संवरो कम्मं ति कथा नाम होति। तत्थ "चक्खुना रूपं दिस्वा निमित्तग्गाही होति, न[1] निमित्तग्गाही होती[1] " ति सुत्तं निस्साय "संवरो पि असंवरो पि कम्मं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पुटिञ्ञा इतरस्स ।

अथ नं या सकसमये चेतना "कम्मं" ति वुत्ता यथा सा कायवचीमनोद्वारेसु पवत्तमाना कायकम्मादि नामं लभति, तथा "यदि ते संवरो कम्मं, सो पि चक्खुन्द्रियादीसु पवत्तमानो चक्खुकम्मादि-नामं[2] लभेय्या" ति (क० व० ४०२) चोदेतुं **चक्खुन्द्रियसंवरो चक्खुकम्मं** ति आदिमाह। इतरो तादिसं सुत्तपदं अपस्सन्तो चतूसु द्वारेसु पटिक्खिपित्वा पञ्चमे कायद्वारे पसादकायं सन्धाय पटिक्खिपति, विञ्ञत्तिकायं सन्धाय पटिजानाति। सो हि पसादकायं पि विञ्ञत्ति-कायं पि कायिन्द्रियं[3] त्वेव[3] इच्छति। मनोद्वारे पि विपाकद्वारं[4] सन्धाय पटिक्खिपति, कम्मद्वारं सन्धाय पटिजानाति। असंवरे पि एसेव नयो। "चक्खुना रूपं दिस्वा" ति सुत्तं तेसु द्वारेसु संवरासंवर-मेव दीपेति, न तस्स कम्मभावं, तस्मा असाधकं ति ।

संवरो कम्मं ति कथावण्णना निट्ठिता

२. कम्मकथावण्णना

४. इदानि कम्मकथा नाम होति। तत्थ "नाहं भिक्खवे, सञ्चेतनिकानं कम्मानं" ति (अं० नि० ४.३४०) सुत्तपदं निस्साय "सब्बं कम्मं सविपाकं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; तेसं

१-१. रो. पोत्थके नत्थि।
२. चक्खुकम्मानं नामं रो.।
३-३. कायिन्द्रियत्तेव रो.।
४. कायद्वारं रो,।

“चेतनाहं भिक्खवे, कम्मं वदामी” ति (अं० नि० ३.१२०) सत्थारा
अविसेसेन चेतना “कम्मं” ति वुत्ता; सा च कुसलाकुसला व सविपाका,
अब्याकता अविपाका ति इमं विभागं दस्सेतुं **सब्बं कम्मं** ति (क० व०
४०३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। पुन **सब्बा चेतना** R. 136
ति पञ्हेसु अब्याकतं सन्धाय पटिक्खेपो, कुसलाकुसले सन्धाय पटिञ्ञा
वेदितब्बा। **विपाकाब्याकता** ति आदि[1] सविपाकाविपाकचेतनं[2] B. 231
सरूपेन दस्सेतुं वुत्तं। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव। “नाहं, भिक्खवे,”
ति सुत्तं सति पच्चये दिट्ठधम्मादीसु[3] विपाकपटिसंवेदनं सन्धाय वुत्तं,
तस्मा असाधकं ति।

कम्मकथावण्णना निट्ठिता

३. सद्दो विपाको ति कथावण्णना

७-८. इदानि सद्दो विपाको ति कथा नाम होति। तत्थ “सो तस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता उस्सन्नत्ता विपुलत्ता ब्रह्मस्सरो होती” ति (दी० नि० ३.१३३) आदीनि अयोनिसो गहेत्वा “सद्दो विपाको” ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; तेसं “कम्मसमुट्ठाना अरूपधम्मा व[4] विपाका ति नामं लभन्ति। रूपधम्मेसु पनायं वोहारो[5] नत्थी” ति दस्सेतुं पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **सुखवेदनीयो** ति (क० व० ४०५) आदि “विपाको नाम एवरूपो होती” ति दस्सनत्थं[6] वुत्तं। “सो तस्स कम्मस्सा” ति सुत्तं लक्खणपटिलाभदस्सनत्थं वुत्तं। महापुरिसो हि कम्मस्स[7] कतत्ता सुचिपरिवारो पि होति, न च परिवारो विपाको, तस्मा असाधकमेतं ति।

सद्दो विपाको ति कथावण्णना निट्ठिता

---

१. आदीसु रो.।
२. विपाकाविपाकचेतनं रो.।
३. ० पि रो.।
४. स्या. पोत्थके नत्थि।
५. ० व रो.।
६. दस्सेतुं रो.।
७. पुरिमकम्मस्स स्या.।

४. सळायतनकथावण्णना

६-११. इदानि सळायतनकथा नाम होति। तत्थ यस्मा सळायतनं कम्मस्स कतत्ता उप्पन्नं, तस्मा "विपाको" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; ते सन्धाय **चक्खायतनं विपाको** ति (क० व० ४०६) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसं हेट्ठा वुत्तनयमेव। **सळायतनं विपाको** ति एत्थ मनायतनं सिया विपाको। सेसानि केवलं कम्मसमुट्ठानानि, न विपाको। तस्मा असाधकमेतं ति।

सळायतनकथावण्णना निट्ठिता

५. सत्तक्खत्तुपरमकथावण्णना

B. 232. R. 137 १२-१६. इदानि सत्तक्खत्तुपरमकथा नाम होति, तत्थ यस्मा "सत्तक्खत्तुपरमो" ति वुत्तं, तस्मा "सत्तक्खत्तुपरमो पुग्गलो सत्तक्खत्तुपरमताय नियतो" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; तेसं ठपेत्वा "अरियमग्गं अञ्ञो तस्स नियमो नत्थि, येन सो सत्तक्खत्तुपरमताय नियतो भवेय्यो" ति इमं विभागं दस्सेतुं पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स।

माता जीविता ति (क० व० ४०७) आदीसु अयमधिप्पायो—द्वे नियामा सम्मत्तनियामो च मिच्छत्तनियामो च। सम्मत्तनियामो अरियमग्गो। सो[1] अविनिपातधम्मतं चेव फलुप्पत्तिं च नियमेति। मिच्छत्तनियामो आनन्तरियकम्मं[2]। तं अनन्तरा[3] निरयूपपत्ति नियमेति[3]। तत्थ सत्तक्खत्तुपरमो सोतापत्तिमग्गेन अविनिपातधम्मताय च फलुप्पत्तिया च नियमितो। सेसमग्गनियामो पनस्स नत्थि अनधिगतत्ता, आनन्तरियं पि कातुं सो अभब्बो[4]। त्वं पनस्स नियामं इच्छसि, तेन तं वदाम[5] – "किं ते सो इमिना मिच्छत्तनियामेन नियमितो[6]" ति।

---

१. तस्स रो.।
२. अनन्तरीयकम्मं रो.।
३-३. अतन्तरीयुप्पत्ति नियामेति रो.।
४. ० ति रो.।
५. वदामि रो.।
६. नियतो रो.।

अभब्बो अन्तरा ति पञ्हेसु आनन्तरियाभावं सन्धाय पटिक्खिपति, सत्तक्खत्तुपरमं सन्धाय पटिजानाति। **अत्थि सो नियामो** ति पञ्हे सत्तक्खत्तुपरमताय नियामं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। **अत्थि ते सतिपट्ठाना** ति आदि नियामसङ्खाते मग्गधम्मे दस्सेतुं वुत्तं। तस्स पन पुन[१] पठममग्गानुप्पत्तितो ते पि नत्थि, तस्मा पटिक्खिपति। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव।

ननु सो सत्तक्खत्तुपरमो ति एत्थ भगवा "अयं पुग्गलो एत्तके भवे सन्धावित्वा परिनिब्बायिस्सति, अयं एत्तके" ति अत्तनो ञाणबलेन R. 138 ब्याकरोति, न भवनियामं नाम किञ्चि तेन सत्तक्खत्तुपरमो, कोलङ्कोलो, एकबीजी वा[२] ति वुत्तं, तस्मा असाधकमेतं ति।

सत्तक्खत्तुपरमकथावण्णना निट्ठिता

७. कोलङ्कोलएकबीजिकथावण्णना

१७-१८. कोलङ्कोलएकबीजिकथायो पि इमिनावुपायेन वेदितब्बा।

कोलङ्कोलएकबीजिकथावण्णना निट्ठिता

८. जीवितावोरोपनकथावण्णना

१९-२०. इदानि जीवितावोरोपनकथा नाम होति। तत्थ B. 233 यस्मा दोससम्पयुत्तेन चित्तेन पाणातिपातो होति, दोसो च दिट्ठिसम्पन्नस्स अप्पहीनो, तस्मा "दिट्ठिसम्पन्नो सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेय्या" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियापरसेलियानं;[३] ते सन्धाय **दिट्ठिसम्पन्नो** ति (क० व० ४१०) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **सञ्चिच्च मातरं** ति आदि पञ्हेसु पन "अट्ठानमेतं अनवकासो" ति सुत्तभयेन पटिक्खिपति। **सत्थरि अगारवो** ति आदि सत्थारादीसु[४] सगारवस्स सिक्खापदस्स वीतिक्कमाभावदस्सनत्थं

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. स्या., रो. पोत्थकेसु नत्थि।
३. पुब्बसेलियानं स्या., रो.। ४. सत्थादीसु रो.।

वुत्तं । इतरो पन अकुसलवसेन तस्स अगारवो नाम नत्थी ति पटिक्खिपित्वा सगारवभावं[1] च सम्पटिच्छित्वा पुन **अगारवो** ति पुट्ठो तेसु तेसु किच्चेसु पसुतताय विक्खित्तानं असतिया अमनसिकारेन चेतिये अभिवादनपदक्खिणकरणाभावं सन्धाय पटिजानाति । पुन **ओहदेय्या** ति आदिना नयेन पुट्ठो तादिसाय किरियाय सब्बसो अकरणतो पटिक्खिपति । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

जीवितावोरोपनकथावण्णना निट्ठिता

९. दुग्गतिकथावण्णना

२१-२३. इदानि दुग्गतिकथा नाम होति । तत्थ ये दुग्गतिं च दुग्गतिसत्तानं रूपादिआरम्मणं तण्हं चा ति उभयं पि दुग्गती ति गहेत्वा पुन तथा अविभजित्वा अविसेसेनेव "दिट्ठिसम्पन्नस्स पहीना R. 139 दुग्गती" ति वदन्ति, सेय्यथापि उत्तरापथका; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **आपायिके रूपे रज्जेय्या** ति आदि[2] परवादिनो लद्धिया दिट्ठिसम्पन्नस्स दुग्गति अप्पहीना, तस्स वसेन चोदेतुं वुत्तं । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव । निरयं उपपज्जेय्या ति आदि दुग्गतिपहानमेव दुग्गतिगामिनितण्हापहानं वा दीपेति, न दुग्गतिसत्तानं रूपादिआरम्मणाय[3] तण्हाय पहानं, तस्मा असाधकं[4] ति ।

दुग्गतिकथावण्णना निट्ठिता

१०. सत्तमभविककथावण्णना

B. 234 २४. सत्तमभविककथाय पि एसेव नयो ति ।

सत्तमभविककथावण्णना निट्ठिता

द्वादसमो वग्गो समत्तो

---

१. सगारवं रो. । २. ० या रो. ।
३. ० वा रो. । ४. च असाधकमेव तं रो. ।

१३. तेरसमो वग्गो

१. कप्पट्ठकथावण्णना

१-४. इदानि कप्पट्ठकथा नाम होति । तत्थ येसं "सङ्घं समग्गं R. 140
भेत्वान, कप्पं निरयम्हि पच्चती" ति "सकलं पि कप्पं सङ्घभेदको निरये तिट्ठती" ति लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकानं; ते सन्धाय **कप्पट्ठो** ति (क० व० ४१३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **बुद्धो च लोके** ति इदं विना बुद्धुप्पादेन सङ्घभेदस्स[1] अभावदस्सनत्थं[1] वुत्तं । **कप्पो च सण्ठाति सङ्घो च भिज्जती** ति आदि "यदि सो सकलं कप्पं तिट्ठति, सण्ठहनतो पट्ठाय तं कम्मं कत्वा तत्थ उप्पज्जित्वा तिट्ठेय्या" ति दस्सेतुं वुत्तं । **अतीतं** ति आदि हेट्ठा वुत्ताधिप्पायमेव । **कप्पट्ठो इद्धिमा** ति पञ्हे भावनामयं सन्धाय पटिक्खिपति, परसमये पनस्स जातिमयं इद्धिं इच्छन्ति, तं सन्धाय पटिजानाति ।

छन्दिद्धिपादो ति आदि "जातिमयाय इद्धिया इद्धिमा ति लद्धिमत्तमेतं, किं तेन,[2] यदि पनस्स इद्धि अत्थि, इमिना नयेन इद्धिपादा भाविता भवेय्युं" ति चोदनत्थं वुत्तं । **आपायिको नेरयिको** ति सुत्तं यं सो एकं कप्पं असीतिभागे कत्वा ततो एकभागमत्तं कालं तिट्ठेय्य, तं आयुकप्पं सन्धाय वुत्तं, तस्मा असाधकं ति ।

कप्पट्ठकथावण्णना निट्ठिता

२. कुसलपटिलाभकथावण्णना

५-६. इदानि कुसलपटिलाभकथा नाम होति । तत्थ कप्पट्ठो
सकसमये कामावचरकुसलमेव पटिलभति । येन पन तं उपपत्ति पटि- R. 141

१-१. संघभेदकाभावदस्सनत्थं रो. । २. ते रो. ।

बाहेय्य, तं महग्गतं लोकुत्तरं वा न[1] पटिलभति । येसं पन इमं
B. 235 विभागं अकत्वा अविसेसेनेव "सो कुसलचित्तं न पटिलभती" ति लद्धि,
सेय्यथापि उत्तरापथकानं; तेसं विभागदस्सनेन तं लद्धिं भिन्दितुं पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

कुसलपटिलाभकथावण्णना निट्ठिता

३. अनन्तरापयुत्तकथावण्णना

७. इदानि अनन्तरापयुत्तकथा नाम होति । तत्थ अनन्तरापयुत्तो नाम येन खन्धभेदतो अनन्तरा विपाकदायकं मातुघातादि आनन्तरियकम्मं आणत्तं । तत्थ यस्स नियताय[2] आणत्तिया[2] आणत्तो तं कम्मं करिस्सति, सो अत्थसाधिकाय चेतनाय उप्पादितत्ता मिच्छत्तनियतो होति, अभब्बो सम्मत्तनियामं[3] ओक्कमितुं । यस्स अनियताय आणत्तिया आणत्तो तं कम्मं करिस्सति, सो अत्थसाधिकाय चेतनाय अनुप्पादितत्ता न मिच्छत्तनियतो, भब्बो सम्मत्तनियामं ओक्कमितुं ति इदं सकसमये सन्निट्ठानं ।

येसं पन "अनियताय पि आणत्तिया अभब्बो येव सम्मत्तनियामं ओक्कमितुं" ति लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; तेसं तं लद्धिं भिन्दितुं सकवादी **पुब्बपक्खं** दत्वा[4] **अनन्तरापयुत्तो** ति (क० व० ४१५) परवादिना अत्तानं पुच्छापेति । तेनेत्थ पठमपुच्छा परवादिस्स, अत्थसाधिकचेतनाय अभावं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स । ततो परवादी मातुघातादिकम्मस्स आणत्तत्ता व[5] "सो मिच्छत्तनियतो" ति मञ्ञति । तस्मा **मिच्छत्तनियामं चा** ति पञ्हं पुच्छति । सकवादी
R. 142 पन एकस्स पुग्गलस्स द्विन्नं नियामानं अनोक्कन्तिमत्तमेव सन्धाय **न हेवं** ति पटिक्खिपति ।

ननु तं कम्मं ति[6] मातुघातादिकम्मं । तत्थ अनियताणत्तिं सन्धाय "आमन्ता" ति पटिञ्ञा सकवादिस्स । अनियतं पि हि

१. १. रो. पोत्थके नत्थि ।
२-२. नियता आणत्ति अवस्सं ताय आणत्तिया रो. ।
३. सम्मत्तं रो. ।
४. भिन्दित्वा रो. ।
५. च रो. ।
६. ० पञ्हे कम्मं ति रो. ।

आणत्तिं पयोजेत्वा ठितस्स "अननुच्छविकं मया कतं" ति कुक्कुच्चं उप्पज्जतेव,[1] विप्पटिसारो जायतेव । **हञ्ची** ति आदि कुक्कुच्चुप्पत्तिमत्तं गहेत्वा परवादिना लद्धिपतिट्ठापनत्थं वुत्तं ।

८. इदानि यस्स अनियताणत्तिकस्सा पि अनन्तरापयुत्तस्स परवादिना सम्मत्तनियामोक्कमनं पटिसिद्धं, तमेव पुग्गलं गहेत्वा
अनन्तरापयुत्तो पुग्गलो अभब्बो ति पुच्छा सकवादिस्स, अत्तनो B. 236
लद्धिवसेन पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं सकवादी "अभब्बो नाम मातुघातादिकम्मानं कारको, किं ते तेन तानि कम्मानि कतानी" ति चोदेतुं **माता जीविता वोरोपिता** ति (क० व० ४१५) आदिमाह । इतरो तेसं वत्थूनं अरोगताय तथारूपं किरियं अपस्सन्तो "न हेवं" ति पटिक्खिपति ।

तं कम्मं पटिसंहरित्वा ति अनियताणत्तिकम्मं सन्धाय वुत्तं । तञ्हि "मा खो, मया आणत्तं आकासी" ति आणत्तं निवारेन्तेन पटिसंहटं नाम होति । पटिसंहटत्ता येव चेत्थ कुक्कुच्चं पटिविनोदितं, विप्पटिसारो पटिविनीतो नाम होति । एवं सन्ते पि पनेत्थ पुरिमाणत्तिया[2] येव नियतभावं मञ्ञमानो परवादी "आमन्ता" ति पटिजानाति । अथ नं सकवादी तस्स कम्मस्स पटिसंहटभावं सम्पटिच्छापेत्वा अत्तनो लद्धिं पतिट्ठापेत्वा[3] **हञ्ची** ति आदिमाह ।

९. पुन **अनन्तरापयुत्तो** ति (क० व० ४१६) परियोसानपञ्हे पठमपञ्हे विय पुच्छा परवादिस्स, पटिञ्ञा सकवादिस्स । **ननु तं कम्मं** ति अनुयोगो परवादिस्स, पटिसंहटकालतो पुब्बे पयुत्तकालं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स । पयुत्तपुब्बतामत्तं गहेत्वा अनियताणत्ति-
वसेन[4] **हञ्ची** ति लद्धिपतिट्ठापनं परवादिस्स । अयं पन लद्धि R. 143
अयोनिसो पतिट्ठितत्ता अप्पतिट्ठिता व होती ति ।

अनन्तरापयुत्तकथावण्णना निट्ठिता

१. उप्पज्जतो व रो. ।
२. पुरिमाणत्तं रो. ।
३. पतिट्ठापेन्तो रो. ।
४. अनियतालद्धिवसेन रो. ।

४. नियतस्स नियामकथावण्णना

१०-११. इदानि नियतस्स नियामकथा नाम होति। तत्थ दुविधो नियामो – मिच्छत्तनियामो च[1] आनन्तरियकम्मं, सम्मत्तनियामो च अरियमग्गो। इमे द्वे नियामे ठपेत्वा अञ्ञो नियामो नाम नत्थि। सब्बे पि हि सेसा तेभूमकधम्मा अनियता नाम। तेहि समन्नागतो पि अनियतो येव। बुद्धेहि पन अत्तनो ञाणबलेन "अयं सत्तो अनागते बोधिं पापुणिस्सती" ति ब्याकतो बोधिसत्तो पुञ्ञुस्सदत्ता[2] नियतो ति वुच्चति। इति इमं वोहारमत्तं गहेत्वा "पच्छिमभविको
B. 237 बोधिसत्तो ताय जातिया भब्बो धम्मं अभिसमेतुं" ति अधिप्पायेन "नियतो नियामं ओक्कमती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलिया-परसेलियानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **मिच्छत्तनियतो** ति आदि अञ्ञेन नियामेन नियतस्स अञ्ञनियामाभावदस्सनत्थं वुत्तं। **पुब्बे मग्गं भावेत्वा** ति आदि नियामप्पभेददस्सनत्थं वुत्तं। **सतिपट्ठानं** ति आदि एकस्मिं पि नियामे धम्मप्पभेददस्सनत्थं वुत्तं। **भब्बो बोधिसत्तो** ति वचनं केवलं बोधिसत्तस्स भब्बतं दीपेति, न नियतस्स नियामोक्कमनं, तस्मा असाधकं[3]। सो हि पुब्बे एकेन पि नियतधम्मेन अनियतो बोधिमूले सच्चदस्सनेन नियामं ओक्कन्तो ति।

नियतस्स नियामकथावण्णना निट्ठिता

५. निवुतकथावण्णना

R. 144 १२-१४. इदानि निवुतकथा नाम होति। तत्थ सुद्धस्स सुद्धकिच्चाभावतो नीवरणेहि निवुतो ओफुटो परियोनद्धो च नीवरणं जहती ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **निवुतो** ति (क० व० ४१७) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **रत्तो रागं** ति आदि निवुतस्स नीवरणजहने दोसदस्सनत्थं वुत्तं।

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. पुञ्ञस्स दत्वा रो.।
३. ० ति. रो.।

परिसुद्धे परियोदाते ति आदि विक्खम्भनविसुद्धिया विसुद्धस्स समुच्छेद-विसुद्धिदस्सनत्थं वुत्तं । **तस्स एवं जानतो** ति आदि जानतो पस्सतो आसवक्खयं दीपेति, न निवुतस्स नीवरणजहनं, तस्मा असाधकं ति ।

निवुतकथावण्णना निट्ठिता

६. सम्मुखीभूतकथावण्णना

१५-१७. इदानि सम्मुखीभूतकथा नाम होति । तत्थ **सम्मुखीभूतो** ति संयोजनानं सम्मुखीभावं तेहि समङ्गीभावं उपगतो । सेसमेत्थ निवुतकथासदिसमेवा ति ।

सम्मुखीभूतकथावण्णना निट्ठिता

७. समापन्नो अस्सादेती ति कथावण्णना

१८-२०. इदानि समापन्नो अस्सादेती ति कथा नाम होति । B. 238
तत्थ "पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, सो तदस्सादेती" ति (अं० नि० २.१३२) आदि वचनं निस्साय "समापन्नो अस्सादेति, सा चस्स झाननिकन्ति झानारम्मणा होती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं, ते सन्धाय **समापन्नो** ति (क०व० ४१६) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **तं झानं तस्स झानस्स आरम्मणं** ति पञ्हेसु तस्सेव तदारम्मणतं अपस्सन्तो सुत्तविरोधभयेन पटिक्खिपति, "तदस्सादेती" ति वचनमत्तेन पटिजानाति । **सो तदस्सादेती** ति सुत्तं R. 145
झानलाभिनो झाना वुट्ठाय झानस्सादं साधेति, न अन्तोसमापत्तियं येव[1] झाननिकन्तिया झानारम्मणतं, तस्मा असाधकं ति ।

समापन्नो अस्सादेती ति कथावण्णना निट्ठिता

---

१. याव रो. ।

८. असातरागकथावण्णना

२१. इदानि असातरागकथा नाम होति। तत्थ "यंकिञ्चि वेदनं वेदेति सुखं वा दुक्खं वा अदुक्खमसुखं वा, सो तं वेदनं अभिनन्दति अभिवदती" ति (म० नि० १.३२८) सुत्ते दिट्ठाभिनन्दन-वसेन वुत्तं। "अभिनन्दती" ति वचनं निस्साय "दुक्खवेदनाय पि रागस्सादवसेन अभिनन्दना होति। तस्मा अत्थि असातरागो" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **अत्थि असातरागो** ति (क० व० ४२०) पुच्छा सकवादिस्स। तत्थ **असातरागो** ति असाते दुक्खवेदयिते "अहो वत मे एतदेव भवेय्या" ति रज्जना। **आमन्ता** ति लद्धिवसेन पटिञ्ञा इतरस्स[1]। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव[2]।

२२. **सो तं वेदनं अभिनन्दती** ति (क० व० ४२१) सुत्ते पन विनिवट्टेत्वा दुक्खवेदनमेव आरब्भ रागुप्पत्ति नाम नत्थि, समूहग्गहणेन पन वेदयितलक्खणं धम्मं दुक्खवेदनमेव वा अत्ततो[3] समनुपस्सन्तो दिट्ठिमञ्ञनासङ्खाताय दिट्ठाभिनन्दनाय वेदनं अभिनन्दति, दुक्खाय वेदनाय विपरिणामं अभिनन्दति, दुक्खाय वेदनाय अभिभूतो तस्सा B. 239 पटिपक्खं कामसुखं पत्थयन्तो पि दुक्खवेदनं अभिनन्दति नाम। एवं दुक्खवेदनाय अभिनन्दना होती ति अधिप्पायो। तस्मा असाधकमेतं असातरागस्सा ति।

असातरागकथावण्णना निट्ठिता

९. धम्मतण्हा अब्याकता ति कथावण्णना

R. 146 २३-२७. इदानि धम्मतण्हा अब्याकता ति कथा नाम होति। तत्थ रूपतण्हा···पे०···धम्मतण्हा ति इमासु छसु तण्हासु यस्मा सब्बपच्छिमा तण्हा धम्मतण्हा ति वुत्ता, तस्मा सा अब्याकता ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसपञ्हानं पाळिया अत्थो निय्याति।

---

१. परवादिस्स रो.।　　　२. ० ति रो.।

३. अत्थतो रो.।

कामतण्हा ति आदीहि तीहि कोट्ठासेहि छ पि तण्हा सङ्खि-पित्वा दस्सिता। रूपादीसु हि[1] छसु आरम्मणेसु कामस्सादवसेन पवत्ता तण्हा कामतण्हा। "भविस्सति अत्ता च लोको चा" ति सस्सतदिट्ठिसहगता तण्हा भवतण्हा। "न भविस्सती" ति उच्छेददिट्ठि-सहगता तण्हा विभवतण्हा ति। **ननु सा धम्मतण्हा** ति पदं तण्हाय धम्मारम्मणं आरब्भ पवत्तिं दीपेति, न अब्याकतभावं तस्मा असाधकं ति।

धम्मतण्हा अब्याकता ति कथावण्णना निट्ठिता

१०. धम्मतण्हा न दुक्खसमुदयो ति कथावण्णना

२८-३२. इदानि धम्मतण्हा न दुक्खसमुदयो ति कथा नाम होति। तत्रा पि यस्मा सा धम्मतण्हा ति वुत्ता, तस्मा न दुक्खसमुदयो ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं येव; ते सन्धाय पुच्छा सक-वादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसं पुरिमकथासदिसमेवा ति।

धम्मतण्हा न दुक्खसमुदयो ति कथावण्णना निट्ठिता

तेरसमो वग्गो समत्तो

---

१. पि रो.।

१४. चुद्दसमो वग्गो

१. कुसलाकुसलपटिसन्दहनकथावण्णना

B. 240, R. 147 १-५. इदानि कुसलाकुसलपटिसन्दहनकथा नाम होति । तत्थ कुसलं वा अकुसलस्स, अकुसलं वा कुसलस्स अनन्तरा उप्पज्जनकं[1] नाम नत्थी ति तेसं अञ्ञमञ्ञं पटिसंधानं[2] न युज्जति । ये पन यस्मा एकवत्थुस्मिञ्ञेव रज्जति[3] विरज्जति च, तस्मा तं अञ्ञमञ्ञं पटिसन्दहती ति लद्धिं गहेत्वा ठिता, सेय्यथापि महासङ्घिका; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स; पटिञ्ञा इतरस्स । **आवट्टना पणिधी** ति (क० व० ४२५) उभयं आवज्जनस्सेव नामं । तञ्हि भवङ्गं आवट्टेती ति आवट्टना । भवङ्गारम्मणतो अञ्ञस्मिं आरम्मणे चित्तं पणिदहति ठपेती[4] ति पणिधि । **कुसलं अनावट्टेन्तस्सा** ति यं तं अकुसलानन्तरं पटिसन्दहन्तं कुसलं उप्पज्जति, तं अनावट्टेन्तस्स[5] उप्पज्जती ति पुच्छति । इतरो पन विना आवज्जनेन कुसलस्स उप्पत्तिं अपस्सन्तो पटिक्खिपति । **कुसलं अयोनिसो मनसिकरोतो** ति इदं यदि अकुसलानन्तरं कुसलं उप्पज्जेय्य, अकुसलस्सेव आवज्जनेन अयोनिसो मनसिकरोतो उप्पज्जेय्या ति चोदनत्थं वुत्तं । सेसं यथा पाळिमेव निय्याति । **ननु यस्मिं येव वत्थुस्मिं** ति वचनं एकारम्मणे[6] सरागविरागुप्पत्तिं दीपेति, न कुसलाकुसलानं अनन्तरतं, तस्मा असाधकं ति ।

कुसलाकुसलपटिसन्दहनकथावण्णना निट्ठिता

२. सळायतनुप्पत्तिकथावण्णना

६-७. इदानि सळायतनुप्पत्तिकथा नाम होति । तत्थ उपपत्ते-
R. 148 सियेन[7] पटिसन्धिचित्तेन सहेव ओपपातिकानं सळायतनं उप्पज्जति ।

---

१. उप्पन्नकं रो. ।
२. पटिसन्धाना रो. ।
३. ० च रो. ।
४. यापेति रो. ।
५. अनावट्टन्तस्स रो. ।
६. ० व रो. ।
७. उप्पत्ति सिये न रो. ।

गब्भसेय्यकानं अज्झत्तिकायतनेसु मनायतनकायायतनानेव पटिसन्धिक्खणे[1] उप्पज्जन्ति । सेसानि चत्तारि सत्तसत्ततिरत्तिम्हि । तानि च खो येन कम्मुना पटिसन्धि गहिता, तस्सेव अञ्ञस्स वा कतत्ता ति अयं सकसमये वादो । येसं पन एककम्मसम्भवत्ता सम्पन्नसाखाविटपानं[2] रुक्खादीनं अंकुरो विय बीजमत्तं सळायतनं मातुकुच्छिस्मिं पटिसन्धिक्खणे येव[3] उप्पज्जती ति लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं;[4] ते सन्धाय **सळायतनं** ति (क० व० ४२७) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **सब्बङ्गपच्चङ्गी** ति आदि सळायतने सति एवरूपो हुत्वा ओक्कमेय्या ति चोदनत्थं वुत्तं । **मातुकुच्छिगतस्सा** ति पुच्छा परवादिस्स । परतो **मातुकुच्छिगतस्स पच्छा केसा** ति[5] पुच्छा सकवादिस्स । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति । B. 241

सळायतनुप्पत्तिकथावण्णना निट्ठिता

३. अनन्तरपच्चयकथावण्णना

८-१२. इदानि अनन्तरपच्चयकथा नाम होति । तत्थ नच्चगीतादीसु रूपदस्सनसद्दसवनादीनं लहुपरिवत्तितं दिस्वा "इमानि विञ्ञाणानि अञ्ञमञ्ञस्स अनन्तरा उप्पज्जन्ती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय चक्खुविञ्ञाणस्सा ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **सोतविञ्ञाणं रूपारम्मणं येवा** ति (क० व० ४२९) यदि चक्खुविञ्ञाणस्स अनन्तरा उप्पज्जेय्य, विपाकमनोधातु विय रूपारम्मणं सिया ति चोदेतुं वुत्तं । **चक्खुं च पटिच्च रूपे च उप्पज्जति सोतविञ्ञाणं** ति पञ्हेसु सुत्ताभावेन पटिक्खिपित्वा अनन्तरुप्पत्तिं[6] सल्लक्खेत्वा[7] लद्धिवसेन पटिजानाति । **तञ्ञेव चक्खुविञ्ञाणं तं सोतविञ्ञाणं** ति यथा पठमजवनानन्तरं

---

१. ० च रो. ।
२. विटपादीनं रो. ।
३. च रो. ।
४. ० अपरसेलियानं रो. ।
५. ० सेसानि रो. ।
६. अनन्तरपवत्ति सी. ।
७. सल्लक्खेन्तो रो. ।

दुतियजवनं मनोविञ्ञाणभावेन तञ्ञेव होति, किं ते तथा एतं पि द्वयं एकमेवा ति पुच्छति । इमिना[1] नयेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो।
R. 149 **नच्चति गायती** ति आदि वचनं आरम्मणसमोधाने[2] लहुपरिवत्तिताय[3] वोकिण्णभावं दीपेति, न अनन्तरपच्चयतं, तस्मा असाधकं ति ।

अनन्तरपच्चयकथावण्णना निट्ठिता

४. अरियरूपकथावण्णना

१३-१४. इदानि अरियरूपकथा नाम होति । तत्थ सम्मावाचाकम्मन्ता रूपं, तं च खो "सब्बं रूपं चत्तारि च महाभूतानि चतुन्नं च महाभूतानं उपादायरूपं" ति (म० नि० ३.४७) वचनतो उपादायरूपं ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय
B. 242 **अरियरूपं महाभूतानं उपादाया** ति पुच्छा सकवादिस्स । तत्थ अरियानं रूपं, अरियं वा रूपं ति अरियरूपं । **आमन्ता** ति (क० व० ४३२) लद्धियं ठत्वा पटिञ्ञा इतरस्स । **कुसलं** ति पुट्ठो लद्धिवसेनेव पटिजानाति । अनासवपुच्छादीसु पि एसेव नयो । **यं किञ्चि रूपं** ति सुत्तं ठपेत्वा भूतानि सेसरूपस्स उपादाभावं दीपेति, न सम्मावाचाकम्मन्तानं । तेसञ्हि रूपमत्तञ्ञेव[4] असिद्धं, कुतो उपादारूपता; तस्मा असाधकं ति ।

अरियरूपकथावण्णना निट्ठिता

५. अञ्ञो अनुसयो ति कथावण्णना

१५-१६. इदानि अञ्ञो अनुसयो ति कथा नाम होति । तत्थ यस्मा पुथुज्जनो कुसलाब्याकते चित्ते वत्तमाने सानुसयो ति वत्तब्बो, न[5] परियुट्ठितो ति[6] तस्मा अञ्ञो अनुसयो, अञ्ञं परियुट्ठानं ति

१. इमिना व रो. । २. ० समोधानेव रो. ।
३. ० परिवत्तताय रो. । ४. रूपत्तञ्ञेव रो. ।
५. ० पन रो. । ६. रो. पोत्थके नत्थि ।

येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **अञ्ञो कामरागानुसयो** ति (क० व० ४३३) पुच्छा सकवादिस्स. पटिञ्ञा इतरस्स । सेसं[1] हेट्ठा अनुसयकथायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं । **सानुसयो** ति आदि पन तस्मिं समये अनुसयस्स अप्पहीनत्ता सानुसयो ति वत्तब्बतं, अनुप्पन्नत्ता च परियुट्ठितो ति अवत्तब्बतं दीपेति, न अनुसयपरियुट्ठानानं[2] अञ्ञत्तं, R. 150 तस्मा असाधकं ति ।

अञ्ञो अनुसयो ति कथावण्णना निट्ठिता

६. परियुट्ठानं चित्तविप्पयुत्तं ति कथावण्णना

१७. इदानि परियुट्ठानं चित्तविप्पयुत्तं ति कथा नाम होति । तत्थ यस्मा अनिच्चादितो मनसिकरोतो पि रागादयो उप्पज्जन्ति । वुत्तं पि चेतं – "अप्पेकदा भो भारद्वाज, असुभतो मनसिकरिस्सामी ति सुभतो व मनसिकरोती" ति (सं० नि० ३.१०३) । तस्मा परियुट्ठानं चित्तविप्पयुत्तं ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं येव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमेत्थ[3] उत्तानत्थमेवा ति ।

परियुट्ठानं चित्तविप्पयुत्तं ति कथावण्णना निट्ठिता

७. परियापन्नकथावण्णना

१८-२०. इदानि परियापन्नकथा नाम होति । तत्थ यस्मा B. 243 कामरागो कामधातुं अनुसेति, कामधातुपरियापन्नो ति च वुच्चति, तस्मा रूपरागारूपरागा पि रूपधातुअरूपधातुयो अनुसेन्ति । रूपधातुअरूपधातुपरियापन्ना येव च नाम होन्ती[4] ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय **रूपरागो** ति (क० व० ४३५) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । तत्थ अनुसेती ति यथा कामरागो कामवितक्कसङ्खातं कामधातुं

१. सेसमेत्थ रो. ।
२. ० परियुट्ठानं रो. ।
३. ० हेट्ठा वुत्तनयत्ता रो. ।
४. ते ति रो. ।

सहजातवसेन अनुसेति, किं ते एवं[1] रूपरागो रूपधातुं ति पुच्छति। **परियापन्नो** ति यथा च सो तिविधाय कामधातुया किलेसकामवसेन परियापन्नत्ता कामधातुपरियापन्नो, किं ते एवं रूपरागो पि रूपधातुपरियापन्नो ति पुच्छति। इतरो पनस्स अधिप्पायं असल्लक्खेन्तो केवलं लद्धिवसेन आमन्ता ति पटिजानाति। अथ नं तमत्थं सल्लक्खापेतुं कुसलविपाककिरियसङ्खातेहि समापत्तेसियादीहि संसन्दित्वा पुच्छितुं **समापत्तेसियो** ति आदिमाह। सेसमेत्थ
R. 151 यथा पाळिमेव निय्याति। **ननु कामरागो** ति आदि वचनं पि कामरागस्सेव कामधातुयं अनुसयभावं[2] परियापन्नतं च दीपेति, न इतरेसं इतरधातूसू ति।

परियापन्नकथावण्णना निट्ठिता

८. अब्याकतकथावण्णना

२१-२३. इदानि अब्याकतकथा नाम होति। तत्थ विपाककिरियरूपनिब्बानसङ्खातं चतुब्बिधं अब्याकतं अविपाकत्ता[3] अब्याकतं ति वुत्तं। दिट्ठिगतं – "सस्सतो लोको ति खो, वच्छ, अब्याकतमेतं" ति (सं० नि० ३.३३७) सस्सतादिभावेन अकथितत्ता। येसं पन इमं विभागं अग्गहेत्वा पुरिमाब्याकतं विय दिट्ठिगतं पि अब्याकतं ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव उत्तरापथकानं च; तेसं तं विभागं दस्सेतुं **दिट्ठिगतं अब्याकतं** ति (क० व० ४३७) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

अब्याकतकथावण्णना निट्ठिता

---

१. एव रो.। २. ० च रो.।
३. विपाकत्ता रो.।

६. अपरियापन्नकथावण्णना

२४-२५. इदानि अपरियापन्नकथा नाम होति। तत्थ यस्मा B. 244
पुथुज्जनो झानलाभी कामेसु वीतरागो ति वत्तब्बो होति, न पन विगतदिट्ठिको ति, तस्मा दिट्ठिगतं अपरियापन्नं ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं;[1] ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

अपरियापन्नकथावण्णना निट्ठिता

चुद्दसमो वग्गो समत्तो

---

१. तैसं येव रो.।

१५. पन्नरसमो वग्गो

१. पच्चायताकथावण्णना

R. 152 १-७. इदानि पच्चयताकथा[1] नाम होति। तत्थ यो धम्मो हेतुपच्चयेन पच्चयो, सो येसं हेतुपच्चयेन पच्चयो, तेसञ्ञेव यस्मा आरम्मणानन्तरसमनन्तरपच्चयेन पच्चयो न होति, यो वा आरम्मणपच्चयेन पच्चयो, सो यस्मा तेसं येव अनन्तरसमनन्तरपच्चयेन पच्चयो न होति, तस्मा पच्चयता ववत्थिता ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

पच्चयताकथावण्णना निट्ठिता

२. अञ्ञमञ्ञपच्चायकथावण्णना

८-६. इदानि अञ्ञमञ्ञपच्चयकथा नाम होति। तत्थ येसं समये "अविज्जापच्चया सङ्खारा" ति अयमेव तन्ति, "सङ्खारपच्चया पि अविज्जा" ति अयं नत्थि, तस्मा अविज्जा व सङ्खारानं पच्चयो, न पन सङ्खारा अविज्जाया ति लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; ते

B. 245 सन्धाय अविज्जासङ्खारादीनं अञ्ञमञ्ञपच्चयता पि अत्थी ति दस्सेतुं पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **अविज्जा सङ्खारेना** ति (क० व० ४४३) एत्थ अपुञ्ञाभिसङ्खारो व गहितो। तस्मा सङ्खारपच्चया पि अविज्जा ति एत्थ सहजातअञ्ञमञ्ञअत्थिअविगतसम्पयुत्तवसेन पच्चयता वेदितब्बा।

उपादानपच्चया पि तण्हा ति एत्थ ठपेत्वा कामुपादानं सेसानि तीणि उपादानानि अविज्जाय[2] सङ्खारा विय तण्हाय पच्चया होन्ती

१. पच्चयकथा रो.। २. अविज्जा पि या रो.।

ति वेदितब्बानि । सेसं यथा पाळिमेव निय्याति । **जरामरणपच्चया** ति पुच्छा परवादिस्स, **नामरूपं विञ्ञाणपच्चया** ति सकवादिस्सा ति ।

अञ्ञमञ्ञपच्चयकथावण्णना निट्ठिता

३. अद्धाकथावण्णना

१०-११. इदानि अद्धाकथा नाम होति । तत्थ "तीणिमानि R. 153
भिक्खवे, कथावत्थूनी" ति (अं० नि० १.१८२) सुत्तं निस्साय कालसङ्खातो अद्धा नाम परिनिप्फन्नो अत्थी ति येसं लद्धि; तेसं "अद्धा नाम कोचि परिनिप्फन्नो नत्थि अञ्ञत्र कालपञ्ञत्तिमत्ता । रूपादयो पन खन्धा व परिनिप्फन्ना" ति विभागं दस्सेतुं **अद्धा परिनिप्फन्नो** ति (क० व० ४४३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "सचे सो परिनिप्फन्नो, रूपादीसु अनेन अञ्ञतरेन भवितब्बं" ति चोदेतुं **रूपं** ति आदिमाह । इतरो पटिक्खिपति । सेसं यथा पाळिमेव निय्याती ति ।

अद्धाकथावण्णना निट्ठिता

४. खणलयमुहुत्तकथावण्णना

१२-१३. खणलयमुहुत्तकथासु पि एसेव नयो । सब्बे पि हेते खणादयो अद्धापरियाया एवा ति ।

खणलयमुहुत्तकथावण्णना निट्ठिता

५. आसवकथावण्णना

१४-१५. इदानि आसवकथा नाम होति । तत्थ यस्मा चतूहि
आसवेहि उत्तरि[1] अञ्ञो आसवो नाम नत्थि, येन चत्तारो आसवा B. 246
सासवा सियुं, तस्मा चत्तारो आसवा अनासवा ति येसं लद्धि, सेय्यथापि

१. उत्तरिं रो. ।

हेतुवादानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि ते आसवा अनासवा, एवं सन्ते तेहि मग्गादिलक्खणप्पत्तेहि भवितब्बं" ति चोदेतुं **मग्गो** ति (क० व० ४४६) आदिमाह। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

आसवकथावण्णना निट्ठिता

६. जरामरणकथावण्णना

१६-१७. इदानि जरामरणकथा नाम होति। तत्थ जरामरणं
R. 154 नाम अपरिनिप्फन्नत्ता लोकियं ति वा लोकुत्तरं ति वा न वत्तब्बं। 'लोकिया धम्मा लोकुत्तरा धम्मा" ति[1] हि दुके[1] जरामरणं नेव लोकियपदे, न लोकुत्तरपदे निद्दिट्ठं। तत्थ येसं इमं लक्खणं अनादियित्वा लोकुत्तरानं धम्मानं जरामरणं लोकुत्तरं ति लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

जरामरणकथावण्णना निट्ठिता

७. सञ्ञावेदयितकथावण्णना

१८-१९. इदानि सञ्ञावेदयितकथा नाम होति। तत्थ सञ्ञावेदयितनिरोधसमापत्ति नाम न कोचि धम्मो, चतुन्नं पन खन्धानं निरोधो। इति सा नेव लोकिया न लोकुत्तरा। यस्मा पन लोकिया न होति, तस्मा लोकुत्तरा ति येसं लद्धि, सेय्यथापि हेतुवादानं येव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसं पुरिमकथासदिसमेवा ति।

सञ्ञावेदयितकथावण्णना निट्ठिता

१-१. तीहि दुकेहि रो.।

८. दुतियसञ्ञावेदयितकथावण्णना

२०-२१. इदानि यस्मा सा[1] लोकुत्तरा[2] न होति, तस्मा लोकिया ति येसं लद्धि, सेय्यथापि हेतुवादानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसं पुरिमसदिसमेवा[3] ति । B. 247

दुतियसञ्ञावेदयितकथावण्णना निट्ठिता

९. ततियसञ्ञावेदयितकथावण्णना

२२. इदानि यस्मा "असुको मरणधम्मो, असुको न मरणधम्मो" ति सत्तानं मरणधम्मताय नियामो नत्थी ति सञ्ञावेदयितनिरोधं समापन्नो पि कालं करेय्या ति येसं लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकानं; तेसं समापन्नाय पि मरणधम्मताय मरणसमयं च अमरणसमयं[4] च दस्सेतुं पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं यस्मा कालं करोन्तस्स नाम मरणन्तिकेहि फस्सादीहि भवितब्बं, तस्मा तेनाकारेन चोदेतुं **अत्थी** ति आदिमाह । R. 155

अफस्सकस्स कालकिरिया ति (क० व० ४४८) आदीनि पुट्ठो सेससत्ते सन्धाय पटिक्खिपति **विसं कमेय्या** ति आदीनि पुट्ठो समापत्तिआनुभावं सन्धाय पटिक्खिपति । दुतियवारे सरीरपकतिं सन्धाय पटिजानाति । एवं सन्ते पन समापत्तिआनुभावो नाम न होति, तेनेव **न निरोधसमापन्नो** ति अनुयुञ्जति ।

२३-२४. **न कालं करेय्या** ति (क० व० ४४९) पुच्छा परवादिस्स[5] । **अत्थि सो नियामो** ति[6] परवादिस्स पञ्हे पन यस्मा एवरूपो नियामो नाम[7] नत्थि, तस्मा पटिक्खिपति । चक्खुविञ्ञाणसमङ्गी ति आदि सकवादिना "नियामे असन्ते पि मरणसमये नेव

१. रो. पोत्थके नत्थि ।
२. ० नाम रो. ।
३. ० कथा ० रो. ।
४. आरम्मणसमयं रो. ।
५. सकवादिस्स रो. ।
६. च रो. ।
७. रो. पोत्थके नत्थि ।

मरति, नासमयेना" ति दस्सेतुं वुत्तं। तत्रायमधिप्पायो – यदि नियामाभावेन कालकिरिया भवेय्य, चक्खुविञ्ञाणसमङ्गिनो पि भवेय्य। ततो "पञ्चहि[1] विञ्ञाणेहि[2] न चवति, न उपपज्जती" ति सुत्तविरोधो सिया। यथा पन चक्खुविञ्ञाणसमङ्गिस्स कालकिरिया न होति, तथा निरोधसमापन्नस्सा पी ति।

ततियसञ्ञावेदयितकथावण्णना निट्ठिता

१०. असञ्ञसत्तुपिका कथावण्णना

B. 248 २५. इदानि असञ्ञसत्तुपिका[3] कथा नाम होति। तत्थ सञ्ञाविरागवसेन पवत्तभावना असञ्ञसमापत्ति पि निरोधसमापत्ति पि सञ्ञावेदयितनिरोधसमापत्ति नाम। इति द्वे सञ्ञावेदयितनिरोधसमापत्तियो लोकिया च लोकुत्तरा च। तत्थ लोकिया पुथुज्जनस्स असञ्ञसत्तुपिका होति, लोकुत्तरा अरियानं, सा[4] च नासञ्ञसत्तुपिका[4]। इमं पन विभागं अकत्वा अविसेसेन[5] सञ्ञावेदयितनिरोधसमापत्ति असञ्ञसत्तुपिका ति येसं लद्धि, सेय्यथापि हेतुवादानं; ते
R. 156 सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं यस्मा असञ्ञसमापत्तिं समापन्नस्स अलोभादयो अत्थि, न निरोधसमापत्तिं, तस्मा तेसं वसेन चोदेतुं **अत्थी** ति आदिमाह।

२६. **इधा पि असञ्ञी** ति (क० व० ४५०) पञ्हे इध सञ्ञाविरागवसेन समापन्नत्ता असञ्ञिता अनुञ्ञाता, **तत्रा पि**[6] असञ्ञसत्तेनेव। तस्मा इमं पटिञ्ञं गहेत्वा लद्धिं पतिट्ठपेन्तेन छलेन पतिट्ठापिता होति। इध वा निरोधसमापत्तिं सन्धाय असञ्ञिता अनुञ्ञाता। तत्रा पि इतो चुतस्स अनागामिनो निरोधसमापत्तिमेव तस्मा पि इमाय पटिञ्ञाय पतिट्ठापिता लद्धि[7] अप्पतिट्ठिता[7] येवा ति।

असञ्ञसत्तुपिका कथावण्णना निट्ठिता

---

१. ० पि रो.।
२. ञाणेहि रो.।
३. ० ति रो.।
४-४. पनासञ्ञा सत्तुपिका रो.।
५. अविसेसेनेव रो.।
६. सी., रो. पोत्थकेसु नत्थि।
७-७. रो. पोत्थके नत्थि।

११. कम्मूपचयकथावण्णना

२७. इदानि कम्मूपचयकथा नाम होति। तत्थ येसं कम्मूपचयो नाम कम्मतो अञ्ञो चित्तविप्पयुत्तो अब्याकतो अनारम्मणो ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय **अञ्ञं कम्मं** ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि कम्मतो अञ्ञो कम्मूपचयो, फस्सादितो पि अञ्ञेन फस्सूपचयादिना भवितब्बं" ति चोदेतुं **अञ्ञो फस्सो** ति आदिमाह। इतरो लद्धिया अभावेन पटिक्खिपति।

२८-२९. **कम्मेन सहजातो** ति (क० व० ४५१) पञ्हेसु B. 249 चित्तविप्पयुत्तं सन्धाय पटिक्खिपति, चित्तसम्पयुत्तं सन्धाय पटिजानाति। **कुसलो** ति पञ्हेसु पि चित्तविप्पयुत्तं[1] सन्धाय पटिजानाति[1]। परतो **अकुसलो** ति पञ्हेसु पि एसेव नयो।

३०. **सारम्मणो** ति (क० व० ४५२) पुट्ठो पन एकन्तं अनारम्मणमेव इच्छति, तस्मा पटिक्खिपति। **चित्तं भिज्जमानं** ति यदा चित्तं भिज्जमानं होति, तदा कम्मं भिज्जती[2] ति अत्थो। भुम्मत्थे वा पच्चत्तं, चित्ते भिज्जमाने ति अत्थो। अयमेव वा[3] पाठो। तत्थ यस्मा सम्पयुत्तो[4] भिज्जति, विप्पयुत्तो[5] न भिज्जति, तस्मा पटिजानाति चेव पटिक्खिपति च।

३१. **कम्मम्हि कम्मूपचयो** ति कम्मे सति कम्मूपच्चयो, कम्मे R. 157 वा पतिट्ठिते कम्मूपचयो, कम्मूपचयतो व विपाको निब्बत्तति। तस्मिं पन कम्मे निरुद्धे याव अंकुरुप्पादा बीजं विय याव विपाकुप्पादा कम्मूपचयो तिट्ठती ति अस्स लद्धि, तस्मा पटिजानाति। **तञ्ञेव कम्मं, सो कम्मूपचयो, सो कम्मविपाको** ति (क० व० ४५२) यस्मा

१-१. चित्तविप्पयुत्तं सन्धाय पटिक्खिपति, सम्पयुत्तं सन्धाय पटिजानाति सी. स्या; ० विप्पयुत्तं पटिक्खिपति ० रो.। २. भिज्जमानं होति रो.। ३. रो. पोत्थके नत्थि। ४. सम्पयुत्त रो.। ५. विप्पयुत्ते रो.।

कम्मम्हि कम्मूपचयो, सो च याव विपाकुप्पादा तिट्ठती ति अस्स लद्धि, तस्मा नं तेसं तिण्णं पि एकत्तं पुच्छति **विपाको सारम्मणो** ति इदं विपाको विय विपाकधम्मधम्मो पि आरम्मणपटिबद्धो येवा ति चोदनत्थं पुच्छति। इतरो पन लद्धिवसेनेकं पटिजानाति, एकं पटिक्खिपति। पटिलोमे पि एसेव नयो। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

कम्मूपचयकथावण्णना निट्ठिता

पन्नरसमो वग्गो समत्तो

ततियपण्णासको च समत्तो

१६. सोळसमो वग्गो

१. निग्गहकथावण्णना

१-२. इदानि निग्गहकथा नाम होति। तत्थ ये लोके बलप्पत्ता वसीभूता, ते यदि परस्स चित्तं निग्गण्हितुं न सक्कुणेय्युं, का तेसं बलप्पत्ति, को वसीभावो। बलप्पत्तिया पन वसीभावेन च अद्धा ते परस्स चित्तं निग्गण्हन्ती ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासंघिकानं; ते सन्धाय **परो परस्सा** ति (क० व० ४५४) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। तत्थ **निग्गण्हाती** ति संकिलेसापत्तितो निवारेति। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति। पग्गहकथाय पि एसेव नयो। B. 250, R. 158

निग्गहकथावण्णना निट्ठिता

३. सुखानुप्पदानकथावण्णना

५-६. इदानि[1] सुखानुप्पदानकथा नाम होति। तत्थ "बहूनं वत नो भगवा सुखधम्मानं उपहत्ता" ति (म० नि० २.१३१) सुत्तं निस्साय परो परस्स सुखं अनुप्पदेती[2] ति येसं लद्धि, सेय्यथापि हेतुवादानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **दुक्खं अनुप्पदेती** ति (क० व० ४५६) पुट्ठो पन तादिसं सुत्तपदं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। **अत्तनो सुखं** ति आदिपञ्हे यं अत्तनो परस्स वा, तं अनुप्पदातुं न सक्का। यं तस्सेव, किं[3] तत्थ अनुप्पदानं नामा ति पटिक्खिपति। **नेवत्तनो** ति आदिपञ्हे पन यं एवरूपं, न तं अनुप्पदिन्नं नाम भवितुमरहती ति लद्धिया पटिजानाति। **नो च वत रे** ति तादिसस्स सुखस्स अभावा वुत्तं। **सुखधम्मानं उपहत्ता** ति वचनं

---

१. ० यथा रो.। २. अनुप्पादेती ति रो.।
३. ० ते रो.।

R.159 भगवतो परेसं सुखुप्पत्तिया पच्चयभावं दीपेति, न अन्नादीनं विय सुखस्स अनुप्पदानं, तस्मा असाधकं ति ।

सुखानुप्पदानकथावण्णना निट्ठिता

४. अधिगय्ह मनसिकारकथावण्णना

B. 251. ७-११. इदानि अधिगय्ह मनसिकारकथा नाम होति । तत्थ दुविधो मनसिकारो—नयतो च आरम्मणतो च । तत्थ एकसङ्खारस्सा पि अनिच्चताय दिट्ठाय सब्बे सङ्खारा अनिच्चा ति अवसेसेसु नयतो मनसिकारो होति । अतीते पन सङ्खारे मनसिकरोन्तो न अनागते मनसिकातुं सक्कोति[1] । अतीतादीसु अञ्ञतरं मनसिकरोतो[2] आरम्मणतो मनसिकारो होति । तत्थ पच्चुप्पन्ने मनसिकरोन्तो येन चित्तेन ते मनसिकरोति, तं पच्चुप्पन्नक्खणे मनसिकातुं न सक्कोति । तत्थ येसं "सब्बे सङ्खारा अनिच्चा" ति आदि वचनं निस्साय "मनसिकरोन्तो नाम अधिगय्ह अधिगण्हित्वा सङ्गण्हित्वा[3] सब्बे सङ्खारे एकतो मनसिकरोती" ति लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलिया-परसेलियानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स ।

अथ नं यस्मा सब्बे एकतो मनसिकरोन्तेन[4] येन चित्तेन ते[5] मनसिकरोति, तं पि मनसिकातब्बं होति । तस्मा तं चित्तताय चोदेतुं **तेन चित्तेना** ति (क० व० ४५७) आह । इतरो आरम्मणं कत्वा न सक्का जानितुं ति सन्धाय पटिक्खिपति । एवं लक्खणं चित्तं ति ञातत्ता पन तं पि चित्तं ञातमेव होती ति सन्धाय पटिजानाति ।

अथ वा तञ्ञेव तस्स आरम्मणं न होती ति पटिक्खिपति । "सब्बे सङ्खारा अनिच्चा,[6] यदा पञ्ञाय पस्सती" ति आदीनि[7] निस्साय उप्पन्नलद्धिवसेन पटिजानाति । सेसपञ्हद्वये पि एसेव नयो ।

१. न सक्को ति रो. ।
२ मनसिकरोन्तो रो. ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. मनसिकरोन्तो रो. ।
५. रो. पोत्थके नत्थि ।
६. ० ति रो. ।
७. आदि रो. ।

तेन फस्सेना ति आदीसु पन तथारूपं सुत्तं अपस्सन्तो पटिक्खिपतेव। अतीतादिपञ्हेसु हेट्ठा वुत्तनयेनेव पटिक्खेपपटिञ्ञा वेदितब्बा। सेसं यथा पाळिमेव निय्याती ति। **सब्बे सङ्खारा** ति आदि वचनं नयतो दस्सनं सन्धाय वुत्तं, न एकक्खणे आरम्मणतो, तस्मा असाधकं ति। R. 160

अधिगय्हमनसिकारकथावण्णना निट्ठिता

५. रूपं हेतू ति कथावण्णना

१२. इदानि रूपं हेतू ति कथानाम होति। तत्थ **हेतू** ति कुसलमूलादिनो हेतुहेतुस्सा पि नामं, यस्स कस्सचि पच्चयस्सा पि। इमं पन विभागं अकत्वा "चत्तारो महाभूता हेतू" ति वचनमत्तं P. 252 निस्साय अविसेसेनेव रूपं हेतू ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **अलोभो हेतू** ति (क० व० ४६०) किं ते रूपं अलोभसङ्खातो हेतू ति पुच्छति, इतरो पटिक्खिपति। सेसेसु पि एसेव नयो। **महाभूता उपादानरूपानं उपादायहेतू** ति एत्थ पच्चयट्ठेन हेतुभावो वुत्तो, न मूलट्ठेन, तस्मा असाधकं ति।

रूपं हेतू ति कथावण्णना निट्ठिता

६. रूपं सहेतुकं ति कथावण्णना

१५-१७. सहेतुककथायं पि इमिना व नयेन अत्थो वेदितब्बो।

रूपं सहेतुकं ति कथावण्णना निट्ठिता

७. रूपं कुसलाकुसलं ति कथावण्णना

१८-२२. इदानि रूपं कुसलाकुसलं ति कथा नाम होति। तत्थ "कायकम्मं वचीकम्मं कुसलं पि अकुसलं पी" ति वचनं निस्साय कायवचीकम्मसङ्खातं कायविञ्ञत्तिवचीविञ्ञत्तिरूपं कुसलं पि

अकुसलं पी ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महिसासकानं चेव सम्मितियानं च; ते सन्धाय **रूपं कुसलं** ति (क० व० ४६२) पुच्छा सकवादिस्स पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि ते रूपं कुसलं, एवं विधेन अनेन[1] R. 161 भवितब्बं" ति चोदेतुं **सारम्मणं** ति आदिमाह। परतो अकुसलपञ्हे पि एसेव नयो। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

रूपं कुसलाकुसलं ति कथावण्णना निट्ठिता

८. रूपं विपाको ति कथावण्णना

२३-२५. इदानि रूपं विपाको ति कथा नाम होति। तत्थ यं[2] कम्मस्स कतत्ता उप्पन्ना चित्तचेतसिका विय कम्मस्स कतत्ता उप्पन्नं तं[3] रूपं पि विपाको ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव सम्मितियानं B. 253 च; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि ते रूपं विपाको, एवं विधेन अनेन[4] भवितब्बं" ति चोदेतुं **सुखवेदनीयं** ति (क० व० ४६४) आदिमाह। सेसं यथा[5] पाळिमेव निय्याती ति।

रूपं विपाको ति कथावण्णना निट्ठिता

९. रूपं रूपावचरारूपावचरं ति कथावण्णना

२६-२८. इदानि रूपं[6] रूपावचरारूपावचरं ति कथा[6] नाम होति। तत्थ यं कामावचरकम्मस्स कतत्ता रूपं, तं यस्मा कामावचरं, तस्मा रूपावचरारूपावचरकम्मानं पि कतत्ता रूपेन रूपावचरारूपावचरेन भवितब्बं ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **अत्थि रूपं रूपावचरारूपावचरं** ति (क० व० ४६५) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ हेट्ठा वुत्तनयमेवा ति।

रूपं रूपावचरारूपावचरं ति कथावण्णना निट्ठिता

---

१. एव रो.।
२. रो. पोत्थके नत्थि।
३. रो. पोत्थके नत्थि।
४. तेन रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि।
६ ६. रूपं-रूपावचरं-अरूपं-अरूपावचरं-ति-कथा रो.।

१०. रूपारूपधातुपरियापन्नकथावण्णना

२९-३३. इदानि रूपरागो रूपधातुपरियापन्नो अरूपरागो अरूपधातुपरियापन्नो ति कथा नाम होति। तत्थ यस्मा कामरागो कामधातुपरियापन्नो, तस्मा रूपरागारूपरागेहि पि रूपधातुअरूपधातुपरियापन्नेहि भवितब्बं ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं, ते R. 162 सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। केवलञ्हि तत्थ "रूपधातुं अनुसेति, अरूपधातुं अनुसेती" ति पदं विसेसो। सा च लद्धि[1] अन्धकानं चेव सम्मितियानं च[2]। अयं अन्धकानं येवा ति।

रूपरागो रूपधातुपरियापन्नो अरूपरागो अरूपधातुपरियापन्नो ति
कथावण्णना निट्ठिता

सोळसमो वग्गो समत्तो

---

१. सेय्यथापि रो.। २. चेव रो.।

१७. सत्तरसमो वग्गो

१. अत्थि अरहतो पुञ्ञूपचयकथावण्णना

B. 254, R. 163 १-४. इदानि[1] अत्थि अरहतो पुञ्ञूपचयो ति कथा नाम होति। तत्थ येसं अरहतो दानसंविभागचेतियवन्दनादीनि कम्मानि दिस्वा[2] अत्थि अरहतो पुञ्ञूपचयो ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "अरहा नाम पहीनपुञ्ञपापो, सो यदि पुञ्ञं करेय्य, पापं पि करेय्या" ति चोदेतुं अपुञ्ञूपचयो ति आह। इतरो पाणातिपातादिकिरियं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। **पुञ्ञाभिसङ्खारं** ति आदीसु भवगामिकम्मं अरहतो नत्थी ति पटिक्खिपति। **दानं ददेय्या** ति आदीसु किरियचित्तेन दानादिपवत्तिसब्भावतो[3] सकवादी पटिजानाति। इतरो चित्तं अनादियित्वा किरियापवत्तिमत्तदस्सनेनेव लद्धिं पतिट्ठपेति। सा पन अयोनिसो पतिट्ठापितत्ता अप्पतिट्ठापिता होती ति।

अत्थि अरहतो पुञ्ञूपचयो ति कथावण्णना निट्ठिता

२. नत्थि अरहतो अकालमच्चू ति कथावण्णना

५. इदानि नत्थि अरहतो अकालमच्चू ति कथा नाम होति। तत्थ "नाहं भिक्खवे, सञ्चेतनिकानं कम्मानं कतानं उपचितानं अपटिसंवेदित्वा ब्यन्तीभावं वदामी" ति (अं० नि० ४.३४०) सुत्तस्स अत्थं अयोनिसो गहेत्वा "अरहता नाम सब्बकम्मविपाकं पटिसंवेदयित्वा व[4] परिनिब्बायितब्बं, तस्मा नत्थि, अरहतो अकालमच्चू" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकानं चेव सिद्धत्थिकानं च; ते सन्धाय

---

१. रो. पोत्थके नत्थि।
२. निस्साय स्या.।
३. ० संभवतो रो.।
४. रो. पोत्थके नत्थि।

पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "सचे तस्स नत्थि अकालमच्चु, अरहन्तघातकेन नाम न भवितब्बं" ति चोदेतुं नत्थि **अरहन्तघातको** ति आह। इतरो आनन्तरियकम्मस्स चेव तादिसानं च पुग्गलानं सब्भावतो पटिक्खिपति।

६. **विसं न कमेय्या** ति (क० व० ४७१) पञ्हे "याव पुब्बे R. 164
कतकम्मं परिक्खयं न गच्छति, ताव न कमती" ति लद्धिया पटिक्खिपति। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याति।

७. **नाहं भिक्खवे** ति (क०व० ४७१) सुत्तं इदं सन्धाय वुत्तं – B. 255
सञ्चेतनिकानं कम्मानं कतानं विपाकं अपटिसंवेदित्वा अविन्दित्वा अननुभवित्वा ब्यन्तीभावं तेसं कम्मानं परिवट्टुमपरिच्छिन्नभावं न वदामि, तं च खो दिट्ठधम्मवेदनीयानं दिट्ठेव धम्मे, न ततो परं, उपपज्जवेदनीयानं अनन्तरं उपपत्तिं उपपज्जित्वा व, न ततो परं, अपरापरियवेदनीयानं यदा[1] विपाकोकासं लभन्ति,[2] तथारूपे अपरापरे[3] वा परियाये। एवं सब्बथा पि संसारपवत्ते सति लद्धविपाकवारे कम्मे न विज्जतेसो जगतिप्पदेसो, यत्थट्ठितो मुच्चेय्य पापकम्मा ति। एवं सन्ते यदेतं "अलद्धविपाकवारं पि कम्मं अवस्सं अरहतो पटिसंवेदितब्बं" ति कप्पनावसेन "नत्थि अरहतो अकालमच्चू" ति लद्धिपतिट्ठापनं कतं, तं दुक्कटमेवा ति।

नत्थि अरहतो अकालमच्चू ति कथावण्णना निट्ठिता

३. सब्बमिदं कम्मतो ति कथावण्णना

८. इदानि सब्बमिदं कम्मतो ति कथा नाम होति। तत्थ "कम्मुना वत्तति लोको" ति सुत्तं निस्साय "सब्बमिदं कम्मकिलेसविपाकवट्टं कम्मतो व होती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि राजगिरिकानं चेव सिद्धत्थिकानं च; ते सन्धाय **सब्बमिदं** ति (क० व० ४७१) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "एवं

१. न यदा रो.। २. लभति रो.।
३. अपरे सी., स्या., रो.।

सन्ते कम्मं पि कम्मतो आपज्जती" ति चोदेतुं **कम्मं पि कम्मतो** ति आह। इतरो यदि कम्मं पि कम्मतो व नाम तं कम्मं विपाको येव सिया ति पटिक्खिपति।

R. 165 **पुब्बेकतहेतू** ति "यदि सब्बमिदं कम्मतो, पुब्बेकतहेतुना तेन भवितब्बं" ति चोदेतुं पुच्छति, इतरो पुब्बेकतहेतुवादभयेन पटिक्खिपति।

कम्मविपाकतो ति (क० व० ४७१) "यदि सब्बमिदं कम्मतो, यं अतीतभवे पवत्तस्स हेतुभूतं कम्मं, तं[1] पि[1] पुरिमतरे[2] भवे कम्मतो ति कम्मविपाको सम्पज्जति, तेन ते सब्बमिदं कम्मविपाकतो आपज्जती" ति चोदेतुं पुच्छति। इतरो बीजतो अङ्कुरस्सेव पच्चुप्पन्नपवत्तस्स कम्मतो निब्बत्तिं सन्धाय पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो B. 256 तस्सा[3] पि कम्मस्स बीजस्स पुरिमबीजतो विय पुरिमकम्मतो पवत्तत्ता पटिजानाति। **पाणं हनेय्या** ति आदि "यदि सब्बं कम्मविपाकतो, पाणातिपातादीनि कम्मविपाकेनेव करेय्या" ति चोदेतुं वुत्तं। इतरो दुस्सील्यचेतना पि पुरिमकम्मनिब्बत्ता एकेन परियायेन विपाको येवा ति लद्धिया पटिजानाति। अथ नं "यदि ते पाणातिपातो कम्मविपाकतो निब्बत्तति, पाणातिपातो विय विपाको पि सफलो आपज्जती" ति चोदेतुं **सफलो** ति आह। इतरो पाणातिपातस्स निरयसंवत्तनिकादिभावतो सफलतं पस्सन्तो पटिजानाति। कम्मविपाकस्स पन इदं नाम फलं ति वुत्तट्ठानं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। अदिन्नादानादीसु पि एसेव नयो।

गिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खारो सफलो ति[4] देय्यधम्मवसेन दानफलं पुच्छति। **कम्मुना वत्तती** ति सुत्तं "नत्थि कम्मं" ति अकम्मवादितं पटिक्खिपित्वा "अत्थि कम्मं" ति कम्मवादितं कम्मस्सकतं दीपेति। न सब्बस्सेव कम्मतो निब्बत्ति,[5] तस्मा असाधकं ति।

सब्बमिदं कम्मतो ति कथावण्णना निट्ठिता

१-१. ० वा पि रो.।
२. पुरिमभवे रो.।
३. ० तस्सा रो.।
४. ० आह रो.।
५. निब्बत्ति रो.।

४. इन्द्रियबद्धकथावण्णना

११-१२. इदानि इन्द्रियबद्धकथा नाम होति। तत्थ दुविधं दुक्खं – इन्द्रियबद्धं, अनिन्द्रियबद्धं च। इन्द्रियबद्धं दुक्खवत्थुताय दुक्खं, अनिन्द्रियबद्धं उदयब्बयपटिपीळनट्ठेन "यदनिच्चं तं दुक्खं" ति सङ्गहितत्ता दुक्खं। इमं विभागं अग्गहेत्वा "यस्स परिञ्ञाय[1] भगवति ब्रह्मचरियं वुस्सति, तं इन्द्रियबद्धमेव दुक्खं, न इतरं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि हेतुवादानं, तेसं इतरस्सा पि दुक्खभावं दस्सेतुं **इन्द्रियबद्धञ्ञेवा** ति (क० व० ४७२) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यस्मा भगवता 'यदनिच्चं तं दुक्खं' ति वुत्तं, तस्मा इन्द्रियबद्धेनेव तेन[2] अनिच्चेन भवितब्बं" ति चोदेतुं **इन्द्रियबद्धञ्ञेव अनिच्चं** ति आदिमाह। **ननु अनिन्द्रियबद्धं अनिच्चं** ति ननु पथवीपब्बतपासाणादि अनिन्द्रियबद्धं पि अनिच्चं ति अत्थो।

१३. **न वत्तब्बं इन्द्रियबद्धञ्ञेव दुक्खं** ति (क०व० ४७३) पञ्हे **आमन्ता** ति पटिञ्ञा सकवादिस्स। अनिन्द्रियबद्धञ्हि दुक्खदोमनस्सानं आरम्मणं होति। उण्हकालस्मिञ्हि अग्गि सीतकाले च वातो दुक्खस्स आरम्मणं, निच्चं पि भोगविनासादयो दोमनस्सस्स। B. 257 तस्मा विना पि अनिच्चट्ठेन अनिन्द्रियबद्धं दुक्खं ति वत्तब्बं। कम्मकिलेसेहि पन अनिब्बत्तत्ता दुक्खं अरियसच्चं ति न वत्तब्बं, तथा मग्गेन अपरिञ्ञेय्यत्ता। यस्मा पन तिणकट्ठादिनिरोधो वा उतुबीजादिनिरोधो वा दुक्खनिरोधं अरियसच्चं नाम न होति, तस्मा इन्द्रियबद्धं दुक्खं चेव अरियसच्चं च, इतरं पन दुक्खमेवा ति इदं नानत्तं दस्सेतुं पटिजानाति। **यथा इन्द्रियबद्धस्सा** ति आदिवचनं इन्द्रियबद्धस्स परिञ्ञाय[3] ब्रह्मचरियवासं[4] परिञ्ञातस्स पुन अनुप्पत्तिं दीपेति। तेनेवेत्थ सकवादिना पटिक्खेपो कतो। "यदनिच्चं तं दुक्खं" ति वचनेन पन सङ्गहितस्स अनिन्द्रियबद्धस्स दुक्खभावं पटिसेधेतुं न सक्का ति, तस्मा असाधकं ति।

इन्द्रियबद्धकथावण्णना निट्ठिता

---

१. पटिञ्ञाय रो.। २. रो. पोत्थके नत्थि।
३. परिञ्ञेया रो.। ४. ० च रो.।

ठपेत्वा अरियमग्गं ति कथावण्णना

R. 167 १४-१५. इदानि ठपेत्वा अरियमग्गं ति कथा नाम होति । तत्थ "यस्मा अरियमग्गो 'दुक्खनिरोधगामिनिपटिपदा' ति वुत्तो, तस्मा ठपेत्वा अरियमग्गं अवसेसा सङ्खारा दुक्खा" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि हेतुवादानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि एवं समुदयस्सा पि दुक्खभावो आपज्जती" ति चोदेतुं **दुक्खसमुदयो पी** ति (क० व० ४७४) आह । इतरो हेतुलक्खणं सन्धाय पटिक्खिपति । पुन पुट्ठो पवत्तपरियापन्नभावं[1] सन्धाय पटिजानाति । **तीणेवा** ति पञ्हेसु सुत्तविरोधभयेन पटिक्खिपति, लद्धिवसेन पटिजानाति । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

ठपेत्वा अरियमग्गं ति कथावण्णना निट्ठिता

६. न वत्तब्बं सङ्घो दक्खिणं पटिग्गण्हाती ति कथावण्णना

१६-१७. इदानि न वत्तब्बं सङ्घो दक्खिणं पटिग्गण्हाती ति कथा नाम होति । तत्थ "परमत्थतो मग्गफलानेव सङ्घो, मग्गफलेहि
B. 258 अञ्ञो सङ्घो नाम नत्थि, मग्गफलानि च न किञ्चि पटिग्गण्हन्ति, तस्मा न वत्तब्बं सङ्घो दक्खिणं पटिग्गण्हाती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि महापुञ्ञवादीसङ्खातानं[2] वेतुल्लकानं; ते सन्धाय **न वत्तब्बं** ति (क० व० ४७४) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि सङ्घो न पटिग्गण्हेय्य, न नं सत्था आहुनेय्या ति आदीहि थोमेय्या" ति चोदेतुं **ननु सङ्घो आहुनेय्यो** ति आदिमाह ।

सङ्घस्स दानं देन्ती ति "ये ते सङ्घस्स देन्ति, ते पटिग्गाहकेसु असति कस्स ददेय्युं" ति चोदनत्थं वुत्तं । **आहुतिं जातवेदो वा** ति सुत्तं परसमयतो आगतं । तत्थ **महामेघं** ति मेघवुट्ठिं सन्धाय वुत्तं । वुट्ठिञ्हि मेदनी पटिग्गण्हाति, न मेघमेव । मग्गो पटिग्गण्हाती ति "मग्गफलानि सङ्घो" ति लद्धिया वदति, न च मग्गफलानेव सङ्घो ।

१. पवत्ति ० स्या., रो. । २. महासुञ्ञता वादसंखातानं च रो. ।

मग्गफलपातुभावपरिसुद्धे पन खन्धे उपादाय पञ्ञत्ता अट्ठ पुग्गला सङ्घो, R. 168
तस्मा असाधकमेतं ति ।

न वत्तब्बं सङ्घो दक्खिणं पटिग्गण्हाती ति कथावण्णना निट्ठिता

७. न वत्तब्बं सङ्घो दक्खिणं विसोधेती ति कथावण्णना

१८-१९. इदानि न वत्तब्बं सङ्घो दक्खिणं विसोधेती ति कथा नाम होति । तत्थ "मग्गफलानेव सङ्घो नाम, न च तानि दक्खिणं विसोधेतुं सक्कोन्ति, तस्मा न वत्तब्बं सङ्घो दक्खिणं विसोधेती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि तेसञ्ञेव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । आहुनेय्यो ति आदि "यदि सङ्घो दक्खिणं विसोधेतुं न सक्कुणेय्य[1], न नं सत्था एवं थोमेय्या" ति दस्सनत्थं वुत्तं । **विसोधेती** ति (क० व० ४७६) महप्फलं करोति । सङ्घस्मिञ्हि अप्पं दिन्नं बहु होति, बहु दिन्नं बहुतरं । **दक्खिणेय्या** ति दक्खिणारहा दक्खिणाय अनुच्छविका, दक्खिणं विसोधेतुं समत्था ति अत्थो । **दक्खिणं आराधेन्ती** ति सम्पादेन्ति, अप्पमत्तिकाय पि दक्खिणाय महन्तं फलं पापुणन्ती ति अत्थो । सेसं हेट्ठा वुत्तनयमेवा ति ।

न वत्तब्बं सङ्घो दक्खिणं विसोधेती ति कथावण्णना निट्ठिता

८. न वत्तब्बं सङ्घो भुञ्जती ति कथावण्णना

२०-२१. इदानि न वत्तब्बं सङ्घो भुञ्जती ति कथा नाम B. 259
होति । तत्रा पि "मग्गफलानेव सङ्घो नाम, न च तानि[2] किञ्चि भुञ्जन्ति, तस्मा न वत्तब्बं सङ्घो भुञ्जति, पिवति, खादति, सायती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि तेसं येव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि सङ्घो न भुञ्जेय्य, सङ्घभत्तादिकरणं निरत्थकं भवेय्या" ति चोदेतुं **ननु अत्थि केचि सङ्घभत्तानि करोन्ती** ति (क० व० ४७७) आदिमाह । **गणभोजनं** ति आदि "यदि सङ्घो न

१. न सक्का सी., स्या. । २. रो. पोत्थके नत्थि ।

R. 169 भुञ्जेय्य, कस्स गणभोजनादीनि सियुं" ति चोदनत्थं वुत्तं। **अट्ठ पानानी** ति इदं पि "यदि सङ्घो न पिवेय्य, कस्सेतानि पानानि सत्था अनुजानेय्या" ति चोदनत्थं वुत्तं। सेसमिधा पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

न वत्तब्बं सङ्घो भुञ्जती ति कथावण्णना निट्ठिता

९. न वत्तब्बं सङ्घस्स दिन्नं महप्फलं ति कथावण्णना

२२-२३. इदानि न वत्तब्बं सङ्घस्स दिन्नं महप्फलं ति कथा नाम होति। तत्रा पि "मग्गफलानेव सङ्घो नाम, न च सक्का तेसं किञ्चि दातुं, न च[1] तेहि पटिग्गण्हितुं, ना पि[2] तेसं दानेन कोचि उपकारो इज्झति, तस्मा न वत्तब्बं सङ्घस्स दिन्नं महप्फलं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि तेसं येव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **आहुनेय्यो** ति (क० व० ४७८) आदि "यदि सङ्घस्स दिन्नं महप्फलं न भवेय्य, न नं सत्था एवं थोमेय्या" ति दस्सनत्थं वुत्तं। सेसं यथा पाळिमेव निय्याती ति।

न वत्तब्बं सङ्घस्स दिन्नं महप्फलं ति कथावण्णना निट्ठिता

१०. न वत्तब्बं बुद्धस्स दिन्नं महप्फलं ति कथावण्णना

२४. इदानि न वत्तब्बं बुद्धस्स दिन्नं महप्फलं ति कथा नाम होति। तत्थ बुद्धो भगवा न किञ्चि परिभुञ्जति, लोकानुवत्तनत्थं पन परिभुञ्जमानं विय अत्तानं दस्सेति, तस्मा निरुपकारत्ता न वत्तब्बं
B. 260 तस्मिं[3] दिन्नं महप्फलं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि तेसं येव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **द्विपदानं अग्गो** ति (क० व० ४७९) आदि "मनुस्सदुस्सीले पि दानं सहस्सगुणं होति, किमङ्गं पन एवरूपे अग्गपुग्गले" ति दस्सनत्थं वुत्तं। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

न वत्तब्बं बुद्धस्स दिन्नं महप्फलं ति कथावण्णना निट्ठिता

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. रो. पोत्थके नत्थि।
३. तस्स रो.।

११. दक्खिणाविसुद्धिकथावण्णना

२५-२६. इदानि दक्खिणाविसुद्धिकथा नाम होति। तत्थ R. 170
"यदि पटिग्गाहकतो दक्खिणा विसुज्झेय्य, महप्फला भवेय्य। दायकेन दानं दिन्नं, पटिग्गाहकेन विपाको निब्बत्तितो ति अञ्ञो अञ्ञस्स कारको भवेय्य, परं कतं सुखदुक्खं आपज्जेय्य, अञ्ञो करेय्य, अञ्ञो पटिसंवेदेय्य। तस्मा दायकतो व दानं विसुज्झति, नो पटिग्गाहकतो, दायकस्सेव[1] चित्तविसुद्धि विपाकदायिका होती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **आहुनेय्यो** ति आदि "यदि पटिग्गाहकतो दानं न विसुज्झेय्य, किमस्स आहुनेय्यादिभावो करेय्या" ति दस्सनत्थं वुत्तं। **अञ्ञो अञ्ञस्स कारको** ति (क० व० ४८१) यदि दायकस्स दानचेतना पटिग्गाहकेन कता भवेय्य, युत्तरूपं सिया। तस्स पन दानचेतना परिसुद्धा पटिग्गाहकसङ्खातं वत्थुं पटिच्च महाविपाकट्ठेन विसुज्झति, तस्मा अचोदना एसा "पटिग्गाहकतो दानं विसुज्झती" ति।

दक्खिणाविसुद्धिकथावण्णना निट्ठिता

सत्तरसमो वग्गो समत्तो

---

१. दायकस्सेवत्थ सी. स्या.।

१८. अट्ठारसमो वग्गो

१. मनुस्सलोककथावण्णना

R. 171 १-२. इदानि मनुस्सलोककथा नाम होति। तत्थ "तथागतो
B. 261 लोके, जातो लोके संवड्ढो, लोकं अभिभुय्य विहरति अनुपलित्तो लोकेना" ति (सं० नि० २. ११४) सुत्तं अयोनिसो गहेत्वा "भगवा तुसितभवने निब्बत्तो तत्थेव वसति, न[1] मनुस्सलोकं आगच्छति, निम्मित्तरूपमत्तकं पनेत्थ दस्सेती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एतरहि वेतुल्लकानं येव, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स।

अथ नं पुट्ठोकासेन[2] चेव सुत्तसाधनेन च सञ्ञापेतुं **ननु अत्थी** ति (क० व० ४८२) आदिमाह। **लोके जातो** ति परवादी तुसितपुरं सन्धाय वदति। सत्थारा पनेतं मनुस्सलोकञ्ञेव सन्धाय लोकं[3] वुत्तं। **लोकं अभिभुय्या** ति परवादी मनुस्सलोकं अभिभवित्वा[4] ति दिट्ठिया वदति, सत्था पन आरम्मणलोकं अभिभवित्वा विहासि। **अनुपलित्तो लोकेना** ति परवादी मनुस्सलोकेन अनुपलित्ततं व सन्धाय वदति, सत्था पन लोकधम्मेसु किलेसेहि अनुपलित्तो विहासि। तस्मा असाधकमेतं ति।

मनुस्सलोककथावण्णना निट्ठिता

२. धम्मदेसनाकथावण्णना

३-५. इदानि धम्मदेसनाकथा नाम होति। तत्थ "तुसितपुरे ठितो भगवा धम्मदेसनत्थाय अभिनिम्मितं पेसेसि, तेन चेव तस्स च देसनं सम्पटिच्छित्वा आयस्मता आनन्देन धम्मो देसितो, न बुद्धेन भगवता" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि वेतुल्लकानञ्ञेव; ते सन्धाय पुच्छा

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. वुत्तोकासेन रो.।
३. रो. पोत्थके नत्थि। ४. अभिभूय्य विदित्वा रो।

सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि तेन धम्मो देसितो, स्वेव सत्था भवेय्या" ति चोदेतुं **अभिनिम्मितो जिनो** ति (क० व० ४८३) आदिमाह । इतरो तथा असम्पटिच्छन्तो पटि- R. 172
क्खिपति । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

धम्मदेसनाकथावण्णना निट्ठिता

३. करुणाकथावण्णना

६-७. इदानि करुणाकथा नाम होति । तत्थ पियायितानं वत्थूनं विपत्तिया सरागानं रागवसेन करुणापतिरूपिकं पवत्तिं दिस्वा रागो व करुणा नाम, सो च भगवतो नत्थि, तस्मा नत्थि बुद्धस्स B. 262
भगवतो करुणा "ति येसं लद्धि, सेय्यथापि उत्तरापथकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "करुणा नामेसा निक्किलेसताय चेव सत्तारम्मणताय च चेतोविमुत्तिताय[1] च एकादसानिसंसताय च मेत्तादीहि समानजातिका, तस्मा यदि भगवतो करुणा नत्थि, मेत्तादयोपिस्स न सियुं" ति चोदनत्थं **नत्थि बुद्धस्स भगवतो मेत्ता** ति (क० व० ४८४) आदिमाह । **आकारुणिको** ति पञ्हे तथारूपं वोहारं[2] अपस्सन्तो पटिक्खिपति । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

करुणाकथावण्णना निट्ठिता

४. गन्धजातकथावण्णना

८. इदानि गन्धजातकथा नाम होति । तत्थ येसं बुद्धे[3] भगवति[3] अयोनिसो पेमवसेन "भगवतो उच्चारपस्सावो अञ्ञे गन्धजाते अतिविय अधिगण्हाति, नत्थि ततो च[4] सुगन्धतरं गन्धजातं"

१. चेतोविमुत्तिया रो. ।
२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३-३. बुद्धो भगवा ति रो. ।
४. रो. पोत्थके नत्थि ।

ति लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं अन्धकानं चेव उत्तरापथकानं च; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति ।

गन्धजातकथावण्णना निट्ठिता

५. एकमग्गकथावण्णना

९-११. इदानि एकमग्गकथा नाम होति । तत्थ येसं बुद्धे[1] R. 173 भगवति अयोनिसो पेमवसेनेव "भगवा[2] सोतापन्नो हुत्वा सकदागामी, सकदागामी हुत्वा अनागामी, अनागामी हुत्वा[2] अरहत्तं सच्छाकासि, एकेनेव पन अरियमग्गेन चत्तारि फलानि सच्छाकासी" ति लद्धि, सेय्यथापि तेसञ्ञेव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा B. 263 इतरस्स । अथ नं चतूहि फलेहि सद्धिं उप्पन्नानं चतुन्नं फस्सादीनं एकतो समोधानवसेन चोदेतुं **चतुन्नं फस्सानं** ति (क०व०४८६) आदिमाह । **सोतापत्तिमग्गेना** ति आदि "कतरमग्गेन सच्छिकरोती" ति पुच्छनत्थं वुत्तं । **अरहत्तमग्गेना** ति च वुत्ते तेन सक्कायदिट्ठिआदीनं पहानाभाववसेन चोदेति । **भगवा सोतापन्नो** ति बुद्धभूतस्स सोतापन्नभावो नत्थी ति पटिक्खिपति । परतो पञ्हद्वये पि एसेव नयो । सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति ।

एकमग्गकथावण्णना निट्ठिता

६. झानसङ्कन्तिकथावण्णना

१२-१५. इदानि झानसङ्कन्तिकथा नाम होति । तत्थ येसं "इध भिक्खवे, भिक्खु विविच्चेव कामेहि पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, वितक्कविचारानं वूपसमा दुतियं झानं, ततियं झानं, चतुत्थं झानं, उपसम्पज्ज विहरती" ति (सं० नि० ४.२६२) इमं

१. रो. पोत्थके नत्थि ।

२-२. सोतापन्नो हुत्वा, सकदागामी हुत्वा, अनागामी हुत्वा स्या. ।

पटिपाटिदेसनं निस्साय "तस्स तस्स[1] झानस्स उपचारप्पवत्तिं विना व झाना झानं सङ्कमती" ति लद्धि, सेय्यथापि महिसासकानं चेव एकच्चानं च अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि ते दुतियज्झानूपचारं अप्पत्वा उप्पटिपाटिया पठमज्झाना दुतियज्झानमेव[2] सङ्कमति, पठमतो ततियं, दुतियतो चतुत्थं पि सङ्कमेय्या" ति चोदेतुं **पठमा झाना** ति (क० व० ४८७) आदिमाह । **या पठमस्सा** ति आदि "यदि पठमतो अनन्तरं दुतियं, दुतियादीहि वा ततियादीनि समापज्जति, एकावज्जनेन[3] समापज्जेय्या" ति चोदनत्थं वुत्तं । **कामे आदीनवतो** ति पठमं कामे आदीनवतो मनसि करोतो पच्छा उप्पज्जति । झानक्खणे पनेस R. 174 निमित्तमेव मनसि करोति । **तञ्ञेव पठमं** ति "यदि पुरिमजवनतो पच्छिमजवनं विय अनन्तरं उप्पज्जेय्य, ठपेत्वा पुरिमपच्छिमभावं लक्खणतो तञ्ञेव तं भवेय्या" ति चोदेतुं पुच्छति । इमिना उपायेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो । **विविच्चेव कामेही** ति आदीहि पटिपाटिया झानानं देसितभावं दीपेति, न अनन्तरुप्पत्तिं, तस्मा असाधकं ति ।

झानसङ्कन्तिकथावण्णना निट्ठिता ।

७. झानन्तरिककथावण्णना

१६-१७.इदानि झानन्तरिककथा नाम होति । तत्थ येसं समये B. 264 "पञ्चकनये पञ्च झानानि विभत्तानि, केवलं तयो समाधी उद्दिट्ठा" ति अवितक्कविचारमत्तस्स समाधिनो ओकासं अजानन्तानं "पठमस्स च दुतियस्स च झानस्स अन्तरे[4] झानन्तरिका नाम एसा" ति लद्धि, सेय्यथापि सम्मितियानं चेव एकच्चानं च अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "झानं पि चेतसिका धम्मा, फस्सादयो पि, तस्मा यदि झानन्तरिका नाम भवेय्य,[5]

१. रो. पोत्थके नत्थि ।
२. ० चेव रो. ।
३. एकापज्जनेव रो. ।
४. अनन्तरे रो. ।
५. न भवेय्य रो. ।

फस्सन्तरिकादीहि पि[1] भवितब्बं" ति चोदनत्थं **अत्थि फस्सन्तरिका** ति (क० व० ४६०) आदिमाह।

दुतियस्स च झानस्सा ति "यदि झानन्तरिका नाम भवेय्य, दुतियततियादीनि पि झानानेव, तेसं पि अन्तरिकाय भवितब्बं" ति चोदनत्थं वुत्तं। सो केवलं लद्धिया अभावेन पटिक्खिपति चेव पटिजानाति च। **पठमस्स चा** ति पुट्ठो लद्धिवसेन पटिजानाति।

१८. **सवितक्को सविचारो** ति आदि "तिण्णं पि समाधीनं समाधिभावे समाने अवितक्को विचारमत्तो[2] व समाधि झानन्तरिको, न इतरो ति को[3] एत्थ विसेसहेतू" ति चोदनत्थं वुत्तं।

१९-२१. **द्विन्नं झानानं पच्चुप्पन्नानं** ति पठमदुतियानि सन्धाय
R. 175 पुच्छति। इतरो "तेसं पच्चुप्पन्नानं येव अन्तरे[4] अवितक्को विचारमत्तो समाधि झानन्तरिको नाम होती" ति लद्धिया पटिजानाति। पठमं झानं निरुद्धं ति पुट्ठो तिण्णं एकक्खणे पवत्ति न युत्ता ति पटिजानाति। **अवितक्को विचारमत्तो समाधि पठमं झानं** ति चतुक्कनयवसेन पुच्छति। सकवादी तस्मिं नये तस्स अभावा पटिक्खिपति। **ननु तयो समाधी** ति एत्थायमधिप्पायो[5] – यथा[6] तेसु[6] तीसु समाधीसु द्वे समाधी झानानेव, न झानन्तरिका, एवं इतरेन पि झानेनेव भवितब्बं, न झानन्तरिकाया ति।

झानन्तरिककथावण्णना निट्ठिता

८. समापन्नो सद्दं सुणाती ति कथावण्णना

B. 265 २२-२४. इदानि समापन्नो सद्दं सुणाती ति कथा नाम होति। तत्थ "यस्मा पठमस्स झानस्स सद्दो कण्डको वुत्तो भगवता, यदि च समापन्नो तं न[7] सुणेय्य, कथं कण्डको सिया। तस्मा समापन्नो सद्दं,

---

१. ० ते रो.।
२. अविचारमत्तो रो.।
३. को चि रो.।
४. अनन्तरे रो.।
५. एत्थ अस्समधिप्पायेन रो.।
६-६. गतेसु रो.।
७. रो. पोत्थके नत्थि।

सुणाती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स ।

चक्खुना रूपं पस्सती ति (क० व० ४९३) आदि "समापन्नस्स ताव पञ्चद्वारप्पवत्तं नत्थि, तस्मिं[1] असति यदि सो सद्दं सुणेय्य, रूपं पि पस्सेय्या" ति चोदनत्थं वुत्तं । **सद्दो कण्डको** ति विक्खेपकरत्ता[2] वुत्तं । ओळारिकेन हि सद्देन सोते घट्टिते पठमज्झानतो वुट्ठानं होति, तेनेतं वुत्तं, तस्मा असाधकं । **दुतियस्स झानस्सा** ति आदि "यथा अञ्ञो पि कण्डको अन्तोसमापत्तियं नत्थि, एवं सद्दस्सवनं पी" ति बोधनत्थं वुत्तं, तं सब्बं उत्तानत्थमेवा ति ।

समापन्नो सद्दं सुणाती ति कथावण्णना निट्ठिता

९. चक्खुना रूपं पस्सती ति कथावण्णना

२५. इदानि चक्खुना रूपं पस्सती ति कथा नाम होति । तत्थ "चक्खुना रूपं दिस्वा" ति वचनं निस्साय "पसादचक्खुमेव रूपं पस्सती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासङ्घिकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि चक्खुना रूपं पस्सेय्य, रूपेन रूपं पस्सेय्या" ती ति चोदेतुं **रूपेन रूपं पस्सती** ति (क० व० ४९४) आह । इतरो रूपायतनं सन्धाय पटिक्खिपित्वा पुन पुट्ठो चक्खुमेव सन्धाय पटिजानाति । **पटिविजानाती** ति एत्थ अयमधिप्पायो[3] – पस्सती ति हि मयं पटिजाननं सन्धाय पुच्छाम, न चक्खूपसंहारमत्तं । तस्मा वदेहि ताव "किं ते चक्खुमा रूपेन रूपं पटिविजानाती" ति । इतरो पुरिमनयेनेव पटिक्खिपति चेव पटिजानाति च । अथ नं "एवं सन्ते रूपं[4] मनोविञ्ञाणं आपज्जति, तञ्हि पटिविजानाति नामा" ति चोदेतुं **रूपं मनोविञ्ञाणं** ति आह । इतरो लेसं अलभन्तो पटिक्खिपतेव ।

R. 176

१. तस्मा रो. ।
२. विक्खेपकरणत्ता स्या., रो. ।
३. अस्स ० रो. ।
४. ० पि रो. ।

अत्थि चक्खुस्स आवट्टना ति आदि "यदि चक्खु पटिविजाननट्ठेन
B. 266 पस्सति, चक्खुविञ्ञाणस्स विय तस्सा पि आवज्जनाय भवितब्बं" ति चोदेतुं पुच्छति । इतरो यस्मा न आवज्जनपटिबद्धं चक्खु, न तं आवज्जनानन्तरं उप्पज्जति, तस्मा **न हेवं** ति पटिक्खिपति । सोतेन सद्दं ति आदीसु पि एसेव नयो । **इध भिक्खवे भिक्खु चक्खुना रूपं पस्सती** ति ससम्भारकथानयेन वुत्तं । यथा हि उसुना विज्झन्तो पि "धनुना विज्झती" ति वुच्चति, एवं चक्खुविञ्ञाणेन पस्सन्तो पि[1] "चक्खुना पस्सती" ति वुत्तो, तस्मा असाधकमेतं । सेसेसु पि एसेव नयो पि ।

चक्खुना रूपं पस्सती ति कथावण्णना निट्ठिता

अट्ठारसमो वग्गो समत्तो

---

१. रो. पोत्थके नत्थि ।

१९. एकूनवीसतिमो वग्गो

१. किलेसपजहनकथावण्णना

१-४. इदानि किलेसपजहनकथा[1] नाम होति। तत्थ "यस्मा किलेसपहानं नाम अत्थि, पहीनकिलेसस्स च अतीता पि किलेसा पहीना व होन्ति, अनागता पि, पच्चुप्पन्ना पि, तस्मा अतीते पि[2] किलेसे पजहति, अनागते पि, पच्चुप्पन्ने पी" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **अतीते** ति (क० व० ४९६) आदिपुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसं यथा पाळिमेव निय्याति। **नत्थि किलेसे जहती** ति इमस्मिं पन परवादिस्स पञ्हे यस्मा कचवरं पजहन्तस्स कचवरे छड्डनवायामो विय किलेसे पजहन्तस्स न अतीतादिभेदेसु किलेसेसु वायामो अत्थि, निब्बानारम्मणे पन अरियमग्गे पवत्तिते किलेसा अनुप्पन्नायेव नुप्पज्जन्ती ति पहीना नाम होन्ति, तस्मा **न हेवं** ति पटिक्खिपति। **तेन हि अतीते किलेसे पजहती** ति आदि पन यस्मा "नत्थि किलेसपजहना" ति न वत्तब्बं, तस्मा अतीतादिभेदे पजहती ति छलेन वुत्तं। R. 177

किलेसपजहनकथावण्णना निट्ठिता

२. सुञ्ञतकथावण्णना

५. इदानि सुञ्ञतकथा नाम होति। तत्थ **सुञ्ञता** ति द्वे सुञ्ञता खन्धानं च अनत्तलक्खणं निब्बानं च। तेसु अनत्तलक्खणं ताव एकच्चं एकेन परियायेन सिया सङ्खारक्खन्धपरियापन्नं, निब्बानं, अपरियापन्नमेव। इमं पन विभागं अग्गहेत्वा "सुञ्ञता सङ्खारक्खन्ध-परियापन्ना" ति येसं[3] लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं, ते सन्धाय पुच्छा B. 267

१. किलेसप्पहानकथा रो.। २. रो. पोत्थके नत्थि।
३. रो. पोत्थके नत्थि।

सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **अनिमित्तं** ति (क०व० ४६७) सब्बनिमित्तरहितं निब्बानं। "अप्पणिहितो" ति पि तस्सेव नामं। कस्मा पनेतं आभतं ति? अविभज्जवादीवादे दोसारोपनत्थं। यस्स हि अविभजित्वा "एकदेसेनेव[1] सुञ्ञता सङ्खारक्खन्धपरियापन्ना" ति लद्धि, तस्स निब्बानं पि सङ्खारक्खन्धपरियापन्नं ति आपज्जति। इमस्स दोसस्सारोपनत्थं "अनिमित्तं अप्पणिहितं" ति आभतं। इतरो तस्स परियापन्नभावं अनिच्छन्तो पटिक्खिपति। **सङ्खारक्खन्धो न अनिच्चो** ति आदि निब्बानसङ्खाताय सुञ्ञताय अनिच्चभावापत्ति-दोसदस्सनत्थं वुत्तं।

R. 178

६. **सङ्खारक्खन्धस्स सुञ्ञता**[2] ति "यदि अञ्ञस्स खन्धस्स सुञ्ञाता अञ्ञक्खन्धपरियापन्ना, सङ्खारक्खन्धसुञ्ञताय पि सेसक्खन्ध-परियापन्नाय भवितब्बं" ति चोदनत्थं वुत्तं। **सङ्खारक्खन्धस्स सुञ्ञता न वत्तब्बा**" ति आदि "यदि सङ्खारक्खन्धसुञ्ञता सेसक्खन्धपरियापन्ना न होति, सेसक्खन्धसुञ्ञता पि सङ्खारक्खन्धपरियापन्ना न[3]" होती ति पटिलोमदस्सनत्थं वुत्तं।

७. **सुञ्ञमिदं भिक्खवे सङ्खारा** ति सुत्तं परसमयतो आभतं। तत्थ **सङ्खारा** ति "सब्बे सङ्खारा अनिच्चा" ति आगतट्ठाने विय पञ्चक्खन्धा, ते च अत्तत्तनियसुञ्ञत्ता[4] सुञ्ञता ति सासनावचरं होति, न विरुज्झति, तस्मा अनुञ्ञातं। यस्मा पनेतं न[5] सुञ्ञताय सङ्खारक्खन्धपरियापन्नभावं दीपेति, तस्मा असाधकं ति।

सुञ्ञातकथावण्णना निट्ठिता

३. सामञ्ञफलकथावण्णना

८-९. इदानि सामञ्ञफलकथा नाम होति। तत्थ मग्गवीथियं पि फलसमापत्तिवीथियं[6] पि अरियमग्गस्स विपाकचित्तं सामञ्ञफलं

---

१. एकंसेनेव रो.।
२. सुञ्ञताया रो.।
३-३. नाम अहोसि रो.।
४. अत्तनियसुञ्ञता रो.।
५. रो. पोत्थके नत्थि।
६. फलसमापत्तियं स्या., रो.।

नामा ति सकसमये सन्निट्ठानं । येसं पन तथा अग्गहेत्वा "किलेसपहानं B. 268
चेव फलुप्पत्ति च सामञ्ञफलं, तस्मा असङ्खतं" ति लद्धि, सेय्यथापि
पुब्बसेलियानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स ।
सेसमेत्थ हेट्ठा वुत्तनयत्ता यथा पाळिमेव निय्याती ति । R. 179

सामञ्ञफलकथावण्णना निट्ठिता

४. पत्तिकथावण्णना

१०-१३. इदानि पत्तिकथा नाम होति । तत्थ "यं यं पटिलब्भति,[1] तस्स तस्स पटिलाभो पत्ति नाम । सा च असङ्खता" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानञ्ञेव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमिधा पि हेट्ठा वुत्तनयत्ता यथा पाळिमेव निय्याती ति । **न वत्तब्बं** ति (क० व० ५००) आदि याय लद्धिया पत्ति असङ्खता ति मञ्ञति, तं पकासेतुं वुत्तं । तत्थ सकवादी "न हेवं वत्तब्बे" ति पटिक्खिपन्तो केवलं पत्तिया रूपादिभावं न सम्पटिच्छति । न हि पत्ति नाम कोचि धम्मो अत्थि, न पन असङ्खतभावं अनुजानाति । इतरो पन पटिक्खेपमत्तेनेव असङ्खता ति लद्धिं पतिट्ठपेति, सा अयोनिसो पतिट्ठापितत्ता अप्पतिट्ठिता येवा ति ।

पत्तिकथावण्णना निट्ठिता

५. तथताकथावण्णना

१४-१६. इदानि तथताकथा नाम होति । तत्थ येसं "रूपादीनं सब्बधम्मानं रूपादिसभावतासङ्खाता तथता नाम अत्थि, सा च सङ्खतेसु रूपादीसु अपरियापन्नत्ता असङ्खता" ति लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमिधा पि हेट्ठा वुत्तनयत्ता पाकटमेवा ति ।

तथताकथावण्णना निट्ठिता

---

१. लभति. स्या. ।

६. कुसलकथावण्णना

B. 269 १७-१९. इदानि कुसलकथा नाम होति । तत्थ अनवज्जं पि कुसलं इट्ठपाकं पि । अनवज्जं नाम किलेसविप्पयुत्तं । अयं नयो ठपेत्वा R. 180 अकुसलं सब्बधम्मे भजति । इट्ठविपाकं नाम आयतिं उपपत्तिपवत्तेसु[1] इट्ठफलनिप्फादकं पुञ्ञं । अयं नयो कुसलत्तिके आदिपदमेव भजति । येसं पन इमं विभागं अग्गहेत्वा अनवज्जभावमत्तेनेव निब्बानं कुसलं ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं, तेसं इट्ठविपाकट्ठेन निब्बानस्स कुसलताभावं दीपेतुं पुच्छा सकवादिस्स, अत्तनो लद्धिवसेन पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमिधा पि हेट्ठा वुत्तनयत्ता उत्तानत्थमेवा ति ।

कुसलकथावण्णना निट्ठिता

७. अच्चन्तनियामकथावण्णना

२०. इदानि अच्चन्तनियामकथा नाम होति । तत्थ येसं "सकिं निमुग्गो निमुग्गो[2] व होती" ति (अं० नि० ३. १५९) सुत्तं निस्साय "अत्थि पुथुज्जनस्स अच्चन्तनियामता" ति लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **मातुघातको** ति (क० व० ५०४) आदि "नियतमिच्छादिट्ठिकस्स च मातुघातकादीनं च समाने मिच्छत्तनियामे मातुघातकादीहि पि ते अच्चन्तनियतेहि भवितब्बं" ति चोदनत्थं वुत्तं । इतरो "नियतमिच्छादिट्ठिको संसारखाणुको भवन्तरे पि[3] नियतो व, इमे पन एकस्मिञ्ञेव अत्तभावे" ति लद्धिया **न हेवं** ति पटिक्खिपति ।

२१. **विचिकिच्छा उप्पज्जेय्या** ति (क० व० ५०४) "अयं नियतो वा नो वा" ति एवं उप्पज्जेय्या ति पुच्छति । इतरो अनुप्पत्तिकारणं अपस्सन्तो पटिजानाति । **नुप्पज्जेय्या** ति पुट्ठो पन यं दिट्ठिं आसेवन्तो नियामं ओक्कन्तो, तत्थ अनुप्पत्तिं सन्धाय पटि-

---

१. आयति उप्पत्तिवत्तेस रो. ।
२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।

जानाति । ततो **पहीना** ति पुट्ठो मग्गेन अप्पहीनत्ता पटिक्खिपति, तं[1] दिट्ठिं आरब्भ असमुदाचारतो पटिजानाति । अथ नं यस्मा पहानं नाम विना अरियमग्गेन नत्थि, तस्मा तस्स वसेन चोदेतुं **सोतापत्तिमग्गेना** ति आदिमाह । सो एकमग्गेना पि अप्पहीनत्ता B. 270
पटिक्खिपति । पुन **कतमेना** ति पुट्ठो मिच्छामग्गं सन्धाय **अकुसलेना** R. 181
ति आदिमाह ।

२३-२४. **उच्छेददिट्ठि उप्पज्जेय्या** ति दुतियनियामुप्पत्तिं पुच्छति । इतरो यस्मा "ये पि ते ओक्कला[2] वयभिञ्ञा[2] नत्थिकवादा अकिरियवादा[3] अहेतुकवादा" ति (म० न० ३. १४१) वचनतो तिस्सो पि नियतमिच्छादिट्ठियो एकस्स उप्पज्जन्ति, तस्मा पटिजानाति ।

अथ नं "न[4] च[4] नाम सो अच्चन्तनियामो"[5] ति चोदेतुं **हञ्चि** ति आदिमाह । अच्चन्तनियतस्स हि दुतियनियामो निरत्थको । **नुप्पज्जेय्या** ति पञ्हे यं सस्सतदिट्ठिया सस्सतं ति गहितं, तदेव उच्छिज्जिस्सती ति गहेत्वा अनुप्पत्तिं सन्धाय पटिजानाति । **पहीना** ति पुट्ठो मग्गेन अप्पहीनत्ता पटिक्खिपति, वुत्तनयेन अनुप्पज्जनतो पटिजानाति । **सस्सतदिट्ठि उप्पज्जेय्या** ति आदीसु पि एसेव नयो । सेसं विचिकिच्छावारे वुत्तनयमेव ।

२५. **न वत्तब्बं** ति पुच्छा परवादिस्स,[6] सुत्तस्स[7] अत्थिताय पटिञ्ञा सकवादिस्स । न पन सो भवन्तरे पि निमुग्गो व । इमस्मिञ्ञेव हि भवे अभब्बो सो तं दिट्ठिं पजहितुं ति अयमेत्थ अधिप्पायो, तस्मा असाधकमेतं ति । **सब्बकालं उम्मुज्जित्वा निमुज्जती** ति आदि वचनमत्ते अभिनिवेसं अकत्वा अत्थो[8] परियेसितब्बो ति दस्सनत्थं वुत्तं ति ।

अच्चन्तनियामकथावण्णना निट्ठिता

---

१. रो. पोत्थके नत्थि । २. उक्कणवस्स अञ्ञा सी., स्या.; उकलावस्सहञ्ञा रो. ।
३. अरियवादा रो. । ४-४. ननु रो. ।
५. ० नियतो रो. । ६. सकवादिस्स रो. ।
७. तस्स ० स्या., रो. । ८. ० पन सी., स्या. ।

८. इन्द्रियकथावण्णना

२६-२६. इदानि इन्द्रियकथा नाम होति । तत्थ लोकिया सद्धा सद्धा एव नाम, न सद्धिन्द्रियं । तथा लोकियं वीरियं…सति…समाधि …पञ्ञा पञ्ञा येव नाम, न पञ्ञिन्द्रियं ति येसं लद्धि, सेय्यथापि हेतुवादानं चेव महिसासकानं च; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा B. 271 इतरस्स । **नत्थि लोकिया सद्धा** ति (क० व० ५०७) आदि यस्मा R 182 लोकिया पि सद्धादयो व धम्मा अधिपतियट्ठेन इन्द्रियं, न सद्धादीहि अञ्ञं सद्धिन्द्रियादि नाम अत्थि, तस्मा लोकियानं पि सद्धादीनञ्ञेव सद्धिन्द्रियादिभावदस्सनत्थं वुत्तं । **अत्थि लोकियो मनो** ति आदि यथा ते लोकिया पि मनादयो धम्मा मनिन्द्रियादीनि, एवं लोकिया सद्धादयो पि सद्धिन्द्रियानी ति उपमाय तस्सत्थस्स[1] विभावनत्थं वुत्तं । सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति ।

इन्द्रियकथावण्णना निट्ठिता

एकूनवीसतिमो वग्गो समत्तो

---

१. तस्सेवत्थस्स रो. ।

२०. वीसतिमो वग्गो

१. असञ्चिच्चकथावण्णना

१-५. इदानि असञ्चिच्चकथा नाम होति। तत्थ "आनन्तरियवत्थूनि नाम गरूनि भारियानि, तस्मा असञ्चिच्चा पि तेसु वत्थूसु विकोपितेसु आनन्तरिको होती" ति येसं लद्धि,सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **असञ्चिच्चा** ति पुच्छा सकवादिस्स, लद्धिवसेन पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यस्मा आनन्तरियकम्मं[1] नाम कम्मपथप्पत्तं। यदि च असञ्चिच्च कम्मपथभेदो सिया, अवसेसा पाणातिपातादयो पि असञ्चिच्च भवेय्युं" ति चोदनत्थं **असञ्चिच्चपानं हन्त्वा** ति आदिमाह। इतरो तथारूपाय लद्धिया अभावेन पटिक्खिपति। सेसं यथा पाळिमेव निय्याति। R. 183

न वत्तब्बं मातुघातको ति पुच्छा परवादिस्स, रोगपटिकारादिकाले[2] असञ्चिच्च घातं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स। **ननु माता जीविता वोरोपिता** ति पञ्हे पि असञ्चिच्च वोरोपितं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्सेव। एवं[3] अधिप्पायं पन अग्गहेत्वा हञ्ची ति लद्धिपतिट्ठापनं इतरस्स। तं अयोनिसो पतिट्ठापितत्ता अप्पतिट्ठितमेव। पितुघातकादीसु पि एसेव नयो।

सङ्घभेदके पन धम्मसञ्ञिं सन्धाय **सङ्घभेदो आनन्तरिको** ति पुच्छा सकवादिस्स, "सङ्घं समग्गं भेत्वान, कप्पं निरयम्हि पच्चती" ति वचनं अयोनिसो गहेत्वा पटिञ्ञा परवादिस्स। पुन **सब्बे** ति पुट्ठो[4] सकपक्खे धम्मसञ्ञिं सन्धाय पटिक्खिपति, परपक्खे धम्मसञ्ञिं सन्धाय पटिजानाति। **धम्मसञ्ञी** ति पञ्हद्वये पि एसेव नयो। **ननु वुत्तं भगवता** ति सुत्तं एकन्तेनेव धम्मवादिस्स आनन्तरिकभाव- B. 272

१. अनन्तरिककम्मं रो.।
२. रोगतिकिच्छाकारादिकाले स्या.।
३. रो. पोत्थके नत्थि।
४. रो. पोत्थके नत्थि।

दस्सनत्थं वुत्तं । **आपायिको नेरयिको** ति गाथाय पि अधम्मवादी
R. 184 येव अधिप्पेतो । इतरो पन अधिप्पायं अग्गहेत्वा लद्धिं पतिट्ठपेति । सा अयोनिसो पतिट्ठापितत्ता अप्पतिट्ठिता येवा ति ।

असञ्चिच्चकथावण्णना निट्ठिता

२. ञाणकथावण्णना

७-९. इदानि ञाणकथा नाम होति । तत्थ दुविधं ञाणं – लोकियं च लोकुत्तरं च । लोकियं[1] समापत्तिञाणं पि होति; दानादिवसेन पवत्तं कम्मस्सकतञाणं पि; लोकुत्तरं सच्चपरिच्छेदकं मग्गञाणं पि फलञाणं पि । इमं पन विभागं अकत्वा "सच्चपरिच्छेदकमेव ञाणं न इतरं, तस्मा नत्थि पुथुज्जनस्स ञाणं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि हेतुवादानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **पञ्ञा** ति आदि ञाणवेवचनदस्सनत्थं वुत्तं । तेनेतं दीपेति – यदि तस्स ञाणं नत्थि, पञ्ञादयो पि नत्थि । अथ पञ्ञादयो अत्थि, ञाणं पि अत्थि । कस्मा ? पञ्ञादीनं ञाणतो अनञ्ञत्ता ति । **पठमं झानं** ति आदि समापत्तिञाणस्स दस्सनत्थं वुत्तं । **दानं ददेय्या** ति (क०व० ५१२) आदि कम्मस्सकतञाणस्स । **दुक्खं परिजानाती** ति लोकुत्तरमग्गञाणमेव दीपेति, न च लोकुत्तरमेव ञाणं ति ।

ञाणकथावण्णना निट्ठिता

३. निरयपालकथावण्णना

१०. इदानि निरयपालकथा नाम होति । तत्थ "निरये नेरयिककम्मानेव निरयपालरूपवसेन[2] वधेन्ति, नत्थि निरयपाला नाम
B. 273 सत्ता" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि तत्थ निरयपाला न सियुं,

---

१. लोकुत्तरलोकिय ० रो. । २. निरयपालरूपेन स्या., रो. ।

कम्मकारणा पि न भवेय्युं । कारणिकेसु हि सति कारणा" ति चोदेतुं **नत्थि निरयेसू** ति (क० व० ५१३) आदिमाह । R. 185

११-१२. **अत्थि मनुस्सेसू** ति (क०व०५१३) पच्चक्खेन ञापनत्थं । यथा हि मनुस्सेसु सति कारणिकेसु कारणा, एवं तत्था पी ति अयमेत्थ वुत्तं अधिप्पायो । **अत्थि निरयेसू** ति पुच्छा परवादिस्स[1], पटिञ्ञा इतरस्स । **न वेस्सभू नो पि च पेतिराजा** ति परवादिना सकसमयतो सुत्तं आभतं । तं पन सासनावचरिकं ति सकवादिना अनुञ्ञातं । तत्थ **वेस्सभू** ति एको देवो । **पेत्तिराजा** ति पेत्तिविसये पेतमहिद्धिको । **सोमादयो** पाकटा एव[2] । इदं वुत्तं होति – अत्तनो कम्मेहि इतो पणुन्नं परलोकं पत्तं[3] पुरिसं न एते वेस्सभूआदयो हनन्ति । येहि पन सो कम्मेहि तत्थ पणुन्नो, तानि सकानि कम्मानि[4] येव[4] नं तत्थ हनन्ती ति कम्मस्सकतं दीपेति, न निरयपालानं अभावं । सकवादिना पन तमेनं भिक्खवे ति आभतानि सुत्तपदानि नीतत्थानेवा[5] ति ।

निरयपालकथावण्णना निट्ठिता

४. तिरच्छानकथावण्णना

१३-१५. इदानि तिरच्छानकथा नाम होति । तत्थ देवेसु एरावणादयो देवपुत्ता हत्थिवण्णं अस्सवण्णं विकुब्बन्ति, नत्थि तत्थ तिरच्छानगता । येसं पन तिरच्छानवण्णिनो देवपुत्ते दिस्वा "अत्थि देवेसु तिरच्छानगता" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "यदि देवयोनियं तिरच्छानगता सियुं, तिरच्छानयोनियं पि देवा सियुं" ति चोदेतुं **अत्थि तिरच्छानगतेसू** ति (क० व० ५१४) आदिमाह । **कीटा** ति आदि येसं सो अभावं इच्छति, ते दस्सेतुं वुत्तं ।

१. सकवादिस्स रो. ।
२. पाकटा कायो च रो. ।
३. ०तं रो. ।
४-४. कम्मानिस्सेव रो. ।
५. तत्थनेवा ति रो. ।

B. 274 एरावणो ति पञ्हे तस्स अत्थिताय पटिञ्ञा सकवादिस्स, न तिरच्छानगतस्स[1]। **हत्थिबन्धा** ति आदि "यदि तत्थ हत्थिआदयो सियुं, हत्थिबन्धादयो[2] पि सियुं" ति चोदनत्थं वुत्तं। तत्थ **यावसिका** ति
R. 186 यवस्स दायका[3]। **कारणिका** ति हत्थाचरियादयो, येहि ते नानाविधं कारणं करेय्युं। **भत्तकारका** ति हत्थिआदीनं भत्तरन्धका। **न हेवं** ति तथा अनिच्छन्तो पटिक्खिपती ति।

तिरच्छानकथावण्णना निट्ठिता

५. मग्गकथावण्णना

१६-१९. इदानि मग्गकथा नाम होति। तत्थ[4] येसं "पुब्बेव खो पनस्स कायकम्मं वचीकम्मं आजीवो सुपरिसुद्धो होती" ति (म० नि० ३-३९१) इदं चेव सुत्तं सम्मावाचाकम्मन्ताजीवानं च चित्तविप्पयुत्ततं निस्साय "निप्परियायेन पञ्चङ्गिको व मग्गो" ति लद्धि, सेय्यथापि महिसासकानं, ते सन्धाय **पञ्चङ्गिको** ति (क०व०५१५) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **सम्मावाचा मग्गङ्गं, सा च न मग्गो ति** आदि परसमयवसेन वुत्तं। परसमयस्मिञ्हि सम्मावाचादयो मग्गङ्गं ति आगता। रूपत्ता पन मग्गो न होती ति वण्णिता। **सम्मादिट्ठि मग्गङ्गं** ति आदि मग्गङ्गस्स[5] अमग्गता नाम नत्थी ति दस्सनत्थं वुत्तं। पुब्बेव खो पनस्सा ति सुत्ते परिसुद्धसीलस्स मग्गभावना नाम[6] होति, न इतरस्सा ति आगमनियपटिपदाय विसुद्धिभावदस्सनत्थं "कायकम्मं वचीकम्मं आजीवो सुपरिसुद्धो होती" ति वुत्तं, न इमेहि विना पञ्चङ्गिकभावदस्सनत्थं। तेनेवाह "एवमस्सायं अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो भावनापारिपूरिं गच्छती" ति। सकवादिना आभतसुत्तं नीतत्थमेवा ति।

मग्गकथावण्णना निट्ठिता

---

१. तिरच्छानगताय रो.।
२. हत्थिक्खन्धादयो रो.।
३. दाया रो.।
४. रो. पोत्थके नत्थि।
५. मग्गस्स रो.।
६. रो. पोत्थके नत्थि।

६. ञाणकथावण्णना

२०-२१. इदानि ञाणकथा नाम होति । तत्थ धम्मचक्कप्पवत्तने द्वादसाकारञ्ञाणं सन्धाय "द्वादसवत्थुकं ञाणं लोकुत्तरं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियानं[1], ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, B. 275, R. 187 पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं "सचे तं द्वादसवत्थुकं, द्वादसहि मग्गञाणेहि भवितब्बं" ति चोदेतुं **द्वादसा** ति आदिमाह । इतरो मग्गस्स एकत्तं सन्धाय पटिक्खिपति, एकेकस्मिं[2] सच्चे सच्चञाणकिच्चञाणकतञाणानं वसेन ञाणनानत्तं सन्धाय पटिजानाति । **द्वादस सोतापत्तिमग्गा** ति आदीसु पि एसेव नयो । **ननु वुत्तं भगवता** ति सुत्तं सद्धिं पुब्बभाग-परभागेहि ञाणनानत्तं दीपेति, न अरियमग्गस्स[3] द्वादस ञाणतं[4] । तस्मा असाधकं ति ।

ञाणकथावण्णना निट्ठिता

वीसतिमो वग्गो समत्तो

चतुत्थपण्णासको च समत्तो

---

१. ० अपरसेलियानं रो. ।
२. एकस्मिं रो. ।
३. अरियपुग्गलस्स रो. ।
४. ञाणं तं रो. ।

२१. एकवीसतिमो वग्गो

१. सासनकथावण्णना

R. 188 १. इदानि सासनकथा नाम होति। तत्थ तिस्सो सङ्गीतियो सन्धाय "सासनं नवं कतं" ति च "अत्थि कोचि तथागतस्स सासनं नवं करोती" ति च "लब्भा तथागतस्स सासनं नवं कातुं" ति च[1] येसं लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानं; ते सन्धाय तीसु पि कथासु पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **सतिपट्ठाना** ति (क॰ व॰ ५१६) आदि सासनं नाम सतिपट्ठानादयो चेव अरियधम्मा, कुसलादीनं च देसना[2]। तत्थ येसं[3] भगवता देसिता सतिपट्ठानादयो, ठपेत्वा ते अञ्ञेसं वा सतिपट्ठानादीनं करणेन अकुसलादीनं वा कुसलादिभावकरणेन सासनं नवं कतं नाम भवेय्य, किं तं एवं कतं केनचि, अत्थि वा कोचि एवं करोति, लब्भा वा एवं कातुं ति तीसु पि पुच्छासु चोदनत्थं वुत्तं। सेसं सब्बत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

सासनकथावण्णना निट्ठिता

२. अविवित्तकथावण्णना

B. 276 २-५. इदानि अविवित्तकथा नाम होति। तत्थ यस्स पुग्गलस्स यो धम्मो पच्चुप्पन्नो, सो तेन अविवित्तो नामा ति इदं सकसमये सन्निट्ठानं। यस्मा पन पुथुज्जनेन तेधातुका धम्मा अपरिञ्ञाता, तस्मा सो एकक्खणे येव सब्बेहि पि तेधातुकेहि धम्मेहि अविवित्तो ति येसं लद्धि, सेय्यथापि तेसञ्ञेव, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **फस्सेही** ति (क॰ व॰ ५२०) आदि सब्बेसं फस्सादीनं एकक्खणे पवत्तिदोसदस्सनत्थं वुत्तं। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

अविवित्तकथावण्णना निट्ठिता

---

२. रो. पोत्थके नत्थि। २. देसिता रो.।
३. येन रो.।

१०. सञ्ञोजनकथावण्णना

६-७. इदानि सञ्ञोजनकथा नाम होति । तत्थ यस्मा अरहा R. 189
सब्बं बुद्धविसयं न जानाति, तस्मा तस्स तत्थ अविज्जाविचिकिच्छाहि अप्पहीनाहि[1] भवितब्बं ति सञ्ञाय "अत्थि किञ्चि सञ्ञोजनं अप्पहाय अरहत्तप्पत्ती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासङ्घिकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । **अत्थि किञ्चि सक्कायदिट्ठी** ति (क० व० ५२१) आदि अरहतो सब्बसंयोजनप्पहानदस्सनत्थं वुत्तं । **सब्बं बुद्धविसयं** ति पञ्हद्वये अरहतो सब्बञ्ञुतञाणाभावेन पटिसेधो कतो, न अविज्जाविचिकिच्छानं अप्पहानेन । इतरो पन तेसं अप्पहीनतं सन्धाय **तेन ही** ति लद्धिं पतिट्ठपेति । सा अयोनिसो पतिट्ठापितत्ता अप्पतिट्ठिता व[2] होती ति ।

सञ्ञोजनकथावण्णना निट्ठिता

११. इद्धिकथावण्णना

८-९. इदानि इद्धिकथा नाम होति । तत्थ इद्धि नामेसा कत्थचि इज्झति, कत्थचि न इज्झति, अनिच्चादीनं निच्चादिकरणे एकन्तेनेव न[3] इज्झति । सभागसन्ततिं[4] पन परिवत्तेत्वा विसभागसन्ततिकरणे वा सभागसन्ततिवसेनेव चिरतरप्पवत्तने[5] वा येसं B. 277
अत्थाय करियति, तेसं पुञ्ञादीनि कारणानि निस्साय कत्थचि इज्झति, भिक्खूनं अत्थाय पानीयस्स सप्पिखीरादिकरणे विय महाधातुनिधाने दीपादीनं चिरसन्तानप्पवत्तने विय चा ति इदं सकसमये सन्निट्ठानं । यं[6] पन आयस्मा पिलिन्दवच्छो रञ्ञो पासादं सुवण्णन्त्वेव[7] अधिमुच्चि, तं निस्साय येसं "अत्थि अधिप्पायइद्धी" ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **अत्थि अधिप्पायइद्धी** ति

१. अप्पहीना ति रो. ।
२. रो. पोत्थके नत्थि ।
३. रो. पोत्थके नत्थि ।
४. ० सन्तति रो. ।
५. तप्पवत्तने रो. ।
६. अयं रो. ।
७. सुवण्णंतीव रो. ।

(क० व० ५२२) पुच्छा सकवादिस्स । तत्थ **अधिप्पायइद्धी** ति R. 190 अधिप्पायइद्धि, यथाधिप्पायं इज्झनइद्धी ति अत्थो । **आमन्ता** ति लद्धिमत्ते ठत्वा पटिञ्ञा परवादिस्स । अथ नं अनिच्चादीनं[1] निच्चादिताय अनुयुञ्जितुं **निच्चपण्णारुक्खा होन्तू** ति आदिमाह । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव । लद्धिपतिट्ठापने[2] **सुवण्णो च पनासी** ति रञ्ञो पुञ्ञूपनिस्सयेन आसि, न केवलं थेरस्स अधिप्पायेनेव । तस्मा असाधकमेतं[3] ति ।

इद्धिकथावण्णना निट्ठिता

१२. बुद्धकथावण्णना

१०. इदानि बुद्धकथा नाम होति । तत्थ ठपेत्वा तस्मिं तस्मिं काले सरीरवेमत्ततं आयुवेमत्ततं पभावेमत्ततं च सेसेहि बुद्धधम्मेहि बुद्धानं बुद्धेहि हीनातिरेकता नाम नत्थि । येसं पन अविसेसेनेव[4] अत्थी ति लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय **अत्थि बुद्धानं** ति (क० व० ५२२) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं बुद्धधम्मेहि अनुयुञ्जितुं **सतिपट्ठानतो** ति आदिमाह । इतरो तेसं वसेन हीनातिरेकतं[5] अपस्सन्तो पटिक्खिपति येवा ति ।

बुद्धकथावण्णना निट्ठिता

१३. सब्बदिसाकथावण्णना

११. इदानि सब्बदिसाकथा नाम होति । तत्थ चतूसु दिसासु B. 278 हेट्ठा उपरी ति[6] समन्ततो लोकधातुसन्निवासं,[7] सब्बलोकधातूसु च बुद्धा अत्थी ति अत्तनो विकप्पसिप्पं[8] उप्पादेत्वा "सब्बदिसासु बुद्धा

१. अनिच्चानं रो. ।
२. ० पि रो. ।
३. असाधकं रो. ।
४. ० च रो. ।
५. हीनातिरित्ततं रो. ।
६. रो. पोत्थके नत्थि ।
७. लोकसन्निवेसं रो. ।
८. विकप्पं रो. ।

तिट्ठन्ती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि महासङ्घिकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **पुरत्थिमाया** ति (क० व० ५२३) पुट्ठो सक्यमुनिं सन्धाय पटिक्खिपति। पुन पुट्ठो लद्धिवसेन अञ्ञ-लोकधातुयं ठितं सन्धाय पटिजानाति। **किन्नामो सो भगवा** ति आदि "सचे त्वं[1] जानासि,[2] नामादिवसेन नं कथेही" ति चोदनत्थं वुत्तं। इमिना उपायेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो ति।

सब्बदिसाकथावण्णना निट्ठिता

१४. धम्मकथावण्णना

१२-१३. इदानि धम्मकथा नाम होति। तत्थ यस्मा रूपादयो रूपादिसभावेन नियता न तं सभावं विजहन्ति, तस्मा सब्बधम्मा नियता ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव एकच्चानं च उत्तरापथकानं; ते सन्धाय **सब्बे धम्मा** ति (क० व० ५२३) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "सचे ते नियता, मिच्छत्तनियता वा सियुं सम्मत्तनियता वा, इतो अञ्ञो नियामो नाम[3] नत्थी" ति चोदेतुं **मिच्छत्तनियता** ति आदिमाह। तत्थ पटिक्खेपो च पटिञ्ञा च परवादिस्स। **रूपं रूपट्ठेना** ति आदि येनत्थेन नियता ति वदति, तस्स वसेन चोदेतुं वुत्तं। तत्रायं अधिप्पायो – रूपञ्हि रूपट्ठेन नियतं ति रूपं रूपमेव, न वेदनादिसभावं ति अधिप्पायेन वत्तब्बं, इतो[4] अञ्ञथा न वत्तब्बं। कस्मा[5] ? रूपट्ठतो अञ्ञस्स रूपस्स अभावा। रूपसभावो हि रूपट्ठो, रूपसभावो च रूपमेव, न रूपतो अञ्ञो। वेदनादीहि पनस्स नानत्तपञ्ञापनत्थं एस वोहारो होती ति। तस्मा "रूपं रूपट्ठेन नियतं" ति वदन्तेन[6] रूपं नियतं ति[6] वुत्तं होति। नियतं च नाम मिच्छत्तनियतं वा सिया सम्मत्तनियतं वा, इतो अञ्ञो नियामो नाम नत्थी ति। अथ कस्मा पटिजानाती ति ? अत्थन्तर- R. 191

१. नं रो.। २. न जानासि सी., स्या.।
३. रो. पोत्थके नत्थि। ४. इति ० रो.।
५ तस्मा रो.। ६-६. रो. पोत्थके नत्थि।

वसेन। **रूपं रूपट्ठेन नियतं** ति एत्थ हि रूपं रूपमेव, न वेदनादिसभावं ति अयमत्थो। तस्मा पटिजानाति। इतो अञ्ञथा पनस्स नियतत्तं
B. 279 नत्थी ति पुन तेनेव नयेन चोदेतुं **मिच्छत्तनियतं** ति आदिमाह। तं सब्बं उत्तानत्थमेव। **तेन हि रूपं** ति लद्धि पि अयोनिसो पतिट्ठापितत्ता अप्पतिट्ठिता व होती ति।

धम्मकथावण्णना निट्ठिता

१५. कम्मकथावण्णना

१४-१५. इदानि कम्मकथा नाम होति। तत्थ "यस्मा दिट्ठधम्मवेदनीयादीनि दिट्ठधम्मवेदनीयट्ठादीहि नियतानि, तस्मा सब्बे कम्मा नियता" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि तेसञ्ञेव; ते सन्धाय पुच्छा
R. 192 सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **दिट्ठधम्मवेदनीयट्ठेन नियतं** ति (क० व० ५२५) एत्थ दिट्ठधम्मवेदनीयं दिट्ठधम्मवेदनीयट्ठमेव[1]। सचे दिट्ठेव धम्मे विपाकं दातुं सक्कोति देति, नो चे अहोसिकम्मं नाम होती ति इममत्थं सन्धाय पटिञ्ञा सकवादिस्स। मिच्छत्तसम्मत्तनियामवसेन[2] पनेतं अनियतमेवा ति सब्बं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

कम्मकथावण्णना निट्ठिता

एकवीसतिमो वग्गो समत्तो

---

१. दिट्ठधम्मवेदनीमेव रो.। २. मिच्छत्तवियामवसेन रो.।

२२. बावीसतिमो वग्गो

१. परिनिब्बानकथावण्णना

१-२. इदानि परिनिब्बानकथा नाम होति । तत्थ "यस्मा अरहा सब्बञ्ञुविसये अप्पहीनसंयोजनो व परिनिब्बायति, तस्मा अत्थि किञ्चि संयोजनं अप्पहाय परिनिब्बानं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमेत्थ हेट्ठा वुत्तनयमेवा ति । R. 193

परिनिब्बानकथावण्णना निट्ठिता

२. कुसलचित्तकथावण्णना

३-४. इदानि कुसलचित्तकथा नाम होति । तत्थ यस्मा अरहा सतिवेपुल्लप्पत्तो परिनिब्बायन्तो पि सतो सम्पजानो व परिनिब्बाति, तस्मा कुसलचित्तो परिनिब्बायती ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं यस्मा कुसलचित्तो नाम पुञ्ञाभिसङ्खाराभिसङ्खरणादिवसेन होति, तस्मा तेनत्थेन चोदेतुं **अरहा पुञ्ञाभिसङ्खारं** ति (क० व० ५२७) आदिमाह । सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याति । **सतो सम्पजानो** ति इदं जवनक्खणे किरियसतिसम्पजञ्ञानं वसेन असम्मोहमरणदीपनत्थं वुत्तं, न कुसलचित्तदीपनत्थं । तस्मा असाधकं ति । B. 280

कुसलचित्तकथावण्णना निट्ठिता

३. आनेञ्जकथावण्णना

५. इदानि आनेञ्जकथा नाम होति । तत्थ भगवा चतुत्थज्झाने ठितो परिनिब्बायी ति सल्लक्खेत्वा "अरहा आनेञ्जे ठितो परिनिब्बायती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानं, ते

सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। **पकतिचित्तो** ति
(क०व० ५२८) भवङ्गचित्ते। सब्बे हि सञ्ञिनो सत्ता भवङ्गचित्ते
R. 194 ठत्वा[1] भवङ्गपरियोसानेन चुतिचित्तेन कालं करोन्ति। इति नं इमिना
अत्थेन चोदेतुं एवमाह। तत्थ[2] किञ्चा पि चतुवोकारभवे अरहतो पकति-
चित्तं पि आनेञ्जं होति, अयं पन पञ्हो पञ्चवोकारभववसेन उद्धटो।
तस्मा **नो च वत रे वत्तब्बे** ति आह। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

आनेञ्जकथावण्णना निट्ठिता

४. धम्माभिसमयकथावण्णना

६. इदानि धम्माभिसमयकथा नाम होति। तत्थ अतीतभवे
सोतापन्नं मातुकुच्छियं वसित्वा निक्खन्तं दिस्वा "अत्थि गब्भसेय्याय
B. 281 धम्माभिसमयो" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानं, ते
सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "यदि तत्थ
धम्माभिसमयो अत्थि, धम्माभिसमयस्स कारणेहि धम्मदेसनादीहि[3]
भवितब्बं" ति चोदेतुं अत्थि गब्भसेय्याय धम्मदेसना ति आदिमाह।
सुत्तस्सा ति आदि भवङ्गवारं सन्धाय वुत्तं। गब्भसेय्याय हि येभुय्येन
भवङ्गमेव पवत्तति। तेनेव सत्तो[4] किरियमयप्पवत्ताभावा[5] सुत्तो,
भावनानुयोगस्स अभावा पमत्तो, कम्मट्ठानपरिग्गाहकानं सति-
सम्पजञ्ञानं अभावा मुट्ठस्सति असम्पजानो नाम होति,
तथारूपस्स कुतो धम्माभिसमयो ति?

धम्माभिसमयकथावण्णना निट्ठिता

५-७. तिस्सो पि कथावण्णना

७-९. इदानि[6] तिस्सो पि कथा नाम होन्ति। तत्थ[6]
अचिरजातानं पन सोतापन्नानं अरहत्तप्पत्तिं सुप्पवासाय च[7]

१. ठिता सी.।
२. रो. पोत्थके नत्थि।
३. एत्थ देसनादीहि रो.।
४. सुत्तो सी.,स्या.।
५. किरियसमयप्पवत्ताभावा सी., स्या.।
६-६. रो. पोत्थके नत्थि।
७. रो. पोत्थके नत्थि।

उपासिकाय सत्तवस्सिकं गब्भं दिस्वा "अत्थि गब्भसेय्याय अरहत्तप्पत्ती" ति च सुपिने आकासगमनादीनि दिस्वा "अत्थि धम्माभिसमयो" ति च "अत्थि तत्थ अरहत्तप्पत्ती" ति च इधा पि येसं लद्धियो, सेय्यथापि तेसञ्ञेव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । R. 195
सेसमेत्थ पुरिमकथा सदिसमेवा ति ।

तिस्सो पि कथावण्णना निट्ठिता

८. अब्याकतकथावण्णना

१०-११. इदानि अब्याकतकथा नाम होति । तत्थ "अत्थेसा भिक्खवे, चेतना, सा च खो अब्बोहारिका" ति (विन० ३.१५२) वचनतो "सब्बं सुपिनगतस्स चित्तं अब्याकतं" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानञ्ञेव, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याति । **सुपिनगतस्स चित्तं अब्बोहारिकं** ति (क० व० ५३०) इदं आपत्तिं सन्धाय वुत्तं । B 282
सुपिनगतस्स हि पाणातिपातादिवसेन किञ्चा पि अकुसलचित्तं पवत्तति, वत्थुविकोपनं पन नत्थी ति न सक्का तत्थ आपत्तिं पञ्ञपेतुं[1] । इमिना कारणेन तं अब्बोहारिकं, न अब्याकतत्ता ति ।

अब्याकतकथावण्णना निट्ठिता

९. आसेवनपच्चयकथावण्णना

१२-१४. इदानि आसेवनपच्चयकथा नाम होति । तत्थ यस्मा सब्बे धम्मा खणिका, न कोचि मुहुत्तं पि ठत्वा आसेवनपच्चयं आसेवति नाम । तस्मा नत्थि किञ्चि आसेवनपच्चयता । आसेवनपच्चयताय उप्पन्नं पन[2] न किञ्चि अत्थी ति येसं लद्धि, सेय्यथापि तेसञ्ञेव; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स । अथ नं सुत्तवसेनेव पञ्ञापेतुं

१. सञ्ञापेतुं रो. । २. रो. पोत्थके नत्थि ।

ननु वुत्तं भगवता पाणातिपातो ति (क०व० ५३१) आदि आभतं[1]। तं सब्बं उत्तानत्थमेवा ति।

आसेवनपच्चयकथावण्णना निट्ठिता

१०. खणिककथावण्णना

१५. इदानि खणिककथा नाम होति। तत्थ यस्मा सब्बसङ्खतधम्मा अनिच्चा, तस्मा एकचित्तक्खणिकायेव। समानाय हि R. 196 अनिच्चताय एको लहुं भिज्जति, एको चिरेना ति को एत्थ नियामो[2] ति येसं लद्धि, सेय्यथापि पुब्बसेलियापरसेलियानं; ते सन्धाय **एकचित्तक्खणिका** ति (क० व० ५३२) पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। चित्ते महापथवी ति आदीसु तेसं तथा सण्ठानं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। **चक्खायतनं** ति आदि "यदि सब्बे एकचित्तक्खणिका भवेय्युं, चक्खायतनादीनि चक्खुविञ्ञाणादीहि सद्धिं येव उप्पज्जित्वा निरुज्झेय्युं" ति चोदनत्थं वुत्तं। इतरो पन अन्तोमातुकुच्छिगतस्स[3] P. 283 विञ्ञाणुप्पत्ति[4] सन्धाय पटिक्खिपति, पवत्तं सन्धाय लद्धिवसेन पटिजानाति। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति। **तेन हि एकचित्तक्खणिका** ति यस्मा निच्चा न होन्ति, तस्मा एकचित्तक्खणिका ति अत्तनो रुचिया कारणं वदति। तं अवुत्तसदिसमेवा ति।

खणिककथावण्णना निट्ठिता

बावीसतिमो वग्गो समत्तो

---

१. आगतं रो.। २. विसेसो स्या.।
३. अन्तोमातुकुच्छियं गतस्मिं पि रो.। ४. ञाणुप्पत्ति रो.

२३. तेवीसतिमो वग्गो

१. एकाधिप्पायकथावण्णना

१. इदानि एकाधिप्पायकथा नाम होति[1]। तत्थ कारुञ्ञेन वा R. 197
एकेन अधिप्पायेन एकाधिप्पायो, संसारे वा एकतो भविस्सामा ति इत्थिया सद्धिं बुद्धपूजादीनि कत्वा पणिधिवसेन एको अधिप्पायो अस्सा ति एकाधिप्पायो। एवरूपो द्विन्नं पि[2] जनानं एकाधिप्पायो मेथुनो धम्मो पटिसेवितब्बो ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं चेव वेतुल्लकानं च; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याती ति।

एकाधिप्पायकथावण्णना निट्ठिता

२. अरहन्तवण्णकथावण्णना

२. इदानि अरहन्तवण्णकथा नाम होति। तत्थ इरियापथसम्पन्ने आकप्पसम्पन्ने पापभिक्खू दिस्वा "अरहन्तानं वण्णेन अमनुस्सा मेथुनं धम्मं पटिसेवन्ती" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरापथकानं; ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

अरहन्तवण्णकथावण्णना निट्ठिता

३-७. इस्सरियकामकारिकाकथावण्णना

३-७. इदानि इस्सरियकामकारिकाकथा नाम होति। छद्दन्त- B. 284
जातकादीनि सन्धाय "बोधिसत्तो इस्सरियकामकारिकाहेतु[3] विनिपातं

---

१. रो. पोत्थके नत्थि। २. रो. पोत्थके नत्थि।
३. ० कारियाहेतु रो.।

गच्छति, गब्भसेय्यं ओक्कमति, दुक्करकारिकं अकासि, अपरन्तपं अकासि, अञ्ञं सत्थारं उद्दिसी" ति येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं, ते सन्धाय पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। सेसं पठमकथायं उत्तानत्थमेव। दुतियकथायं **इद्धिमा** ति (क० व० ५३६) यदि इस्सरियकामकारिकाहेतु गच्छेय्य, इद्धिया गच्छेय्य, न कम्मवसेना ति चोदनत्थं वुत्तं। इतरो पन पठमपञ्हे भावनामयं सन्धाय पटिक्खिपति। R. 198 दुतियपञ्हे पुञ्ञिद्धिं सन्धाय पटिजानाति। ततियकथायं इस्सरियकामकारिकाहेतु नाम दुक्करकारिका मिच्छादिट्ठिया करियति। यदि च सो तं करेय्य, सस्सतादीनि पि गण्हेय्या ति चोदनत्थं **सस्सतो लोको** ति आदि वुत्तं। चतुत्थकथायं पि एसेव नयो ति।

इस्सरियकामकारिकाकथावण्णना निट्ठिता

८. पतिरूपकथावण्णना

८-९. इदानि रागपतिरूपकथा नाम होति। तत्थ मेत्ताकरुणामुदितायो सन्धाय "न रागो रागपतिरूपको" ति च इस्सामच्छरियकुक्कुच्चानि सन्धाय "न दोसो दोसपतिरूपको" ति च हसितुप्पादं सन्धाय "न मोहो मोहपतिरूपको" ति च दुम्मंकूनं पुग्गलानं निग्गहं पेसलानं भिक्खूनं अनुग्गहं पापगरहितं कल्याणपसंसं आयस्मतो पिलिन्दवच्छस्स वसलवादं भगवतो खेळासकवादं[1] मोघपुरिसवादं च सन्धाय "न[2] किलेसो किलेसपतिरूपको" ति च येसं लद्धि, सेय्यथापि अन्धकानं; ते सन्धाय सब्बकथासु पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं यस्मा फस्सादिपतिरूपका[3] न फस्सादयो[3] नाम B·285 नत्थि, तस्मा रागादिपतिरूपका[4] न रागादयो[4] पि नत्थी ति चोदेतुं

१. खेळासिकवादं सी., स्या., रो.। २. रो. पोत्थके नत्थि। ३-३. फस्सादिपतिरूपकानं फस्सादयो सी., स्या., रो.। ४-४. रागादिपतिरूपकानं रागादयो पि सी., स्या., रो.।

अत्थि न फस्सो ति आदिमाह। इतरो तेसं अभावा पटिक्खिपति। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

पतिरूपकथावण्णना निट्ठिता

६. अपरिनिप्फन्नकथावण्णना

१०-११. इदानि अपरिनिप्फन्नकथा नाम होति।

तत्थ--

"दुक्खमेव हि सम्भोति, दुक्खं तिट्ठति वेति च।

नाञ्ञत्र दुक्खा सम्भोति, नाञ्ञं दुक्खा निरुज्झती" ति

(सं० नि० १.१३५) वचनं निस्साय दुक्खञ्ञेव परिनिप्फन्नं, सेसा खन्धायतनधातुइन्द्रियधम्मा अपरिनिप्फन्ना ति येसं लद्धि, सेय्यथापि एकच्चानं उत्तरपथकानं चेव हेतुवादानं च; ते सन्धाय **रूपं अपरिनिप्फन्नं** ति पुच्छा सकवादिस्स, पटिञ्ञा इतरस्स। अथ नं "सचे रूपं अपरिनिप्फन्नं, न अनिच्चादिसभावं सिया" ति चोदेतुं **रूपं न** R. 199 **अनिच्चं** ति आदिमाह। इतरो तथारूपं रूपं अपस्सन्तो पटिक्खिपति। सकवादी **ननु रूपं अनिच्चं** ति आदि वचनेन तस्स एकं लद्धिं पटिसेधेत्वा दुतियं पुच्छन्तो **दुक्खञ्ञेव परिनिप्फन्नं** ति आदिमाह। अथस्स तं पि लद्धिं पटिसेधेतुं **न यदनिच्चं** ति आदिमाह। तत्रायं अधिप्पायो -- न केवलञ्हि पठमसच्चमेव दुक्खं। यं पन किञ्चि अनिच्चं, तं दुक्खमेव। रूपं च अनिच्चं, तस्मा तं पि परिनिप्फन्नं। इति यं त्वं वदेसि "रूपं अपरिनिप्फन्नं, दुक्खञ्ञेव परिनिप्फन्नं" ति, तं नो वत रे वत्तब्बे "दुक्खञ्ञेव परिनिप्फन्नं" ति। वेदनादिमूलिकादीसु पि योजनासु एसेव नयो। धम्मायतनधम्मधातूसु पन ठपेत्वा निब्बानं सेसधम्मानं वसेन अनिच्चता वेदितब्बा। इन्द्रियानि अनिच्चानेवा ति।

अपरिनिप्फन्नकथावण्णना निट्ठिता

तेवीसतिमो वग्गो समत्तो

निगमनकथा

B. 286 एत्तावता च —

पण्णासकेहि चतूहि, तीहि वग्गेहि चेव[1] च ।
सङ्गहेत्वा कथा सब्बा, ऊनतिसतभेदना[2] ॥
कथावत्थुप्पकरणं, कथामग्गेसु कोविदो ।
यं जिनो देसयि तस्स, निट्ठिता अत्थवण्णना ॥
इमं तेरसमत्तेहि, भाणवारेहि तन्तिया ।
चिरट्ठितत्थं धम्मस्स, सङ्खरोन्तेन[3] यं[3] मया ॥
यं[4] पत्तं[4] कुसलं तेन, लोकोयं सनरामरो ।
धम्मराजस्स सद्धम्म - रसमेवाधिगच्छतू ति ॥

कथावत्थु-अट्ठकथा निट्ठिता

१. रेव रो. ।
२. ऊनतिंसतिभेदना रो. ।
३-३. संखारोन्तेन तं रो. ।
४-४. सम्पत्त रो. ।

कथावत्थु-अट्ठकथा

सद्दानुक्कमणिका

आ

छ

ज

झ

ञ

ठ

त

ध